अथसत्यार्थप्रकाश

श्रीस्वामीदयानंदरचित

श्री राजा जयकृष्णदास बहादुर सी एस आई

की

आज्ञाऽनुसार

मुनशी हरिवंशलाल के अधिकार से इस्टार

प्रेस महल्ल: रामापुर से छापी गई ।।

सन १८७५ ई०

बनारस

सत्यार्थप्रकाश
प्रथम संस्करण

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक 505
दयानन्द महिला मह

अथ सत्यार्थप्रकाश

श्रीस्वामीदयानन्दरचित

राजा जयकृष्णदास डेपुटी कलेक्टर की आज्ञा से

प्रथमवार

यन्त्रालय के अधिकार के अनुसार

स्टार प्रेस में छापी गई ॥

सन् १८७५ ई०

बनारस

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२२६	३	अभिमा	अणिमा
२३६	२७	दोषण	दोष
२३८	२७	सरीरसे	सुरीरीसे शरीर
२४४	२	इतं	यादृक्षं
२४४	२	एसे	विशेष छं
२४८	२४	पस्या	यस्य
२५०	२१	नवित	नवनीत
२५१	२१ फु	तुपर	तूप
२७२	१५	नही	नहीहोता
२७३	२३	लिंगक	लिंगके
२७४	२०	भयसा	भयछंसा
२८०	१०	अवेगा	आवेगा
२८०	२७	सुख	सुखना
२८५	१४	साकिल्य	साकल्ये
२८५	२६	प्रतिघन	प्रतिसं
२८६	१२	होवै उत्तम	होवै उत्तमसेउत्तम
२८८	२१	कुस्तु	कुस्ती
२८८	२६	रा	राजा
२८८	२७	हेतेहै	होतेहै
२८९	३	चयो	अस्थये
२९१	७	पागा	पायो
२९२	२७	अकाश	आकाश
२९३	२१	पाल	पहिले
२९४	१०	जवमे	जीवमे
२९४	१९	मरणका	मरणकाजो
३०२	१	होताहै	होसक्ताहै

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३०३	६	वैद्या	वैद्यादिक
३०३	१६	धीतीने	धीतिमेंही
३०४	१०	मलि	मेलि
३०५	६	कान्या	कान्य
३०५	२५	प्याचारेण	प्यावरण
३०८	१२	विध्येस्याय	विभास्याम:
३१२	१२	करयोगागे	करनेलागे
३१४	२०	वेदादिवोक	वेदादिकोंके
३२२	७	दशमे	देशमे
३२२	८	दरिद्रमे	दरिद्रमे
३२२	८	वरतप्रता	वर्त्त किप्रताप
३३२	१	घातककन्या	घातकन्या
३३६	५	भयकोरजनेमे	भयकोकरणेमे
३३६	२०	खंडनको	क्योंखण्डनको
३३७	१०	मिलगा	मिकलेगा
३४२	६	ऐलचक्र	एकचक्र
३४२	११	संस्तार:	संस्कारा:
३४४	१३	यागी	योगी
३४६	१२	यावत्पातति	यावत्पतति
३४६	१६	खंप्रा	फलंप्रा
३४८	२२	मुद्रादीक	मुद्रादिक
३५२	२५	दर्श	दर्शन
३५५	२६	छिलनेका	छलनेका
३६२	२७	किरीको	किसीको
३६३	६	पुराणादिक केआगेछुटगया	

१५४ वान प्रस्थ विधिः पंचम समुल्लास पृष्ठ
१५८ सन्यास विधिः
१६६ ग्यारह प्रकार का धर्म धर्मकालक्षण पंच-
मः समुल्लासः समाप्तः
१७४ राजा प्रजा का धर्म वर्णन षष्ठ समुल्लास पृ
ष्ठ ४६
१८० राजा की शिक्षा और प्रजाकी शिक्षा राजा
का लक्षण राजाको अवश्यकर्त्तव्यता तथा अक
र्त्तव्यता राजाको परम सिद्धिलाभका विचार
२१५ प्रतिमा पूजन निषेध षष्ठः समुल्लासः समाप्त
२२१ अथ ईश्वरवेद विषय काव्याख्या ईश्वर विषय
मे खंडन का मंडन और वेदोंके कांडोंका वर्ण
न सप्तमः समुल्लासः समाप्तः पृष्ठ ३२
२५३ जगतकी उत्पत्ति स्थिति और प्रलयविषयों
का वर्णन अष्टमः समुल्लासः समाप्तः पृष्ठ १४
२६६ विद्या अविद्या बंध और मोक्ष इनचारपदा
र्थों का वर्णन नवमः समुल्लासः समाप्तः पृष्ठ ३२
२९८ आचार अनाचार भक्ष्य और अभक्ष्य इन
चार पदार्थों का वर्णन दशमः समुल्लासः स-
माप्तः पृष्ठ १४
यह पूर्वार्ध का सूचीपत्र समाप्त हुआ इस
के आगे उत्तरार्द्ध का सूचीपत्र कियाजाताहै
३०८ इस अध्याय मे आर्यावर्त्त देश के विषयका
वर्णन है एकादश समुल्लासः समाप्तः
३९६ इस अध्याय मे जैन जो बौद्ध का जो संप्रदाय
के विषय का वर्णन है द्वादश समुल्लासः समा-
प्तः पृष्ठ ८७

पृष्ठ	पंक्ति	अशु
३	१२	सिद
४	२७	साम
२६	१६	अष्ट
५२	२४	धम दित
७९	१५	जग
९७	६	धनु
११६	१०	वेध्य
१३५	७	गृ
१५३	५	गार्म
१५५	२१	अप
१६५	१७	अन वहुर यकूट युहु क्रोमि है
१६७	२	अहि
१७०	१४	अहि
१७९	१९	बीच
२१९	१७	विद कोव
२२४	१३	अणा
२२३	२	होम
२३[illegible]	१५	पदा
२३५	१५	छत

शुद्धपत्र

द्ध	शुद्ध
	सिद्धं
	नाम
	श्रेष्ठ
न्निप्रम	धर्मान्न प्रमदितव्यं भूत्यै नप्रम
व्यं	तव्यं
दीधी	गार्गीधी
र्भों	मनुष्योंसे
ा	वेश्या
	गृहस्थ
र्गी	गार्गी
ध्येय	अपने
	[illegible]
तकाश्च	वास इन्द्रोंसे विषयोंमे प्रवर्त्त भई
गय सो	इन्द्रियोकानिवर्त्त करदे
याक्तीमें	
। लोखा	
ंससे	अहिंसासे
ंच	हिंसा
्यद	बीच्ह्म
ाकि	विद्यादिकोंका
ा	
नामा	अप्रमाणनाम
ोजातेहै	पृथक्भीवहोजातेहैं
नेश्वरके	सदापरमेश्वरके
ससमा	कृतहंसमा

(233 है)

निवेदन १

यहपुस्तकश्रीस्वामीदयानंद सरस्वती नेमेरे व्ययसेबनाइ और मेरे ही व्ययसे यह मुद्रित हुईहै उक्त स्वामी जीने इसका रचनाधिकारमुझकोदेदियाहै औरउसकामैंअधिष्ठाताहूं औरमैंनेधीरसे इसपुस्तककी रजिष्टरीकानून २० सन १८४७ ई०केअनुसारकी है सिवायमेरेवामेरीआज्ञाके इसपुस्तककेछापने काकिसीको अधिकारनहीं है

द० श्रीराजाजयकृष्णदासबहादुर सी एस आई

निवेदन २

इसपुस्तकके आदिऔरअंतमें मेरेहस्ताक्षर और मोहरनहीं वह चोरीकीहै औरउसका क्रयविक्रयनहींहोसक्ता

द० श्रीराजाजयकृष्णदासबहादुर सी एस आई

निवेदन ३

इसपुस्तकके पाठकोंसेमेरीयह विनयपूर्वकप्रार्थनाहै किइसग्रंथके छपवानेसेमेरा अभिप्राय किसीविशेषमतकेखंडनमंडन करनेकानहीं किन्तुइसका मुख्यप्रयोजनयहहै किसज्जनऔर विद्वान लोगइसका पक्षपातरहित होकरपढ़ें और विचारें औरजिनविषयोंपरउनकोदयानन्द स्वामीके सिद्धांतोंसेसम्मति नहोउनविषयोंपर अपनीअनुमति प्रबल प्रमाणपूर्वकलिखेंजिससेधर्मकानिर्णय और तथा सत्यकी विवेचना हो क्योंकिकेवलशास्त्रार्थकरनेमें किसीबातकानिर्णय नहीं होता परन्तु लिखनेसेदोनोंपक्षोंके सिद्धांतज्ञातहोजाते हैं औरसत्यविषयकानिर्णयहोजाताहै इसलिये आशाहै किसज्जन पंडित औरमहात्मा पुरुषइसकीयथावत समालोचनाकरेंगे औरयहनसमझेंगे किमुझकोकिसी विशेषमतकी निन्दा अभिप्रेतहै छापनेमेंशीघ्रता केकारण इसग्रंथमेंबहुत अशुद्धता रहगईहैं आशाहै पाठकगण इस अपराधकोक्षमा करेंगे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
		जोलिखाहैशुद्ध	
		पंक्तीमे	औरसबतंत्रग्रंथ
३६४	४	फरऐसा	फेरऐसा
३६४	२५	पुषना	पूछना
३७०	१४	लिख	लिखेगो
३७३	८	देशलोक	देवलोक
३८५	२५	और	औरबुमायाकहै
३८५	२६	थरदिन	थोरेदिन
३९२	१०	सबगएथे	सबकोगयेथे
०	१९	सामदा	सोमदा
३९४	१६	मरनासे	मनसे
४०१	११	एसी	ऐसी
४०२	१७	अन्यानहै	अन्यायहै
०	१९	मनलके	मनखके
४०३	६	मम:	तत:

अथ सत्यार्थप्रकाश ॥

ओ३म्० शन्नोमित्रः शम्वरुणः शन्नोभवत्वर्यमा शन्नइन्द्रो वृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरुक्रमः॥नमोब्रह्मणे नमस्ते वायोत्वमेव प्रत्यक्षम्ब्रह्मासित्वामेवप्रत्यक्षम्ब्रह्मवदिष्यामि ऋतम्वदिष्यामि सत्यम्वदिष्यामि तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु अवतुमामवतु वक्तारम् ओ३म् शान्ति श्शान्तिश्शान्ति. ॥ १ ॥

ओ३म्। यह जो ओंकार सो बहुत उत्तम परमेश्वर का नाम है क्योंकि तीन जो अ उ और म् अक्षर इसमें हैं वे सब मिलके एक ओम् अक्षर हुआ है इस एक अक्षर से बहुत परमेश्वर के नाम आते हैं जैसे, अकार से, विराट्, अग्नि, और विश्व इत्यादिकों का ग्रहण किया है। उकार से हिरण्यगर्भ, वायु और तैजसादिकों का ग्रहण किया है। मकार से, ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादिकों का वेदादिक शास्त्रों में स्पष्ट व्याख्यान किया है ये सब नाम परमेश्वरही के हैं जो कोई ऐसा कहै कि परमेश्वर से भिन्न अर्थों का ग्रहण क्यों नहीं होता है उससे पूछना चाहिए कि विराट् और अग्नि इत्यादिक जितने नाम हैं वे सब मनुष्य [illegible] देवलोक में रहने वाले जो देव और वैद्यकशास्त्र

में शुंठ्यादिकों के भी लिखे हैं और वे परमेश्वर के भी नाम हैं इन सभों में आप किन का ग्रहण करते हैं जो आप कहैं कि हमतो देवों का ग्रहण करते हैं अच्छा तो आप के ग्रहण करने में क्या प्रमाण है।देव सब प्रसिद्ध हैं और वे उत्तम भी हैं इस से उन का ग्रहण कर्ता हूं।मैं आप से पूछता हूं कि परमेश्वर क्या अप्रसिद्ध है और परमेश्वर से कोई उत्तम भी है जो आप इस प्रमाण से उन का ग्रहण कर्ते हैं और परमेश्वर तो कभी अप्रसिद्ध नहीं होता है उस के तुल्य कोई नहीं है तो उत्तम कैसे कोई होगा इस से यह आप का कहना मिथ्याही है आपके कहने में बहुत से दोष भी आवेंगे जैसे कि भोजन के लिये भोजन करने का पदार्थ किसी ने किसी के पास प्रीति से रखके कहा कि आप भोजन करैं और वह उसको त्याग के अप्राप्त भोजन के लिए जहां तहां भ्रमण करै उसको बुद्धिमान न जानना चाहिए, क्योंकि वह उपस्थित नाम समीप आया जो पदार्थ उसको छोड़ के अनुपस्थित नाम अप्राप्त जो पदार्थ उस्की प्राप्ति के लिए श्रम कर्ता है इसी से वह पुरुष बुद्धिमान नहीं है॥ किञ्च। उपस्थितं परित्यज्य अनुपस्थितं याचतेइति बाधितन्यायः। वैसाही आप का कथन हुआ क्योंकि उन नामों के जो उपस्थित अर्थ मनुष्य शुंठ्यादिक औषधियों का परित्याग आप कर्ते हैं और अनुपस्थित जो देव उनके ग्रहण में आप श्रम कर्ते हैं इसमें कुछ भी प्रमाण वा युक्ति नहीं है और जो आप ऐसा कहैं कि जहां जिसका प्रकरण है वहां उसी का ग्रहण करना योग्य है जैसे किसी ने कहा कि सैन्धवमानय, सैन्धव को तू ले आ तब उसको समय का विचार करना अवश्य है क्योंकि सैंधव तो दो अर्थों का नाम है घोड़े का और लवण का भी है गमन समय में सैन्धव शब्द सुनके घोड़े को ले आवेगा और भोजन समय में लवण कोही ले आवेगा तब तो ठीक ठीक होगा और

जो गमन समय में लवण को लेआवै और भोजन समय में घोड़े को ले आवै तब उसका स्वामी उसपर क्रुद्ध होके कहेगा कि तूं निर्बुद्धि पुरुष है क्यों कि गमन समय में लवण का क्या प्रयोजन है और भोजन समय में घोड़े का क्या प्रयोजन है जहां जिसको लेआना चाहिये वहां उसको क्यों तूं नही ले आया इस्से तूं मूर्ख है मेरे पास से चला जा इस्से क्या आया कि जहां जिस का ग्रहण करना उचित होय वहां उसी का ग्रहण करना योग्य है यह बात तो आपने अच्छी कही कि ऐसाही जानना चाहिए और करना भी चाहिए हम लोगों को जहां जिसका ग्रहण करना उचित है वहां उसी का ग्रहण करना चाहिए कि। ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत। यह छान्दोग्य उपनिषद का बचन है और॥ ओमित्येतदक्षरमिदं सर्वन्तस्योपव्याख्यानम्। यह मांडूक्य उपनिषद का बचन है ओ३म्खम्ब्रह्म। यह यजुर्वेद की संहिता का बचन है। सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति। यह कठोपनिषद का बचन है॥ प्रशासितारं सर्वेषामणीयांसमणोरपि। रुक्माभं स्वप्नधीगम्यं विद्यात्तंपुरुषम्परम्॥ एतमग्निम्वदन्त्येके मनुमेके प्रजापतिम्। इन्द्रमेकेपरे प्राण मपरे ब्रह्म-शाश्वतम्॥ ये दोनों मनुस्मृति के श्लोक हैं। सब्रह्मा सविष्णुस्सरुद्रस्सशिवस्सोऽक्षरस्सपरमस्स्वराट्सइन्द्रस्सकालाग्निस्सचन्द्रमाः इत्यादिक कैवल्योपनिषद के बचन हैं। अग्निमीडेपुरोहितं यज्ञस्यदेवमृत्विजम्। होतारंरत्नधातमम्॥ यह ऋग्वेद की संहिता का मन्त्र है॥ भूरसिभूमिरस्यदितिरसिविश्वधायाविश्वस्य भुवनस्यधर्त्री। पृथिवीं यच्छपृथिवीं दृंहपृथिवीं माहिंसीः। पुरुषं जगत् यह यजुर्वेद की संहिता का मन्त्र है। अग्नआयाहिवीतये गृणानोहव्यदातये॥ निहोतासत्सिवर्हिषि। यह साम वेद की संहिता का मन्त्र है॥ शन्नोदेवीरभिष्टय आपोभवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तुनः॥ यह अथर्ववेद की संहिता का

मन्त्र है इत्यादिक प्रकरणों में इन बचनों से और इन के ठीक ठीक अर्थों के जानने से परमेश्वरही का ग्रहण होता है क्योंकि ओंकार और अग्न्यादिक नामों के मुख्य अर्थसे परमेश्वर काही ग्रहण होता है निरुक्त व्याकरण और कल्प सूत्रादिक ऋषि मुनियों के किये व्याख्यानों से वैसेही ब्रह्मादिकों के किए संहिताओं के शतपथादिक ब्राह्मण बेदों के व्याख्यान से भी और छः शास्त्रों में भी परमेश्वर का ग्रहण देखने में आता है उन नामों के अर्थों से और उसी तरह के विशेषणों से भी परमेश्वर का ग्रहण होता है और का नहीं होता इससे क्या आया कि जहां जहां प्रार्थना स्तुति सर्वज्ञादि विशेषण और उपासना लिखी है वहां वहां परमेश्वर काही ग्रहण होता है यह सिद्ध हुआ और जहां २ ऐसे प्रकरण हैं कि॥ ततोविराडजायत विराजो अधिपूरुषः श्रोत्राद्वायुश्चप्राणश्च मुखादग्निरजायत । तस्माद्देवाऽजायन्त पश्चाद्भूमिमथोपुरः ॥ ये सब बचन यजुर्वेद की संहिता के हैं। तस्माद्वा एतस्मादात्मनआकाशस्संभूतः । आकाशाद्वायुः वायोरग्निः अग्नेरापः अद्भ्यःपृथिवी पृथिव्याओषधयः ओषधिभ्यो अन्नम् अन्नाद्रेतः सवाएषपुरुषोऽन्नरसमयः । यह तैत्तिरीयोपनिषद् का बचन है ॥ इत्यादिक प्रकरणों में विराट् इत्यादिक नामों से परमेश्वर का ग्रहण किसी प्रकार से भी नहीं होता क्योंकि परमेश्वर का जन्म और मरण कभी नहीं होता है। इससे इसी प्रकार के प्रकरणों में विराट इत्यादिक नामों से और जन्मादिक विशेषणों से भी परमेश्वर का ग्रहण शिष्टलोगों को कभी न करना चाहिये। विराट् इत्यादिक नामों का अर्थ करता हूं जिससे इन नामों से परमेश्वर का ग्रहण हो ॥ राजृ इस धातु से विराट् शब्द सिद्ध होता है । विविधन्नाम चराचरं जगत् राजते नाम प्रकाशते सविराट् विविध अर्थात् बहुत प्रकार के जगत् को जो प्रकाश करै उसका नाम विराट है

अञ्चुगतिपूजनयोः। इस धातु से अग्नि शब्द सिद्ध होता है॥ गतेस्त्रयोऽर्थाः ज्ञानंगमनम्प्राप्तिश्चेति पूजनन्नामसत्कारः अञ्चति अच्यतेवासोऽयमग्निः। जो ज्ञान स्वरूप सर्वज्ञ जानने प्राप्ति होने और पूजा के योग्य है उसका नाम अग्नि है॥ विशप्रवेशने इस धातु से विश्व शब्द सिद्ध होता है॥ विशंतिसर्वाणिभूतानि आकाशादीनियस्मिन्सविश्वः। प्रवेश करते हैं सब आकाशादिक भूत जिसमें उसका नाम विश्व है इत्यादिक नाम अकार से लिये जाते हैं॥ हिरण्यन्तेजसो नाम हिरण्यानि सूर्यादीनितेजांसि गर्भेयस्य सहिरण्यगर्भः। अथवा हिरण्यानां सूर्यादीनां न्तेजसाङ्गर्भः हिरण्यगर्भः। हिरण्यगर्भ शब्द का यह अर्थ है कि जिस्से सूर्यादिक तेज वाले पदार्थ उत्पन्न होके जिसके आधार रहते हैं उसका नाम हिरण्यगर्भ है अथवा सूर्यादिक तेजों का जो गर्भ नाम निवास स्थान उसका नाम हिरण्यगर्भ है। इसमें यह यजुर्वेद का मन्त्र प्रमाण है॥ हिरण्यगर्भःसमवर्त्ताग्रेभूत स्यजातःपतिरेकआसीत्। सदाधारपृथिवींद्यामुतेमांकस्मैदेवा-यहविषाविधेम॥ इत्यादिक मन्त्रों से परमेश्वर का ही ग्रहण होता है॥ वागतिगन्धनयोः। इस धातु से वायु शब्द सिद्ध होता है॥ गन्धनंहिंसनं वातिसोऽयंवायुः चराचरञ्जगद्धारयतिवासवायुः। जो चराचर जगत् का प्रलय करै अथवा धारण करै और सब बलवानों से बलवान होवै उसी का नाम वायु है॥ तिजनिशाने इस धातु से तैजस शब्द सिद्ध होता है जो अपने से आपही प्रकाशित होवै और सूर्यादिक तेजों का प्रकाश करने वाला होवै उसका नाम तैजस है इत्यादिक नामों का उकार से ग्रहण होता है। ईशऐश्वर्ये इस धातु से ईश्वर शब्द सिद्ध होता है ईष्टेअसौईश्वरः सर्वैश्वर्यवान्योभवेत सईश्वरः। जो सत्य विचारशील नाम सत्य जिसका ज्ञान है अनन्त जिसका ऐश्वर्य है उसका नाम ईश्वर है॥ दोऽवखण्डने। इस धातु से अदिति शब्द

सिद्ध होता है अवखण्डनन्नामविनाश: । उससे दिति प्रत्यय करने से दिति शब्द सिद्ध होता है दिति जिसका नाम है कि जिसका विनाश होता है उससे नवनञ् समास हुआ तब अदिति शब्द हुआ अदिति नाम जिसका कभी नाश न होय । जो अदिति है वही आदित्य है। ज्ञा अवबोधने धातु है उससे प्राज्ञ शब्द सिद्ध हुआ प्रकृष्टश्चासौज्ञश्चप्रज्ञ: प्रज्ञएवप्राज्ञ: जो ज्ञानी और सब ज्ञानियों से उत्तम ज्ञानवान् है उसका नाम प्राज्ञ है प्रजानाति वा चराचरञ्जगत् सप्रज्ञ: प्रज्ञएवप्राज्ञ: सब पदार्थों को यथावत् जो जानता है उसका नाम प्राज्ञ है जैसा कि परमेश्वर का ओंकार उत्तम नाम है वैसा कोई भी नहीं इसका बहुत थोड़ा किया गया है क्योंकि ओंकार की व्याख्या से और बहुत लिये जाते हैं यह ओंकार वा नव नामों से अर्थ तो ये नव नाम परमेश्वर के हैं और इस मन्त्र में मित्रादिक नाम हैं उन का अर्थ अब आगे किया जाता है। × × × जो प्रार्थना स्तुति और उपासना होती है सो श्रेष्ठही की होती है श्रेष्ठ जो अपने से गुणों में और सत्य सत्य व्यवहारों में अधिक है सोई श्रेष्ठ होता है उन सब श्रेष्ठों में भी परमेश्वर अत्यन्त श्रेष्ठ है क्योंकि परमेश्वर के तुल्य कोई भी न हुआ न है और न होगा जो तुल्य नहीं तो अधिक कैसे होगा कभी न होगा क्योंकि परमेश्वर के न्याय दया सर्वसामर्थ्य और सर्वज्ञान इत्यादिक अनन्त गुण हैं और वे सर्वदा सत्यही हैं इससे सब मनुष्य लोगों को प्रार्थना स्तुति और उपासना परमेश्वरही की करनी चाहिये परमेश्वर से भिन्न किसी की न करनी चाहिये ब्रह्मा विष्णु महादेवादिक देव और दैत्य दानवादिक भी परमेश्वरही में विश्वास कर्त्ते हैं उसी की प्रार्थना स्तुति और उपासना कर्त्ते हैं और किसी की भी नहीं इसका विचार अच्छी रीति से उपासना और मुक्ति के

विषय में लिखा जायगा। पूर्वपक्ष-मित्रादिक नामों से सखा और इन्द्रादिक देवों के प्रसिद्ध व्यवहार देखने से उन का ग्रहण करना चाहिये। उत्तरपक्ष-उन का ग्रहण करना योग्य नहीं क्योंकि जो किसी का मित्र है वही और का शत्रु भी है और किसी से उदासीन भी वह देखने में आता है परमेश्वर तो सब जगत् का मित्रही है और कोई से उदासीन भी नहीं इस से जो व्यवहार में किसी का मित्र होने किसी का शत्रु होने और किसी से उदासीन होने से उसका ग्रहण करना योग्य नहीं इस में महाभाष्य के वचन का प्रमाण भी है। प्रधानाप्रधानयोः प्रधाने कार्यसम्प्रत्ययः गौणमुख्ययोर्मुख्येकार्यसम्प्रत्ययः ॥ इसका अर्थ यह है कि प्रधान और अप्रधान गौण और मुख्य के बीच मेंसे प्रधान और मुख्यही का ग्रहण होता है जैसे कि किसी से किसी ने पूंछा कि यह कौन जाता है उसने उससे कहा कि राजा जाता है इसमें विचार करना चाहिये कि राजा के साथ बहुत से भृत्य हाथी घोड़े और रथ भी जाते थे परन्तु राजा के सामने उनका ग्रहण नहीं भया न होता है न होगा किंतु राजाही का हुआ क्योंकि प्रधान और मुख्य के सामने अप्रधान और गौणों का ग्रहण नहीं होता है वैसेही जो परमेश्वर सभों में प्रधान और सभों मे मुख्यही है मित्र शत्रु और उदासीन किसी काभी नहीं इसी से परमेश्वरही का मित्रादिक शब्दों से ग्रहण करना उचित है। वृञ्वरणे वरईप्सायाम् ॥ इन दो धातुओं से वरुण शब्द सिद्ध होता है वृणोतिसर्वान्शिष्टान् मुमुक्षून्मुक्तान्धर्मात्मनोयस्सवरुणः। अथवा व्रियतेशिष्टैः मुमुक्षुभिः मुक्तैः धर्मात्मभिः यः सवरुणः परमेश्वरः अथवा वरयतिशिष्टादीन् वर्यते शिष्टादिभिः सवरुणः परमेश्वरः जो वृणोति नाम स्वीकार करता है शिष्ट मुमुक्षु और धर्मात्माओं को उसका नाम वरुण है सो वरुण नाम परमेश्वर का है। व्रियते नाम शिष्टादिकों जिस

[illegible]

ओंकार कहते हैं. उसका नाम वरुण है अथवा वरयति नाम जो धर्म को प्राप्त हो रहा है उसका नाम वरुण है वर्यते नाम और जो सब श्रेष्ठ लोगों को प्राप्त होने के योग्य होय, उसका नाम वरुण है और यह भी अर्थ होता है कि वरुणो नाम वरः वरो नाम श्रेष्ठ: जो सभों से श्रेष्ठ होय, उसका नाम वरुण है वैसा परमेश्वरही है और दूसरा कोई भी नहीं। ऋगतिप्रापणयो: इस धातु से अर्यमा शब्द सिद्ध होता है जो सभों के कर्मों की यथावत् व्यवस्था को जाने और पाप पुण्य करने वालों को यथा वत् पाप और पुण्यों की प्राप्ति का सत्य सत्य नियम करै उसी का नाम अर्यमा है। इदि परमैश्वर्ये इस धातु से इन्द्र शब्द की सिद्धि होती है इन्दति परमैश्वर्यवान् योभवति सइन्द्र: जिसका परम ऐश्वर्य होय उससे अधिक किसी का भी ऐश्वर्य न होवै उसका नाम इन्द्र है। बृहत् शब्द है इसके आगे पति शब्द का समास है। बृहतांमहतामाकाशादोनांपति:सबृहस्पति:। जो बड़ों से भी बड़ा और सब आकाशादिक और ब्रह्मादिकों का जो स्वामी है उसका नाम बृहस्पति है। विष्लृव्याप्तौ ॥ इस धातु से विष्णु शब्द सिद्ध हुआ है। विवेष्टिनामव्याप्नोतिचराचरञ्ज गत्सविष्णु: उरु नाम महान् क्रम: पराक्रमोयस्यसउरुक्रम: जो सब जगत् में व्यापक होय उरुक्रम नाम अनन्त पराक्रम जिस का है उसका नाम उरुक्रम वही विष्णु है। बृहबृहिवृद्धौ। इन धातुओं से ब्रह्म शब्द सिद्ध होता है जो सबके ऊपर विराजमान होय और सब से बड़ा होय उसका नाम ब्रह्म है। वायु का अर्थ जो ओंकार के अर्थ में किया है वहीं जान लेना चाहिये। शम् नाम है सुखका और कल्याण का भी न: यह पद से हम सब लोगों का ग्रहण होता है हे परमेश्वर ओंकारादिक जितने नाम हैं वे आपही के हैं आप प्रत्यक्षही ब्रह्म हैं। त्वामेवप्रत्यक्षं ब्रह्मवदिष्यामि ॥ आपही को मैं प्रत्यक्ष ब्रह्म कहूंगा प्रत्यक्ष नाम

सब जगह में आप नित्यही प्राप्त हो ऋतम्वदिष्यामि। आप की जो यथार्थ आज्ञा है उसी को मैं कहूंगा और उसी कोही मैं करूंगा सत्यम्वदिष्यामि। और सत्यही कहूंगा और करूंगा भी तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। ऐसा जो मैं आपकी आज्ञा को कहने वाला और करने वाला मेरी आप रक्षा करैं और उस आज्ञा से मेरी बुद्धि विरुद्ध न होय। इसी आज्ञा को मैं जो कहने वाला उसी आज्ञा से मैं विरुद्ध कभी न करूं क्योंकि जो आप की आज्ञा है धर्म रूपोही है जो उससे विरुद्ध सो अधर्म है उसी आज्ञा को कहूं और करूं भी वैसी आप कृपा करैं जब मैं उस आज्ञा को यथावत कहूंगा और करूंगा भी तब उस का मुख्य फल यही है कि आप की प्राप्ति का होना अवतुमाम-वतुवक्तारम्। यह फिर जो दूसरी बार पाठ है मन्त्र में वह आदर के वास्ते है जैसे कि किसी ने किसी से कहा त्वंग्रामंग-च्छगच्छ। यह कहने से क्या जाना जाता है कि तूं ग्राम को शीघ्रही जा वैसेही दूसरी बार पाठ से आप मेरी अवश्यही रक्षा करैं और ॐशान्तिश्शान्तिश्शान्तिः। यह जो तीन बार पाठ है उसका अभिप्राय यह है कि अध्यात्मताप जो शरीर में रोगा-दिकों से होता है दूसरा शत्रु व्याघ्र और सर्पादिकों से जो होता है उसका नाम आधि भौतिक है तीसरा ताप जो कि वृष्टि का अत्यन्त होना और कुछ भी वृष्टि का न होना अति शीत वा उष्णता का होना उसका नाम आधि दैविक ताप है हम लोगों की यह प्रार्थना है कि जगत के तीनों तापों की निवृत्ति आप की कृपा से होजाय भवान्शन्नोभवतु। आप हम लोगों के अर्थात सब संसार के कल्याण करने वाले हो आप से भिन्न कोई भी कल्याण कारक अथवा कल्याण स्वरूप नहीं है इसी से आप सेही प्रार्थना है कि सब जीवों के हृदय में आपही आप प्रकाशित होवैं इस मन्त्र का संक्षेप से अर्थ पूर्ण होगया और

आगे अन्य नामों के भी अर्थ लिखे जाते हैं ॥ सूर्यआत्माजगतस्तस्थुषश्च । यह बचन यजुर्वेद का है जगत नाम प्राणियों का जो कि चलते फिरते हैं तस्थुष अप्राणि नाम स्थावर जे कि पर्वत वृक्षादिक हैं उन सभों का जो आत्मा होय उसका नाम सूर्य है अतसातत्यगमने । धातु है इससे आत्म शब्द सिद्ध हुआ अततिसर्वत्रव्याप्नोतीत्यात्मा । जो सब जगतमें व्यापक होय उसका नाम आत्मा है और परश्चासावात्माचपरमात्मा । जो सब जीवात्माओं से श्रेष्ठ होय उसका नाम परमात्मा है ईश्वर नाम सामर्थ्य वाले का है जो सब ईश्वरों में परम श्रेष्ठ होय उसका नाम परमेश्वर है ब्रह्मादिक देवों में एक से एक ऐश्वर्यवाला है जैसा कि मनुष्यों में एक से एक ऐश्वर्यवाला है वैसेही ब्रह्मादिक देवों में जो सब से श्रेष्ठ होय और चक्रवर्त्यादिक राजाओं से परम नाम श्रेष्ठ होय उसका नाम परमेश्वर है जो सब ईश्वरों का ईश्वर होय और जिसके तुल्य ऐश्वर्यवाला कोई भी न होय उसी का नाम परमेश्वर है षुञ्अभिषवे षूङ् प्राणिगर्भविमोचने । इन दो धातुओं से सविता शब्द सिद्ध होता है ॥ अभिषवःउत्पादनम् प्राणिगर्भविमोचनञ्च । सुनोति सूते वा उत्पादयति चराचरञ्जगत्ससविता । जो सब जगत् की उत्पत्ति करै उसका नाम सविता है ॥ दिवुक्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु ॥ इस धातु से देव शब्द की सिद्धि होती है । दीव्यतिसदेवः ॥ दीव्यति नाम स्वयं जो प्रकाश स्वरूप होय और जो सब जगत को प्रकाश कर्ता है इससे परमेश्वर का नाम देव है ॥ क्रीड़तेसदेवः क्रीड़ते नाम अपने आनन्द से अपने स्वरूप में आपही जो क्रीड़ा को करै अथवा क्रीड़ा मात्र से अन्य की सहायता के बिना जगत् को क्रीड़ाको नाईं जो रचै वा सब जगत् के क्रीड़ाओं का आधार जो होय इससे परमेश्वर का नाम देव है ॥ विजिगीषतेसदेवः विजिगीषते

नाम सब का जीतनेवाला और आपतो सदा अजेय है जिसको कोई भी न जीतसके इस्से परमेश्वर का नाम देव है व्यवहारयति सदेवः व्यवहारयति नाम न्याय और अन्याय व्यवहारों का जो ज्ञापकनाम उपदेष्टा और सब व्यवहारों का जो आधार भी है इस्से परमेश्वर का नाम देव है द्योतयतिनाम । सब प्रकाशों का आधार जो अधिकरण है इस्से परमेश्वर का नाम देव है ॥ स्तूयतेसदेवः । स्तूयते नाम सब लोगों को स्तुति करने के योग्य होय और निन्दा के योग्य कभी न होय इस्से परमेश्वर का नाम देव है ॥ मोदयतिसदेवः । मोदयति नाम आप तो आनन्द स्वरूपही है औरों को भी आनन्द करावै जिसको दुःख का लेश कभी न होय इस्से भी परमेश्वर का नाम देव है ॥ माद्यतिस-देवः । माद्यति नाम आप तो हर्ष स्वरूप होय जिसको शोक का लेश कभी न होय औरों को भी हर्ष करावै इस्से भी पर-मेश्वर का नाम देव है ॥ स्वापयतिसदेवः । स्वापयति नाम प्रलय में सभों को शयन अव्यक्त में जो करावै इस्से परमेश्वर का नाम देव है ॥ कामयते काम्यतेवासदेवः । कामयते काम्यते नाम जिसके सब काम सिद्ध होयँ और जिसकी प्राप्ति की कामना सब शिष्ट लोग करैं इस्से भी परमेश्वर का नाम देव है ॥ ग-च्छतिगम्यतेवासदेवः । गच्छति गम्यते नाम जो सभों में गत नाम प्राप्त होय जानने के योग्य होय उसको कहते हैं देव देव नाम परमेश्वर का है दिव शब्द के एकादश अर्थ हैं ॥ कुविआ-च्छादने । इस धातु से कुवेर शब्द सिद्ध होता है जो आकाशा-दिकों का आच्छादक है उसका नाम कुवेर है इस्से परमेश्वर का नाम कुवेर है ॥ पृथुविस्तारे । इस धातु से पृथिवी शब्द सिद्ध हुआ जो सब आकाशादिकों से विस्तृत है उसका नाम पृथिवी है इस्से परमेश्वर का नाम पृथिवी है ॥ जलप्रतिघाते । इस धातु से जल शब्द सिद्ध होता है ॥ प्रतिहन्तिअव्यक्तपरमाणवादीनिप-

रस्यैतज्जलम् । जो अव्यक्त से व्यक्त को और एक परमाणु से दूसरे परमाणु को अन्योन्य संयोग और वियोग के वास्ते जो हनन और प्रतिहनन करने वाला होय उसका नाम जल है इससे परमेश्वर का नाम जल है हनन नाम एक से एक को मिलाना प्रतिहनन नाम दूसरे से तीसरे को मिलाना तीसरे को चौथे से मिलाना जगत की उत्पत्ति समय में सभों का संयोग करने वाला और प्रलय समय में वियोग का करनेवाला वैसा परमेश्वरही है दूसरा कोई भी नहीं ॥ जनीप्रादुर्भावे । लाआदाने इन धातुओं से भी जल शब्द सिद्ध होता है जनयति नाम उत्पादयतिसर्वञ्जगत् तज्जम् लातिगृह्णाति नाम आदत्ते चराचरञ्जगत्तल्लम् जञ्चतल्लञ्चतज्जलम् ॥ ब्रह्म ज शब्द से सभों का जनक और ल शब्द से सभों का धारण करने वाला उसका नाम जल, जल नाम परमेश्वर का है काशृदीप्तौ । उससे आकाश शब्द सिद्ध होता है ॥ आसमन्तात् सर्वतः सर्वञ्जगत्प्रकाशतेसआकाशः । जो परमेश्वर सब जगह से और सब प्रकार से सभों को प्रकाशता है इससे परमेश्वर का नाम आकाश है ॥ अदभक्षणे । इससे अन्न शब्द सिद्ध होता है ॥ अत्तिभक्षयतिचराचरञ्जगत्तदन्नम् । जो चराचर जगत् का भक्षक है और काल को भी खाके पचा लेता है उसका नाम अन्न है इसमें प्रमाण है ॥ अद्यतेऽत्तिचभूतानि तस्मादन्नन्तदुच्यते । यह तैत्तिरीयोपनिषद् का वचन है ॥ अहमन्नमहमन्नमहमन्नम् अहमन्नादोऽहमन्नादोऽहमन्नादः । यह भी उसी उपनिषद् में है ॥ अन्नमत्तीत्यन्नादः । अन्न शब्दसे चराचर जगत् का जो ग्राहक उसका नाम अन्नाद है यह वचन परमेश्वरही का है क्योंकि मैं अन्न हूं मैंही अन्नाद हूं तीन बार इस श्रुति में पाठ आदर के वास्ते है जैसे कि त्वंग्रामङ्गच्छगच्छगच्छ । इससे क्या लिया जाता है कि शीघ्रही तूं ग्राम को जा और कहीं भी ठहरना

नहीं इस प्रकार के व्यवहारों में जो बहुत बार का कहना है सो जैसे अनर्थक नहीं वैसे इसमें भी अनर्थक नहीं इस विषयमें व्यासजी का सूत्र भी प्रमाण है ॥ अत्ताचराचरग्रहणात्। अत्ता नाम खाने वाले का है उसी का नाम अन्नाद है चराचर नाम जड़ और चेतन सब जगत उसके ग्रहण करने से परमेश्वर का नाम अत्ता और अन्नाद है जैसे कि गूलर के फल में क्रमि उत्पन्न होके उसी में रहते हैं और उसी में नाश हो जाते हैं इससे परमेश्वर का नाम अत्ता अन्न और अन्नाद है वसनिवासे इस धातु से वसु शब्द सिद्ध होता है ॥ वसन्तिसर्वाणिभूतानियस्मिन्सवसुः। अथवा सर्वेषुभूतेषुयोवसतिसवसुः। सब आकाशादिक भूत जिसमें रहते हैं उसका नाम वसु है अथवा सब भूतों में जो वास कर्ता है उसका नाम वसु है इससे वसु परमेश्वर का नाम है ॥ रुदिरश्रुविमोचने। रुदेर्णिलोपश्च इस धातु से और इस सूत्र से रुद्र शब्द सिद्ध होता है ॥ रोदयत्यन्यायकारिणोजनान्सरुद्रः। रोवाता है दुष्ट कर्म करने वाले जीवों को जो उसका नाम रुद्र है इसमें यह श्रुति का भी प्रमाण है ॥ यन्मनसाध्ययति तद्वाचावदति यद्वाचावदति तत्कर्मणाकरोति यत्कर्मणाकरोति तदभिसम्पद्यते। यह यजुर्वेद के ब्राह्मण की श्रुति है इसका यह अर्थ है कि जो जीव मन से बिचारता है वही बचन से कहता है उसी को कर्त्ता है और जिसको कर्ता है उसी कोही प्राप्त होता है ऐसी परमेश्वर की आज्ञा है कि जो जैसा कर्म करै सो वैसाही फल पावै इस आज्ञा को कहने वाला परमेश्वर है उसकी आज्ञा सत्यही है इससे जो जैसा कर्ता है सो वैसाही प्राप्त होता है इससे क्या आया कि दुष्ट कर्मकारी जितने पुरुष हैं वे सब दुष्ट कर्मों के फल प्राप्त होके रोदनहीं कर्ते हैं इस कारण से परमेश्वर का नाम रुद्र है नारायण भी नाम परमेश्वर का है ॥ आपोनाराइतिप्रो

वा। आपोवैनरसूनवः। तायदस्यायनंपूर्वं तेननारायणःस्मृतः॥ यह श्लोक मनुस्मृति का है आप नाम जल का है और नारसंज्ञा भी जलको है और वे प्राण जलसंज्ञक हैं वे सब प्राण जिसका अयन नाम निवासस्थान है इससे परमेश्वर का नाम नारायण है सूर्य का अर्थ तो कर दिया है॥ चदिआल्हादे। इस धातु से चन्द्र शब्द सिद्ध होता है॥ चन्दतिसोयश्चन्द्रः। जो आल्हाद नाम आनन्द स्वरूप होय और जो मुक्त पुरुष जिसको प्राप्त हो के सदा आनन्द स्वरूपही रहै उसको दुःखका लेश कभी न होय इससे परमेश्वर का नाम चन्द्र है॥ मगिधातुर्गत्यर्थः। मङ्गेरलच् इससे मङ्गल शब्द सिद्ध हुआ॥ मङ्गतिसोयंमङ्गलः। जो आपतो मङ्गल स्वरूपहो हैं और सब जीवों के मङ्गल का वही कारण है इससे परमेश्वर का नाम मङ्गल है॥ बुधअवगमने। इस धातु से बुध शब्द सिद्ध होता है॥ बुध्यतेसोयंबुधः। जो आप तो बोध स्वरूप होय और सब जीवों के बोधों का कारण होय इससे परमेश्वर का नाम बुध है बृहस्पति का अर्थ प्रथम कर दिया है॥ ईशुचिरपूतीभावे। इस धातु से शुक्र शब्द सिद्ध होता है शुचिर्नाम। अत्यन्त पवित्र का जो आप तो अत्यन्त पवित्र होय औरों के पवित्रता का कारण होय इससे परमेश्वर का नाम शुक्र है चरगतिभक्षणयोः। इस धातु से शनैस् अव्यय पूर्व पदसे शनैश्चर शब्द सिद्ध होता है जो अत्यन्त धैर्यवान् होय और सब संसार के धैर्य का कारण होय इससे परमेश्वर का नाम शनैश्चर है रहत्यागे। इस धातु से राहु शब्द सिद्ध होता है जो सब से एकान्त स्वरूप होय जिसमें कोई भी मिला न होय और सब त्यागियों के त्याग का हेतु होय इससे परमेश्वर का नाम राहु है॥ कित निवासेरोगापनयनेच। इससे केतु शब्द सिद्ध होता है जो सब जगत् का निवासस्थान होय और सब रोगोंसे रहित होय मुमुक्षुओं के जन्म मरणादिक रोगों के नाशका हेतु होय

इसी परमेश्वर का नाम केतु है ॥ यज देवपूजासङ्गतिकरणदानेषु इस धातु से यज्ञ शब्द सिद्ध होता है ॥ इज्यतेसर्वैर्ब्रह्मादिभिर्जनैस्सयज्ञः । सब ब्रह्मादिक जिसकी पूजा करते हैं उसका नाम यज्ञ है ॥ यज्ञोवैविष्णुरितिश्रुतेः । यज्ञ का नाम विष्णु है और विष्णु नाम है व्यापक का इस श्रुति से भी परमेश्वर का नाम यज्ञ है ॥ हुदानादनयोः । इस धातु से होम शब्द सिद्ध होता है ॥ हूयतेसोयंहोमः । जो दान नाम देने के योग्य है और अदन नाम ग्रहण करने के योग्य है उसका नाम होम है सब दानों से परमेश्वर का जो दान नाम उपदेश का करना और सब ग्रहणों से जो परमेश्वर का ग्रहण नाम परमेश्वर में दृढ़ निश्चय का करना इस दान से वा ग्रहण से कोई भी उत्तम दान वा ग्रहण नहीं है इसी परमेश्वर का नाम होम है ॥ बन्धबन्धने इस धातु से बन्धु शब्द सिद्ध होता है जिसने सब लोक लोकांतर अपने २ स्थान में प्रबन्ध करके यथावत् रक्खे हैं और अपनी २ परिधि के ऊपर सब लोक भ्रमण करें इस प्रबन्ध के करने से किसी से किसी का मिलना न होय जैसे कि बन्धु बन्धु का सहायकारी होता है वैसेही सब पृथिव्यादिकों का धारण करना और सब पदार्थों का रचन करना इसी परमेश्वर का नाम बन्धु है ॥ पा (प्राने) पारक्षणे । इन दो धातुओं से पिता शब्द सिद्ध होता है जैसे कि पिता अपनी प्रजा के ऊपर कृपा और प्रीति को कर्त्ताही है तैसे परमेश्वर भी सब जगत के ऊपर कृपा और प्रीति कर्ता है इसी परमेश्वर का नाम सब जगत् का पिता है पितृणांपितापितामहः । जितने जगत में पिता लोग हैं उन सभों के पिता होने से परमेश्वर का नाम पितामह है ॥ पितामहानांपिता प्रपितामहः । जगत में जितने पिताओं के पिता हैं उन सभों के पिता के होने से परमेश्वर का नाम प्रपितामह है ॥ मा माने माङ्माने शब्देच । इन दो धातुओं से माता शब्द

सिद्ध होता है जैसे कि माता अपनी प्रजाका मान कर्ती है और लाड़न कर्ती है तैसेही सब जगत का मान और लाडन अत्यन्त कृपा और प्रीति करने से परमेश्वर का नाम माता है ॥ श्रोत्रस्यश्रोत्रंमनसोमनो यद्वाचोहवाचंसउप्राणस्यप्राणः। चक्षुसश्चक्षुरतिमुच्यधीराः प्रेत्याऽस्माल्लोकादमृताभवन्ति॥ यह केनोपनिषद् का बचन है इसका यह अभिप्राय है कि जैसे श्रोत्रादिक अपने २ विषय को ग्रहण कर्ते हैं तथा सबश्रोत्रादिकों का और श्रोत्रादिक विषयों को उनकी क्रिया को भी यथावत् जानता है इस्से परमेश्वर का नाम श्रोत्रका श्रोत्र है तथा मन का मन वाणी को वाणी प्राण का प्राण और चक्षु का चक्षु इस्से परमेश्वर के नाम श्रोत्र मन वाणीप्राण और चक्षु ये सब हैं। बोधयन् बुद्धिर्भवति चेतयन्चित्तम्भवति। नाम सब को चेताने वाले हैं इस्से परमेश्वर का नाम चित्त और बुद्धि है ॥ अहङ्कुर्वन्नहङ्कारोभवति। नाम अहङ्करोतीत्यहङ्कारः जो अव्याकृतादिक सब जगत् का मैंही कर्ता हूं ऐसा जो ज्ञान का होना इस्से परमेश्वर का नाम अहङ्कार है ॥ जीवप्राणधारणे। इस धातुसे जीव शब्द सिद्ध होता है ॥ जीवयतिसर्वान्प्राणिनःसजीवः। जो सब जीव और प्राणों का जीवन् धारण करने वाला है इस्से परमेश्वर का नाम जीव है ॥ आप्लृ व्याप्तौ। इस धातु से अप् शब्द सिद्ध होता है सब जगत में व्यापक होने से परमेश्वर का नाम आप है ॥ जनीप्रादुर्भावे इस्से अज शब्द सिद्ध होता है ॥ नजायतइत्यजः। जिसका जन्म कभी न हुआ न है और न होगा इस्से परमेश्वर का नाम अज है ॥ सत्यंज्ञानमनन्तंब्रह्म। यह तैत्तिरीयोपनिषद् का बचन है ॥ अस्तीतिसत् सतेहितंसत्यम्। जो सब दिन रहे जिसका नाश कभी न होय ॥ इस्से परमेश्वर का नाम सत्य स्वरूप है और ज्ञान स्वरूप होने से परमेश्वर का नाम ज्ञान है जिसका अन्त नाम सीमा कभी नहीं अर्थात्

देश काल और वस्तु का परिच्छेद नहीं जैसे कि मध्यदेश में दक्षिण देश नहीं दक्षिण देश में मध्यदेश नहीं भूतकाल में भविष्यत्काल नहीं और दोनों में वर्तमान काल नहीं तैसेही पृथिवी आकाश नहीं और आकाश पृथिवी नहीं ऐसा भेद परमेश्वर में नहीं है ऐसा भ्रमही है किन्तु सब देशों सब कालों और सब वस्तुओं में अखण्ड एक रस के होने से और कोई भी जिसका अन्त न लहके इससे परमेश्वर का नाम अनन्त है टुनदिसमृद्धौ। इससे आनन्द शब्द सिद्ध होता है जो सब समृद्धिमान् सदा आनन्दस्वरूप और मुमुक्षु मुक्तों को जिस की प्राप्ति से सब समृद्धि और नित्यानन्द के होने से परमेश्वर का नाम आनन्द है ॥ सत् शब्द का अर्थ सत्य शब्द के व्याख्यान में जान लेना और ज्ञान शब्द के व्याख्यान से चित् शब्द का अर्थ जान लेना इससे परमेश्वर को सच्चिदानन्द स्वरूप कहते हैं ॥ शुन्धशुद्धौ। इससे शुद्ध शब्द सिद्ध होता है जो आप तो शुद्ध होय जिसको कुछ मलीनता के संयोग का लेश कभी न होय और सब शुद्धियों के हेतु के होने से परमेश्वर का नाम शुद्ध है/बुध अवगमने। इस धातु से बुद्ध शब्द सिद्ध होता है जो सब बोधों का परमावधि नाम परम सीमा के होने से परमेश्वर का नाम बुद्ध है ॥ मुच्लृमोचने। इस धातु से मुक्त शब्द सिद्ध होता है जो आप तो सदा मुक्त स्वरूप होय और सब मुक्त होने वालों के मुक्ति के साक्षात् हेतु होने से परमेश्वर का नाम मुक्त है ॥ सदकारणवन्नित्यम्। जो सत् स्वरूप होय और कारण जिसका कोई भी नहीं इससे परमेश्वर का नाम नित्य है ये सब मिलके ऐसा एक नाम हो जायगा ॥ नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावः। जो स्वभावही से नित्य शुद्ध बुद्ध और मुक्त के होने से परमेश्वर का नाम नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव है ॥ डुकृञ्करणे। इस धातु से निराकार शब्द सिद्ध होता है ॥ निर्गतः आकारोयस्मात्स-

निराकारः । जिसका आकार कोई भी नहीं इससे परमेश्वर का नाम निराकार है ॥ अञ्जनं मायाऽविद्ययोर्नाम निर्गतमञ्जनं यस्मात् स निरञ्जनः । माया नाम छल और कपट का है क्योंकि यह पुरुष मायावी है इससे क्या जाना जाता है कि यह छली और कपटी है अविद्या अज्ञान का नाम है जिसको माया और अविद्या का लेश मात्र सम्बन्ध कभी न हुआ न है और न होगा इससे परमेश्वर का नाम निरञ्जन है ॥ गणसंख्याने । इस धातु से गण शब्द सिद्ध होता है इसके आगे ईश शब्द रखने से गणेश शब्द सिद्ध होता है ॥ गणानांसमूहानांजगतामीशस्सगणेशः । जो सब गणों का नाम संघातों का अर्थात सब जगतों का ईश नाम स्वामी होने से परमेश्वर का नाम गणेश है ॥ विश्वस्यईश्वरःविश्वेश्वरः । विश्व नाम सब जगत का ईश्वर होने से परमेश्वर का नाम विश्वेश्वर है ॥ कूटेतिष्ठतीतिकूटस्थः । जिसमें सब व्यवहार होय आप सब व्यवहारों में व्याप्त होय और सब व्यवहार का आधार भी होय परन्तु जिसके स्वरूप में व्यवहार का लेश मात्र भी विकार न होने से परमेश्वर का नाम कूटस्थ है जितने देव शब्द के अर्थ लिखे हैं वेही अर्थ देवी शब्द के जान लेना चाहिये ॥ शक्लृशक्तौ शक्नोतियया साशक्तिः । जो सब पदार्थों को रचने का सामर्थ्य जिसमें है इससे परमेश्वर का नाम शक्ति है ॥ लक्षदर्शनाङ्कनयोः । इससे लक्ष्मी शब्द सिद्ध होता है लक्षयति नाम दर्शयति चराचरञ्जगत् सालक्ष्मीः जो सब जगत् को उत्पन्न करके दिखावै उसका नाम लक्ष्मी है ॥ अङ्कयति चिन्हयति वा चराचरञ्जगत्सालक्ष्मीः । जो सब जगत के चिन्हों को अर्थात नेत्र नासिकादिक और पुष्प पत्र मूलादिक एक से एक विलक्षण जितने चिन्ह हैं उनके रचने और प्रकाशक के होने से परमेश्वर का नाम लक्ष्मी है ॥ लक्ष्यतेवेदादिभिःशास्त्रैर्ज्ञानिभिश्चसापिलक्ष्मीः । वेदादिक शास्त्र और ज्ञानियों

का लच्यनाम दर्शन के योग्य होने से परमेश्वर का नाम लच्मी है ॥ सृगतौ । इस से सरस् शब्द से मतुप् और ङीप् प्रत्यय के करने से सरस्वती शब्द सिद्ध होता है सरोनाम विज्ञानम् विज्ञानंनाम विविधंयतज्ज्ञानम् ततविज्ञानम् सरस् शब्द विज्ञान का वाचक है विविधनाम नानाप्रकार शब्द, शब्दों का प्रयोग और शब्दार्थ सबन्धों का यथावत् जो ज्ञान उसका नाम विज्ञान है ॥ सरोनाम विज्ञानंविद्यतेयस्याः सासरस्वती । सर नाम विज्ञान सो अखण्डित विद्यमान है जिसको उसका नाम सरस्वती है वैसा परमेश्वरही है इस से सरस्वती नाम परमेश्वर का है ॥ सर्वाःशक्तयोविद्यन्तेयस्यससर्वशक्तिमान् । जिसको सब शक्ति नाम सब सामर्थ्य विद्यमान होय उसका नाम सर्व शक्तिमान् है अर्थात जो किसी का लेशमात्र सामर्थ्य का आश्रय न लेवै और सब जगत उसका आश्रय कर्ता है इस से परमेश्वरका नाम सर्व शक्तिमान् है॥धर्म, न्याय, और पक्षपात का त्याग, ये तीन नाम एक अर्थ के वाचक हैं ॥ प्रमाणैरर्थपरीक्षणंन्यायः । यह न्यायशास्त्र सूत्रों के ऊपर वात्स्यायन मुनिकृत भाष्य का बचन है जो प्रत्यक्षादिक प्रमाणों से सत्य सत्य सिद्ध होय उसका नाम न्याय है ॥ न्यायकर्तुंशीलमस्यसोऽयंन्यायकारी । जिसका न्याय करनेही का स्वभाव होय और अन्याय करने का लेश मात्र सम्बन्ध कभी न होय ऐसा परमेश्वरही है इस से परमेश्वर का नाम न्यायकारी है ॥ दय दान गति रक्षण हिंसादानेषु । इस धातु से दया शब्द सिद्ध होता है ॥ दय्यतेयासादया । दान नाम अभय का देना गतिनाम यथावत् गुण दोषों का विज्ञान रक्षण नाम है सब जगत की रक्षा का करना हिंसा नाम दुष्ट कर्मकारियों को दण्ड का होना आदान नाम सब जगत के ऊपर वात्सल्य से कृपा का करना इसका नाम दया है ॥ दयाविद्यतेयस्यसदयालुः । उस दया के नित्य विद्यमान होने से

परमेश्वर का नाम दयालु है ॥ सदेवसोम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयम् । यह छान्दोग्योपनिषद् का बचन है इसका अभिप्राय यह है कि हे सौम्य हे श्वेतकेतो श्वेतकेतु के जो पिता उद्दालक वे उससे कहते हैं अग्रे नाम सृष्टि जब उत्पन्न नहीं भई थी तब एक अद्वितीय ब्रह्म परमेश्वरही था और कोई भी नहीं था वैसा कोई परमेश्वर से भिन्न न हुआ न है और न होगा सदेव नाम जिसका नाश किसी काल में कभी न होय ॥ इससे श्रुति में सदेव यह बचन का पाठ है ॥ एकम् एव और अद्वितीयम् ये तीनों शब्दों से यह अर्थ जाना जाता है कि ॥ सजातीयविजातीयस्वगतभेदशून्यंब्रह्मास्तीति । सजातीय भेद यह है कि मनुष्यसे भिन्न दूसरे मनुष्यों का होना विजातीय भेद यह है कि मनुष्य से भिन्न विजातीय पाषाण और स्वगत भेद यह है कि जैसे मनुष्य में नाक कान सिर पांव एक से एक भिन्न अवयव हैं तैसही परमेश्वर में तीन प्रकार के भेद नहीं जब सजातीय परमेश्वर से भिन्न कोई दूसरा वैसाही परमेश्वर होय तब तो सजातीय भेद होय ऐसा दूसरा कोई परमेश्वर नहीं है इससे परमेश्वर में सजातीय भेद नहीं है जैसे परमेश्वर का न्यायकारित्वादि गुण स्वाभाविक हैं तैसाही परमेश्वर से भिन्न अन्यायकारित्वादि विशिष्ट गुणवान् दूसरा विरुद्ध स्वभाव परमेश्वर होय तब तो परमेश्वर में विजातीय भेद आसके जैसा कि खुदा के विरुद्ध शैतान, ऐसा कभी नहीं इससे परमेश्वर में विजातीय परिच्छेद नहीं परमेश्वर निराकार और निरवयव है वैसही कोई प्रकार का भेद नहीं है इससे परमेश्वर में स्वगत परिच्छेद नहीं इससे परमेश्वर का नाम अद्वितीय है यही अद्वैत शब्द का अर्थ है ॥ द्वयोर्भावोद्विताद्वितैवद्वैतम् नविद्यतेद्वैतंयस्मिन्नयस्यवातदद्वैतम् । दोनों विद्यमान ईश्वरों का जो होना उसका नाम द्विता है द्विता जिसको कहते हैं उसी का नाम द्वैत है

नहीं है विद्यमान द्वैत जिस्में जिसको वा उसका नाम अद्वैत है अद्वितीय और अद्वैत परमेश्वरही का नाम है ॥ निर्गताः जन्मादयः अविद्यादयः सत्वादयः गुणाः यस्मात् सनिर्गुणः परमेश्वरः । जगत् के जन्मादिक अविद्यादिक और सत्वादिक गुणों से भिन्न हैं अर्थात जगत के जितने गुण हैं वे परमेश्वर में लेश मात्र सम्बन्ध से भी नहीं रहते इससे परमेश्वर का नाम निर्गुण है सच्चिनन्दादिगुणैः सहवर्तमानत्वात् सगुणः अपने नित्य स्वाभाविक सच्चिदानन्दादिक गुणों से सदा सहवर्तमान होनेसे परमेश्वर का नाम सगुण है कोई भी संसार में ऐसी वस्तु नहीं है जो कि केवल निर्गुण अथवा सगुण होय जैसे कि पृथिवी में गन्धादिक गुणों के योग होने से सगुण है और वही पृथिवी चेतन और आकाशादिकों के गुणों से रहित होने से निर्गुण भी है वैसेही अपने सर्वज्ञादिक गुणों से सदा सहित होनेसे परमेश्वर का नाम सगुण है और उत्पत्ति, स्थिति नाश जड़त्वादिक जगत के गुणों से रहित होने से परमेश्वर निर्गुण भी है वैसे सब जगहों में विचार कर लेना ॥ सर्वजगतोन्तर्यन्तुं शीलमस्यसोऽन्तर्यामी । जो सब जगत के भीतर बाहर और मध्य में सर्वत्र व्याप्त होके सब को जानते हैं और सब जगत को नियम में रखने से परमेश्वर का नाम अन्तर्यामी है/ न्यायकारी नाम के अर्थ में धर्म शब्द की व्याख्या कर दी है उससे जानलेना/ धर्मेण राजते सधर्मराजः अथवाधर्मंराजयतिप्रकाशयति सधर्मराजः । धर्म न्याय का और न्याय पक्षपात के त्याग का नाम है तिस धर्म से सदा प्रकाशमान होय अथवा सदा धर्म का प्रकाशकरने से परमेश्वरका नाम धर्मराज है ॥ सर्वञ्जगत्करोतीतिसर्वजगत् कर्त्ता सो सब जगत् का करने वाला होने से परमेश्वर का नाम सर्व जगत् कर्ता है ॥ निर्गतंभयंयस्मात्सनिर्भयः । जिसको किसी से किसी प्रकार का भय नहीं होता है इससे परमेश्वर का नाम

निमेय है ॥ नविद्यतेआदिःकारणंयस्यसःअनादिः । जिसका कारण कोई भी नहीं और अपने तो सब जगत का आदि कारण है इस्से परमेश्वर का नाम अनादि है ॥ अणोरणीयान्महतोमहीयान् । यह मण्डकोपनिषद् का वचन है जो सब सूक्ष्म पदार्थों से अत्यन्त सूक्ष्म के होने से परमेश्वर का नाम सूक्ष्म है और जो सब बड़ों में अत्यन्त बड़ा है इस्से परमेश्वर का नाम महान् है सब कल्याण गुणों से सदा युक्त रहने से परमेश्वर का नाम शिव है ॥ भगोविद्यतेयस्यसभगवान् । जो अनन्त ज्ञान अनन्त वैराग्यादिक नित्य गुणों से युक्त होने से परमेश्वर का नाम भगवान् है ॥ मानयतिचराचरञ्जगत् । अथवा सर्वैर्वेदादिभिश्शास्त्रैः शिष्टैश्चमन्यतेयः समनुः । जो सब जगत का मान करै अथवा सब वेदादिक शास्त्र और शिष्टलोक जिसको अत्यन्त मानैं इस्से परमेश्वर का नाम मनु है ॥ चिन्तितुंयोग्यश्चिन्त्यःनचिन्त्योऽचिन्त्यः। जो विषयासक्त पुरुषों से चिन्तने में नाम सम्यक जानने में नहीं आते इस्से परमेश्वर का नाम अचिन्त्य है परन्तु ऐसा ज्ञान ज्ञानियों को होता है कि सर्वव्यापक जो परमेश्वर सो हृदय देश में भी है उस हृदयस्थ व्यापक परमेश्वर को जानने से सब अनन्त जो परमेश्वर उस्का ज्ञान निश्चित होता है जैसा मेरे हृदय में परमेश्वर है वैसाही सर्वत्र है जैसे कि समुद्र के जल का एक बिन्दु जीभ के ऊपर रखने से उसके स्वादादिक गुणों के जानने से सब समुद्र के जल का ज्ञान हो जाता है वैसही परमेश्वर का दृढ़ ज्ञान ज्ञानियों को हो जाता है ॥ प्रमातुंयोग्यः प्रमेयः नप्रमेयः अप्रमेयः । जो परिमाणों से जिस्का परिमाण तोलन नहीं होता इतनाही परमेश्वर में सामर्थ्य है ऐसा कोई भी नहीं कह सक्ता और न जान सक्ता है इस्से परमेश्वर का नाम अप्रमेय है॥ प्रमदितुंनाम उन्मदितुंशीलमस्यसप्रमादी नप्रमादी अप्रमादी । जिस्का प्रमाद नाम उन्मत्तता

के लेशमात्र का भी सम्बन्ध नहीं है इस से परमेश्वर का नाम अप्रमादी है॥ विश्वंबिभर्तीतिविश्वम्भरः। जो विश्व का धारण और पोषण का कारण होने से परमेश्वर का नाम विश्वम्भर है कलसंख्याने। इस धातु से काल शब्द सिद्ध होता है॥ कलयतिसर्वञ्जगत् सकालः जो सब जगत की संख्या और परिमाण को आदि अन्त मध्य को यथावत् जानने से परमेश्वर का नाम काल है उसका काल कोई भी नहीं है और वह काल का भी काल है॥ प्रीञ्तर्पणेकान्तौच। इस धातु से प्रिय शब्द सिद्ध होता है॥ प्रीणातिसर्वान्धर्मात्मनः। अथवा प्रीयतेधर्मात्मभिःसप्रियः। जो सब शिष्टों को और मुमुक्षुओं को अपने आनन्द से प्रसन्न करदे अथवा जिस्को प्राप्त होके सब जीव प्रसन्न हो जांय इस्से परमेश्वर का नाम प्रिय है शिव नाम कल्याण का है जो आप तो कल्याण स्वरूप होय और जिस्को प्राप्त होके जीव भी कल्याण स्वरूप होय इस्से परमेश्वर का नाम शिवशङ्कर है इतने सौ १०० नाम परमेश्वर के विषय में लिख दिये परन्तु इन से भिन्न भी बहुत अनन्त नाम हैं उन का इसी प्रकार से सज्जन लोक विचार कर लेवें कुछ थोड़ा सा परमेश्वर के विषय में मैंने लिखा है किन्तु वेदादिक शास्त्रों में परमेश्वर के विषय में जितना ज्ञान लिखा है उसके आगे मेरा लिखना ऐसा है कि समुद्र के आगे एक बिन्दु भी नहीं और जो यह लिखा है सो केवल उन वेदादिक शास्त्रों के पढ़ने पढ़ाने की प्रवृत्ति के लिये लिखा है जब सब लोक उन शास्त्रों के पठन पाठन में प्रवृत्त होंगे और जब उन शास्त्रों को ऋषि मुनियों के व्याख्यान की रीति से पढ़के विचारेंगे तब सब लोगों को परमेश्वर और अन्य पदार्थों का भी यथावत् ज्ञान होगा अन्यथा नहीं इस प्रकरण का नाम मङ्गलाचरण है ऐसा कोई कहे कि मङ्गलाचरण आदि मध्य और अन्तमें किया जाता है ऐसा आप

भी करेंगे वा नहीं ऐसा हमको करना योग्य नहीं क्योंकि वह बात मिथ्या है आदि मध्य और अन्तमें जो मङ्गल करेगा तो आदि और मध्यके बीचमें अन्त और मध्य के बीच में अमङ्गल ही को लिखेगा इस्से यह बात मिथ्या है किन्तु शिष्टों को तो सदा मङ्गलही का आचरण करना चाहिये और अमङ्गल का कभी नहीं इसमें कपिल ऋषि का प्रमाण भी है ॥ मङ्गलाचरणंशिष्टाचारात् फलदर्शनाच्छ्रुतितश्चेति । इस सूत्र का यह अभिप्राय है कि मङ्गलनाम सत्य सत्य धर्म जो ईश्वर की आज्ञा उसका यथावत् आचरण उसका नाम मङ्गलाचरण है उस मङ्गलाचरण के करने वाले उनका नाम शिष्ट है उस शिष्टाचार के हेतु से मङ्गलही का आचरण करना चाहिये और जो मङ्गल को आचरण करने वाले हैं उन को मङ्गल रूपही फल होता है अमङ्गल कभी नहीं और श्रुति से भी यही आता है कि मङ्गलही का आचरण करना चाहिये ॥ यान्यनवद्यानिकर्माणि तानिसेवितव्यानिनोइतराणीति । इसका यह अभिप्राय है कि अनवद्य नाम श्रेष्ठही का है धर्मरूपही मङ्गलकर्म करना चाहिये अधर्म रूप अमङ्गल कर्म कभी न करना चाहिये इस्से क्या आया कि आदि अन्त और मध्यहीं में मङ्गलाचरण करना चाहिये यह बात मिथ्या जानी गई कि सदा मङ्गलाचरणही करना चाहिये अमङ्गल का कभी नहीं और आज काल के पण्डित लोक जो कि मिथ्या ग्रन्थ रचते हैं सत्यशास्त्रों के ऊपर मिथ्या टीका रचते हैं उन के आदि में जो श्रीगणेशायनमः शिवायनमः सीतारामाभ्यान्नमः दुर्गायैनमः राधाकृष्णाभ्यांनमः बटुकायनमः श्रीगुरुचरणारविन्दाभ्यान्नमः हनुमतेनमः । भैरवायनमः ॥ इत्यादिक लेख देखने में आते हैं इनको बुद्धिमान् मिथ्याही जान लेवें क्योंकि वेदों में और ऋषि मुनियों के किये ग्रन्थों में किसी स्थान में भी ऐसे लेख देखने में नहीं आते हैं

ऋषि लोक अथ शब्द का और ॐकार शब्द का पाठ आदि में करते हैं सो अधिकारार्थ अधिकारार्थ नाम इतनी विद्या होने से इस शास्त्र पढ़ने का अधिकारी होता है वा आनन्तर्यार्थ आनन्तर्यार्थ नाम एक शास्त्र को करके उसके पीछे दूसरे का जो रचना अथवा एक कर्म करके दूसरे कर्म को करना इस वास्ते ॐकार और अथ शब्द का पाठ ऋषि मुनि लोग करते हैं ॐकारं वेदेषु अथकारं भाष्येषु यह कात्यायन मुनिकृत प्रातिशाख्य का वचन है वैसेही मैं दिखाता हूं अथशब्दानुशासनम् अथेत्ययंशब्दोऽधिकारार्थः प्रयुज्यते यह व्याकरण महाभाष्य के प्रारम्भ का बचन है ॥ अथातोधर्मजिज्ञासा । यह भी मीमांसा शास्त्र के आरम्भ का बचन है ॥ अथातोधर्मंव्याख्यास्यामः । यह वैशेषिक दर्शन शास्त्र का प्रथम सूत्र है ॥ प्रमाणप्रमेयेत्यादि ॥ यह न्यायदर्शन शास्त्र के आरम्भ का वचन है ॥ अथयोगानुशासनम् यह पातञ्जलदर्शन के प्रारम्भ का बचन है ॥ अथत्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः । यह साङ्ख्यदर्शन शास्त्र के आरम्भ का बचन है ॥ अथातोब्रह्मजिज्ञासा । यह वेदान्तशास्त्र के प्रारंभ का बचन है ॥ ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत । यह छान्दोग्य उपनिषद के प्रारम्भ का बचन है ॥ ओमित्येतदक्षरमिदंसर्वंतस्योपव्याख्यानम् । यह माण्डूक्यउपनिषद का बचन है इत्यादिक और भी जानलेने, देखना चाहिए कि ऋषि लोगों ने और वेदों मेंभी अथ और ॐकार अन्यादिक भी चारों वेदों के आरम्भ में अग्नि तथा इट् और शम् ये शब्द देखने में आते हैं परन्तु श्रीगणेशायनमः इत्यादिक बचन किसी वेद में और ऋषियों के ग्रन्थों में भी नहीं देखने में आते हैं इस्से यह जाना जाता है कि वेदादिक शास्त्रों से और ऋषि मुनियों के किये ग्रन्थों से भी यह नवीन लोगों का प्रमादही है ऐसाही शिष्ट लोगों को जानना चाहिये और वैदिक लोक हरिःओम् इस

शब्द का पठन पाठन के आरम्भ में उच्चारण करते हैं यह सत्य है वा नहीं। यह भी मिथ्याही है क्योंकि ओंकार का तो क्वचित् ग्रन्थों के प्रारम्भ में पाठ देखने में आता है परन्तु हरिः शब्द का पाठ कहीं देखने में नहीं आता है इससे हरिः शब्द का पाठ तो मिथ्याही है पूर्वोक्त प्रातिशाख्य के प्रमाण से ओंकार तो उचितही है यह प्रकरण तो पूर्ण होगया इससे आगे शिक्षा के विषय में लिखा जायगा॥ इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचिते प्रथमः समुल्लासः सम्पूर्णः॥ १॥

अथशिक्षांवक्ष्यामः। मातृमान्पितृमानाचार्यवान्पुरुषोवेद इतिश्रुतिः। प्रथम तो सब जनों को माता से शिक्षा होनी उचितहै जन्म से लेके तीनवर्ष अथवा पांचवर्ष पर्यन्त अपने संतानों को सुशिक्षा अवश्य करै प्रथम तो सुश्रुत और चरक जो वैद्यक शास्त्र ग्रन्थ हैं उनकी रीति से शरीर के स्वभाव के अनुकूल दुग्धादिकों में ओषधों को मिला के वा संस्कार करके पुत्रों को और कन्याओं को पिलावै अथवा जो स्त्री उनको अपना दूध पिलावै सोई स्त्री उन श्रेष्ठ पदार्थों का भोजन करै जिससे कि उसीके दूध में उनका अंश आजायगा जिससे बालकों के भी शरीर की पुष्टि बल और बुद्धि वृद्धि होय और शुद्ध स्थान में उनको रखना चाहिये शुद्ध सुगन्ध देश में बालकों को भ्रमण कराना चाहिये जब उनका जन्म होय उसी दिन अथवा दूसरे तीसरे दिन धनाढ्य लोग और राजा लोग दासी वा अन्य स्त्री की परीक्षा करके कि उसके शरीर में रोग न होय और दूध में भी रोग न होय उसके पास बालक को रख देवैं और वही स्त्री उनका पालन करै परन्तु माता उस स्त्री के और बालकों के भी शिक्षा के ऊपर दृष्टि रक्खै और जो असमर्थ लोग हैं जिनको दासी वा अन्यस्त्री रखने का सामर्थ्य न होय तो छेरी

अथवा गाय वा भैंसो के दूध से बालकों का पोषण करें जहां छेरी आदिकों का अभाव होय वहां जैसा होसके वैसा करें और अञ्जनादिकों से नेत्रादिकों कोभी पुष्टिसे रोग निवारणार्थ करें परन्तु बालकों की जो माता है सो उन्हों को दूध कभी न देवे स्त्रीके दूध देने से स्त्रीका शरीर निर्बल और क्षीण होजायगा जो स्त्री प्रसूत हुई वह भी अपाने शरीर की रक्षा के लिये श्रेष्ठ भोजनादिक करै जो कि औषधवत् होय जिस्से फिर भी युवावस्था की नाईं उसका शरीर होजाय और दूध के रक्षा के वास्ते उक्त वैद्यकशास्त्र में जैसा वह औषध सो यथावत् संपादन करके स्तन के ऊपर लेपन करके उस मार्ग को रोकदेवै जिस्से कि दूध न निकल जाय इस्से स्त्रीका शरीर फिरभी पूर्ण बलवान् होजाय जैसे कि युवती का शरीर उसके तुल्य उसका भी शरीर होजायगा इस्से जो सन्तान होगा सो वैसाही फिर बलवान् और निरोग होगा जो उक्त वैद्यकशास्त्र में जैसी कि रीति लिखी है उसी प्रकार के लेपन से योनि का संकोच और योनि का शोधन भी स्त्री लोग करैं इस्से अपने पति का भी बल क्षीण न होगा जब कुछ बालक लोग समर्थ होंय तब उनको चलने बैठने मलमूत्र के त्याग और शौच नाम पवित्रता की शिक्षा करैं और हस्त पाद मुख नेत्रादिकों की सुचेष्टा की शिक्षा करैं जिस्से कि किसी अङ्ग से वे बालक लोग कुचेष्टा न करैं और खाने पीने की भी यथावत् शिक्षा करैं बालक की जिह्वा का शोधन करावैं क्योंकि कोमल जिह्वा के होने से अक्षरों का उच्चारण स्पष्ट होगा औषधों से और दन्तधावन से फिर बालक को बोलने की शिक्षा करैं तब माता श्रेष्ठ वाणी से स्थान और प्रयत्न के साथ भाषण करैं जैसे कि प इसका ओष्ठ तो स्थान है और दोनों ओष्ठों का मिलाना सो स्पर्श प्रयत्न है ओष्ठ स्थान के और स्पर्श प्रयत्न के बिना पकार का शुद्ध उच्चारण कभी न होगा

ऐसेही सब वर्णों का स्थान और प्रयत्न ह्रस्व और दीर्घ विचार के माता उच्चारण करै वैसाही बालकों को करावै जिस्से कि वे बालक शुद्ध उच्चारण करैं गमन, आसन, सोना, बैठना, इस्को भी शिक्षा माता करै जिस्से कि सब कर्म युक्त युक्तही करैं और यह भी उपदेश उनको माता करै कि माता पिता तथा ज्येष्ठ बन्धुआदिक मान्य लोगों को नमस्कार बालक लोग करैं रोदन हास्य और क्रीडासक्त भी वे न होवैं बहुत हर्ष शोक भी न करैं उपस्थ इन्द्रिय को हस्तसे नेत्र नासिकादिकों के बिना प्रयोजन से मर्द्दन अथवा स्पर्श न करैं क्योंकि निमित्त से बिना उपस्थेन्द्रिय का मर्द्दन और बारम्बार स्पर्श के करने से वीर्य्य की क्षीणता होगी और हस्त दुर्गन्ध युक्त भी होगा इस्से व्यर्थ कर्म करना न चाहिये इतनी शिक्षा बालकों को पांचवर्ष तक करना चाहिये उसके पीछे माता और पिता अक्षर लिखने की और पढ़ने की शिक्षा करैं देवनागराक्षर और अन्यदेशों के भाषाक्षरों का लिखने पढ़ने का अभ्यास ठीक २ करावैं स्पष्ट लिखने पढ़ने का अभ्यास होजाय इस्से यह भी अवश्य शिक्षा करना चाहिये और भूत प्रेतादिक हैं ऐसा विश्वास बालक लोग कभी न करैं क्योंकि यह बात मिथ्याही है जब भूत प्रेतादिकों की बात सुनके उनके हृदय में मिथ्या भय होजाता है तब किसी समय में अन्धकार होनेसे शृगालादिक पशु पक्षि और मूषक मार्जारादिक अथवा चोर वा अपने शरीर की छाया देखने से शृगालादिकों के भागने का शब्द सुनके उनके हृदय में पूर्व सुनने के संस्कार के होने से अत्यन्त भूत प्रेतादिकों का विश्वास होने से भयभीत होके कम्प और ज्वरादिक होते हैं इस्से बहुत दुःख से पीड़ित होते हैं इस्से यह शङ्का का बहुत रीति से निवारण करना चाहिये जिस्से कि उनको कभी भूत प्रेतादिकों के होने में निश्चय न होय वैद्यक शास्त्र में बहुत से मानस

रोग लिखे हैं वे जब होते हैं तब उन्मत्त होके अन्यथा चेष्टा मनुष्य कर्ता है तब निर्बुद्धि लोग जानते हैं और कहते हैं कि इसके शरीर में भूत वा प्रेत आगया है फिर वे मिलके बहुत से पाखण्ड कर्ते हैं कि मैं मन्त्र से झाड़ झूड़ के पांच रुपैया मुझको दे तो अभी निकाल देऊं फिर उनके सम्बन्धी लोग उन पाखण्डियों से कहते हैं कि हम पांच रुपैया देंगे परन्तु इसके भूत को जल्दी आप लोग निकाल देवें फिर वे मिल के मृदङ्ग झांझ इत्यादिकों को लेके उसके पास आके बजाते गाते हैं फिर एक कोई पाखण्ड से उन्मत्त होके नांचता कूदता है कि इसके शरीर में बड़ा भूत प्रविष्ट हुआ है वह भूत कहता है कि मैं न निकलूंगा इसका प्राण लेही के निकलूंगा वह नांचने कूदने वाला कहता है कि मैं देवी वा भैरव हूं मुझ को एक बकरा और मिठाई, वस्त्र देओ तो मैं इस भूत को निकाल देऊं तब उनके सम्बन्धी कहते हैं कि जो तुम चाहो सो लेलो परन्तु इस भूत को आप निकाल देवें सब लोग उस उन्मत्त के गोड़ में गिर पड़ते हैं तब तो उन्मत्त बहुत नांचता कूदता है परन्तु कोई बुद्धिमान् उसको एक थपेड़ा वा एक जूता मार देवे तब शीघ्रही उसकी देवी वा भैरव भाग जाते हैं क्योंकि वह केवल धूर्त धनादिक हरण करने के लिये पाखण्ड कर्ता है जो नाममात्र तो पण्डित हैं ज्योतिश्शास्त्र का अभिमान कर्के कहते हैं कि सूर्यादि ग्रह क्रूर इनके ऊपर आये हैं इससे यह पुरुष पीड़ित है परन्तु इसके ग्रहों की शान्ति के लिये दान पाठ और पूजा जो करावे तो ग्रहों की शान्ति होजाय अन्यथा शान्ति न होगी उनको बहुत पीड़ा होगी और इनका मरण होजाय तो आश्चर्य नहीं इनसे कोई पूंछे कि सूर्यादिक ग्रह सब आकाश में रहते हैं वे सब लोक हैं जैसा कि पृथिवी लोक है कैसे वे पीड़ा कर सकते हैं और जो तापादिक उनके तेज हैं सब के ऊपर

समानही प्रकाश है कैसे एक के ऊपर क्रूर होके दुःख दे और दूसरे को शान्त होके सुख दे यह बात कभी नहीं हो सक्ती है जितने धनाढ्य और राजा लोग हैं उनके ऊपर सब मिलके आपके ऊपर क्रूर ग्रह आये हैं ऐसा कहते हैं क्योंकि दरिद्रों से तो इतना धन नहीं मिल सकता है इससे उन धनाढ्यों के पास जाके बारम्बार ग्रहों की कथा से भय देखा के बहुत धन को हरण कर लेते हैं जो कोई बुद्धिमान् उनसे ऐसा कहे कि आप पण्डित लोग अपने घरमें ग्रहों की शान्ति के लिये पूजा पाठ दान वा पुण्य क्यों नहीं कराते हैं तब वे सब पुरोहित पण्डितादिक मिलके कहते हैं कि तूं नास्तिक होगया इस रीति से भय देखाके उनको उपदेशादिक बहुत प्रकार कहके उसी मार्ग में लेआते हैं परन्तु कोई बुद्धिमान् होता है सो उनके जाल में नहीं आता है वैसेही मुहूर्त विषय अथवा यात्रा में जाल रचते हैं धन लेने के लिये तथा जन्मपत्र का जो रचन होता है सो भी मिथ्या है वह जन्मपत्र नहीं है किन्तु शोकपत्र है ऐसा जानना चाहिये क्योंकि जन्मपत्र रचके पण्डित उसका फल उनके पास आके कहते हैं इस बालक का १० वां वर्ष अथवा ३० वां वर्ष जब आवेगा तब इसके ऊपर बहुत से क्रूर ग्रह आवेंगे यह बहुत सी पीड़ा पावेगा यह मरजावे तो भी आश्चर्य नहीं इस बात को सुनके बालक के माता अथवा पितादिक शोकातुर हो जाते हैं इससे इस पत्र का नाम शोक पत्रही रखना चाहिये कभी इसके ऊपर विश्वास न करना चाहिये इसको बुद्धिमान् मिथ्याही जानें रोग निवृत्ति के लिये औषधादिक अवश्य करें इस रीति से बालकों को प्रथमही माता वा पिता को शिक्षा का निश्चय करना वा कराना उचित है मारण मोहन उच्चाटन वशीकरणादिक विषय में सत्यत्व प्रतिपादन कहते हैं सो भी मिथ्या जानना चाहिये और तांबे का सोना कर्ता है

पारे की चांदी बनाता है यह भी बात मिथ्या जानना चाहिए फिर उन बालकों को हृदय में अच्छी रीति से यह बात निश्चय कराना चाहिये कि वीर्य की रक्षा करने में निश्चित बुद्धि होय क्योंकि वीर्य की रक्षा से बुद्धि बल पराक्रम और धैर्यादिक गुण अत्यन्त बढ़ते हैं इस्से बालकों को बहुत सुख की प्राप्ति होती है इसमें यह उपाय है कि विषयों की कथा और विषयी लोगों का सङ्ग विषयों का ध्यान कभी न करैं श्रेष्ठ लोगों का सङ्ग विद्या का ध्यान और विद्या ग्रहण में प्रीति सदा होने से विषयादिकों में कभी प्रवृत्त न होंगे जब तक ब्रह्मचर्य की पूर्ति और विवाह का समय न होय तब तक उन बालकों का माता पितादिक सर्वथा रक्षा करैं और ऐसा यत्न करैं कि जिसमें अपने बालक मूर्ख न रहैं किसी प्रकार से भ्रष्ट भी न होंय ऐसे ७ सात वर्ष वा ८ आठवर्ष तक माता पिता यत्न करैं प्रथम जो श्रुति लिखी थी कि मातृमान् नाम माता शिक्षितः प्रथम माता से उक्त प्रकार से अवश्य शिक्षा होनी चाहिये पितृमान् नाम पिता से भी शिक्षा होनी चाहिये आचार्यवान् नाम पांचवर्ष के पीछे वा ८ आठवर्ष के पीछे आचार्य की शिक्षा होनी चाहिये जब तीनों से यथावत् शिक्षित पुत्र वा कन्या होंगे तब शिष्ट होंगे अन्यथा पशुवत् होंगे मनुष्य गुण जो हैं विद्यादिक वे कभी न आवेंगे और विद्या रूप धन की सन्तान को प्राप्ति कराना यही माता पिता और आचार्य का मुख्य फल है कि उनका लाड़न कभी न करना कराना चाहिये क्योंकि लाड़न में बहुत से दोष हैं और ताड़न में बहुत से गुण हैं इसमें व्याकरण महाभाष्य की कारिका का प्रमाण है ॥ सामृतैःपाणिभिर्घ्नन्ति गुरवोनविषोक्षितैः ; लाड़नाश्रयिणोदोषा स्ताड़नाश्रयिणोगुणाः ॥ इसका यह अर्थ है कि सामृतैः नाम अमृत के तुल्य ताड़न है जैसा कि हांथ से किसी को कोई अमृत देवै वैसाही बालकों का ताड़न

है क्योंकि जो वे ताड़न से श्रेष्ठ शिक्षा को और सद्विद्या को ग्रहण करेंगे तब उनको प्रतिष्ठा सुख और मान सर्वत्र प्राप्त होगा उस्से धन और आजीविका भी उनको सर्वत्र होगी वे बहुत सुखी होंगे सामृतैः पाणिभिर्घ्नन्ति नाम सदा गुरु लोक ताड़ना करते हैं न विषोक्षितैः नाम विष से युक्त जो हाथ उस्से जो स्पर्श वह दुःखही का हेतु होता है वैसा अभिप्राय उनका नहीं है किन्तु हृदय में तो कृपा परन्तु केवल गुण ग्रहण कराने के लिये माता पिता तथा गुर्वादिक ताड़न करते हैं क्योंकि लाड़ना श्रयिणोदोषाः नाम जो अपने सन्तानों का लाड़न करेंगे तो वे मूर्ख रहजांयगे पीछे जो कुछ उनके अधिकार में धन वा राज्य रहेगा उसका वे न पालन करेंगे न अधिक वृद्धि होगी उन पदार्थों का नाशही करदेंगे फिर वे अत्यन्त दुःखी होजांयगे और दूसरे के आधीन रहेंगे यह दोष माता पिता तथा गुर्वादिकों का गिना जायगा इस्से क्या आया कि उनका लाड़न क्या किया किन्तु उनको मारही डाला ताड़ना श्रयिणोगुणाः नाम अवश्य सन्तानों को गुण ग्रहण कराने के लिए सदा ताड़नहीं कराना चाहिये क्योंकि ताड़न के बिना वे श्रेष्ठ स्वभाव और श्रेष्ठ गुणों को कभी ग्रहण न करेंगे इस्से वैसाही करना चाहिये जिस्से अपने सन्तान उत्तम होंय उनको विद्या और श्रेष्ठ गुणों काही आभूषण धारण कराना चाहिये और सुवर्णादिकों का कभी नहीं क्योंकि विद्यादिक गुण का जो आभूषण धारना है सोई आभूषण उत्तम है और सुवर्णादिकों का आभूषण का जो धारण है उसमें गुण तो नहीं है किन्तु दोषही बहुत से हैं क्योंकि चौरादिक भी उनको मारके आभूषणों को लेजाते हैं और आभूषणों को धारण करने वाले को बहुत अभिमान रहता है जो कोई उसके सामने विद्यावान् भी पुरुष होय तो भी वह तृण के बराबर उसको गणना करेगा

और अभिमान से गुण ग्रहण भी न करैगा और जब वे सोते हैं तब चोर आके उनको मार डालते हैं अथवा अङ्गभङ्ग करके आभूषण लेजाते हैं इस्से सुवर्णादिकों का आभूषण धारना उचित नहीं और कभी चोरी न करैं किसी का पदार्थ उसकी आज्ञा के बिना एक तृण वा पुष्प भी ग्रहण न करैं क्योंकि जो तृण की चोरी करेगा सो सब की चोरी करेगा फिर उसको राजगृह में दण्ड होगा अप्रतिष्ठा भी होगी और निन्दा होगी उसका विश्वास कोई भी न करेगा इस्से मनसे भी कभी चोरी करने की इच्छा न करनी चाहिये और मिथ्या भाषण भी करना न चाहिये क्योंकि मिथ्या भाषण जो करेगा सो सब पाप कर्मों को भी करेगा और उसका विश्वास कोई भी न करेगा प्रतिज्ञा भी मिथ्या न करनी चाहिये प्रथम तो विचार करके प्रतिज्ञा करनी चाहिये जब प्रतिज्ञा की तब उसका पालन यथावत् करना चाहिये प्रतिज्ञा क्या होती है कि नियम से जो कहना उस वक्त में आपके पास आऊंगा वा आप मेरे पास आवैं इस पदार्थ को मैं देऊंगा वा लेऊंगा सो जैसा कहै वैसाही प्रतिज्ञा पालन करै अन्यथा कभी न करै प्रतिज्ञा की जो हानि है सो मनुष्य का महादोष है इस्से प्रतिज्ञा की हानि कभी न करनी चाहिये अभिमान कभी न करना चाहिये अभिमान नाम अहङ्कार का है मैं बड़ा हूं मेरे सामने कोई कुछ भी नहीं इस्से क्या होगा कि कभी वह गुण ग्रहण तो न करेगा परन्तु मूर्खही रहजायगा छल कपट वा कृतघ्नता कभी न करनी चाहिये क्यों कि छल, कपट, और कृतघ्नता से, अपनाही हृदय दुःखित होता है तो दूसरे की क्या कथा और उसका उपकार कोई भी न करेगा छल कपट और कृतघ्न तो उसको कहते हैं कि हृदय में तो और बात बाहर और बात कृतघ्नता नाम कोई उपकार करै उस उपकार को न मानना सो कृतघ्नता कहाती है क्रोध

भी कभी न करना क्रोध से अपने आपहीकी हानि करदेवै और को भी हानि करले दूस्से क्रोध भी न करना चाहिये किसी से कटुक बचन न कहै किन्तु मधुर बचनही सदा कहै बिना बोलाये किसी से बोले नहीं और बहुत बकवाद कभी न करै जितना कहना चाहिये इतनाही कहै जिस्से कहना वा सुनना सो नम्रता सेही करै अभिमान से कभी नहीं किसी से बाद विवाद न करै नेत्र नासिकादिकों से चपलता कभी न करै जहां किसी के पास जाय वहां उसको पहिलेही नमस्कार करै और नीच आसन में बैठे न किसी को आड़ होय न किसी को दुःख होय न कोई उसको उठावै जिस्से गुण ग्रहण करै उसको पूर्व नमस्कार करै उस्से विरोध कभी न करै उसको प्रसन्न करके जैसे गुण मिले वैसाही करै पीछे भी मरण तक उसके गुण को माने जिस गुण को ग्रहण करै उस गुण को आच्छादन कभी न करै किन्तु उस गुण का प्रकाशही करना उचित है किसी पाखण्डी का विश्वास कभी न करै सदा सज्जनों का सङ्ग करै दुष्टों का कभी नहीं अपने माता और पिता वा आचार्य की आज्ञा पालन सदा करै परन्तु जो आज्ञा सत्यधर्म सम्बन्धी होय तो करै और जो धर्म विरुद्ध आज्ञा होय तो कभी न करै परन्तु सेवा के लिये जो माता पिता और आचार्य आज्ञा देवैं उस्को अपने सामर्थ्य के योग्य जरूर करै और माता पिता धर्म सम्बन्धी स्लोको को अथवा निघंटु वा अष्टाध्यायी को कण्ठस्थ करा देवैं परन्तु सत्य सत्य धर्म के विषय में और परमेश्वर के विषय में दृढ़ निश्चय करा देवैं जैसे कि पहिले प्रकरण में परमेश्वर के विषय में लिखा है वैसा उसी को उपासना में दृढ़ निश्चय करा देवैं और वस्त्र धारने की यथावत् शिक्षा कर देवैं जैसा कि धारना चाहिये भोजन की भी जितनी क्षुधा होय इस्से कुछ न्यून भोजन करैं जिस्से कि उनके शरीर में रोग न होय गहरे जल में कभी

स्नान के लिये प्रवेश न करै क्योंकि जो गम्भीर जल होगा और तरना न जानेगा तो डूब के मर जायगा अथवा जलजन्तु होगा तो खालेगा वा काटलेगा इस्से दुःखही होगा सुख कभी न होगा इसमें मनुस्मृती का प्रमाण भी है ॥ नाविज्ञातेजलाशये। इस्का यह अभिप्राय है कि जिस जल की परीक्षा यथावत् जो न जाने सो स्नान के लिये उसमें प्रवेश कभी न करै किन्तु जल के तट पै बैठ के स्नान करै और बहुत कूदना फांदना न करै जिस्से कि हाथ पैर टूट जाय ऐसा न करै और मार्ग में जब चले तब नीचे दृष्टि करके चलैं क्योंकि कांटा और नीचा ऊंचा, जीवजंतु देखके चलै जल को छान के पिये और बचन को विचार के सत्यही बोले जो कुछ कर्म करै उसको पहिले विचारही के आरंभ करै इस्से क्या सुख वा दुःख हानि वा लाभ होगा किस रीति से इसको करना चाहिये कि जिस रीति से परिश्रम तो न्यून होय और उसकी सिद्धि अवश्य होय इस रीति से विचार करके कर्म का आरम्भ करना चाहिये इसमें मनुस्मृति के बचन का प्रमाण भी है ॥ दृष्टिपूतंन्यसेत्पादं वस्त्रपूतंजलंपिबेत्। सत्य पूतांवदेद्वाचं मनःपूतंसमाचरेत् ॥ दृष्टिपूतं नाम आंख से देख देख के आगे चले, वस्त्रपूतं नाम वस्त्र से छान के जल को पीवै क्योंकि जल में केश अथवा तृण वा जीव रहते हैं छानने से शुद्ध होजाता है इस्से जल छानही के पीना चाहिये, सत्यपूता म्वदेद्वाचम् नाम सत्य से दृढ़ निश्चय करके यही कहना सत्य है तब विचार करके मुख से निकालना चाहिये क्योंकि बचन निकाला जो गया सो जो मिथ्या होजायगा तब बुद्धिमान् लोग उसको जान लेंगे कि यह विचारशून्य पुरुष है इस्से विचार करके सत्यही कहना चाहिये, मनःपूतंसमाचरेत् नाम मनसे विचार करके कर्म का आरम्भ करना चाहिये कि भविष्यत्काल में इसका फल क्या होगा ऐसा जो विचार करके कर्म न करेगा

उसको पश्चात्ताप ही होगा और सुख न होगा इस से जो कुछ करना चाहिये सो विचार के करना चाहिये इस रीति से आठ वर्ष तक बालकों को शिक्षा होनी चाहिये जो कुछ और शिक्षा लिखी है सत्य भाषणादिक सो तो सब को करना उचित है जिन के सन्तान सुशिक्षित होंगे वेही सुख पावेंगे और जिनके सन्तान सुशिक्षित न होंगे वे कभी सुख न पावेंगे यह बाल शिक्षा तो कुछ कुछ शास्त्रों के आशयों से लिख दी परन्तु सब शिक्षा का ज्ञान जब वेदादिक सत्य शास्त्रों को पढ़ेंगे और विचारेंगे तब होगा इसके आगे ब्रह्मचर्याश्रम और गुरु शिष्य की शिक्षा लिखी जायगी उसी के भीतर पढ़ने पढ़ाने की शिक्षा भी लिखी जायगी ॥ इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषाविरचिते द्वितीयःसमुल्लासः सम्पूर्णः ॥ २ ॥

अथाध्ययनाध्यापनविधिं व्याख्यास्यामः । आठ वर्ष का पुत्र और कन्याओं को पाठशाला में पढ़ने के लिये आचार्य के पास भेज देवें अथवा पांचवे वर्ष भेजदेवें घरमें कभी न रक्खें परंतु ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य इनके बालकों का यज्ञोपवीत घरमें होना चाहिये पिता यथावत् यज्ञोपवीत करे पिताही उनको गायत्री मन्त्र का उपदेश करे गायत्री मन्त्र का अर्थ भी यथावत् जना देवे गायत्री मन्त्र में जो प्रथम ओंकार है उसका अर्थ प्रथम समुल्लास में लिखा है वैसाही जान लेना ॥ भूरितिवै-प्राणः भुवरित्यपानः स्वरितिव्यानः । यह तैत्तिरीयोपनिषद का वचन है ॥ प्राणयतिचराचरञ्जगत्सप्राणः । जो सब जगत् के प्राणों का जीवन कराता है और प्राण से भी जो प्रिय है इस से परमेश्वर का नाम प्राण है सो भूः शब्द प्राण का वाचक है और भुवः शब्द से अपान अर्थ लिया जाता है ॥ अपानयति सर्वंदुःखंसोपानः । जो मुमुक्षुओं को और मुक्तों को सब दुःखसे छोड़ा के आनन्द स्वरूप रक्खे इस से परमेश्वर का नाम अपान

है सो अपान भुवः शब्द का अर्थ है व्यानयतिसव्यानः । जो सब जगत् के विविध सुख का हेतु और विविध चेष्टा का भी आधार इस्से परमेश्वर का नाम व्यान है सो व्यान अर्थ स्वः शब्द का जानना तत् यह द्वितीया का एक बचन है सवितुः षष्ठी का एक बचन है वरेण्यं द्वितीया का एक बचन है ॥ भर्गः २ का एक बचन है ॥ देवस्य ६ का एक बचन है धीमहि क्रिया पद है धियः द्वितीया का बहुबचन है यः प्रथमा का एक बचन है नः षष्ठी का बहु बचन है, प्रचोदयात् क्रिया पद है, सविता शब्द का और देव शब्द का अर्थ प्रथम समुल्लास में कह दिया है वहीं देख लेना ॥ वर्तुमर्हंवरेण्यं । नाम अति श्रेष्ठम् भर्गो नाम तेजः तेजोनाम प्रकाशः प्रकाशोनाम विज्ञानम् वर्तुं नाम स्वीकार करने को जो अत्यन्त योग्य उसका नाम वरेण्य है और अत्यन्त श्रेष्ठ भी वह है धी नाम बुद्धि का है नः नाम हमलोगों की प्रचोदयात् नाम प्रेरयेत् हे परमेश्वर हेसच्चिदानन्दानन्त स्वरूप हेनित्य शुद्धबुद्ध मुक्त स्वभाव हेकृपानिधे हेन्यायकारिन्हेअज हे निर्विकार हेनिरञ्जन हेसर्वान्तर्यामिन् हेसर्वाधार हेसर्वजगत्पितः हेसर्वजगदुत्पादक हेअनादे हेविश्वम्भर सवितुर्देवस्य तवयद्वरेण्यं भर्गः तद्वयंधीमहि तस्य धारणं वयं कुर्वीमहि हेभगवन् यः सविता देवः परमेश्वरः सभवान् अस्माकंधियः प्रचोदयादित्यन्वयः हे परमेश्वर आप का जो शुद्ध स्वरूप ग्रहण करने के योग्य जो विज्ञान स्वरूप उसको हम लोग सब धारण करें उसका धारण ज्ञान उसके ऊपर विश्वास और दृढ़ निश्चय हमलोग करें ऐसी कृपा आप हम लोगों पर करें जिस्से कि आप के ध्यान में और आप की उपासना में हम लोग समर्थ होंय और अत्यन्त श्रद्धालु भी होंय जो आप सविता और देवादिक अनेक नामों के वाच्य अर्थात अनन्त नामों के अद्वितीय जो आप अर्थ हैं नाम सर्वशक्तिमान् सो आप हमलोगों की बुद्धियों

को धर्म विद्या मुक्ति और आप की प्राप्ति में आपही प्रेरणा करैं कि बुद्धि मलिन हम लोग उसी उक्त अर्थ में तत्पर और अत्यन्त पुरुषार्थ करने वाले होंय इस प्रकार की हम लोगों की प्रार्थना आप से है सो आप इस प्रार्थना को अङ्गीकार करैं यह संक्षेप से गायत्री मन्त्र का अर्थ लिख दिया परन्तु उस गायत्री मन्त्र का वेद में इस प्रकार का पाठ है ॥ ओंभूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यधीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् । इस मन्त्र को पुत्रों को और कन्याओं को भी कण्ठस्थ करा देवें और इसका अर्थ भी हृदयस्थ करादेवें परंतु कन्या लोगों को यज्ञोपवीत कभी न कराना चाहिये और संस्कार तो सब करना चाहिये योगशास्त्र की रीति से प्राणों के और इन्द्रियों के जीतने के लिये उपाय का उपदेश करैं सो यह योगशास्त्र का सूत्र है ॥ प्रच्छर्द्दनविधारणाभ्यांवाप्राणस्य । इसका यह अर्थ है कि छर्द्दन नाम वमन का है जैसे कि मक्खी वा और कुछ पदार्थ खाने में उदर से मुख द्वारा अन्न बाहर निकल जाता है और प्रकृष्टञ्चतच्छर्द्दनञ्च प्रच्छर्द्दनम् अत्यन्त जो बल से वमन का होना उसका नाम प्रच्छर्द्दन है ॥ विधारणंनाम विरुद्धञ्चतद्धारणञ्च विधारणम् । जैसे कि उस अन्न का धारण पृथिवी में होता है उसको देख के घृणा होती है तो ग्रहण की इच्छा कैसे होगी कभी न होगी यह दृष्टान्त हुआ परन्तु दृष्टान्त इसका यह है कि नाभि के नीचे से अर्थात मूलेन्द्रिय से लेके धैर्य से अपान वायु को नाभि में लेआना नाभि से अपान को और समान को हृदय में लेआना हृदय में दोनों व और तीसरा प्राण इन तीनों को बल से नासिका द्वार से बाहर आकाश में फेंक देना अर्थात जो वायु कुछ नासिका से निकलता है और भीतर जाता है उन सब का नाम प्राण है उसको मूलेन्द्रिय नाभि और उदर को ऊपर उठाले तब तक वायु न निकले पोछे हृदय में इकट्ठा करके

जैसे कि वमन में अन्न बाहर फेंका जाता है वैसे सब भीतर के वायु को बाहर फेंक दे फिर उसको ग्रहण न करै जितना सामर्थ्य होय तब तक बाहरही वायु को रोक रक्खै जब चित्त में कुछ क्लेश होय तब बाहर से वायु को धीरे धीरे भीतर लेजाय फिर उसको वैसाही बारम्बार २० बार भी करेगा तो उसका प्राण वायु स्थिर होजायगा और उसके साथ चित्त भी स्थिर होगा बुद्धि और ज्ञान बढ़ेगा बुद्धि इस प्रकार की तीव्र होगी कि बहुत कठिन विषय को भी शीघ्र जान लेगी शरीर में भी बल पराक्रम होगा और वीर्य भी स्थिर होगा तथा जितेन्द्रियता होगी सब शास्त्रों को बहुत थोड़े काल में पढ़लेगा इस्से यह दोनों उपदेशों को यथावत् अपने सन्तानों को करदे फिर उस्को आचमन का उपदेश करै हाथ में जल लेके गायत्री मन्त्र मन से पढ़के तीनबार आचमन करै ॥ अंगुष्ठमूलस्यतले ब्राह्मन्तीर्थं प्रचक्षते । कायमङ्गुलिमूलेऽग्रे दैवंपित्र्यं तयोरधः ॥ अंगुष्ठ मूल के नीचे तल नाम हथेली का जो मध्य है उस्का नाम ब्राह्मतीर्थ है कनिष्ठिका के मूल में जो रेखा है उसका नाम प्राजापत्य तीर्थ है अंगुलियों का जो अग्रभाग है उसका नाम देव तीर्थ है तर्जनी और अंगुष्ठ इन दोनों के मूल जो बीच है उसका नाम पितृतीर्थ है आचमन समय में ब्राह्मतीर्थ से आचमन करै इतने जल से आचमन करै कि हृदय के नीचे पर्यन्त वह जल जाय उस्से क्या होता है कि कण्ठ में कफ और पित्त कुछ शान्त होगा फिर गायत्री मन्त्र को तो पढ़ता जाय और अंगुली से जल का छींटा शिर और नेत्रादिकों के ऊपर देवे इस्से क्या होगा कि निद्रा और आलस्य न आवेगा जैसे कि कोई पुरुष को निद्रा और आलस्य आता होय तो जलके छींटा से निवृत्त हो जाता है तैसे यहां भी होगा पीछे गायत्री मन्त्र से उपस्थान करै उपस्थान नाम परमेश्वर की प्रार्थना और अघमर्षण करै

अघमर्षण उसका नाम है कि पाप करने की इच्छा भी न करना चाहिये, संक्षेप से संध्योपासन कह दिया परन्तु यह दोनों बात एकान्त में जाके करना चाहिये क्योंकि एकान्त में चित्त की एकाग्रता होती है और परमेश्वर की उपासना भी यथावत् होती है इसमें मनुस्मृति का प्रमाण भी है ॥ अपांसमीपेनियतो नैत्यकंविधिमास्थित:। सावित्रीमप्यधीयीत गत्वाऽरण्यंसमाश्रित: ॥ इसका यह अभिप्राय है कि जल के समीप जाके और जितनी आचमन प्राणायामादिक क्रिया उनको करके वनके शून्य देश में बैठके गायत्री को मनसे यथावदुच्चारण करके एक एक पद का अर्थ चिन्तन करके और प्राणायाम से प्राण चित्त और इन्द्रियों की स्थिरता करके परमेश्वर की प्रार्थना और स्वरूप विचार से उक्त रीति से उसमें मग्न होजाय नाम समाधिस्थ होजाय ऐसे ही नित्य दो बार द्विज लोक प्रात:काल और सायङ्काल करैं एक घण्टा तक तो अवश्यही करै इस्से बहुत सा सुख और लाभ भी होगा फिर वह पुत्रों को अग्निहोत्र का आचार सिखावै एक चतुष्कोण मिट्टी की वा तांबे की वेदि रच ले ऊपर चौड़ी नीचे छोटी ऊपर तो १२ अंगुल नीचे चार ४ अंगुल रहै ऐसी रचके चन्दन वा पलाश आम्रादिक श्रेष्ठ काष्ठों को लेके उस वेदि के परिमाण से खण्ड खण्ड कर लेवै वेदी अच्छी शुद्ध करके उस वेदी में काष्ठों को यथावत् रक्खै उसके बीच में अग्नि रखदे उसके ऊपर फिर काष्ठ रख दे रख कर अग्नि प्रदीप्त करै और एक चमसा रचले हाथ की कोणी से कनिष्ठिका के अग्रपर्यन्त परिमाण से और इस प्रकार की प्रोक्षणीपात्र रचले 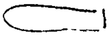 । उस्से डेढ़ा प्रणीता पात्र रचले—[] एक घृत पात्र रचले 0 प्रणीता में तो जल रक्खै रोके उसमें से जब जब कार्य होंय तब तब प्रोक्षणी में प्रणीता से जल लेके चमसा को और घृत के पात्र को नित्य शुद्ध करै

और कुशा को भी रखले जब जब होम करने का समय आवे तब सब पात्र को शुद्ध करके घृतपात्र में घृत को लेके अङ्गारों के ऊपर तपावे फिर उतार के आंख से देखके उसमें कुछ केश वा और जीव पड़े होंय तो उनको कुशाग्र से निकालदेवे पीछे अग्नि को प्रदीप्त करके चमसा में घृत को लेके ओं भूरग्नयेस्वाहा इदमग्नये इदन्नमम । इस मन्त्र से जो काष्ठ अग्नि से प्रदीप्त होय उसके बीच में एक आहुति देवे ॥ ओंभुववायवेस्वाहा इदं वायवे इदन्नमम । इससे दूसरी आहुति देवे । ओंस्वरादित्याय स्वाहा इदमादित्याय इदन्नमम । इससे तीसरी आहुति देवे ॥ ओंभूर्भुवः स्वः अग्निवाय्वादित्येभ्यःस्वाहा इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः इदन्नमम । इससे चौथी आहुति देनी ॥ ओंसर्वंवैपूर्णंस्वाहा । इससे पांचवी आहुति देवै ॥ और जो अधिक होम करना होय तो गायत्री मन्त्र से करदे ऐसेही संध्योपासन के पीछे नित्य दो बार अग्निहोत्र सब करैं ओंकार भू आदिक और अग्न्यादिक जितने इन मन्त्रों में नाम हैं वे सब परमेश्वरही के हैं उनका अर्थ प्रथम प्रकरण में कह दिया है वहां जान लेना चाहिये और जो इसमें तीन बार पाठ है सो प्रथम जो अग्नयेस्वाहा इसका यह अर्थ है कि जो कुछ करना सो परमेश्वर के उद्देशही से करना इदमग्नये दूसरा जो पाठ है उसका यह अभिप्राय है कि सब जगत् परमेश्वर के जनाने के लिये है क्योंकि कार्य जो होता है सो कारणही वाला होता है इदन्नमम यह जो तीसरा पाठ है सो इस अभिप्राय से है कि यह जो जगत है सो मेरा नहीं है किन्तु परमेश्वरही का रचा है किस लिये कि हम लोगों के सुख के लिये परमेश्वर ने कृपा करके सब पदार्थ बनाये हैं हम लोग तो भृत्यवत् हैं परमेश्वरही इस जगत् का स्वामी है क्योंकि जो जिसका पदार्थ होता है उसका वही स्वामी होता है और जो इन मन्त्रों में स्वाहा शब्द है

इसका यह अर्थ है स्वम् आह सा स्वाहा अथवा स्वा नाम अन्तर्यामी वाक् आह सा स्वाहा स्वम् नाम अपना जो हृदय सो सत्यो है जैसा जो कर्त्ता है वैसाही सो जानता है आह नाम कहने का है जैसा कि हृदय में होय वैसाही वाणी से कहै ऐसी परमेश्वर की आज्ञा है संध्योपासन अग्निहोत्र तर्पण बलि वैश्व देव और अतिथि सेवा पंच महा यज्ञों के प्रयोजन पीछे लिखेंगे अग्निहोत्र के आगे तर्पण करैं॥ नित्यं स्नात्वा शुचिः कुर्याद्देवर्षिपितृतर्पणम्। यह मनुस्मृति का बचन है॥ अथदेवतर्पणम् ॐब्रह्मादयोदेवास्तृप्यन्ताम् १ ॐ ब्रह्मादिदेवपत्न्यस्तृप्यन्ताम्॥१॥ ॐ ब्रह्मादिदेवसुतास्तृप्यन्ताम् १ ॐ ब्रह्मादिदेवगणास्तृप्यन्ताम् १ इतिदेवतर्पणम्। अथर्षितर्पणम्। ॐ मरीच्यादयऋषयस्तृप्यन्ताम् २ ॐ मरीच्याद्यृषिपत्न्यस्तृप्यन्ताम् २ ॐ मरीच्याद्यृषिसुतास्तृप्यन्ताम् २ ॐ मरीच्याद्यृषिगणास्तृप्यन्ताम् २ इत्यृषितर्पणम्। अथ पितृतर्पणम्। ॐ सोमसदः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ हविर्भुजः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ आज्यपाः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ सुकालिनः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ यमादिभ्योनमः यमादींस्तर्पयामि ३ ॐ पित्रे स्वधानमः पितरन्तर्पयामि ३ ॐ पितामहायस्वधानमः पितामहन्तर्पयामि ३ ॐ प्रपितामहायस्वधानमः प्रपितामहन्तर्पयामि ३ ॐ मात्रे स्वधानमः मातरंतर्पयामि ३ ॐ पितामह्यैस्वधानमः पितामहींस्तर्पयामि ३ ॐ प्रपितामह्यै स्वधानमः प्रपितामहींस्तर्पयामि ३ ॐ अस्मत्पत्न्यै स्वधानमः अस्मत्पत्नींस्तर्पयामि ३ ॐ सम्बन्धिभ्योमृतेभ्यः स्वधानमः सम्बन्धीन्मृतांस्तर्पयामि ३ ॐ सगोत्रेभ्योमृतेभ्यः स्वधानमः सगोत्रान्मृतांस्तर्पयामि ३ इतितर्पणविधिः। पित्रादिकों में जो कोई जीता होय उसका तर्पण न करै और जितने मरगये होंय उनका तो अवश्य करै॥ उद्धृतेदक्षिणेपाणा वुपवीत्युच्यते-

द्विजः। सव्ये प्राचीनआवीती निवीती कण्ठसज्जने॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अर्थ है कि जैसे वामस्कन्ध के ऊपर यज्ञोपवीत सदा रहताही है परन्तु उस यज्ञोपवीत को दहिने हांथ के अंगुठा में लगाले इस क्रिया के करने से द्विजों का नाम उपवीती होता है सो सब देव कर्मों को उपवीती होके करें पूर्वाभिमुख होके देवतर्पण करै और देवतीर्थ से कण्ठ में जब यज्ञोपवीत रक्खै और दोनों हाथ के अंगुष्ठा मे यज्ञोपवीत को लगाने से द्विजों की निवीति संज्ञा होती है ब्राह्मतीर्थ से उत्तराभिमुख होके ऋषि तर्पण करना चाहिये और दक्षिण-स्कन्ध में यज्ञोपवीत रक्खै और वाम अंगुष्ठ में यज्ञोपवीत लगाने से द्विजों का नाम प्राचीनावीती होता है दक्षिणाभिमुख प्राचीनावीति और पितृतीर्थ से पितृकर्म तर्पण और श्राद्धकरना चाहिये देवतर्पण में एक बार मन्त्र पढ़के एक अंजलि देवें ऋषि तर्पण में दोबार मन्त्र पढ़के दो अंजलि देवें दूसरी बार मन्त्र पढ़के दूसरी अंजलि देवै और पितृतर्पण में एक बार मन्त्र पढ़के एक अंजलि देवै दूसरी बार मन्त्र पढ़के दूसरी अंजलि देवै और तीसरी बार मन्त्र पढ़के तीसरी अंजलि देवै॥ अथबलिवैश्वदेवम्। वैश्वदेवस्यसिद्धस्य गृह्येऽग्नौविधिपूर्वकम्। आभ्यःकुर्याद्देवताभ्यो ब्राह्मणोहोममन्वहम्॥ ओं अग्नयेस्वाहा ओं सोमायस्वाहा ओं अग्नीषोमाभ्यांस्वाहा ओं विश्वेभ्योदेवेभ्यःस्वाहा ओं धन्वन्तरयेस्वाहा ओं कुह्वैस्वाहा। ओं अनुमत्यैस्वाहा ओं प्रजापतयेस्वाहा ओं सहद्यावापृथिवीभ्योस्वाहा। मृत्तिका की चतुष्कोण वेदी वा तांबे की रचके लवणान्न को छोड़के जो कि भोजन के लिये पदार्थ बना होय उससे उसमें दशाहुति देवें पीछे इस प्रकार की रेखाओं से कोष्ठ रचके यथा क्रमसे उस २ दिशाओं में भागों को रखदे अपनी २ जगह में ओं सानुगायेन्द्रायनमः इस्से पूर्वदिशा में भागदेना ओं सानुगाययमायनमः। दक्षिण

दिशा में भाग रक्खै ओं सानुगायवरुणायनमः। इस मन्त्र से उत्तर दिशा में भाग रक्खै ओं सानुगायसोमायनमः। इस मन्त्र से उत्तर दिशा में भाग रक्खै ओं मरुद्भ्योनमः। इस मन्त्र से द्वार में भाग रक्खै ओं अद्भ्योनमः। इस मन्त्र से वायव्यकोण में भाग रक्खै ओं वनस्पतिभ्योनमः। इस मन्त्र से अग्निकोण में भाग रक्खै ओं श्रियैनमः। इस मन्त्र से ऐशान्यकोण में भाग रक्खै ओं भद्रकाल्यैनमः। इस मन्त्र से नैर्ऋत्यकोण में भाग रक्खै ओं ब्रह्मपतयेनमः। ओं वास्तुपतयेनमः॥ इन दो मन्त्रों से कोठा के बीच में भाग रक्खै ओं विश्वेभ्योदेवेभ्योनमः। ओं दिवाचरेभ्योभूतेभ्योनमः। ओं नक्तंचारिभ्योभूतेभ्योनमः। इन मन्त्रों से ऊपर हाथ करके कोठ के बीच में तीनों भाग रखदेवै ओं सर्वात्मभूतयेनमः। इस मन्त्र से कोठ के पीछे भाग रक्खै अपसव्य करके ओं पितृभ्यःस्वधानमः इस मन्त्रसे कोठ के भीतर दक्षिणदिशा में भाग रक्खै इन सोलहों भागों को इकट्ठा करके अग्नि में रखदे श्वभ्योनमः पतितेभ्योनमः श्वपग्भ्योनमः पापरोगिभ्योनमः वायसेभ्योनमः क्रमिभ्योनमः। इन छः मन्त्रों से शाक दाल इत्यादिक सब अन्न मिला के भूमि में छः भाग को रखके कुत्ता वा मनुष्यादिकों को देवै॥ इति बलिवैश्वदेवम्। इसके पीछे अतिथि की सेवा करनी चाहिये अतिथि दो प्रकार के हैं एक तो विद्याभ्यास करने वाले दूसरे पूर्ण विद्यावाले नाम त्यागी लोग जो कि पूर्ण विद्यावाले पूर्ण वैराग्य और पूर्णज्ञान ब्रह्मचारी जितेन्द्रिय भोजन के समय प्राप्त जो होय उनका सत्कार अन्न जल और आसनादिकों से करै पीछे गृहस्थ लोग भोजन करैं वा साथ में भोजन करावें अथवा भोजन के पीछे भी आवै तो भी सत्कार करना चाहिये नित्य पंच महायज्ञ करना चाहिये इनके करने में क्या प्रयोजन है इसका यह उत्तर है कि जिस्से इनको करना चाहिये प्रथम तो जिसका

नाम संध्योपासन है सो ब्रह्मयज्ञ है उसके दो भेद हैं पढ़ना पढ़ाना जप परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना यह सब मिलके ब्रह्मयज्ञ कहाता है इसका फल तो बहुत लोग जानते हैं और कुछ लिख भी दिया है अब लिखना आवश्यक नहीं इसके आगे दूसरा अग्निहोत्र है और अग्निहोत्र का करना अवश्य है अग्निहोत्र से किस की पूजा होती है उत्तर परमेश्वर की पूजा होती है और संसार का उपकार होता है अग्निहोत्र में जितने मन्त्र हैं वे तो परमेश्वर के स्वरूप स्तुति प्रार्थना और उपासना के वाचक हैं इस्से परमेश्वर की उपासना आती है और संसार का इस्से क्या उपकार है कि वेद ब्राह्मण और सूत्र पुस्तकों में चार प्रकार के पदार्थ होम के लिखे हैं एक तो जिसमें सुगन्ध गुण होय जैसे कि कस्तूरी केशरादिक और दूसरा जिसमें मिष्ट गुण होय जैसे कि मिश्री शर्करादिक और तीसरा जिसमें पुष्टिकारक गुण होय जैसा कि दूध घी और मांसादिक और चौथा जिसमें रोग निवृत्तिकारक गुण होय जैसा कि वैद्यकशास्त्र की रीति से सोमलतादिक औषधियां लिखी हैं उन चारों का यथावत् शोधन उनका परस्पर संयोग और संस्कार करके होम करें सायं और प्रातः क्योंकि संध्याकाल और प्रातःकाल में मलमूत्र त्याग सब लोग प्रायः कत्ते हैं उसका दुर्गन्ध आकाश और वायु में मिलके वायु को दुष्ट करदेता है दुष्ट वायु के स्पर्श से अवश्य मनुष्यों को रोग होता है जैसे कि जहां २ मैला होता है जिस जिस स्थान में दुर्गन्ध अधिक है उस २ स्थान में रोग अधिक देखने में आता है और दुर्गन्ध और दुष्ट वायुसे जिस्को रोग होता है वही पुरुष उस स्थान को छोड़ के जहां सुगन्ध वायु होय उस स्थान में जाने से रोग की निवृत्ति देखने में आती है इस्से क्या निश्चित जाना जाता है कि दुर्गन्ध युक्त वायु से बहुत से रोग होते हैं

...रोगी के मलमे जितना दुर्गन्ध होगा जब सब लोग उक्त सुगन्धादिक द्रव्यों का अग्नि में होम करेंगे उस दुर्गन्ध को निवृत्त करके वायु को शुद्ध करदेगा उससे मनुष्यों का बहुत उपकार होगा रोगों के न होने से फिर वे सुगन्धादिकों के परमाणु मेघमण्डल और जलमें जाके मिलेंगे उनके मिलने से सबको शुद्ध करदेंगे जोकि सूर्य की उष्णता का सुगन्ध दुर्गन्ध जल तथा रस के संयोग होने से सब अवयवों को भिन्न २ कर देता है जब अवयव भिन्न २ होते हैं तब लघु होजाते हैं लघु होने से वायु के साथ ऊपर चढ़ जाते हैं जहां पृथ्वी से ऊपर ५० कोश तक वायु अधिक है इससे ऊपर वायु थोड़ा है उन दोनों की सन्धि में वे सब परमाणु रहते हैं उससे नीचे भी कुछ रहते हैं जब की सुगन्ध दुर्गन्ध जल को वा रस को हमलोग मिलाते हैं तब वह पदार्थ मध्यस्थ होता है वैसाही वह जल मध्यस्थ होता है जब सुगन्धादिक गुण युक्त जो धूम है उसके परमाणु में अधिक तो जल है तथा अग्नि कुछ पृथ्वी वायु और ये चार मिले हैं परन्तु वेभी वैसे सुगन्धादिक गुण युक्त हैं वे जब मध्यस्थ जल के परमाणु में जाके मिलते हैं तब उनको सुगन्धादिक गुणयुक्त कर देते हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं और जो कोई इस विषय में ऐसी शंका करै कि वह जल तो बहुत है होम के परमाणु थोड़े हैं कैसे उस सब जल को वे शुद्ध करेंगे उसका यह उत्तर है कि जैसे बहुत से शाक में अथवा बहुत सी दाल में थोड़ी सी सुगन्धित इलायची इत्यादिक और थोड़ा सा घी करछुल में वा पात्र में रखके अग्नि में तपाने से जब वह जलता है तब धूम उठता है फिर उसको दाल के पात्र में मिला के मुख बन्द करदे और छोंक देदे वह सब धूम जल होके सब अंशों में मिलजाता है फिर वह सुगन्ध और स्वादयुक्त होता है वैसेही थोड़े भी होम के परमाणु सब मध्यस्थ जल के पर-

माणु को शुद्ध करदेंगे फिर जब उसी जल की दृष्टि होगी और वही जल भूमि पर आवेगा उस जल के पीने से वा स्नान करने से रोग की निवृत्ति होजायगी और बुद्धि बल पराक्रम नैरोग्य बढ़ेंगे वैसेही उसी जल से अन्न घास वृक्ष और फल दूध घी इत्यादिक जितने पदार्थ होंगे वे सब उत्तमही होंगे उनके सेवने से भी जितने जीव हैं वे सब अत्यन्त सुखी होंगे और जो होम करने वाले हैं वे भी अत्यन्त सुख पावेंगे इस लोक में अथवा परलोक में क्योंकि अग्नियुक्त सुगन्ध के परमाणु को नासिका द्वार से जब भीतर मनुष्य ग्रहण करता है मल मूत्र त्याग समय में दुर्गन्ध युक्त जितने परमाणु मस्तक में प्राप्त हुये थे उनको निकाल देंगे वा सुगन्धित करदेंगे तब उस मनुष्य के शरीर में सर्दी और आलस्य न होंगे उस्से फूर्त्ति और पुरुषार्थ बढ़ेंगे पुष्प वा अतर के सुगन्ध से यह फल न होगा क्योंकि इस सुगन्ध में अग्नि के परमाणु मिले नहीं वे सब जगत् के उपकारक हैं इस्से उनको भी अवश्य सुख रूप उपकार होगा उस पुण्य से और जब अश्वमेधादिक यज्ञ होय तब तो असंख्य सब जीवों को सुख होय इस्से सब राजा धनाढ्य और विद्वान् लोग इसका आचरण अवश्य करैं तर्पण और श्राद्ध में क्या फल होगा इसका यह समाधान है कि ॥ तृप प्रीणने प्रीणनं तृप्तिः । तर्पण किसका नाम है कि तृप्ति का और श्राद्ध किसका नाम है जो श्रद्धा से किया जाता है ~~मरे भये पित्रादिकों का तर्पण और श्राद्ध करता है~~ उस्से क्या आता है कि जीते भये को अन्न और जलादिकों से सेवा अवश्य करनी चाहिये यह जाना गया दूसरा गुण जिनके ऊपर प्रीति है उनका नाम लेके तर्पण और श्राद्ध करेगा तब उसके चित्तमें ज्ञान का संभव है कि जैसे वे मरगये वैसे मुझको भी मरना है मरण के कारण से अधर्म करने में भय होगा धर्म करने में प्रीति होगी

...गुण यह है कि दायभाग बांटने में सन्देह न होगा ...कि इसका यह पिता है इसका यह पितामह है इसका यह प्रपितामह है ऐसेही छः पीढ़ी तक सभों का नाम कण्ठस्थ रहैगा ...भी इसका यह पुत्र है इसका यह पौत्र है इसका यह प्रपौत्र है इससे दायभाग में कभी भ्रम न होगा चौथा गुण यह है कि ब्राह्मणों का श्रेष्ठ धर्मात्माओं होको निमन्त्रण भोजन दान देना चाहिये मूर्खों को कभी नहीं इससे क्या आता है कि विद्वान् लोग आजीविका के बिना कभी दुःखी न होंगे निश्चिन्त होके सब शास्त्रों को पढ़ावेंगे और विचारेंगे सत्य २ उपदेश करेंगे और मूर्खों का अपमान होने से मूर्खों को भी विद्या के पढ़ने में और गुण ग्रहण में प्रीति होगी पांचवां गुण यह है कि देवऋषि पितृ संज्ञा श्रेष्ठों की है देवसंज्ञा दिव्य कर्म करने वालों की है पठन पाठन करने वालों को तो ऋषि संज्ञा है और यथार्थ ज्ञानियों की पितृ संज्ञा है उनको निमन्त्रण देगा तब उनसे बात भी सुनेगा प्रश्न भी करेगा उससे उनको ज्ञान का लाभ होगा छठवां प्रयोजन यह है कि श्राद्ध तर्पण सब कर्मों में वेदों के मन्त्रों को कर्म करने के लिये कण्ठस्थ रक्खेंगे इससे उस पुस्तक का नाश कभी न होगा फिर कोई उस विद्या का विचार करेगा तब पदार्थ विद्या प्रगट होगी उससे मनुष्यों को बहुत लाभ होगा सातवां प्रयोजन यह है कि ॥ वसून्वदन्तिवैपितॄन् रुद्रांश्चैवपितामहान्। प्रपितामहांस्त्वादित्यान् श्रुतिरेषासनातनी ॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि वसु जो है सोई पिता है जो रुद्र है सोई पितामह है जो आदित्य है सोई प्रपितामह है ये तीनों नाम परमेश्वरही के हैं इससे परमेश्वर हीकी उपासना तर्पण से और श्राद्ध से आई पितृ कर्म में स्वधा जो शब्द है उसका यह अर्थ है कि स्वन्दधातीति स्वधा अपने जनों को ज्ञानादिकों से धारण करै अथवा पोषण करै उसका

नाम है स्वधा स्वधा नाम है परमेश्वर का किन्तु अपनेही पदार्थ को धारण करना चाहिये औरों के पदार्थ का धारण न करना चाहिये अन्याय से अथवा अपनेहीं पदार्थ से प्रसन्नता करनी चाहिये छल कपट वा परपदार्थ से पुष्टि की इच्छा न करनी चाहिये इस प्रकार का स्वाहा और स्वधा का अर्थ शतपथ ब्राह्मण पुस्तक में लिखा है इतने सात प्रयोजन तो कह दिये और भी बहुत से प्रयोजन हैं बुद्धिमान् लोग विचार से जान लेवें और बलि वैश्व देव का प्रयोजन तो होम के नाईं जान लेना फिर यह भी प्रयोजन है कि भोजन के समय बलि वैश्व देव करेंगे वेभी सुगन्ध से प्रसन्न हो जांयगे और वह स्थान सुगन्ध युक्त होने से मक्खी मच्छरादिक जीव सब निकल जांयगे उस्से मनुष्यों को बहुत सुख होगा यह प्रयोजन अग्निहोत्रादिक होम का भी जान लेना और अतिथि सेवा से बहुत गुणों की प्राप्ति होगी इत्यादिक बहुत से प्रयोजन हैं दूसरे अपने पुत्रों को पिता सब उपदेश करदे उपदेश करके आचार्य के पास अपने सन्तानों को भेजदे कन्याओं की पाठशाला में पढ़ाने वाली और नौकर चाकर सब स्त्रीही लोग रहैं पांचवर्ष का बालक भी वहां न जाय वैसेही पुत्रों की पाठशाला में सब पुरुषही रहैं पुरुष की पाठशाला में पांचवर्ष की कन्या भी न जाय वे कन्या और पुत्र इनका परस्पर मेलभी न होय॥ ब्राह्मणस्त्रयाणांवर्णानामुपनयनङ्कर्त्तुमर्हति। राजन्योद्वयस्यवैश्यो वैश्यस्यैवेतिशूद्रमपि कुलगुणसम्पन्नं मन्त्रवर्ज्जमनुपनीत मध्यापयेदित्येके॥ यह सुश्रुत के सूत्र स्थान के द्वितीयाध्याय का वचन है ब्राह्मण का अधिकार तीन वर्णों के बालकों को यज्ञोपवीत कराने का है क्षत्रिय को क्षत्रिय और वैश्य इन दो वर्णों के बालकों को यज्ञोपवीत कराने का अधिकार है और वैश्य को वैश्यवर्णही का यज्ञोपवीत कराने का अधिकार है और शूद्र

लोगों की कन्या भी कन्याओं के पाठशाला में पढ़ें शूद्रों के बालक यज्ञोपवीत के बिना सब शास्त्रों को पढ़ें परन्तु वेद की संहिता को छोड़के उनके जे आचार्य हैं वे प्रतिज्ञा पूर्वक नियम बांधें प्रथम तो काल का नियम करें॥ षट्त्रिंशदाब्दिकंचर्यं गुरौत्रैवेदिकंव्रतम्। तदर्द्धिकंपादिकंवा ग्रहणान्तिकमेववा॥ ब्रह्मचर्याश्रम का नियम २५।३०।४०।४४।४८ वर्ष तक है अथवा उसका अर्द्ध १८ अथवा ९ नववर्ष अथवा जबतक पूर्ण विद्या न होय तब तक यह मनुस्मृति का श्लोक है पूर्वोक्त सुश्रुत में शरीर की अवस्था धातुओं के नियम से ४ प्रकार की लिखी है॥ वृद्धियौवनंसंपूर्णता किञ्चित्परिहाणिश्चेति। षोडश वर्ष से २५ वर्ष तक धातुओं की वृद्धि होती है और २५ वर्ष से आगे युवाऽवस्था का प्रारम्भ होता है अर्थात सब धातु क्रमसे बलको ग्रहण करते हैं उनके बल की अवधि ४० वें वर्ष सम्पूर्ण होती है उत्तम पुरुष के ब्रह्मचर्य का नियम ४० वर्ष तक होता है और छान्दोग्य उपनिषद में ४४ वा ४८ वर्ष तक ब्रह्मचर्य जो कर्त्ता है वह पुरुष विद्या पराक्रम और सब श्रेष्ठ गुणों में उत्तमों में भी उत्तम होगा और ३० से ३६ वर्ष तक मध्यम ब्रह्मचर्य का नियम है और २५ से ३० वर्ष तक न्यून से न्यून ब्रह्मचर्य का नियम है इससे न्यून ब्रह्मचर्य का नियम कभी न होना चाहिये जो कोई इससे न्यून ब्रह्मचर्याश्रम करेगा अथवा कुछ भी न करेगा उस को धैर्यादिक श्रेष्ठ गुण कभी न होंगे सदा रोगी, भ्रष्टबुद्धि, विद्याहीन, कुत्सित, कर्मकारीही होगा क्योंकि जिसके धातुओं की क्षीणता और विषमता शरीर में होगी उस मनुष्य को किसी रीति से सुख न होगा और कन्याओं का २० से २४ वर्ष तक उत्तम ब्रह्मचर्याश्रम है १६ वर्ष से आगे २० वर्ष तक मध्यम ब्रह्मचर्याश्रम का काल है १६ वें वर्ष से १७ वा १८ वर्ष तक अधम ब्रह्मचर्य का काल है १६ वर्ष से न्यून कन्याओं का ब्रह्म-

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक 513
दयानन्द-महिला-महाविद्यालय

चर्य कभी न होना चाहिये जो कोई कन्या १६ वर्ष से न्यून ब्रह्मचर्याश्रम को करेगी वह विद्या, बुद्धि, बल, पराक्रम, धैर्यादिक गुणों से रहित और रोगादिक दोषों से युक्त होगी सदा दुःखी ही रहेगी इस से ब्रह्मचर्याश्रम पुरुषों को वा कन्याओं को न्यून कभी न करना चाहिये ॥ पञ्चविंशेततोवर्षे पुमान्नारीतु षोड़शे समत्वागतवीर्यौतौ जानीयात्कुशलोभिषक् ॥ यह सुश्रुत का बचन है इसका यह अर्थ है कि १६ वर्ष से न्यून कन्या का बिवाह कभी न करना चाहिये और २५ वर्ष से न्यून पुरुषों का भी न करना चाहिये और जो कोई इस बात का व्यतिक्रम करै कि १६ वर्ष से पहिले कन्याओं का बिवाह करै और २५ वर्ष से पहिले पुत्रों का बिवाह करै उसको राजा दंड दे उनके माता पिता को भी और जो कोई अपने सन्तानों को पाठशाला में पढ़ने के लिये न भेजै उसको भी राजा दण्ड देवै क्योंकि सब लोगों का सत्य व्यवहार और धर्म व्यवहार को व्यवस्था राजा ही के अधीन है जिस देश का जो राजा होय उसी को इस व्यवस्था को प्रीति से पालन करना चाहिये सो गुरु जो आचार्य यह प्रथम तो उक्त नियम को करावै आगे और नियमों को भी। ऋतंचस्वाध्याय प्रवचनेच सत्यञ्चस्वाध्याय प्रवचनेच तपश्चस्वाध्याय प्रवचनेच दमश्चस्वाध्याय प्रवचनेच शमश्चस्वाध्याय प्रवचनेच अग्नयश्चस्वाध्याय प्रवचनेच अग्निहोत्रञ्च स्वाध्याय प्रवचनेच अतिथयश्च स्वाध्याय प्रवचनेच मानुषञ्च स्वाध्याय प्रवचनेच प्रजाचस्वाध्याय प्रवचनेच प्रजनश्चस्वाध्याय प्रवचनेच प्रजातिश्च स्वाध्याय प्रवचनेच ॥ यह तैत्तिरीयोपनिषद् का बचन है ऋत नाम है यथार्थ और सत्य २ ज्ञान का ब्रह्मचारी लोग और अध्यापक लोग सत्य २ बात को प्रतिज्ञा करैं कि सत्य २ ही को मानेंगे मिथ्या को कभी नहीं और कभी असत्य को न सुनेंगे न कहेंगे स्वाध्याय नाम पढ़ना प्रवचन नाम पढ़ाना सत्य २ पढ़ेंगे

और सत्य २ पढ़ावेंगे सत्यही कर्म करेंगे और करावेंगे तप नाम धर्मानुष्ठान का है सदा धर्मही करेंगे और अधर्म कभी नहीं हम लोग जितेन्द्रिय होंगे किसी इन्द्रिय से कभी परपदार्थ और पर स्त्री ग्रहण न करेंगे इसका नाम दम है शम नाम अधर्म की मनसे इच्छा भी न करनी अग्नयश्च नाम अग्नि में जगत् के उपकार के लिये सदा हम लोग होम करेंगे अग्नि-होत्रञ्च नाम अग्निहोत्र का नियम सब दिन पालेंगे अतिथियों की सेवा सब दिन करेंगे मानुषञ्च नाम मनुष्यों में जैसा जिस्से व्यवहार करना चाहिये वैसाही करेंगे बड़ा छोटा और तुल्य इनको जैसा मानना चाहिये वैसा उसको मानेंगे और जिस रीति से प्रजा की उत्पत्ति करनी चाहिये प्रजा का व्यवहार और पालन जैसा करना चाहिये धर्म से वैसाही करेंगे प्रजनश्च नाम वीर्यप्रदान जो करेंगे सो धर्मही से करेंगे प्रजातिश्च नाम जैसा कि गर्भ का पालन करना चाहिये और जन्म के पीछे भी जैसा पालन करना चाहिये वैसाही पालन उसका करेंगे परन्तु ऋतादि करेंगे स्वाध्याय प्रवचन का त्याग कभी नहीं करेंगे स्वाध्याय पढ़ना प्रवचन नाम पढ़ाना ऋतादिकों का ग्रहणही पूर्वक स्वाध्याय और प्रवचन को सदा करना चाहिये इसका विचार सब दिन करेंगे इसके छोड़ने से संसार की बहुत सी हानि होजाती है इस प्रकार से शिष्यों के प्रति पुरुष कन्याओं को स्त्री और पुरुषों को पुरुष शिक्षा करें। वेदमनूच्याचार्योन्ते-वासिनमनुशास्ति सत्यंवद धर्मंचर स्वाध्यायान्माप्रमदः आचा-र्याय प्रियंधनमाहृत्य प्रजातन्तुंमाव्यवच्छेत्सीः सत्यान्नप्रमदित-व्यम् धर्मान्नप्रमदितव्यम् कुशलान्नप्रमदितव्यम् स्वाध्यायप्रवचना भ्यांनप्रमदितव्यम् १ देवपितृकार्याभ्यांनप्रमदितव्यम् मातृदेवो-भव पितृदेवोभव आचार्यदेवोभव अतिथिदेवोभव यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि नोइतराणि यान्यस्माकंसुचरितानि

तानित्वयोपास्यानि नोइतराणि येकेचास्मच्छ्रेयांसो ब्राह्मणास्तेषांत्वयासनेन प्रश्वसितव्यम् श्रद्धयादेयम् अश्रद्धयादेयम् श्रियादेयम् ह्रियादेयम् भियादेयम् संविदादेयम् अथयदिते कर्म विचिकित्सा वा वृत्त विचिकित्सावास्यात् ३ ये तत्रब्राह्मणाः सम्मदर्शिनः युक्ता अयुक्ताः अलुक्षाधर्मकामाः स्युः यथातेतत्रवर्त्तेरन् तथातत्र वर्त्तेथाः एषआदेश एषउपदेश एषावेदोपनिषत् एतदनुशासनम् एवमुपासितव्यम् एवमुचैतदुपास्यम् ११ यह तैत्तिरीयोपनिषद् का बचन है इसी प्रकार से गुरु लोग शिष्यों को उपदेश करें हे शिष्य तूं सब दिन सत्यही बोल और धर्मही को कर स्वाध्याय नाम पढ़ने में जैसे तुमको विद्या आवै वैसेही कर जब तक विद्या तुमको पूर्ण न होय तब तक ब्रह्मचर्य का त्याग न करना फिर जब विद्या और ब्रह्मचर्य भी पूर्ण होजाय तब जैसा तुमारा सामर्थ्य होय वैसा उत्तम पदार्थ आचार्य को दे के प्रसन्न करना चाहिये और आचार्य भी उनको शीघ्र विद्या होय वैसाही करें केवल अपनी सेवा के लिये सब दिन भ्रमसे न रक्खें कृपा करके विद्या पढ़ावें छल कपट आचार्य लोग कभी न करें क्योंकि सत्यगुणों का प्रकाशही करना उचित है सब शिष्ट लोगोंको जब ब्रह्मचर्य और पूर्ण विद्या भी हो जाय तब उनको विवाह करना उचित है प्रजा का छेदन करना उचित नहीं और सत्य से प्रमाद न करना चाहिये अर्थात सत्य को छोड़ के असत्य से कोई व्यवहार न करना चाहिये धर्मही से सब व्यवहारों को करना चाहिये धर्म से विरुद्ध कोई कर्म न करना चाहिये कुशलता को सब दिन ग्रहण करना चाहिये और दुराग्रह अभिमान को कभी न करना चाहिये नम्रता सरलता से सदा गुण ग्रहण करना चाहिये भूति नाम सिद्धि इनकी प्राप्ति में पुरुषार्थ सदा करना चाहिये और पढ़ने पढ़ाने से रहित कभी न होना चाहिये सब दिन पढ़ने पढ़ाने का पुरु-

और सत्य २ पढ़ावेंगे सत्यही कर्म करेंगे और करावेंगे तप नाम धर्मानुष्ठान का है सदा धर्मही करेंगे और अधर्म कभी नहीं हम लोग जितेन्द्रिय होंगे किसी इन्द्रिय से कभी परपदार्थ और पर स्त्री ग्रहण न करेंगे इसका नाम दम है शम नाम अधर्म की मनसे इच्छा भी न करनी अग्नयश्च नाम अग्नि में जगत् के उपकार के लिये सदा हम लोग होम करेंगे अग्निहोत्रञ्च नाम अग्निहोत्र का नियम सब दिन पालेंगे अतिथियों की सेवा सब दिन करेंगे मानुषञ्च नाम मनुष्यों में जैसा जिस्से व्यवहार करना चाहिये वैसाही करेंगे बड़ा छोटा और तुल्य इनको जैसा मानना चाहिये वैसा उसको मानेंगे और जिस रीति से प्रजा की उत्पत्ति करनी चाहिये प्रजा का व्यवहार और पालन जैसा करना चाहिये धर्म से वैसाही करेंगे प्रजनश्च नाम वीर्यप्रदान जो करेंगे सो धर्मही से करेंगे प्रजातिश्च नाम जैसा कि गर्भ का पालन करना चाहिये और जन्म के पीछे भी जैसा पालन करना चाहिये वैसाही पालन उसका करेंगे परन्तु ऋतादि करेंगे स्वाध्याय प्रवचन का त्याग कभी नहीं करेंगे स्वाध्याय पढ़ना प्रवचन नाम पढ़ाना ऋतादिकों का ग्रहणही पूर्वक स्वाध्याय और प्रवचन को सदा करना चाहिये इसका विचार सब दिन करेंगे इसके छोड़ने से संसार की बहुत सी हानि होजाती है इस प्रकार से शिष्यों के प्रति पुरुष कन्याओं को स्त्री और पुरुषों को पुरुष शिक्षा करें । वेदमनूच्याचार्योन्तेवासिनमनुशास्ति सत्यम्वद धर्मंचर स्वाध्यायान्माप्रमदः आचार्याय प्रियंधनमाहृत्य प्रजातन्तुम्माव्यवच्छेत्सीः सत्यान्नप्रमदितव्यम् धर्मान्नप्रमदितव्यम् कुशलान्नप्रमदितव्यम् स्वाध्यायप्रवचनाभ्यांनप्रमदितव्यम् १ देवपितृकार्याभ्यांनप्रमदितव्यम् मातृदेवोभव पितृदेवोभव आचार्यदेवोभव अतिथिदेवोभव यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि नोइतराणि यान्यस्माकंसुचरितानि

तानित्वयोपास्यानि नोइतराणि येकेचास्मच्छ्रेयां सोब्राह्मणास्ते-
षांत्वयासनेन प्रश्वसितव्यम् श्रद्धयादेयम् अश्रद्धयादेयम् श्रियादे-
यम् ह्रियादेयम् भियादेयम् संविदादेयम् अथयदिते कर्म विचि-
कित्सा वा वृत्त विचिकित्सावास्यात् ३ ये तत्रब्राह्मणाः समदर्शिनः
युक्ता अयुक्ताः अलुक्षाधर्मकामाः स्युः यथातेतत्रवर्तेरन् तथातत्र
वर्त्तेथाः एषआदेश एषउपदेश एषावेदोपनिषत् एतदनुशासनम्
एवमुपासितव्यम् एवमुचैतदुपास्यम् ११ यह तैत्तिरीयोपनिषद्
का वचन है इसी प्रकार से गुरु लोग शिष्यों को उपदेश करैं
हे शिष्य तूं सब दिन सत्यही बोल और धर्मही को कर स्वाध्याय
नाम पढ़ने में जैसे तुमको विद्या आवै वैसेही कर जब तक
विद्या तुमको पूर्ण न होय तब तक ब्रह्मचर्य का त्याग न करना
फिर जब विद्या और ब्रह्मचर्य भी पूर्ण होजाय तब जैसा
तुमारा सामर्थ्य होय वैसा उत्तम पदार्थ आचार्य को दे
के प्रसन्न करना चाहिये और आचार्य भी उनको शीघ्र विद्या
होय वैसाही करै केवल अपनी सेवा के लिये सब दिन भ्रममें
न रक्खैं कृपा करके विद्या पढ़ावैं छल कपट आचार्य लोग कभी
न करैं क्योंकि सत्यगुणों का प्रकाशही करना उचित है सब
शिष्ट लोगोंको जब ब्रह्मचर्य और पूर्ण विद्या भी हो जाय
तब उनको विवाह करना उचित है प्रजा का छेदन करना
उचित नहीं और सत्य से प्रमाद न करना चाहिये अर्थात सत्य
को छोड़ के असत्य से कोई व्यवहार न करना चाहिये धर्मही
से सब व्यवहारों को करना चाहिये धर्म से विरुद्ध कोई कर्म न
करना चाहिये कुशलता को सब दिन ग्रहण करना चाहिये
और दुराग्रह अभिमान को कभी न करना चाहिये नम्रता
शरलता से सदा गुण ग्रहण करना चाहिये भूति नाम सिद्धि
इनकी प्राप्ति में पुरुषार्थ सदा करना चाहिये और पढ़ने पढ़ाने
से रहित कभी न होना चाहिये सब दिन पढ़ने पढ़ानेका पुरु-

और सत्य २ पढ़ावेंगे सत्यही कर्म करेंगे और करावेंगे तप नाम धर्मानुष्ठान का है सदा धर्मही करेंगे और अधर्म कभी नहीं हम लोग जितेन्द्रिय होंगे किसी इन्द्रिय से कभी परपदार्थ और पर स्त्री ग्रहण न करेंगे इसका नाम दम है शम नाम अधर्म को मनसे इच्छा भी न करनी अग्नयश्च नाम अग्नि में जगत् के उपकार के लिये सदा हम लोग होम करेंगे अग्निहोत्रञ्च नाम अग्निहोत्र का नियम सब दिन पालेंगे अतिथियों की सेवा सब दिन करेंगे मानुषञ्च नाम मनुष्यों से जैसा जिस्से व्यवहार करना चाहिये वैसाही करेंगे बड़ा छोटा और तुल्य इनको जैसा मानना चाहिये वैसा उसको मानेंगे और जिस रीति से प्रजा की उत्पत्ति करनी चाहिये प्रजा का व्यवहार और पालन जैसा करना चाहिये धर्म से वैसाही करेंगे प्रजनश्च नाम वीर्यप्रदान जो करेंगे सो धर्मही से करेंगे प्रजातिश्च नाम जैसा कि गर्भ का पालन करना चाहिये और जन्म के पीछे भी जैसा पालन करना चाहिये वैसाही पालन उसका करेंगे परन्तु ऋतादि करेंगे स्वाध्याय प्रवचन का त्याग कभी नहीं करेंगे स्वाध्याय पढ़ना प्रवचन नाम पढ़ाना ऋतादिकों का ग्रहणही पूर्वक स्वाध्याय और प्रवचन को सदा करना चाहिये इसका विचार सब दिन करेंगे इसके छोड़ने से संसार की बहुत सी हानि होजाती है इस प्रकार से शिष्यों के प्रति पुरुष कन्याओं को स्त्री और पुरुषों को पुरुष शिक्षा करें। वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति सत्यम्वद धर्मं चर स्वाध्यायान्माप्रमदः आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं माव्यवच्छेत्सीः सत्यान्नप्रमदितव्यम् धर्मान्नप्रमदितव्यम् कुशलान्नप्रमदितव्यम् स्वाध्यायप्रवचनाभ्यांनप्रमदितव्यम् १ देवपितृकार्याभ्यांनप्रमदितव्यम् मातृदेवोभव पितृदेवोभव आचार्यदेवोभव अतिथिदेवोभव यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि नोइतराणि यान्यस्माकंसुचरितानि

तानित्वयोपास्यानि नोइतराणि येकेचास्मच्छ्रेयांसोब्राह्मणास्ते-षांत्वयासनेन प्रश्वसितव्यम् श्रद्धयादेयम् अश्रद्धयादेयम् श्रियादे-यम् ह्रियादेयम् भियादेयम् संविदादेयम् अथयदिते कर्म विचि-कित्सा वा वृत्त विचिकित्सावास्यात् ३ ये तत्रब्राह्मणाः सम्मर्शिनः युक्ता अयुक्ताः अलुक्षाधर्मकामाः स्युः यथातेतत्रवर्त्तेरन् तथातत्र वर्त्तेथाः एषआदेश एषउपदेश एषावेदोपनिषत् एतदनुशासनम् एवमुपासितव्यम् एवमुचैतदुपास्यम् ११ यह तैत्तिरीयोपनिषद् का वचन है इसी प्रकार से गुरु लोग शिष्यों को उपदेश करें हे शिष्य तू सब दिन सत्यही बोल और धर्मही को कर स्वाध्याय नाम पढ़ने में जैसे तुमको विद्या आवै वैसेही कर जब तक विद्या तुमको पूर्ण न होय तब तक ब्रह्मचर्य का त्याग न करना फिर जब विद्या और ब्रह्मचर्य भी पूर्ण होजाय तब जैसा तुमारा सामर्थ्य होय वैसा उत्तम पदार्थ आचार्य को दे के प्रसन्न करना चाहिये और आचार्य भी उनको शीघ्र विद्या होय वैसाही करे केवल अपनी सेवा के लिये सब दिन भ्रममें न रक्खें कृपा करके विद्या पढ़ावैं छल कपट आचार्य लोग कभी न करें क्योंकि सत्यगुणों का प्रकाशही करना उचित है सब शिष्ट लोगोंको जब ब्रह्मचर्य और पूर्ण विद्या भी हो जाय तब उनको विवाह करना उचित है प्रजा का छेदन करना उचित नहीं और सत्य से प्रमाद न करना चाहिये अर्थात सत्य को छोड़ के असत्य से कोई व्यवहार न करना चाहिये धर्महो से सब व्यवहारों को करना चाहिये धर्म से विरुद्ध कोई कर्म न करना चाहिये कुशलता को सब दिन ग्रहण करना चाहिये और दुराग्रह अभिमान को कभी न करना चाहिये नम्रता सरलता से सदा गुण ग्रहण करना चाहिये भूति नाम सिद्धि इनकी प्राप्ति में पुरुषार्थ सदा करना चाहिये और पढ़ने पढ़ाने से रहित कभी न होना चाहिये सब दिन पढ़ने पढ़ानेका पुरु-

पार्थ ही करना चाहिये देवकार्य नाम अग्निहोत्रादिक पितृकार्य नाम श्राद्ध तर्पणादिक उसको कभी न छोड़ना चाहिये माता पिता अतिथि और आचार्य इनको सेवा कभी न छोड़नी चाहिये क्योंकि उन्हों ने जो पालन किया है वा विद्या दी है अथवा सत्य जो उपदेश करते हैं इस उपकार को कभी न भूलना चाहिये इनको अवश्य मानना चाहिये और जितने धर्मयुक्त कर्म हैं उनको करना चाहिये और पाप कर्मों को कभी न करना चाहिये माता पिता आचार्य और अतिथि भी शास्त्र प्रमाण से धर्म विरुद्ध जो उपदेश करैं अथवा पाप कर्म करावैं उनको कभी न करना चाहिये और उनके जो सुकर्म हैं उनको तो अवश्य करना चाहिये उनके जो दुष्टकर्म हैं उनको कभी न करना चाहिये वैसेही मातादिक उपदेश करैं कि हमलोग जो सुकर्म करैं उनको तो तुम लोगों को अवश्य करना चाहिये हमलोग जो दुष्टकर्म करैं उनको कभी न करना चाहिये जो मनुष्य लोगों के बीचमें विद्या वाले धर्मात्मा और सत्यवादी होंय उनका सब दिन सङ्ग करना चाहिये उनसे गुणग्रहण करना चाहिये उनके वचन में और उनमें अत्यन्त श्रद्धा करनी चाहिये शिष्य लोग जब सुपात्र और धर्मात्मा मिलें तब श्रद्धा से उनको जो प्रियपदार्थ हो उसको देवें अथवा अश्रद्धा से भी देना चाहिये श्री नाम लक्ष्मी से देवें दारिद्र्य होवै तो भी दान की इच्छा न छोड़नी चाहिये लज्जा और प्रतिज्ञा से भी देना चाहिये अर्थात् किसी प्रकार से देना चाहिये दान का बंधक भी न करना चाहिये परन्तु श्रेष्ठ सुपात्रों को देना चाहिये कुपात्रों को कभी नहीं किसी को अन्याय से दुःख न देना चाहिये सब लोगों को बन्धुवत् जानना चाहिये और सब लोगों से प्रीति करनी चाहिये किसी से विवाद न करना चाहिये सत्य का खण्डन कभी न करना चाहिये और जो तुमको किसी विषय

वा किसी पदार्थ विद्या में सन्देह होय तब तुम लोग ब्रह्मवित् पुरुषों के पास जाओ वे कैसे होंय कि सर्वशास्त्रवित् निर्वैर पक्षपात कभो न करैं वे युक्त अर्थात् योगी अथवा तपस्वी होंय रूक्ष नाम कठोर स्वभाव न होंय और धर्म काम में सम्पन्न होंय उनसे पूछ के संदेह निवृत्ति कर लेना वे जिस प्रकार से धर्म में वर्तमान करैं वैसाही तुमको धर्म में वर्त्तमान होना चाहिये यही आदेश है आदेश नाम परमेश्वर की आज्ञा है यही उपदेश है उपदेश नाम इसी का उपदेश करना योग्य है यही वेदोपनिषत् है नाम वेदों का सिद्धान्त है और यही अनुशासन है अनुशासन नाम सुनियम और शिष्टाचार है ऐसेही धर्म की उपासना करनी चाहिये इसी प्रकार जानना भी चाहिये इसी प्रकार कहना भी चाहिये गुरु शिष्य को परस्पर ऐसा वर्त्तमान करना चाहिये ओं सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै तेजस्विना वधीतमस्तु मा विद्विषावहै ओं शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः सहनाम परस्पर रक्षा करैं गुरु तो शिष्यों की कुकर्मों से रक्षा करैं और शिष्य लोग गुरु को आज्ञा पालन और गुरु की सेवा से रक्षा करैं सहैव परस्पर भोग करैं अर्थात जो शिष्य लोग कोई उत्तम अन्न पान वस्त्रादिकों को प्राप्त होंय सो पहिले गुरु को निवेदन करके शिष्य लोग भोजनादिक करैं सहनाम परस्पर वीर्य को करैं वीर्य नाम पराक्रम नाम सत्य २ जो विद्या उसको बढ़ावैं जब गुरु यथावत् परिश्रम से विद्या दान करैंगे तब उनको भी विद्या तीव्र होगी शिष्य लोग यथावत् परिश्रम से और सुविचार से विद्या ग्रहण करैंगे तब उनकी भी सत्य २ विद्या तीव्र होगी ऐसे सब गुरु शिष्य विचार करैं कि हम लोगों का पढ़ना पढ़ाना तेजस्वी नाम प्रकाशित होय जिसका शिष्य विद्यावान् नहीं होता उसका जो गुरु है उसी की निन्दा होती है बहुत से एक गुरु के पास पढ़ते हैं उनमें

में कितने तो विद्यावान् होते हैं और कितने नहीं गुरू तो यथावत् पढ़ावेंगे और कोई शिष्य यथावत् विद्या को ग्रहण न करेगा तब तो उस शिष्य की निन्दा होगी इस इस प्रकार का पढ़ना पढ़ाना करना चाहिये कि सत्य २ विद्या का प्रकाश होय और अविद्या जो अन्धकार उसका नाश होय ॥ कामात्मता न प्रशस्ता नचैवेहास्त्यकामता। काम्योहिवेदाधिगमः कर्मयोगश्च वैदिकः ॥ मनुष्यों को विषयों में जो कामात्मता नाम अत्यन्त कामना सो श्रेष्ठ नहीं और अकामता नाम कोई पदार्थ की इच्छा भी न करनी वह भी श्रेष्ठ नहीं क्योंकि विद्या का जो होना सो इच्छाही से है धर्म विद्या और परमेश्वर की उपासना की तो कामना अवश्यही करना चाहिये क्योंकि ॥ काम्योहिवेदाधिगमः। वेद विद्या की जो प्राप्ति है सो कामनाऽधीनही है और वैदिक कर्म जितने हैं वेभी कामनाऽधीनही हैं इससे श्रेष्ठ पदार्थों की कामना सदा करनी चाहिये और अश्रेष्ठ पदार्थों की कामना कभी नहीं ॥ सङ्कल्पमूलः कामोवैयज्ञाः सङ्कल्पसम्भवाः व्रतानियमधर्माश्चसर्वे सङ्कल्पजाः स्मृताः काम का मूल सङ्कल्प है अर्थात सङ्कल्पही से काम की उत्पत्ति होती है हृदय से बाह्य पदार्थ की प्राप्ति की सूक्ष्म जो इच्छा उसको सङ्कल्प कहते हैं ब्रह्मचर्यादिक जितने व्रत हैंवे भी कामही से सिद्ध होते हैं पांच प्रकार के यम होते हैं अहिंसासत्यास्तेय ब्रह्मचर्यापरिग्रहायमाः। यह योगशास्त्र का सूत्र है इसका यह अर्थ है कि अहिंसा नाम कोई से कभी वैर न करना सत्य जैसा हृदयमें है वैसाही वचन कहना अस्तेय नाम चोरी का त्याग बिना आज्ञा से किसी का पदार्थ न ग्रहण करनाब्रह्मचर्य नाम विद्या बल बुद्धि पराक्रम को यथावत् प्राप्ति करनी अपरिग्रह नाम अभिमान कभी न करना धर्म नाम न्याय का न्याय नाम पक्षपात का त्याग करना जैसे कि अपना प्रिय पुत्र भी दुष्ट कर्म के

करने से मारा जाता होय तोभी मिथ्या भाषण न करै ॥ अकामस्यक्रियाकाचि दृश्यतेनेहकर्हिचित् । यद्यद्धिकुरुतेकिञ्चित्तत्तत्कामस्यचेष्टितम्॥ जिस पुरुष को कामना न होय तो उस्को नेत्रादिकों की कुछ चेष्टा भी न होय इस्से जो २ शरीर में कुछ भी चेष्टा होती है सो २ कामही से होती है ऐसाही निश्चय जानना इस्से क्या आया कि काम के बिना कोई भी शरीर धारण नही करसक्ता और खाना पीना भी नहीं कर सक्ता इसलिये श्रेष्ठ पदार्थों की कामना सब दिन करनीही चाहिये दुष्ट पदार्थों की कभी नहीं और जो पुरुषार्थ को छोड़ेगा सो तो पाषाण और काष्ठ की नांई होगा इस्से आलस्य कभी न करना चाहिये और पुरुषार्थ को छोड़ना भी नहीं ॥ आचारःपरमोधर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त्त एवच । तस्मादस्मिन्सदायुक्तो नित्यंस्यादात्मवान्द्विजः ॥ शास्त्र को पढ़के सत्य धर्मों का आचरण जो न करै उस्का पढ़ना व्यर्थही है सोई परम धर्म है परन्तु वह आचार वेदादिक सत्य शास्त्रोक्त और मनुस्मृत्युक्तही लेना तिस हेतु से इस आचरण नाम धर्माचरण में द्विज लोग अर्थात सब मनुष्य लोग युक्त होंय ॥ आचाराद्विच्युतोविप्रो नवेदफलमश्नुते । आचारेणतुसंयुक्तः संपूर्णफलभाग्भवेत् ॥ जो पुरुष वेदोक्त आचार को नहीं करता उसका जो विद्या का पढ़ना है उसका फल वह नहीं पाता और जो वेदादिकों को पढ़के यथोक्त आचार करता है उसको संपूर्ण सुख रूप फल होता है ॥ योऽवमन्येततेमूले हेतुशास्त्राश्रयात्द्विजः । ससाधुभिर्बहिष्कार्यो नास्तिकोवेदनिन्दकः ॥ कुतर्क से जो कोई मनुष्य श्रुति नाम वेद स्मृति नाम धर्मशास्त्र ये दोनों धर्म के प्रकाशक हैं और धर्म के मूल हैं इनको जो न मानै उसको सज्जन लोग सब अधिकारों से बाहर कर देवैं क्योंकि वह नास्तिक है जो वेद नाम विद्या की निन्दा करता है सोई पुरुष नास्तिक होता है॥ वेदःस्मृतिःसदाचारः स्वस्यचप्रि-

प्रियमात्मनः। एतच्चतुर्विधंप्राहुः साक्षाद्धर्मस्यलक्षणम्॥ श्रुति स्मृति सत्पुरुषों का आचार और अपने हृदय की प्रसन्नता नाम जितने पाप कर्म हैं उनकी इच्छा जब पुरुषों को होती है तब उसी समय भय, शङ्का और लज्जा से हृदय में अप्रसन्नता होती है और जितने पुण्य कर्म हैं उनमें नहीं होती इससे जिस २ कर्म में हृदय का अन्तर्यामी प्रसन्न होय वही धर्म है और जिसमें अप्रसन्न होय वही अधर्म जानना इसके उदाहरण चोरजारादिक हैं इसको साक्षाद्धर्म का ४ प्रकार का लक्षण कहते हैं॥ अर्थकामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानंविधीयते। धर्मजिज्ञासमानानां प्रमाणम्परमंश्रुतिः॥ जो मनुष्य अर्थोंमें नाम धनादिकों में आसक्त नाम लोभ नहीं करते हैं और कामनाम विषयासक्ति में जो आसक्त नहीं नाम फसे नहीं हैं उन्हीं को धर्म का ज्ञान होता है अन्य को कभी नहीं परन्तु जिनको धर्म जानने को इच्छा होय वे वेदादिक शास्त्र पढ़ें और विचारें उनको बिना पढ़ने से धर्म का यथार्थ ज्ञान न होगा॥ वेदास्त्यागश्चयज्ञाश्च नियमाश्चतपांसिच। नविप्रदुष्टभावस्य सिद्धिङ्गच्छन्तिकर्हिचित्॥ वेद, विद्या, त्याग, यज्ञ, नियम और तप इतने विप्र दुष्ट नाम अजितेन्द्रिय पुरुष को कभी सिद्ध नहीं होते। इससे जितेन्द्रियता का होना सब मनुष्यों को आवश्यक है जितेन्द्रिय का लक्षण क्या है कि॥ श्रुत्वास्पृष्ट्वाचदृष्ट्वाच भुक्त्वाघ्रात्वाचयोनरः। नहृष्यतिग्लायतिवा सविज्ञेयोजितेन्द्रियः॥ जिस पुरुष को अपनी निंदा सुनके शोक न होय और अपनी स्तुति सुनके हर्ष न होय तथा दुष्टस्पर्श, दुष्टरूप, दुष्टरस और दुष्टगन्ध को पाके शोक न होय और श्रेष्ठस्पर्श, श्रेष्ठरूप, श्रेष्ठरस और श्रेष्ठगन्ध को प्राप्त होके जिसको हर्ष नहीं होता उसको जितेन्द्रिय कहते हैं अर्थात सब मनुष्यों को यही योग्यता है कि न हर्ष करना चाहिये न शोक किन्तु न शोक में गिरे न हर्ष के मध्यही में सदा बुद्धि को रक्खे

यही सुखका स्थान है ॥ ब्रह्मारम्भेऽवसानेच पादौग्राह्यौगुरोः सदा । संहत्यहस्तावध्येयं सहिब्रह्माञ्जलिःस्मृतः ॥ जब शिष्य गुरू के पास पढ़ने का नित्य आरम्भ करैं तब आदि और अन्त में गुरू को नमस्कार और पादस्पर्श करैं जब तक पढ़ैं तथा गुरू के सन्मुख रहैं तब तक हाथही जोड़ के रहैं इसी का नाम ब्रह्माञ्जलि है जब गुरू उठै तब आपही पहिले उठै जो आप बैठा होय और गुरू आवैं तब अपने उठके सन्मुख जाके गुरू को शीघ्रही नमस्कार करै और उत्तम आसन पर बैठावै आप नीचे आसन पर बैठे और नम्र होके पूंछे अथवा सुनै ॥ नापृष्टःकस्यचिद्ब्रूयान्नचान्यायेनपृच्छतः । जानन्नपिहिमेधावी जडवल्लोकआचरेत् ॥ जब तक कोई न पूंछे तब तक कुछ न कहै और जो कोई हठ, छल और कपट से पूंछे उस्से कभी न कहै जाने तो भी मूर्खों के सामने मौनही रहना ठीक है क्योंकि शठ लोग कभी न मानेंगे इस्से उनसे कहना व्यर्थही है ॥ अधर्मेणचयःप्राह यश्चाधर्मेणपृच्छति । तयोरन्यतरःप्रैति विद्वेषम्वाधिगच्छति ॥ जो कोई अधर्म से कहता और जो अधर्म से पूंछता है नाम छल, कपट, दोनों का विरोध होने से किसी का मरण अथवा विद्वेष होजाय तो अवश्य होगा इस्से गुरू शिष्य अथवा कोई मनुष्य जो इस शिक्षा को मानेगा और यथावत् करेगा उसको बड़ा सुख होगा ॥ आचार्यपुत्रःशुश्रूषुर्ज्ञानदोधार्मिकःशुचिः । आप्तःशक्तोऽर्थदःसाधुः स्वोध्याप्यादशधर्मतः ॥ आचार्य का पुत्र, शुश्रूषु नाम सेवा का करने वाला, तथा ज्ञान का देने वाला वा धार्मिक शुचि नाम पवित्र, आप्त नाम पूर्णकाम और शक्त नाम समर्थ, अर्थद नाम अर्थ का देनेवाला, साधु नाम सत्य मार्ग में चलने वाला और सत्य का उपदेश करने वाला इन दश पुरुषों को विद्वान् धर्म और परिश्रम से पढ़ावै जिस्से कि वे विद्यावान् होंय क्योंकि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र

और उन सभों की स्त्री वे सब जब तक विद्या वाले न होंगे तब तक यथावत् बुद्धि, बल, पराक्रम, नैरोग्य और धर्म की उन्नति कभी न होगी आर्यावर्त्त देश की उन्नति तभी होगी जब विद्या का यथावत् प्रचार होगा और जब तक उक्त आचार में प्रवृत्त न होंगे तब तक सुख के दिन कभी न आवेंगे क्योंकि ब्राह्मण और सम्प्रदायिक लोग पढ़के यथावत् धर्म में निश्चित तो नहीं होते किन्तु अपनी २ आजीविका और अपना २ सम्प्रदाय जो वेद विरुद्ध पाखण्ड उनही को बढ़ावेंगे और जीविका के लोभ से सब दिन छल कपटही में रहेंगे कभी धर्म में चित्त न देंगे न धर्म को जानेंगे क्योंकि उनको पाखण्डही से सुख मिलता है इस्से पाखण्डही को पढ़ावेंगे धर्म को कभी नहीं जब क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र पढ़ेंगे उनको आजीविका नाश का भय तो नहीं है इस्से कभी छल कपट से असत्य न कहेंगे इस्से सत्यही सत्य प्रवृत्ति होगी और वे क्षत्रियादिक जब तक न पढ़ेंगे तब तक आर्यावर्त्त देश वासियों के मिथ्याचार और पाखण्डों का नाश कभी न होगा जो राजा और जितने धनाढ्य लोग हैं उनको तो अवश्य सब शास्त्रों को पढ़ना चाहिये क्योंकि उनके पढ़े बिना कोई प्रकार से भी विद्या का प्रचार धर्म की व्यवस्था और आर्यावर्त्त देश की उन्नति कभी न होगी उनको बहुतसी हानि भी होगी क्योंकि उनके अधिकार में राज्य धन और बहुत से पुरुष रहते हैं जब वे विद्वान्, बुद्धिमान्, जितेन्द्रिय और धर्मात्मा होंगे तब उनके राज्य में धर्म और विद्या का प्रचार होगा उनका धन अनर्थ में कभी न जायगा और उनके सङ्गी सब श्रेष्ठ धर्मात्मा होंगे इस्से सब देशस्थों का उपकार होगा केवल आर्यावर्त्त वासियों का नहीं किन्तु सब देशस्थ मनुष्यों को ऐसाही करना उचित है कि पक्षपात का छोड़ना सत्य का ग्रहण करना और जितने मत हैं वे सब मूर्खोंही के

कल्पित हैं और बुद्धिमानों का एकही मत अर्थात सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना है इस्से क्या आया कि जो लाभ विद्या के प्रचार से होता है ऐसा लाभ कोई अन्य प्रकार से नहीं होता ये सब श्लोक मनुस्मृति के हैं जो पढ़ना अथवा पढ़ाना सो शास्त्रोक्त प्रत्यक्षादिक प्रमाणों से सत्य २ परीक्षित करकेही पढ़ना और पढ़ाना भी ॥ इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमव्यपदेश्यमव्यभिचारि व्यवसायात्मकं प्रत्यक्षम् ॥ यह गोतम मुनि का सूत्र है सो प्रत्यक्ष सब को अवश्य मानना चाहिये ॥ अक्षस्य २ प्रतिविषयंवृत्तिः प्रत्यक्षम् । अक्ष नाम इन्द्रिय का है इन्द्रिय इन्द्रिय के प्रति विषय ग्रहण करने वाली जो वृत्ति तज्जन्य जो ज्ञान उसको प्रत्यक्ष कहते हैं सो जब किसी बाह्य व्यवहार की जीव को इच्छा होती है तब मन को संयुक्त होके जीव प्रेरणा कर्त्ता है तब मन इन्द्रियों को अपने २ विषयों के प्रति प्रेरता है तब इन्द्रियों का और विषयों का सन्निकर्ष होता है अर्थात सम्बन्ध होता है सम्बन्ध किसका नाम है कि उन उन इन्द्रिय और विषयों का जो यथावत् वृत्ति नाम वर्तमान का होना अथवा ज्ञान का होना उसका नाम है सन्निकर्ष सन्निकर्षोवृत्तिर्ज्ञानं वा । यह वात्स्यायन भाष्य का वचन है इस पुस्तक में बारम्बार न लिखा जायगा परंतु ऐसा जानना कि जो कुछ लिखा जायगा सो गौतम सूत्रादि के अनुसारही से और वात्स्यायनादिक मुनि के भाष्यों के अभिप्राय से लिखा जायगा इसमें जिसको शङ्का अथवा अधिक जानना चाहे सो उन ग्रन्थों में देख ले वैसा प्रत्यक्षज्ञान ठीक २ यथावत् तत्त्वस्वरूप जानना उसके भिन्न जो होगा उसको भ्रम नाम अज्ञान कहा जायगा जैसे कि ॥ व्यवस्थितः पृथिव्यांगन्धः अप्सु रसः रूपन्तेजसि वायौ स्पर्शः । ये सूत्र और अभिप्राय वैशेषिक सूत्रकार मुनि के हैं इन्द्रियों से गुणही का ग्रहण होता है द्रव्य का कभी नहीं क्यों-

कि ॥ श्रोत्रग्रहणोयोऽर्थः सशब्दः। यह वैशेषिक का सूत्र है ऐसे सब सूत्र हैं हम लोग श्रोत्र नाम कर्णेन्द्रिय से शब्दही का ग्रहण कर्ते हैं और स्पर्शादिकों का नहीं ऐसेही स्पर्शेन्द्रिय से स्पर्शही का ग्रहण कर्ते हैं तथा नेत्र से रूप का जीभ से रस का और नासिका से गन्ध का ये शब्दादिक आकाशादिकों के गुण हैं गुणोंही को इन्द्रियों से ग्रहण करते हैं आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इनका ग्रहण इन्द्रियों से कभी नहीं होता मन से तो जीव आकाशादिकों का प्रत्यक्ष ग्रहण कर्त्ता है क्योंकि जो जिसका स्वाभाविक गुण है वह उस्से भिन्न कभी नहीं होता जैसे कि पृथ्वी का स्वाभाविक गुण गन्ध है सो पृथ्वी से भिन्न कभी नहीं रहता और गन्ध से पृथ्वी भी भिन्न नहीं रहती इन दोनों के सम्बन्ध से जीव को गन्ध के ज्ञान होने से पृथ्वी काभी प्रत्यक्ष होता है वैसेही रस, रूप, स्पर्श और शब्दों का जीभ, नेत्र, त्वक् और श्रोत्र से ग्रहण होने से जल, अग्नि, वायु और आकाश का भी मनसे जीव को प्रत्यक्ष होता है सो प्रत्यक्ष किस प्रकार का लेना कि पृथ्वी में जल, अग्नि और वायु के सम्बन्ध होने से रस, रूप और स्पर्श भी ये तीनों गुण देख पड़ते हैं परन्तु तीन गुण स्पर्शादिक वायु आदिकों के संयोग निमित्तही से हैं वैसेही जल में रूप और स्पर्श मिले हैं, तथा अग्नि में स्पर्श और वायु में शब्द आकाश में कोई नहीं एक शब्दही अपना स्वाभाविक गुण है वायु में जो शब्द है सो आकाश के संयोग निमित्त से और जल में जो गन्ध है सो पृथ्वी के संयोग से है ऐसेही अन्यत्र जान लेना सो प्रत्यक्ष ज्ञान ऐसा लेना कि अव्यपदेश्य नाम संज्ञा से जो होता है जैसे कि घट एक पदार्थ की संज्ञा है इस संज्ञा से जिसका नाम कि घट है वह घट शब्द के उच्चारण से कि तूं घड़े को ला जब वह घड़ा लेने को चला जिसवक्त उसने घड़े को देखा उस वक्त जो घट संज्ञा सो उस

को न देख पड़ी किन्तु जैसी घटकी आकृति और रूप वही तो देख पड़ा और घट शब्द नहीं फिर वह घड़े को लेके जिसने आज्ञा दी थी उसके पास घड़े को रखके बोला कि यह घड़ा है उसने घड़े को प्रत्यक्ष देखा परन्तु उसमें घड़ा ऐसा जो नाम उसको उसने भी न देखा के जो संज्ञा बिना पदार्थ मात्र का ज्ञान होना उसको अव्यपदेश्य कहते हैं और जो व्यपदेश्य ज्ञान है सो तो शब्द प्रमाण में है प्रत्यक्ष में नहीं और दूसरा प्रत्यक्ष ज्ञान का अव्यभिचारि यह विशेषण है सो जानना चाहिये व्यभिचारिज्ञान इस प्रकार का होता है कि अन्य पदार्थ में भ्रम से अन्यपदार्थ का ज्ञान होना जैसे कि लकड़ी के स्तम्भ में पुरुष का ज्ञान रज्जु में सर्पका सीपमें चांदी और पाषाणादि मूर्त्ति में देव का ज्ञान इत्यादिक ज्ञान सब व्यभिचारि हैं उस समय में तो यथार्थ भ्रमसे देखने में आते हैं परन्तु उत्तरकाल में स्तम्भादिकों का साक्षात् प्रत्यक्ष निर्भ्रम तत्त्वज्ञान के होने से पुरुषादिकों का जो भ्रम से ज्ञान हुआ था सो नष्ट होजाता है इससे क्या आया कि जिस ज्ञान का कभी व्यभिचारि नाम नाश न होय उसको कहते हैं अव्यभिचारि ज्ञान सो प्रत्यक्ष अव्यभिचारिही लेना अन्य नहीं और इस प्रत्यक्ष का तीसरा विशेषण व्यवसायात्मक है व्यवसाय नाम है निश्चय का और जो जिसका तत्त्व स्वरूप है उसका नाम है आत्मा जबतक उस पदार्थ का तत्त्व नाम स्वरूप निश्चय न होय तब तक व्यवसायात्म ज्ञान नहीं होता और जब उसके स्वरूप का यथावत् ज्ञान का निश्चय होता है उसको व्यवसायात्मक कहते हैं जैसे कि दूर से श्वेत बालुका देखी अथवा घोड़ा देखा उसके नेत्र से सम्बन्ध भी भया परन्तु उसके हृदय में निश्चय न हुआ कि यह वस्त्र अथवा बालू अथवा और कुछ है यह घोड़ा अथवा गैया अथवा और कुछ है जब तक यथावत् वह निकट से न देखेगा

तब तक सन्देह की निवृत्ति न होगी और जब तक सन्देह की निवृत्ति न होगी तब तक सन्देहात्मक नाम भ्रमात्मक ज्ञान रहेगा उसको प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं जानना और जो सत्य २ दृढ़ निश्चित तत्वज्ञान है उसको उक्त प्रकार से प्रत्यक्ष ज्ञान जानना इस प्रकार से थोड़ा सा प्रत्यक्ष के विषय में लिखा परंतु जिसको अधिक जानने की इच्छा होय सो षड्दर्शनों में देख लेवै इससे आगे दूसरा अनुमान प्रमाण है ॥ अथतत्पूर्वकं त्रिविधमनुमानं पूर्ववच्छेषवत्सामान्यतोदृष्टञ्च। यह गौतममुनि का सूत्र है अथ नाम प्रत्यक्ष लक्षण लिखने के अनन्तर अनुमान लक्षण का प्रकाश करते हैं तत्पूर्वक नाम प्रत्यक्ष पूर्वक जिसमें पहिले प्रत्यक्ष का होना आवश्यक होय और अनुमान पीछे मान नाम ज्ञान होना उसका नाम अनुमान है सो अनुमान प्रत्यक्ष पूर्वकही होता है अन्यथा नहीं यह अनुमान तीन प्रकार का होता है एक तो पूर्ववत् दूसरा शेषवत् तीसरा सामान्य तो दृष्ट पूर्ववत् इसका नाम है कि जहां कारण से कार्य का ज्ञान होना जैसे बादल के विना वृष्टि कभी नहीं होती सो बादलों की उन्नति गर्जना और विद्युत् इनको देखके अवश्य वृष्टि होगी ऐसा ज्ञान होता है तथा परमेश्वर के बिना सृष्टि कभी नहीं होती क्योंकि रचना करने वाले के बिना रचना कभी नहीं होती और बादल जो है सो वृष्टि का कारण है परमेश्वर जो है सो जगत् का कारण है यह पूर्ववत् अनुमान है और शेषवत् यह है कि जहां कार्य से कारण का ज्ञान होना जैसे कि पहिले नदी में थोड़ा प्रवाह वेग भी न्यून अथवा सूखी देखते थे फिर जब वह पूर्ण हुई देख के उसके प्रवाह का शीघ्र चलना वृक्ष काष्ठ घासादिक बह जाते देख के अवश्य ज्ञान होता है कि वृष्टि ऊपर कहीं भई हीं है इस संसार की रचना देख के अवश्य रचना करने वाला परमेश्वरही है इसका नाम शेषवत् अनुमान है तीसरा

सामान्य तो दृष्ट अनुमान है जैसे कि चलकेहो स्थान से स्थानान्तर में जाता है किसी पुरुष को अन्य स्थान में कहीं बैठा देखा फिर दूसरे काल में अन्य स्थान में उसी पुरुष को बैठा देखा इस्से देखने वाले ने क्या जाना कि यह पुरुष इस स्थानसे चलकेहो आया है क्योंकि बिना गमन स्थान से स्थानान्तर में कोई भी नहीं जा सक्ता ऐसा सामान्य से नियम है इस प्रकार का सामान्य से दृष्ट अनुमान है उसका गमन तो उसने देखा नहीं परन्तु उसको गमन का ज्ञान होगया अथवा पूर्ववत् नाम किसी स्थान में अग्नि नाम अङ्गारे को काष्ठादिकों में मिला हुआ और उसमें धूम भी निकलता हुआ देखाथा उसने जान लिया कि अग्नि और काष्ठादिकों का संयोग जब होता है तब धूम अवश्य निकलता है फिर किसी समय उसने दूर स्थान में धूम को देखा देखने से उसको ज्ञान भया कि वहां अग्नि अवश्य है इस प्रकार का अनेकविधि पूर्ववत् अनुमान होता है सो जान लेना शेषवत् नाम किसी ने बुद्धि से बिचार करके कहा कि यह पुरुष उत्तम पण्डित है इस्से क्या आया कि अन्य ऐसा कोई पण्डित नहीं और मूर्ख भी बहुत से हैं इस स्थान में बिना कहने से ऐसा जाना गया ऐसे अन्य भी बहुत प्रकार का शेषवत् अनुमान जान लेना सामान्य दृष्ट नाम जैसे कि मनुष्य के शिर में प्रत्यक्ष शृङ्ग के नहीं देखने से अदृष्ट मनुष्यों के शिर में भी शृङ्ग का नहीं होना ऐसा निश्चित जाना जाता है इस्का नाम सामान्य से दृष्ट अनुमान है इस्से आगे तीसरा उपमान प्रमाण है ॥ प्रसिद्धसाधर्म्यात्साध्यसाधनमुपमानम् । यह गौतम मुनि का सूत्र है प्रसिद्ध नाम प्रगट साधर्म्य नाम तुल्य धर्मता एक का दूसरे से होना साध्य नाम जिसको जनावै साधन नाम जिस्से जनावै जिसकी उपमा जिस्से की जाय उसका नाम उपमान प्रमाण है किसी ने किसी से पूछा कि गवय नाम नीलगाय

किस प्रकार की होती है उसने उसे उत्तर दिया कि जैसी यह गाय होती है वैसाही गवय होता है उसने उसके उपदेश को हृदय में रख लिया फिर उसने कभी-कालान्तर में किसी स्थान में बन में वा अन्यत्र उस पशु को देखके जान लिया कि यही नीलगाय है क्योंकि गाय के तुल्य होने से ज्ञान का निश्चय होगया अथवा किसीने किसीसे कहा कि तू देवदत्त नाम मनुष्य के पास जा तब उसने उससे पूछा कि देवदत्त कैसा है उसने उससे कहा कि जैसा यह यज्ञदत्त है वैसाही देवदत्त है फिर वह वहां गया उसने यज्ञदत्त के तुल्य देवदत्त को देखके निश्चय जान लिया कि यही देवदत्त है तब देवदत्त ने कहा कि आपने मुझको कैसे जाना उसने कहा मुझसे किसी ने कहा था कि यज्ञदत्तही के समान देवदत्त है उस यज्ञदत्त के समान होने से आपको मैंने जान लिया इसका नाम उपमान प्रमाण है चौथा शब्द प्रमाण है ॥ आप्तोपदेशः शब्दः । यह गौतममुनि का सूत्र है ॥ आप्तः खलुसाक्षात् कृतधर्मा यथादृष्टस्यार्थस्य चिख्यापयिषया प्रयुक्त उपदेष्टा साक्षात् करण मर्थस्याप्तिस्तया प्रवर्तत इत्याप्तः ऋष्यार्यम्लेच्छानां समानंलक्षणम् ॥ यह वात्स्यायन मुनि का भाष्य है आप्त किसको कहते हैं कि साक्षात् कृतधर्मा जिसने निश्चय करके धर्मही कियाथा करता होय और करै अधर्म कभी नहीं और जिसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोकादिक दोषों का लेश कभी न होय विद्यादिक गुण सब जिसमें होंय बैर किसी से न होय पक्षपात कभी न करै और सब जीवों के ऊपर कृपा करै अपने हृदय में सत्य २ जानने से जैसा सुख भया वैसाही सब जीवों को सत्य २ उपदेश जनाने से सुख प्राप्त कराने की इच्छा से जो प्रेरित होके उपदेश करै और आप्ति उसका नाम है कि जो जैसा पदार्थ है उसका वैसाही ज्ञान का होना उस आप्ति से युक्त होय नाम सब काम जिसके पूर्ण होंय छल, कपट

और लोभ से जो कभी प्रवृत्त न होय किन्तु एक परमेश्वर की आज्ञा जो धर्म और सब जीवों के कल्याण के उपदेश की इच्छा जिसको होय उसको आप्त कहते हैं सब आप्तों में भी आप्त परमेश्वर है उस आप्त परमेश्वर का और उस प्रकार के उक्त आप्त मनुष्यों का जो उपदेश है शब्द प्रमाण उसको कहते हैं उसी का प्रमाण करना चाहिये इनसे विपरीत मनुष्यों के उपदेश का कभी प्रमाण न करना चाहिये आप्त कोई देश विशेष में होता है अथवा सब देशों में होता है इसका यह उत्तर है कि ऋष्यार्यम्लेच्छानांसमानंलक्षणम् । ऋषि नाम यथार्थ मंत्रद्रष्टा यथार्थ पदार्थों के विचार के जानने वाले उत्तर में हिमालय और दक्षिण में विन्ध्याचल पूर्व में समुद्र और पश्चिम में समुद्र इन चारों के अवधि पर्यन्त देश में रहने वाले मनुष्यों का नाम आर्य्य है इस देश से भिन्न देशों में रहनेवाले मनुष्यों का नाम म्लेच्छ है म्लेच्छ नाम निन्दित नहीं है किंतु म्लेच्छ-अव्यक्तेशब्दे । इस धातु से म्लेच्छ शब्द सिद्ध होता है उसका अर्थ यह है कि जिन पुरुषों के उच्चारण में वर्णों का स्पष्ट उच्चारण नहीं होता उनका नाम म्लेच्छ है सब देशों में और सब मनुष्यों में आप्त होने का सम्भव है असम्भव कभी नहीं अर्थात् ऋषि आर्य्य और म्लेच्छ इनमें आप्त अवश्य होते हैं क्योंकि जो किसी मनुष्यों में उक्त प्रकार का लक्षण वाला मनुष्य होगा उसी का नाम आप्त होगा यह नियम नहीं है कि इस देश में होय और अन्य देश में न होय आर्य्य नाम है श्रेष्ठ का और जो हिन्दू नाम इनका रक्खा है सो मुसल्मानों ने ईर्ष्या से रक्खा है इसका अर्थ है चोर, नीच, कपटी, काफ़ी और गुलाम इससे यह नाम भ्रष्ट है किंतु आर्य्यों का नाम हिन्दू कभी न रखना चाहिये ॥ आसमुद्रात्तुवैपूर्वादासमुद्रात्तुपश्चिमात् । तयोरेवान्तरंगिर्योरार्य्यावर्त्तंविदुर्बुधाः ॥ आर्य्यैरावर्त्तः सआर्य्यावर्त्तः जो-

देश आर्य्यों के नाम श्रेष्ठों से आवर्त्त नाम युक्त होय उसका नाम आर्य्यावर्त्त देश है सो देश हिमालयादिक अवधि से कह दिया सो जान लेना वह शब्द प्रमाण दो प्रकार का होता है सू० सद्विधोदृष्टाऽदृष्टार्थत्वात्। जिस शब्द का अर्थ प्रत्यक्ष देख पड़ता है सो तो दृष्टार्थ शब्द है और जिस शब्द का श्रवण तो प्रत्यक्ष होता है और उसका अर्थ प्रत्यक्ष देखने में नहीं आता उसका नाम अदृष्टार्थ शब्द है जैसे कि स्वर्गादिक शब्दों का अर्थ देखनेमें नहीं आता इस प्रकार के शब्द का नाम अदृष्टार्थ शब्द है दृष्टार्थ शब्द यह है कि जैसा पृथिव्यादिक इतने प्रत्यक्षादि के ४ प्रकार के भेद हैं एक तो प्रमाता होता है कि जो पदार्थ को प्रमाणों से जान लेता है जिसका नाम जीव है प्रमाणों का करने वाला प्रमिणोति सप्रमाता येनार्थं प्रमिणोतितत्प्रमाणम् जिस्से अर्थ को यथावत् जाने उसका नाम प्रमाण है प्रत्यक्षादिक तो कह दिये जैसे कि नेत्र से जीव जो है सो रूप को जान लेता है योऽर्थः प्रतीयतेतत्प्रमेयम्। जिसको प्रतीति होती है उसका नाम प्रमेय है जैसा कि रूप नेत्र से देखा गया यदर्थविज्ञानंसा प्रमितिः। जो अर्थ का यथावत् तत्त्व विज्ञान होना उसका नाम प्रमिति है प्रमाता प्रमाण, प्रमेय, और प्रमिति इन चार प्रकार को विद्या को भी यथावत् जान लेना चाहिये और सो ४ प्रकार की जो विद्या है उसको जानना चाहिये हेयम् नाम त्याग करने के जो योग्य होय जैसे कि अधर्म और ग्राह्य नाम ग्रहण करने के योग्य जैसा कि धर्म दूसरा तस्यनिवर्तकम् नाम हेय जो अधर्म उसकी निवृत्ति का जो ज्ञान से करना और पुरुषार्थ से तस्य प्रवर्तकम् ग्राह्य जो धर्म उसको जो प्रवृत्ति हृदय में विचार से और पुरुषार्थ से होनी तीसरा हानमात्यन्तिकम् जो हेय अधर्म का अत्यन्त त्याग कर देना पुरुषार्थ से और विचार से स्थान मान मात्यन्तिकम् नाम ग्राह्य जो धर्म उसको दृढ़स्थिति हृदय

बिना प्रत्यक्ष की उत्पत्तिही नहीं होती फिर इन्द्रियार्थ सन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमित्यादि प्रत्यक्ष का जो लक्षण किया है सो व्यर्थ हो जायगा क्योंकि आप ने प्रमाण की उत्पत्ति प्रमेय के सम्बन्ध से पूर्वही मानी है इस्से आपके मतमें यह दोष आवेगा अच्छा तो मैं प्रमेयों के सम्बन्ध के पीछे प्रमाणों की उत्पत्ति मानता हूं फिर क्या दोष आवेगा अच्छा सुनो सूत्र ॥ पश्चात्सिद्धौनप्रमाणेभ्यः प्रमेयसिद्धिः। पहिले प्रमेय की सिद्धि मानेंगे तो प्रमाणोंही से प्रमेय की सिद्धि होती है यह जो आप का कहना सो मिथ्या होजायगा जो आप एक सङ्ग प्रमाण और प्रमेय मानेंगे तो भी यह दोष आवेगा सूत्र ॥ युगपत्सिद्धौप्रत्यर्थनियतत्वात्क्रमवृत्तित्वाभावोबुद्धीनाम्। यह जो बुद्धि है सो एक विषय को जानकर दूसरे विषय को जान सक्ती है दोनों को एक समय में नहीं जान सकती जैसे कि एक वस्तु को देखा देख के जब रूप की बुद्धि होती है तब इतना यह बस्त भारी है उसको न जानैगी और जब भार का मन बिचार करता है तब रूपका नहीं कर सकता जब रूप का तब भार का नहीं ॥ सूत्र। युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसोलिङ्गम्। एक काल में दोनों ज्ञानको न ग्रहण करे किन्तु एक को ग्रहण करके फिर दूसरे को ग्रहण करे उसी का नाम मन है वैसेही प्रमाण और प्रमेय एककाल में दोनों का ज्ञान कभी नहीं होता जिस समय प्रमाण का ज्ञान होता है उस समय प्रमेय का नहीं जिस समय प्रमेय का ज्ञान होता है उस समय प्रमाण का नहीं यह सब जीवों को अनुभव सिद्ध बात है इस बात में आप के कहने से दोष आवेगा ऐसा भी कहना आप को उचित नहीं इस पूर्वपक्ष का यह समाधान है कि ॥ सूत्र। उपलब्धिहेतोरुपलब्धिविषयस्यचार्थस्यपूर्वापरसहभावानियमाद्यथादर्शनविभागवचनम् ॥ भाष्य उपलब्धि का हेतु नाम प्रकाशक जिस्से कि ज्ञान होता

है और उपलब्धि का विषय जिसका ज्ञान होता है जैसा कि घटादिक इनका पूर्वा पर सह भाव नाम यह इस्से पूर्व वा यह पर ऐसा नियम नहीं सर्वत्र देखने में आता इस्से जैसा जहां योग्य होय वैसा वहां लेना चाहिये देखना चाहिये कि सूर्य का दर्शन तो पीछे होता है और दो घड़ी रात्रि से पहिलेही प्रकाश हो जाता है उस्से वस्त्रादिक पदार्थों का पहिलेही दर्शन होजाता है जब दीप को जलाते हैं तब दीप का दर्शन तो पहिले होता है फिर दीप के प्रकाश से अन्य सब पदार्थों का दर्शन पीछे होता है सूर्य और दीप अपना प्रकाश आपही करते हैं और अन्य पदार्थों का भी एक कालमें प्रकाश करते हैं यह तो दृष्टान्त हुआ वैसाही प्रमाणों के दृष्टान्त में जानना चाहिये कहीं तो पहिले प्रमाण होता है कहीं प्रमेय अन्य समय में दोनों एकही सङ्ग में होते हैं जैसे कि ॥ सूत्र। त्रैकाल्यासिद्धेः प्रतिषेधानुपपत्तिः । आपने प्रत्यक्षादिक प्रमाणों का जो निषेध किया सो तीनों कालों को मान के किया अथवा नहीं जो आप भूत काल नाम बीते भये कालमें प्रमाणों की सिद्धि न मानेंगे तो आपने निषेध किसका किया और जो भविष्यत्कालमें होनेवाले प्रमाणों का आपने निषेध किया तो प्रमाण उत्पन्न भी नहीं भये पहिले निषेध कैसे होगा और जो वर्तमान कालमें प्रत्यक्षादि प्रमाण सिद्ध हैं तो सिद्धों का निषेध कोई कैसे करेगा ॥ सूत्र । सर्वप्रमाणप्रतिषेधाच्च प्रतिषेधानुपपत्तिः । किसी प्रमाण को आप न मानेंगे तो आपके प्रतिषेध की प्रमाण से सिद्धि कैसे होगी जब प्रतिषेध में कोई प्रमाण नहीं है तब प्रतिषेध अप्रमाण होगा तब कोई शिष्ट इस प्रमाण के निषेध को न मानेगा वह आप का निषेधही व्यर्थ होगया इस्से आप को भी प्रमाणों को अवश्य मानना चाहिये ॥ सूत्र। त्रैकाल्याप्रतिषेधश्च शब्दादातोद्यसिद्धिवत्तत्सिद्धेः

तीन कालों का निषेध नहीं हो सकता जैसे कि बीणा अथवा बांसुलि वा कोई वादित्र कोई दूर बजाता होय उनका शब्द दूसरे सुनके पूर्व सिद्ध वादित्र को जान लिया जाता है कि यह बीणा का शब्द है और जब बीणा देखी तब भविष्यत्काल में जो होने वाला शब्द उसको जान लिया कि बीण आगे बजाने से शब्द होगा और जब सन्मुख बीण को और उसके शब्द को भी एक काल में देखता और सुनता है तब बीण और बीण के शब्द को भी जान लेता है वैसीही व्यवस्था प्रमाणों की जान लेना ॥ सूत्र । प्रमेयताचतुलाप्रामाण्यवत् । जैसे कि तुला पदार्थों के तौलने के लिये प्रमाण की नाईं है तुलासेही घृतादिक द्रव्यों को तौल के प्रमाण कर लेते हैं इसमें तुला तो प्रमाण स्थानी है और घृतादिक प्रमेय स्थानी हैं परन्तु वही तुला दूसरी तुला से तौली जाय तब प्रमेय संज्ञा भी उसकी होती है वैसेही जब प्रत्यक्षादिक प्रमाणों से रूपादिक विषयों को चक्षुरादिकों से हम लोग देखते हैं तब तो प्रत्यक्षादिक और चक्षुरादिक प्रमाण हैं रूपादिक विषय प्रमेय हैं और जब प्रत्यक्षादिक क्या होते हैं ऐसी आकांक्षा होगी तब वेही प्रमेय हो जांयगे क्योंकि ऐसे लक्षण वाले को प्रत्यक्ष प्रमाण कहना और ऐसा लक्षण जिसका होय वह अनुमान होता है इत्यादिक सब जान लेना तीन प्रकार से शास्त्र की प्रवृत्ति होती है १ एक उद्देश, २ दूसरा लक्षण, और ३ तीसरी परीक्षा, उद्देश इसका नाम है कि नाम मात्र से पदार्थ को गणना करनी जैसा कि द्रव्य गुण कर्म सामान्य विशेष और समवाय लक्षण इसका नाम है कि निश्चित जो जिसका धर्म है उससे पृथक् कभी न होय जैसा कि पृथिवी में गन्ध जलमें रस इत्यादिक गन्धही पृथिवी को जनाता है और गन्धही से पृथिवी जानी जाती है गन्ध रसादिकों से विशेष है और गन्ध से रसादिक

विशेष हैं परस्पर ये गन्धादि के निवर्तक और ज्ञापक हो जाते हैं इसी गन्ध पृथ्वी का लक्षण है और रसादिक जलादिकों के लक्षण हैं। गन्ध का लक्षण नासिका, नासिका का लक्षण मन, मन का लक्षण आत्मा, आत्मा का लक्षण भी आत्माही है और कोई नहीं लक्षण का भी लक्षण होता है वा नहीं लक्षण का लक्षण कभी नहीं होता जो कोई लक्षण का लक्षण कहता है सो मूर्ख पुरुष है वा जिसने ग्रन्थ में लिखा है वह भी मूर्ख पुरुष है क्योंकि पृथ्वी का लक्षण गन्ध है गन्ध का लक्षण नासिका सो नासिका के प्रति गन्ध लक्ष्य है क्योंकि नासिकाही से गन्ध जाना जाता है और नासिका मन से जानी जाती है इसी नासिका का लक्षण मन है नासिका मन का लक्ष्य है मन का लक्षण आत्मा है क्योंकि आत्माही से मन जाना जाता है आत्मा के प्रति मन लक्ष्य है क्योंकि मेरा मन सुखी वा दुःखी है सो आत्मा मन कोही ज्ञान के कहता है इसी मन आत्मा का लक्ष्य है आत्मा और परमात्मा परस्पर लक्ष्य और लक्षण हैं क्योंकि आत्मा परमात्मा को जान सक्ता है और अपने को आप भी जान लेता है तथा परमात्मा सब काल में आत्माओं को जानता है और आप को भी आप सदा जानता है वे अपने आपही के लक्ष्य और लक्षण भी हैं इसी आगे जो तर्क करना है सो मूढ़ों का धर्म है क्योंकि इसके आगे जो तर्क कुतर्क करता है उसका ज्ञान और बुद्धि नष्ट होजाती है इसी सज्जनों को और बुद्धिमानों को अवश्य जानना चाहिये कि यही ज्ञान की परम सीमा है और यही परम पुरुषार्थ है जो कोई लक्षण का लक्षण कहता है उसके मत में अनवस्था दोष प्रसङ्ग आवेगा कहीं भी अवस्था न होगी क्योंकि लक्षण का लक्षण उसका लक्षण २ ऐसा वाद करता २ मर जायगा कुछ हाथ नहीं आवेगा और जैसा कि लक्षण का लक्षण करता है वैसा लक्ष्य का लक्ष्य

उसका लक्ष्य २ यह भी अनवस्था दूसरी उसके मतमें आवेगी इससे बुद्धिमानों को ऐसी बात न कहनी चाहिये और न सुननी चाहिये कुछ थोड़ी सी प्रमाणों के विषय में परीक्षा लिख दी है और अधिक जानने की जिसको इच्छा होय वह गोतमसूत्र के २ ध्याय से लेके ५ पंचमाध्याय की पूर्त्ति पर्य्यन्त देख लेवे इतने ४ प्रमाण हैं परन्तु ४ चारों में और ४ चार प्रमाण मानना चाहिये॥ नचतुष्ट्वमैतिह्यार्थापत्तिसम्भवाभावप्रामाण्यात्। यह गोतममुनि का पूर्वपक्ष का सूत्र है ४ चारही प्रमाण नहीं किन्तु ८ आठ प्रमाण हैं ऐतिह्य नाम जो बहुत काल से सुनते सुनाते चले आये उसका नाम ऐतिह्य है अर्थापत्ति किसी ने किसी से कहा कि बादल के होनेही से दृष्टि होती है इससे क्या आया कि बिना बादल से दृष्टि नहीं होती इसका नाम अर्थापत्ति है सम्भव नाम मण के जानने से आधा मण पसेरी सेर और छटांक को जो बिचार से ज्ञान होजाय उसका नाम सम्भव है क्योंकि मण ४० सेर का होता है उसका आधा २० सेर होगा २० सेर के चतुर्थांश की पसेरी होगी उसका ५ पांचवां अंश सेर होगा सेर का १६ सोलहवां अंश छटांक होगा ऐसा बिचार करने से जो ज्ञान होता है उसका नाम सम्भव है यह सप्तम प्रमाण है आठवां अभाव किसी ने किसी से कहा कि तूं अलक्षित नाम अदृष्ट मनुष्य को ला जो कि तूने नहीं देखा है वह जाके जिसको उसने कभी न देखा था उसी को ले आवेगा देखने के अभाव से उसको ज्ञान होगया इससे अभाव भी आठवां प्रमाण मानना चाहिये इसका समाधान यह है कि॥ सूत्र। शब्दऐतिह्यानर्थान्तरभावादनुमानेऽर्थापत्तिसम्भवाभावानर्थान्तरभावाच्चाप्रतिषेधः। चारही प्रमाण मानना चाहिये उसका जो आप ने निषेध किया सो अयुक्त है क्योंकि आप्तों का उपदेश जो है सो शब्द है उसी में ऐतिह्य भी आगया क्योंकि

देव श्रेष्ठ होते हैं और असुर अश्रेष्ठ होते हैं यह भी तो आप्तोंही के उपदेश से सत्य २ जाना जाता है मूर्खों के उपदेश से कभी नहीं वैसेही प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष को जानना उसका नाम अनुमान है इस अनुमान में अर्थापत्ति सम्भव और अभाव ये तीनों गणना कर लीजिये इस्से चारही प्रमाण का मानना ठीक है यह गौतममुनि का अभिप्राय है पूर्व मीमांसा दर्शन और वैशेषिक दर्शन में प्रत्यक्ष और अनुमान दो प्रमाण माने हैं तथा योगशास्त्र और सांख्यशास्त्र में प्रत्यक्ष अनुमान और शब्द तीन प्रमाण माने हैं वेदान्त शास्त्र में प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द अर्थापत्ति और अनुपलब्धि ये छः प्रमाण माने हैं और जो कोई आठ प्रमाण मानें तो भी कुछ दोष नहीं इन उक्त प्रमाणों से ठीक २ परीक्षा करके शास्त्र को पढ़ै वा पढ़ावै और जो पुस्तक इन प्रमाणों से विरुद्ध होय उनको न पढ़े और न पढ़ावे इनसे विरुद्ध व्यवहार अथवा परमार्थ कभी न करना और मानना भी न चाहिये ॥ अथ पठन पाठन विधिं वक्ष्यामः । प्रथम तो अष्टाध्यायी को पढ़ै और पढ़ावै सो इस क्रम से वृद्धिरादैच् यह तो पाठ भया वृद्धिः आत् ऐच् यह पदच्छेद भया आदैचां वृद्धि संज्ञा स्यात् यह सूत्र का अर्थ है कि आ, ऐ, और औ, इन तीन अक्षरों की वृद्धि संज्ञा कि वृद्धि नाम है इस प्रकार से पाणिनि मुनिजी की जो बुद्धिमान् अष्टाध्यायी के आठ अध्यायों को पढ़ै सो छः महीने में अथवा आठ महीने में पढ़ लेगा इसके पीछे धातुपाठ को पढ़ै उसमें भवति भवतः भवन्ति इत्यादिक तिङन्त रूपों को और भावः भावौ भावाः इत्यादिक सुबन्त रूपों को उन्ही सूत्रों से साथ २ के पढ़ले तीन मास में दशगण दशलकार और बुभूषति इत्यादिक प्रक्रिया के रूपों को भी पढ़ लेगा वही सब अष्टाध्यायी के सूत्रों के उदाहरण और प्रत्युदाहरण होवेंगे इसके पीछे उणादि और गणपाठ को पढ़ै उसमें वायुः

वायू वायवः इत्यादिक रूप और बहुत से शब्दों का ज्ञान होगा एक मास में उसको पढ़ लेगा उसके पीछे सर्व विश्व उभ उभय इत्यादिक गणपाठ के साथ अष्टाध्यायी की द्वितीयानुवृत्ति नाम दूसरी बार पढ़े उसके सूत्रों में जितने शब्द हैं और जितने पद हैं उनको सूत्रों से सिद्ध कर लेवेगा और सर्वादि गणों के सर्वः सर्वौ सर्वे ऐसे पुल्लिङ्ग में रूप होते हैं सर्वा सर्वे सर्वाः इत्यादिक स्त्रीलिङ्ग में रूप होते हैं और सर्वं सर्वे सर्वाणि इत्यादिक नपुंसक में रूप होते हैं इनको भी पढ़ लेवे सूत्रों से साध के ऐसे दूसरी बार अष्टाध्यायी को ४ वा ६ छः मास में पढ़ लेगा इस प्रकार से १६ वा १८ अठारह मास में पाणिनि मुनि के किये ४ चार ग्रन्थों को पढ़लेगा फिर इसके पीछे पतञ्जलि मुनि का किया महाभाष्य जिसमें अष्टाध्याय्यादिक चार ग्रन्थों की यथावत् व्याख्या है बहुत से वार्त्तिक सूत्र हैं सूत्रों के ऊपर और अनेक परिभाषा हैं अनेक प्रकार के शास्त्रार्थ, शङ्का और समाधान हैं उनको यथावत् पढ़ले जब उसको पढ़लेगा तब सब व्याकरण शास्त्र उसका पूर्ण हो जायगा वह महा वैय्याकरण कहावेगा फिर विद्वान् संज्ञा भी उसको हो जायगी सो अठारह १८ महीने में सब महाभाष्य का पढ़ना संपूर्ण हो जायगा ऐसे मिलके ३ वर्ष तक व्याकरण शास्त्र संपूर्ण होगा उसके संपूर्ण पठन होने से अन्य सब शास्त्रों का पढ़ना सुगम हो जायगा इसमें कोई सज्जन को शङ्का मत हो कि यह बात सत्य नहीं है किन्तु इस प्रकार से पढ़ना और पढ़ाना होय तीन ३ वर्ष में संपूर्ण व्याकरण को पढ़े और पूर्त्ति न होय तब शङ्का करनी चाहिये पहिले जो शङ्का करनी सो व्यर्थही है इससे जिन पुरुषों का बड़ा भाग्य होगा वेही इस रीति में प्रवृत्त होंगे और उनको शीघ्र विद्या भी हो जायगी वे बहुत सुख पावेंगे और जो भाग्यहीन हैं वे तो सुख की रीति को कभी न मानेंगे

वर्ष तक सम्पूर्ण पढ़के कात्यायनादि मुनि कृत जो कोश यास्क मुनिकृत जो निघण्टु और यास्क मुनिकृत निरुक्त को पढ़ै और पढ़ावै उसमें अव्ययार्थ एकार्थ कोश और अनेकार्थ कोश नाम और नामियों का आप्तों के किये संकेत से जो सम्बन्ध हैं छः ...र के बीच में उसका ज्ञान होजायगा उसके पीछे पिङ्गल मुनि ... किये जो छन्दों के सूत्र भाष्य सहित को पढ़ै पीछे यास्कमुनि ...के किये काव्यालङ्कार सूत्र और उसके ऊपर वात्स्यायन मुनि के भाष्य को पढ़ै उस्से गायत्र्यादिक छन्दों का काव्य अलङ्कार और श्लोक रचने का भी यथावत् ज्ञान छः मास में होवेगा और अमर कोशादिक जो कोश ग्रन्थ और श्रुतबोधादिक जो छन्दो ग्रन्थ वे सब जाल ग्रन्थही हैं इनके दश वर्ष में पढ़ने से जो बोध नहीं होता सो उक्त निघंट्वादिक सत्यशास्त्रों के पढ़ने से दो वर्ष में होगा इस्से इनकाही पढ़ना और पढ़ाना ...चित है इसके पीछे पूर्व मीमांसाशास्त्र को पढ़ै जो कि जैमिनि मुनि के किये सूत्र हैं उनके ऊपर व्यासमुनि जीकी जो अधि-...माला व्याख्या के सहित पढ़ै चार मास के बीच में पढ़ ...ना और इसी शास्त्र के साथ मनुस्मृति को पढ़ै सो एक मास में मनुस्मृति को पढ़लेगा उसके पीछे वैशेषिकदर्शन जो कि ...दमुनि के किये सूत्र हैं उसके ऊपर गोतममुनि जी का ...या जो प्रशस्त पादभाष्य और भरद्वाज मुनिको किये सूत्रों की ...ि के सहित को पढ़ै उसके पढ़ने में दो मास जांयगे उसके ... न्यायदर्शन जो कि गोतममुनि के किये सूत्र उनके ऊपर ...स्यायन मुनि का किया भाष्य उसको पढ़ै इसके पढ़ने में ...र मास जांयगे इसके पीछे पातञ्जल दर्शन नाम योगशास्त्र ... कि पतञ्जलि मुनि के किये सूत्र उसके ऊपर व्यासमुनि जी ...किया भाष्य इसको एक मास में पढ़ लेगा उसके पीछे ...दर्शन जो कि कपिलमुनि के किये सूत्र उनके ऊपर भागुरि

मुनि का किया भाष्य इसको भी एक मास में पढ़ लेगा इसके पीछे ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्ड, मांडूक्य, तैत्तिरीय, छान्दोग्य, और वृहदारण्यक इन दश उपनिषदों को पांच महीने के बीच में पढ़लेगा और इसके पीछे वेदान्तदर्शन को पढ़े जो कि व्यास मुनि के किये सूत्र उनके ऊपर वात्स्यायन मुनि का किया भाष्य अथवा बौधायन मुनि का किया भाष्य वा शङ्कराचार्य जी का किया भाष्य पढ़ै जब तक बौधायन और वात्स्यायन मुनि का किया भाष्य मिले तब तक अन्य भाष्य को न पढ़ै इसको छः मास में पढ़लेगा इनको छः शास्त्र कहते हैं इनके पढ़ने में दो वर्ष काल जायगा दोवर्ष के बीच में सब पदार्थ विद्या पुरुष को यथावत् आवैगी और इनके विषय में बहुत से जालग्रन्थ लोगों ने रचे हैं जैसे कि पाराशर स्मृत्यादिक १७ सतरह पूर्व मीमांसा शास्त्र के विषय में जालग्रन्थ लोगों ने रचे हैं तथा वैशेषिकदर्शन और न्यायदर्शन के विषय में तर्कसंग्रह, न्यायमुक्तावली, जगदीशी, गदाधरी, और मथुरानाथी इत्यादिक जाल ग्रन्थ लोगों ने रचे हैं ऐसेही योगशास्त्र के विषय में हठ प्रदीपिकादिक मिथ्या ग्रन्थ लोगों ने रचे हैं तथा सांख्य शास्त्र के विषय में सांख्य तत्त्व कौमुद्यादिक जाल ग्रन्थ लोगों ने रचे हैं और वेदान्तशास्त्र के विषय में पञ्चदशी, वेदान्त, संज्ञा, वेदान्तमुक्तावली, आत्मपुराण, योगवाशिष्ठ और पूर्वोक्त दश उपनिषदों को छोड़ के गोपालतापिनी, नृसिंहतापिनी, रामतापिनी और ब्रह्मोपनिषत् इत्यादिक बहुत उपनिषद् जाल रूप लोगों ने रची हैं वे सब सज्जनों को त्याग करने के योग्य हैं इन जाल ग्रन्थों में जो कुछ सत्य है सो सत्य शास्त्रोंही का विषय है उसका लिखना ग्रन्थान्तर में अयुक्त है क्योंकि जो बात सत्य शास्त्रों में लिखीही है उसका फिर लिखना व्यर्थ है जैसे कि पीसे भये पिसान को फिर पीसना वैसाही वह है

किन्तु विमान भी उड़ जायगा तथा सत्यशास्त्र की बात भी उनके हाथ से उड़जायगी और जो सत्यशास्त्रों से विरुद्ध बात है सोतो कपोल कल्पित मिथ्याही है इस्से इनका पढ़ना और पढ़ाना मिथ्याही जानना चाहिये इस्से कुछ फल न होगा और जो कोई पढ़ता है वा पढ़ेगा एक शास्त्र की मरण तक भी पूर्त्ति न होगी और कुछ बोध भी उसको न होगा इस्से सज्जन लोगों को सत्यशास्त्रोंही का पढ़ना और पढ़ाना उचित है जाल ग्रन्थों का कभी नहीं। पूर्व पक्ष-छः शास्त्रों में भी अन्योन्यविरोध और परस्पर खण्डन देख पड़ता है एक का दूसरे से दूसरे का तीसरे से ऐसाही सर्वत्र है जैसा कि जाल ग्रन्थों में एक शास्त्र के विषय में बहुत सी परस्पर विरुद्ध टीका और मूल ग्रन्थ हैं वैसाही विरोध सत्यशास्त्रों में भी देख पड़ता है जो दोष आप ने जाल ग्रन्थों में दिया वही दोष सत्यशास्त्रों में भी आया फिर सत्य-शास्त्रों का पढ़ना और जालग्रन्थों का न पढ़ना आप कहते हैं इसमें क्या प्रमाण है। उत्तर-कि यह आप लोगों को जालग्रन्थों के पढ़ने और सुनने से भ्रान्ति होगई है कि सत्यशास्त्रों में भी विरोध और परस्पर खण्डन है यह बात आप लोगों की मि-थ्याही है देखना चाहिये कि आज काल के लोग टीका वा ग्रन्थ रचते हैं सो द्वेष बुद्धिही से रचते हैं कि अपनी बात मिथ्या भी होय तो भी सत्य कर देते हैं तब सब लोग उसको कहते हैं कि वह बड़ा पण्डित है इस प्रकार के जो धूर्त्त मनुष्य हैं वेही टीका वा ग्रन्थ रचते हैं उनमें इसी प्रकार की मिथ्या धूर्त्तता रखते हैं उनको जो पढ़ता है वा पढ़ाता है उसकी भी बुद्धि वैसीही भ्रष्ट हो जाती है सो मिथ्या वाद मेंही प्रवृत्त होता है और सत्य वा असत्य का विचार कभी नहीं कर्त्ता उसको तो यही प्रयोजन रहता है कि दूसरे की सत्य बात को भी खण्डन करके अपनी मिथ्या बात को मण्डन करके जिस किस प्रकार

से दूसरे का पराजय करना अपना विजय करलेना उस्से प्रतिष्ठा करना और धन लेना पीछे विषय भोग करना यही आजकाल के पण्डितों की तुच्छबुद्धि और सिद्धान्त हो गया है इस प्रकार के कितने मौलवी और पादरी लोग भी देखने में आते हैं पण्डितादिकों में कोई जो सत्य कथन करै तब वे सब धूर्त्त लोग उस्से विरोध करते हैं उसका नाम नास्तिक रखते हैं और उससे सब दिन विरोधही रखते हैं क्योंकि उनकी बुद्धि वैसीही है इस दोष के होने से सत्य शास्त्रों का जो यथावत् अभिप्राय है उसको जानते भी नहीं इस्से वे कहते हैं कि सत्यशास्त्रों में भी परस्पर विरोध है परन्तु मैं आप लोगों से कहता हूं कि छः शास्त्रों में लेशमात्र भी परस्पर विरोध नहीं है क्योंकि इनका विषय भिन्न २ है और जो विरोध होता है सो एक विषय में परस्पर विरुद्ध कथन के होने से होता है जैसे कि एक ने कहा गन्धवाली जो होती है सो पृथ्वी कहाती है इसी विषय में दूसरे ने कहा कि नहीं जो रस वाली होती है सोई पृथ्वी होती है क्योंकि पृथ्वी में चार मिष्टादिकरस प्रत्यक्ष देख पड़ते हैं इस प्रकार के विषय को विरोध जानना चाहिये और जो ऐसा कहै कि गन्धवाली जो पृथ्वी होती है और रसवाला जल होता है सो एक तो पृथ्वी के विषय में व्याख्या करता है और दूसरा जल के विषय में दोनों का विषय भिन्न होने से व्याख्या भी भिन्न होगी परन्तु उसका नाम विरोध नहीं जैसे कि किसी ने ज्वर के विषय में चिकित्सा निदान औषध और पथ्य को लिखा और दूसरे ने कफ के विषय में चिकित्सादिक लिखे उसको विरोध नहीं कहना चाहिये वैसाही षट् शास्त्रों के विषय और भी सब वेदादिक शास्त्रों के विषय में जानना चाहिये जैसे कि धर्मशास्त्र नाम पूर्व मीमांसा में धर्म और धर्मी दो पदार्थों को मानते हैं और कर्मकाण्ड जो कि वेदोक्त है

संध्योपासन से लेके अश्वमेध पर्यन्त कर्मकाण्ड कहा है अब इसमें आकाङ्क्षा होती है कि धर्म और धर्मी किसको कहते हैं तब इसी को वैशेषिक दर्शन में स्पष्ट व्याख्या की है कि जो द्रव्य है सो तो धर्मी है और गुणादिक सब धर्म हैं फिर भी आकाङ्क्षा होती है कि गुण को क्यों नहीं द्रव्य और द्रव्य को क्यों नहीं गुण कहते उसका विचार न्यायदर्शन में किया है कि जिन प्रमाणों से द्रव्य गुणादिक सिद्ध होते हैं उसको द्रव्य और उन्हीं को गुण मानना चाहिये सो तीनों शास्त्रों से श्रवण नाम सुनना और मनन नाम उसी का विचार करना इस बात तक लिखा उससे आगे जितने पदार्थ अनुमान से सिद्ध होते हैं उतने प्रत्यक्ष से जैसा तीन शास्त्रों में कहा है वैसाही है अथवा नहीं उसको विशेष विचार से और योगाभ्यास से उपासना काण्ड जो कि चित्तवृत्ति के निरोध से लेके कैवल्य पर्यन्त उपासना काण्ड कहाता है उसकी रीति योगशास्त्र में लिखी है जो देखना चाहे सो उसमें देख लेवे सब के तत्त्व को यथावत् जानना चाहिये इस लिये योगशास्त्र है फिर कितने भूत और तत्त्व हैं उसकी भिन्न २ गणना और वैसाही निश्चय का होना उस लिये सांख्य शास्त्र का आवश्यक रचन हुआ इन पांच शास्त्रों का महाप्रलय तक व्याख्यान है जिसमें कि स्थूल भूतों का नाश होता है और सूक्ष्मों का नहीं फिर उसी सूक्ष्म भूतों से जैसी उत्पत्ति स्थूल की होती है और जिस प्रकार से प्रलय होता है वह बात सब लिखी है महाप्रलय तक परमाणु और प्रकृत्यादिक सूक्ष्म भूत बने रहते हैं उनका लय नहीं होता फिर कार्य और परम कारण का विचार वेदान्त शास्त्र में किया कि सब प्रकृत्यादिक भूतों का एक अद्वितीय अनादि परमेश्वरही कारण है और परमेश्वर से भिन्न सब कार्य हैं क्योंकि परमेश्वरही में सब

प्रकृत्यादिक सूक्ष्म भूत रचे हैं सो परमेश्वर के सामने तो संसार सब आदि है और अन्य जीवों के सामने अनादि परमाणु प्रकृत्यादिक भूत भी अनित्य हैं क्योंकि परमाणु और प्रकृति इनका ज्ञान अनुमान से होता है वैसा नाश भी अनुमान से हम लोग जान सक्ते हैं परमेश्वर तो सब जगत का रचने वाला है अन्य ब्रह्मादिक देव और सब मनुष्य शिल्पी हैं क्योंकि नवीन पदार्थ रचने का किसी का सामर्थ्य नहीं है बिना परमेश्वर के जगत् का रचने वाला कोई नहीं है सो बेदान्त शास्त्र में ज्ञान काण्ड का निश्चय किया है जो कि निष्काम कर्म से लके परमेश्वर की प्राप्ति पर्यन्त ज्ञानकाण्ड है निष्काम कर्म यह है कि परमेश्वर की प्राप्ति जो मोक्ष उसके बिना भिन्न फल कर्मों से नहीं चाहना सो निष्काम कर्म कहाता है इस्से बिचारना चाहिये कि षट्शास्त्रों में कुछ भी विरोध नहीं है किन्तु परस्पर सहायकारी शास्त्र हैं सब शास्त्र मिलके सब पदार्थविद्या छः शास्त्रों में प्रकाश कर दी है और उक्त जो जाल पुस्तक हैं उनमें केवल विरोधही है उनका पढ़ना और पढ़ाना व्यर्थही है किन्तु सत्य शास्त्रों के पढ़ने न होने से और जाल ग्रन्थों के पढ़ने से आर्य्यावर्त्त देश के लोगों की बड़ी हानि हो गई है इस्से सज्जन लोगों को ऐसा करना उचित है कि आज तक जो कुछ भ्रष्टाचार भया सो भया इस्से आगे हमलोगों के ऋषि मुनि और श्रेष्ठ राजा लोग जो कि पहिले भये थे उनकी जो मर्यादा और बेदादिक सत्यशास्त्रोक्त जो मर्यादा उसी पर चलने से और सब पाखण्डों को छोड़नेही से आर्य्यावर्त्त देश की बड़ी उन्नति होगी अन्य प्रकार से कभी न होगी इन सब शास्त्रों को पढ़के ऋग्वेद को पढ़े उसका आश्वलायनकृत जो श्रौत सूत्र बह्वृच जो ऋग्वेद का ब्राह्मण और कल्पसूत्र इनके साथ २ मन्त्रों का अर्थ पढ़े और स्वर को भी पढ़े सो दो वर्ष

के भीतर सब ऋग्वेद को पढ़ लेगा तथा यजुर्वेद की संहिता उसके साथ २ कात्यायन, श्रौतसूत्र, तथा गृह्यसूत्र तथा शतपथ ब्राह्मण स्वर अर्थ और हस्तक्रिया के सहित यथावत् पढ़ें डेढ़ वर्ष तक यजुर्वेद को पढ़ लेगा इसके पीछे सामवेद को पढ़े गोभिल श्रौतसूत्र तथा राणायनश्रौतसूत्र और कल्पसूत्र साम ब्राह्मण तथा गोभिल राणायन गृह्यसूत्र के साथ २ पढ़े दो वर्ष में सब सामवेद को पढ़लेगा इसके पीछे अथर्ववेद को पढ़े शौनकश्रौतसूत्र, शौनकगृह्यसूत्र, अथर्वब्राह्मण और कल्पसूत्र के साथ २ सो एक वर्ष में पढ़लेगा ऐसे साढ़े छः वा सात वर्ष में चारो वेदों को पढ़लेगा चारो वेदों की जो संहिता है उन्हीं का नाम वेद है फिर उन्हीं वेदों की जितनी अन्य २ शाखा हैं वे सब वेदों के व्याख्यान हैं बिना पढ़े सब विचार मात्र से आजांयगी तथा आरण्यक वृहदारण्यकादिक व्याख्यान हैं उनको भी विचार करने से जानलेगा चारों वेदों को पढ़ के आयुर्वेद को पढ़े जो कि ऋग्वेद का उपवेद है उसमें धन्वन्तरिकृत निघण्टु, चरक और सुश्रुत इन तीनों ग्रन्थों को शस्त्रक्रिया, हस्तक्रिया और निदानादिक विषयों को यथावत् पढ़े सो तीन वर्ष में पढ़लेगा और वैद्यकशास्त्र के विषय में शाङ्गधरादिक जाल ग्रन्थों को पढ़ना और पढ़ाना व्यर्थ ही जानना इसके पीछे यजुर्वेद का जो उपवेद धनुर्वेद उसको पढ़े उसमें शस्त्र विद्या जो कि शस्त्रों का रचना और शस्त्रों का चलाना और अस्त्र विद्या जो कि आग्नेयास्त्रादिक पदार्थ गुणों से होते हैं उनको यथावत् रच लेना आग्न्यादिक अस्त्रों के विषयों का विस्तार राजधर्म में लिखेंगे और युद्ध समय में व्यूह की रचना यथावत् जान लेवे जैसे कि सूचो व्यूह सूई का अग्र भाग तो बहुत सूक्ष्म होता है और उस अग्र भाग से पहिले २ स्थूल होता है उससे सूत स्थूल होता है इसी प्रकार से सेना

गणित विद्या यथावत् जानै उस्से बहुत सा उपकार होता है दो वा तीन वर्ष में उसको पढ़लेगा और ज्योतिश्शास्त्र में जो फल विद्या है सो व्यर्थ ही है भृग्वादिक मुनियों के किये सूत्र और भाष्यों को पढ़ैं मुहूर्त्त चिन्तामण्यादिक जालग्रन्थों को कभी न पढ़ै इस प्रकार से साढ़े २७॥ वा २८ वर्ष तक पढ़लेगा संपूर्ण विद्या उसको आजायगी फिर उसको पढ़ने की आवश्यकता कुछ न रहैगी सब विद्याओं से वह पूर्ण होके पुरुषों में पुरुषोत्तम होजायगा और उसके शरीर से संसार में बड़ा उपकार होगा क्योंकि जैसे अपने विद्या को पढ़ा है वैसही पढ़ावेगा इस्से जैसा मनुष्यों का उपकार होता है वैसा किसी प्रकार से नहीं होता ऐसे ३६ वर्ष की जब आयु होगी तबतक पुरुषों को विद्या भी पूर्ण हो जायगी और जो पुरुष ४०, ४४, और ४८ वर्ष तक ब्रह्मचर्य्य रक्खेगा उस पुरुष के भाग्य और सुख को हम लोग नहीं कह सकै कि कितना होगा जिस देश में राज्याभिषेक जिसका होना होय वह तो सब विद्या से युक्त होवै और ३६, ४०, ४४ वा ४८ वर्षतक अवश्य ब्रह्मचर्याश्रम करै उसी को राजा होना उचित है क्योंकि जितने उत्तम व्यवहार हैं वे सब राजाही के आधीन हैं और सब दुष्ट व्यवहारों का बंध करना सो भी राजाही के आधीन है इस्से राजा और धनाढ्य लोगों को तो अवश्य सब विद्या पढ़नी चाहिये क्योंकि जो वे सब विद्याओं को न पढ़ेंगे तो अपने शरीर की भी रक्षा न कर सकेंगे फिर धर्मराज्य और धन की रक्षा तो कैसे करेंगे और जितनी कन्या लोग हैं वे भी पूर्वोक्त व्याकरण, धर्मशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, गानविद्या और शिल्पशास्त्र इन पांच शास्त्रों को तो अवश्य पढ़ैं और जो अधिक पढ़ैं तो उनका सौभाग्य बड़ा होगा १६ वर्ष से न्यून ब्रह्मचर्य कन्या लोग कभी न करैं और जो १८, २० वा २४ वर्षतक ब्रह्मचर्य्याश्रम करेंगी तो उनको

अधिक २ सौभाग्य और सुख होगा जबतक स्त्री और पुरुष लोग उक्त रीति पर ब्रह्मचर्य्य से विद्या प्राप्त न करेंगे तो उनका अभाग्य और दुःखही जानना परस्पर स्त्री और पुरुषों का विरोध और भ्रान्ति होगी जिन व्यवहारों से सुख वृद्धि होती है उनको भी न जानेंगे सर्वदा दीन रहेंगे और प्रमाद से धनादिकों का नाश करेंगे कहीं प्रतिष्ठा और आजीविका भी उनकी न होगी परस्पर व्यभिचारी होंगे उससे वीर्य्य का नाश होगा फिर बहुत से शरीर में रोग होंगे रोगों से सदा पीड़ित रहेंगे व मूर्ख होंगे इससे कभी सुख न पावेंगे इससे सब स्त्री और पुरुष लोग सब पुरुषार्थ से अवश्य विद्याही को पढ़ें इससे मनुष्यों को अधिक लाभ कोई नहीं है क्योंकि आपही अपना उपदेष्टा, रक्षक, धर्मग्राहक और अधर्म त्याग करनेवाला होता है इससे बड़ा कोई लाभ नहीं है विद्या के पढ़ने और पढ़ाने में जितने विघ्न रूप व्यवहार हैं उनको जब तक मनुष्य नहीं छोड़ता तब तक उसको विद्या कभी नहीं होती प्रथम विघ्न बाल्यावस्था में जो विवाह का करना सोई बड़ा विघ्न है क्योंकि शीघ्र विवाह करने से विषयी होगा और विषयही की चिन्ता करेगा शरीर में धातु पुष्ट तो होंगे नहीं और सब धातुओं का सार जो कि सब धातुओं का राजा घर में जैसा कि दीपक प्रकाशक होता है जैसा ब्रह्माण्ड में सूर्य्य प्रकाशक है वैसाही शरीर में वीर्य है इस अपरिपक्व वीर्य और अत्यन्त वीर्य के नाश से बुद्धि, बल, पराक्रम, तेज और धैर्य का नाश हो जाता है आलस्य, रोग, क्रोध और दुर्बुद्धि इत्यादि ये सब दोष उसमें हो जायगे फिर कैसे उसको विद्या होसक्ती है कभी न होगी क्योंकि जितेन्द्रिय, धैर्यवान्, बुद्धिमान्, शीलवान्, विचारवान् जो पुरुष होता है उसी को विद्या होती है अन्य को नहीं इससे ब्रह्मचर्य्य का अवश्य करना उचित है दूसरा विद्या का

नाशक, विघ्न पाषाणादिक मूर्त्तिपूजन, ऊर्द्ध्वपुंड्र, त्रिपुंड्रादिक तिलक, एकादशी, त्रयोदश्यादिकव्रत, काश्यादिक तीर्थों में निवास, राम, कृष्ण, नारायण, शिव, भगवती और गणेशादिक नामोंसे पाप नाश होने का विश्वास यह भी विद्या धर्म और परमेश्वर की उपासना का बड़ा भारी विघ्न है क्योंकि विद्या का फल यही है कि परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना जो कि धर्म रूप है परमेश्वर को यथावत् जानना, मुक्ति का होना यथावत् व्यवहार और परमार्थ का धर्म से अनुष्ठान करना यही विद्या होने का फल है सोई फल मिथ्या बुद्धि से पाषाणादिक मूर्त्ति में और तिलकादिकोंही में मान लेते हैं और सम्प्रदायी लोग मिथ्या उपदेश करके धूर्त्तता और अधर्म का निश्चय करा देते हैं पीछे वे सम्प्रदायी लोग ऐसे कहते और उनके चेले सुनते हैं कि मूर्त्ति पूजादिक प्रकारही से आप लोगों को मुक्ति होगी यही परम धर्म है ऐसा सुनके उन विद्याहीन मनुष्यों को निश्चय होजाता है कि यही बात सत्य है सब कहने और सुनने वाले वैसे हैं जैसे कि पशु हैं वे ऐसा भी कहते हैं कि सम्प्रदायी और नाममात्र से जो पण्डित लोग आजीविका के लोभ से यही बात वेद में लिखी है ऐसी बात कहने वाले और सुनने वाले ने वेद का दर्शन भी कभी नहीं किया वेद में इन बातों का सम्बन्ध लेशमात्र भी नहीं है परन्तु अन्ध परंपरा की नांई कहते और सुनते चले जाते हैं उनको सुख वा सत्य फल कुछ भी नहीं होता क्योंकि बाल्यावस्था से लेके यही मिथ्याचार करते रहते हैं कि इसका दर्शन अवश्य करें और तिलक माला धारण करें काश्यादिक तीर्थों में जाके वास करें और नाम स्मरण करें एकादश्यादिक व्रत करें और पुष्प ले आवें चन्दन घसें धूप दीप करें नैवेद्य धरें परिक्रमा करें पाषाणादिक मूर्त्ति का प्रक्षालन करके जल ग्रहण करें और कूदें नाचें

कूदैं और बाजे बजावैं रथ यात्रादिकों का मेला करैं और परस्पर व्यभिचार करैं मेले में उन्मत्तवत् होके घूमते घुमाते इत्यादिक मिथ्या व्यवहारोंही में फसे रहते हैं फिर उनको विद्या लेशमात्र भी न आवैगी क्योंकि मरणतक उनको अवकाशही न मिलेगा फिर कैसे वे पढ़ें और पढ़ावेंगे यह विद्या का नाशक दूसरा विघ्न है तीसरा विघ्न यह है कि माता, पिता और आचार्य्यादिक पुत्र और कन्याओं को लाड़न मेंही रखते हैं कुछ शिक्षा वा ताड़न नहीं करते इस्से भी विद्या का नाशही होता है चौथा विघ्न यह है कि गुरु, पण्डित और पुरोहित ये तीनों विद्या तो पढ़ते नहीं फिर वे हृदय से यही चाहते हैं कि मेरे चेले और मेरे यजमान मूर्खही बने रहैं क्योंकि वे जो पण्डित हो जांयगे तो हम लोगों का पाखण्ड उनके सामने न चलेगा इस्से हम लोगों की आजीविका नष्ट हो जायगी इस लिये वे सदा पढ़ने पढ़ाने में विघ्नही करते हैं धनाढ्य और राजा लोगों के ऊपर अत्यन्त विघ्न करते हैं कि ये लोग विद्याहीन बने रहैं इनसे हम लोगों की आजीविका बड़ी है धनाढ्य और राजा लोग भी आलस्य और विषय सेवा में फस जाते हैं इस्से वे भी पढ़ना नहीं चाहते धनाढ्य वा राजपुत्र पढ़ना भी चाहैं तो बैरागी आदि सम्प्रदायी और पण्डित लोग छल और कपट रखते हैं यथावत् पढ़ाते भी नहीं यहांतक वे छल और विघ्न करते हैं कि चेला और पुत्र वा बन्धुपुत्र भी विद्यावान् न हो जाय क्योंकि उनकी प्रतिष्ठा होने से मेरी प्रतिष्ठा नष्ट होजायगी इस्से जो कुछ गुण जानते भी हैं उस को छिपा रखते हैं इस लिये विद्या लोप आर्य्यावर्त्त देश में होगया है सब लोगों को विद्या का प्रकाश करना उचित है किसी को भी विद्या गुप्त रखना योग्य नहीं और पांचवां विघ्न यह है कि भङ्गापान, अफीम और मद्यपान करने से बहुत सा प्रमाद

होता है और बुद्धि भी नष्ट होजाती है उससे भी विद्या का नाश होता है छठवां विघ्न यह है कि राजा और धनाढ्य लोगों का घाट, मन्दिर, क्षेत्रों में सदावर्त, विवाह, यज्ञोपवीत, व्यर्थस्थान, और बागों के रचने में बहुत धन नष्ट होजाता है किन्तु गृहस्थ लोगों को जितना आवश्यक हो उतनाही स्थान रचैं निर्वाह मात्र विद्या प्रचार में किसी का धन नहीं जाता और विचार के न होने से गुणवान पुरुषों की प्रतिष्ठा भी नहीं होती किन्तु पाखण्डोंही की होती है इससे मनुष्यों का उत्साह भङ्ग होजाता है सप्तम विघ्न यह है कि पांचवें वर्ष पुत्रों वा कन्याओं को पाठशाला में पढ़ने के लिये नहीं भेजते उनके ऊपर राजा का दण्ड न होने से भी विद्या का नाश होता है और विषय सेवा में अत्यन्त फसजाते हैं इससे भी विद्या नहीं होती यह आठवां विघ्न विद्या का नाशक है इत्यादिक और भी विद्या नाश करने के विघ्न बहुत हैं उनको सज्जन लोग विचार करलेवें जब सोलह वर्ष का पुरुष होय तब से लेके जबतक वृद्धावस्था न आवै तबतक व्यायाम करै बहुत न करै किन्तु ४० बैठक करै और ३० वा ४० दण्ड करै कुछ भीत खम्भे वा पुरुष से बल करै फिर लोट करै उस को भोजन से एक घण्टा पहिले करै सब अभ्यास जब कर चुके उससे एक घण्टा पीछे भोजन करै परंतु दूध जो पीना होय तो अभ्यास के पीछे शीघ्रही पीवै उससे शरीर में रोग न होगा जो कुछ खाया वा पीया सो सब परिपक्व हो जायगा सब धातुओं की वृद्धि होती है तथा वीर्य्य की भी अत्यन्त वृद्धि होती है शरीर दृढ़ होजाता है और हड्डियां बड़ी पुष्ट होजाती हैं जाठराग्नि शुद्ध प्रदीप्त रहता है और सन्धि से सन्धि हाड़ों की मिली रहती है अर्थात सब अङ्ग सुन्दर रहते हैं परन्तु अधिक न करना अधिक के करने से उतने गुण न होंगे क्योंकि सब धातु शुष्क

और रूक्ष होजाते हैं उस्से बुद्धि भी वैसी रूक्ष होजाती है और क्रोधादिक भी बढ़ते हैं इस्से अधिक न करना चाहिये यह बात सुश्रुत में लिखी है जो देखना चाहै सो देखलेवै उन बालकों के हृदय में वीर्य के रक्षण से जितने गुण लिखे हैं इस पुस्तक में और जितने दोष लिखे हैं वे सब माता पिता और आचार्य्यादिक निश्चय दृष्टान्त देदे के करा देवैं जैसे कि वीर्य की रक्षा में सुख लाभ होता है उसका हजारवां अंश भी विषय भोग में वीर्य के नाश करने से नहीं होता परन्तु जैसा नियम सत्यशास्त्रों में कहा है उसका कुछ अंश इसमें भी लिखा है उसप्रकार से जो वीर्य की रक्षा करेगा उसको बहुतसा सुख होगा जो प्रमाद और भांग आदिक नशा करेगा वह पागल भी होजाय तो आश्चर्य नहीं इस्से युक्ति पूर्वक विद्या और बल सेही वीर्य की रक्षा करनी चाहिये अन्यथा वीर्य की रक्षा कभी न होगी जब वीर्य की रक्षा न होगी तब विद्या भी न होगी जब विद्या न होगी तब कुछ भी सुख न होगा उसका मनुष्य शरीर धारण करनाहीं पशुवत होजायगा ॥ सैषानन्दस्यमीमांसाभवति युवास्यात्साधुयुवाध्यापक: आशिष्ठोदृढिष्ठोवलिष्ठ: तस्येयंपृथिवीसर्वावित्तस्यपूर्णास्यात्सएकोमानुष आनन्द: श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंमानुषा आनन्दा: सएको मनुष्य गन्धर्वाणामानन्द: श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंमनुष्यगन्धर्वाणामानन्दा: सएको देवगन्धर्वाणामानन्द: श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंदेवगन्धर्वाणामानन्दा: सएक: पितृणांचिरलोक लोकानामानन्द: श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य तेयेशतं पितृणां चिरलोकलोकानामानन्दा: सएक: आजानजानान्देवानामानन्द: श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतमाजानजानान्देवानामानन्दा: सएक: कर्मदेवानामानन्द: येकर्मणादेवानपियन्ति श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंकर्मदेवानामानन्दा: सएकोदेवानामानन्द: श्रोत्रियस्य चाका

महतस्य तेयेशतंदेवानामानन्दाः सएकइन्द्रस्यानन्दः श्रोत्रि-यस्य चाकामहतस्य तेयेशतमिन्द्रस्यानन्दाः सएकोबृहस्पतेरान न्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य तेयेशतंबृहस्पतेरानन्दाः सएकः प्रजापतेरानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य तेयेशतंप्रजापतेरान न्दाः सएकोब्रह्मणआनन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य सयश्चायंपुरु षेयश्चासावादित्येसएकः ॥ यह तैत्तिरीयोपनिषद् की श्रुति है सो देखना चाहिये कि जैसा विद्या से आनन्द होता है वैसा कोई प्रकार से आनन्द नहीं होता इसमें इस श्रुति का प्रमाण है युवावस्था हो साधु युवा नाम उसमें कोई दुष्ट व्यसन न हो अध्यापक नाम सब शास्त्रों को पढ़के पढ़ाने का सामर्थ्य जिसको हो अर्थात सब विद्याओं में पूर्ण होय आशिष्ठ नाम सत्य जिसकी इच्छा पूर्ण हो दृढिष्ठ अतिशय नाम अत्यन्त जो शरीर और बुद्धि से दृढ़ हो अर्थात् कोई प्रकार का रोग जिसके शरीर में न होय बलिष्ठ नाम अत्यन्त बलवान् होवै और जिसको वित्त नाम धनसे सब पृथ्वी पूर्ण होय अर्थात सार्वभौम चक्रवर्त्ती होवै इसको मनुष्य लोग के आनन्द की सीमा कहते हैं और जो कोई केवल विद्यावान्ही है और किसी प्रकार की कामना जिसको नहीं है अर्थात विद्या, धर्म और परमेश्वर की प्राप्ति के बिना किसी पदार्थ के ऊपर जिसको प्रीति न होवै ऐसा जो श्रोत्रिय ॥ श्रोत्रियंश्छन्दोऽधीते। यह अष्टाध्यायी का सूत्र है व्याकरण पठन से लेके वेद पठन तक जिसका पूर्ण पठन होगया है उसको श्रोत्रिय कहते हैं उस श्रोत्रिय नाम विद्यावान् को वैसाही आनन्द होता है जैसा कि पूर्वोक्त चक्र-वर्त्ती को उससे भी अधिक होने का सम्भव है क्योंकि चक्रवर्त्ती राजा को तो राज्य के अनेक कार्य रहते हैं इससे चित्त की एकाग्रता नहीं होती और जो वह पूर्ण विद्वान् है सो तो सदा परमेश्वर के आनन्द में मग्न रहता है लेशमात्र भी दुःख का

उसको सम्भव नहीं है उस चक्रवर्त्ती के मनुष्यानन्द से शतगुण आनन्द मनुष्य गन्धर्वों को है मनुष्य गन्धर्वों के आनन्द से शतगुण अधिक आनन्द देवगन्धर्वों को है देवगन्धर्वों से पितृ-लोग वासियों को शतगुण आनन्द है और पितृलोगों से अधिक शतगुण आनन्द आजान नामक देवों को है आजान देवों से शतगुण आनन्द कर्म देवों को है जो कि कर्मों से देव होते हैं उनसे शतगुण आनन्द देवलोग वासी नाम देवों को है उन देवों से शतगुण आनन्द इन्द्र को है इन्द्र से शतगुण आनन्द बृहस्पति को है और बृहस्पति से प्रजापति को अधिक शतगुण आनन्द है और प्रजापति से ब्रह्मा को अधिक शतगुण आनन्द है जो २ आनन्द चक्रवर्त्ती और मनुष्य गन्धर्वों से शतगुण अधिक २ गणाते आये सो सब आनन्द विद्या वाले पुरुष को होता है क्योंकि जो आनन्द मनुष्य में है सोई सूर्य लोग में आनन्द है किन्तु एकही अद्वितीय परमेश्वर आनन्द स्वरूप सर्वत्र पूर्ण है उस परमेश्वर को विद्यावान् यथावत् जानता है उस परमेश्वर के जानने और उनका यथावत् योग होने से उस विद्वान् को पूर्ण अखण्ड आनन्द होता है उस आनन्द के लेशमात्र आनन्द में ब्रह्मादिक आनन्दित हो रहे हैं और उस आनन्द को जिस ने पाया है उस सुख की कोई गणना अथवा तौलना कभी नहीं कर सक्ता यह आनन्द विद्या के विना किसी को कभी नहीं होसक्ता इससे सब मनुष्यों को विद्या ग्रहण करने में अत्यन्त यत्न करना योग्य है यह ब्रह्मचर्य्याश्रम की शिक्षा तो संक्षेप से लिखी गई इससे आगे चौथे प्रकरण में विवाह और गृहाश्रम की शिक्षा लिखी जायगी॥

इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचिते तृतीयः समुल्लासः सम्पूर्णः॥ ३॥

अथ विवाहगृहाश्रम विधिम्वक्ष्यामः ॥

पुरुषों का और कन्याओं का ब्रह्मचर्य्याश्रम और विद्या जब पूर्ण होजाय तब जो देश का राजा होय और अन्य जितने विद्वान् लोग वे सब उनकी परीक्षा यथावत् करें जिस पुरुष वा कन्या में श्रेष्ठ गुण, जितेन्द्रियता, सत्यवचन, निरभिमान, उत्तमबुद्धि, पूर्णविद्या, मधुरवाणी, कृतज्ञता, विद्या और गुण के प्रकाश में अत्यन्त प्रीति जिसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोक, कृतघ्नता, छल, कपट, ईर्ष्या, द्वेषादिक दोष न होवें पूर्ण कृपा से सब लोगों का कल्याण चाहैं उसको ब्राह्मण का अधिकार देवें और यथोक्त पूर्वोक्त गुण जिसमें होंय परन्तु विद्या कुछ न्यून होय शूर, बीरता, बल और पराक्रम ये तीन गुण वाला जो ब्राह्मण भया उससे अधिक हो उसको क्षत्रिय करैं और जिसको थोड़ी भी विद्या होवै परन्तु व्यापारादिक व्यवहारों में नाना प्रकारों के शिल्पों में देश देशान्तर से पदार्थों का लेआने और लेजाने में चतुर होवै और पूर्वोक्त जितेन्द्रियादिक गुण भी होवै परन्तु अत्यन्त मोह होवै उसको वैश्य करना चाहिये और जो पढ़ने लगा जिसको शिक्षा भी भई परन्तु कुछ भी विद्या नहीं आई उसको शूद्र बनाना चाहिये इसी प्रकार से कन्याओं की भी व्यवस्था करनी चाहिये इसमें यह प्रमाण है ॥ शूद्रोब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैतिशूद्रताम् । क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैवच ॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि विद्यादिक पूर्वोक्त गुणों से जो शूद्र युक्त होवै सो ब्राह्मण होजाय और पूर्वोक्त विद्यादिक गुणों से जो ब्राह्मण रहित होजाय अर्थात् मूर्ख होय सो शूद्र होजाय और जिसमें क्षत्रिय का गुण होवै वह क्षत्रिय जिसमें

वैश्य का गुण होय वह वैश्य अर्थात् जो शूद्र के कुल में उत्पन्न भया सो मूर्ख होय तब तो वह शूद्रही बना रहै और वैश्य के जैसे गुण हैं वैसे गुण उसमें होने से वह शूद्र वैश्य होजाय क्षत्रिय के गुण होने से वह क्षत्रिय और ब्राह्मण के गुण होने से वह शूद्र ब्राह्मण होजाय तथा वैश्य कुल में उत्पन्न भया उसको वैश्य के गुण होने से वह वैश्यही बना रहै और मूर्ख होने से शूद्र होजाय तथा क्षत्रिय और ब्राह्मण के गुण होने से वह क्षत्रिय और ब्राह्मण भी वैसेही क्षत्रिय कुल में जो उत्पन्न भया उसको क्षत्रियवर्ण के गुण होने से वह क्षत्रिही बना रहै ब्राह्मण वैश्य और शूद्र के गुण होने से ब्राह्मण वैश्य और शूद्र भी होजांय तथा ब्राह्मण के कुल में उत्पन्न भया ब्राह्मण के गुण होने से वह ब्राह्मणही रहै क्षत्रिय वैश्य और शूद्र के गुण होने से क्षत्रिय वैश्य और शूद्र भी वह ब्राह्मण हो जाय ऐसाही मनुष्य जाति के बीच में सर्वत्र जान लेना तैसे चारों वर्णों की कन्याओं में भी उन २ उक्त गुणों के होने से ब्राह्मणी, क्षत्रिया, वैश्या और शूद्रा होजांय उनको वर्ण क्रम से अधिकार भी दिये जांय॥ अध्यापनमध्ययनं यजनंयाजनंतथा। दानम्प्रतिग्रहंचैव ब्राह्मणानामकल्पयत्॥ अध्यापन नाम विद्याओं का प्रकाश करना नाम पढ़ाना अध्ययन नाम पढ़ना यजन नाम अपने घरमें यज्ञों का करना याजन नाम यजमानों के घरमें यज्ञों का कराना दान नाम सुपात्रों को दान का देना प्रतिग्रह नाम धर्मात्माओं से दान का लेना इन षट्कर्मों को करने और कराने में ब्राह्मणों को अधिकार देना उचित है प्रजानांरक्षणंदान मिज्याध्ययनमेवच। विषयेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्यसमासतः॥ प्रजा को यथावत् रक्षा करना अर्थात् श्रेष्ठों का पालन और दुष्टों का ताड़न करना पक्षपात को छोड़ के सुपात्रों को दान देना अपने घरमें यज्ञों का करना और अध्य-

यन नाम सब सत्यशास्त्रों का पढ़ना विषयेषु अप्रसक्ति नाम विषयों में फस न जाना यह संक्षेप से क्षत्रियों का अधिकार कहा पूर्वोक्त क्षत्रियों को इस अधिकार को देवें ॥ पशूनांपालनं दान मिज्याध्ययनमेवच । वणिक्पथंकुसीदञ्च वैश्यस्यक्षपिमेवच ॥ गाय आदिक पशुओं की रक्षा करना सुपात्रों को दान देना अपने घरमें यज्ञों का करना सत्यशास्त्रों का पढ़ना धर्म से व्यापार का करना धर्म से सूद नाम व्याज का लेना और क्षषि नाम खेती का करना इन सात कर्मों का अधिकार वैश्यों को देना ॥ एकमेवहिशूद्रस्य प्रभु:कर्मसमादिशत् । एतेषामेववर्णानां शुश्रूषामनुसूयया ॥ ये चार श्लोक मनुस्मृति के हैं ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों की निन्दा को छोड़ के सेवा करना इस एक कर्म का शूद्रों को अधिकार देना कि तीनों वर्णों की यथावत् सेवा करै ॥ ब्राह्मणोऽस्यमुखमासी द्बाहूराजन्य:क्षत: । ऊरूतदस्ययद्वैश्य: पद्भ्यांशूद्रोऽअजायत ॥ यह यजुर्वेद की संहिता का मन्त्र है ॥ वेदाहमेतंपुरुषंमहान्तमादित्यवर्णन्तमस:परस्तात् । यह भी उसी अध्याय का वचन है पुरुष नाम है पूर्ण का पूर्ण नाम परमेश्वर का परमेश्वर के बिना पूर्ण कोई नहीं होसक्ता क्योंकि सावयव और मूर्त्तिमान् जो होता है सो एकही देश में रहता है सर्व देश में व्यापक नहीं होसक्ता उस अध्याय में परमेश्वरही का ग्रहण होता है क्योंकि पुरुष से सब जगत् की उत्पत्ति लिखी है सो परमेश्वरही से सब जगत् की उत्पत्ति होती है अन्य से नहीं उस परमेश्वर को अवयव का लेशमात्र भी सम्बन्ध नहीं मुख, बाहु, ऊरु और पाद स्थूल २ इतने अवयवों की तो कभी संगति नहीं है क्योंकि सूक्ष्म भी अवयव का भेद परमेश्वर में नहीं होसक्ता फिर स्थूल अवयव का भेद परमेश्वर में कैसे होगा कभी न होगा और इस मन्त्र में तो मुखादिक शब्दों का ग्रहण किया है सो इस अभिप्राय से किया

है कि शरीर में मुख सब अङ्गों से उत्तम अङ्ग है वैसे उत्तम से भी उत्तम गुण जिस मनुष्य में होय वह ब्राह्मण होवे मुख के समीप अङ्ग जैसा कि बाहु वैसाही ब्राह्मण के समीप क्षत्रिय है और हाथ के बल आदिक गुण हैं जिस्से कि दुष्टों का दमन होता है और श्रेष्ठों का पालन अपने शरीर का भी रक्षण शत्रुओं और शस्त्रों के बल हाथ से होसक्ता है वैसाही प्रजा का पालन होगा और हाथ के बिना कभी रक्षण जगत् का वा अपना युद्ध में वा दुष्टों से नहीं होसक्ता सो बलादिक गुण जिस मनुष्य में होंय वह क्षत्रिय होवै तथा ऊरु नाम जङ्घा में जब बल होता है तब जहां तहां देशान्तरों में पदार्थों को उठा के लेजाना और देशान्तरों से लेआना हानि और लाभ में स्थिर बुद्धि होना जैसे कि जङ्घा के ऊपर स्थिर होके बैठना होता है इस प्रकार के वेगादिक गुण जिस मनुष्य में होवें वह वैश्य होय तथा पाद जैसे कि सब अङ्गों से नीचे का अङ्ग है जब मनुष्य चलता है तब कङ्कड़, पाषाण, कीच और कांटों पर पैर पड़ते हैं सब शरीर ऊपर रहता है पैरही विष्ठादिकों में पड़ते हैं वैसे मूर्खत्वादिक नीच गुण जिस मनुष्य में होवें सो मनुष्य शूद्र होय इस मन्त्र से ऐसी परमेश्वर की आज्ञा है सो सज्जनों को मानना और करना भी चाहिये सो इस प्रकार से परीक्षा करके वर्ण व्यवस्था अवश्य करना चाहिये वर्ण व्यवस्था बिना जन्म मात्रही से वर्णों के होने में बहुत दोष होते हैं इस्से गुणोंही से वर्णों का होना उचित है और जो वर्णों को न मानें तो विद्यादिक गुण ग्रहण में मनुष्य का उत्साह भङ्ग होजायगा क्योंकि उत्तम गुण वाले को उत्तम अधिकार की प्राप्ति न होगी और गुणहीन को नीच अधिकार की प्राप्ति न होगी तो कैसे मनुष्यों को उत्साह गुण ग्रहण में होगा अर्थात् कभी न होगा इस्से वर्ण व्यवस्था का

मानना उचित है और जो गुणों के बिना वर्णों की जन्ममात्रही से मानैं तो सब वर्ण और सब गुण नष्ट होजांयगे क्योंकि जन्ममात्रही से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र होंगे तो कोई भी गुण ग्रहण की इच्छा न करेगा इससे सब विद्यादिक गुण नष्ट हो जांयगे जैसे कि ब्राह्मण कुल सब कुलों से उत्तम है उस कुल में उत्तम पुरुषोंही का निवास होना उचित है क्योंकि वे उत्तम कर्मही करैंगे नीच कर्म कभी न करेंगे इससे उत्तम कुल की उत्तमता नष्ट कभी न होगी और जो ब्राह्मण कुल में मूर्ख और नीच पुरुषों के निवास होने से उत्तम कुल की उत्तमता नष्ट होजायगी क्योंकि वे अभिमान तो ब्राह्मणही का करैंगे और ब्राह्मण के गुणों को ग्रहण कभी न करैंगे सदा नीचही कर्म करेंगे इससे ब्राह्मण कुल की बड़ी निन्दा उस निन्दा से अप्रतिष्ठा होगी उससे ब्राह्मण कुल दूषित हो जायगा इससे उत्तम गुण वाले को उत्तमही कुल में रखना उचित है तथा भीरु नाम भयादिक गुण वाले पुरुष को क्षत्रिय कुल में कभी न रखना चाहिये क्योंकि जिसको भय होगा सो दुष्टों को कैसे दण्ड और प्रजा का पालन कैसे करेगा युद्ध भूमि से सदा वह भाग जायगा उसका राज्य शत्रु लोग लेलेंगे चोर और डांकू लोग सदा उस राजा और प्रजा को पीड़ा देंगे इससे उस राजा का राज्य और ऐश्वर्य्य नष्ट होजायगा इससे विद्या, बल, बुद्धि, पराक्रम और पूर्वोक्त निर्भयादिक गुण युक्तही को क्षत्रिय कुल में रखना चाहिये अन्य को नहीं तथा व्यापारादिक पशुपालनादिक में जो चतुर और पूर्वोक्त विद्यादिक गुण से युक्त होवै उसी को वैश्य होना उचित है जो मूर्खत्वादि गुण युक्त है उसी को शूद्र रखना चाहिये ऐसी जब व्यवस्था होगी तब ब्राह्मणादिक वर्णों में ब्राह्मणादिकों को भय होगा कि हम लोग उत्तम गुण ग्रहण न करेंगे और

उत्तम कर्म न करेंगे तो नीच अधिकार नाम शूद्रत्व को प्राप्त हो जांयगे अर्थात् शूद्र होजांयगे और शूद्रादिकों को विद्यादिक गुण ग्रहण में उत्साह होगा क्योंकि हम लोग जो उत्तम गुण वाले होंगे तो उत्तम अधिकार को प्राप्त होंगे अर्थात् द्विज हो जांयगे इससे उत्तमों को तो भय होगा और नीचों को उत्साहही होगा इससे ऐसीही व्यवस्था सज्जनों को करना उचित है वर्ण शब्द के अर्थ से भी ऐसी व्यवस्था आती है ॥ व्रियन्तेये- तेवर्णाः। कि वर्ण नाम गुणों से जिसका स्वीकार किया जाय उसका नाम वर्ण है ऐसा दृष्टान्त भी सुन्ने में आता है कि विश्वामित्र क्षत्रिय से ब्राह्मण भया वत्स क्षत्रिय से ब्राह्मण भया और श्रवण, श्रवण का पिता, श्रवण की माता, वैश्य और शूद्र वर्ण से महर्षि भये मातङ्गऋषि का चांडाल कुल में जन्म था फिर ब्राह्मण होगया यह महाभारत में लिखा है और जाबाल वेश्या के पुत्र से ब्राह्मण होगया यह छान्दोग्य उपनिषद में लिखा है इत्यादिक और भी जान लेना चाहिये जैसी वर्णों की व्यवस्था गुणों से है वैसी विवाह में व्यवस्था करनी चाहिये ब्राह्मण का ब्राह्मणी, क्षत्रिय का क्षत्रिया, वैश्य का वैश्या और शूद्रका शूद्रा से विवाह होना चाहिये क्योंकि विद्यादिक उत्तम गुणवाले पुरुष से विद्यादिक उत्तम गुणवाली स्त्री का विवाह होने से परस्पर दोनों को अत्यन्त सुख होगा और जो उत्तम पुरुष से मूर्ख स्त्री वा पण्डित स्त्री का मूर्ख पुरुष से विवाह होगा तो अत्यन्त क्लेश होगा कभी सुख न होगा तथा क्षत्रियों के गुणवाले से क्षत्रिय गुणवाली स्त्री का वैश्य गुणवाले पुरुष से वैश्य गुणवाली स्त्री का विवाह होना चाहिये और जो मूर्ख पुरुष सोई शूद्र है उससे मूर्ख स्त्री का विवाह होना उचित है क्योंकि तुल्य स्वभाव के होने से सुख होता है अन्यथा दुःखही होता है रूप की भी परीक्षा होनी चाहिये परस्पर दोनों की

अर्थात् वर और कन्या की प्रसन्नता से विवाह का होना उचित है कन्या वर की परीक्षा करै और वर कन्या की दोनों की परस्पर प्रसन्नता जब होय फिर माता, पिता वा बन्धु विवाह कर देवैं अथवा आपही दोनों परस्पर विवाह करलेवैं पशुवत् विवाह का व्यवहार करना उचित नहीं जैसे कि गाय वा छेरी को पकड़ के दूसरे के हाथ में दे देते हैं वे लेके चले जाते हैं जैसी इच्छा होय वैसा करते हैं इस प्रकार का व्यवहार मनुष्यों को कभी न करना चाहिये पूर्वोक्त काल के नियमही से विवाह करना चाहिये बाल्यावस्था में नहीं ॥ गुरुणानुमतःस्नात्वा समावृत्तोयथाविधि । उद्वहेतद्विजोभार्यां सवर्णांलक्षणान्विताम् ॥ यह मनु का स्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि ब्रह्मचर्य्याश्रम से पूर्ण विद्या पढ़के गुरु की आज्ञा लेके जैसी विधि वेद में लिखी है वैसे सुगन्ध्यादिक द्रव्य से मन्त्र पूर्वक स्नान करके शुभ श्रेष्ठ लक्षण युक्त अपने वर्ण की कन्या को वह द्विज ग्रहण करै। महान्त्यपिसमृद्धानिगोऽजाविधनधान्यतः । स्त्रीसम्बन्धे दशैतानि कुलानिपरिवर्जयेत् ॥ बड़े भी कुल होंय गाय, छेरी, अवि नाम भेंड़ धन और धान्य से सम्पन्न होवैं तो भी दश कुलों की कन्याओं को न ग्रहण करै वे कौन से दश कुल हैं ॥ हीनक्रियं निष्पुरुषंनिश्छन्दोरोमशार्शसम् । क्षय्यामयाव्यपस्मारि श्वित्रि कुष्ठिकुलानिच ॥ ये दश कुल हैं हीनक्रिय नाम जिस कुल में यज्ञादिक क्रिया नहीं है और आलस्य भी बहुत सा जिस कुल में होय १ निष्पुरुष नाम जिस कुल में पुरुष न होवैं स्त्री २ होवैं २ निश्छन्द नाम जिस कुल में वेदादिक विद्या न होय ३ रोम नाम जिस कुल में भालू की नांई देह के ऊपर लोम होवैं ४ अर्शस नाम जिस कुल में ववासिर रोग होय ५ क्षयि नाम जिस कुल में धातु क्षीणता दमा रोग होय ६ आमयाविनाम जिस कुल में आंव का विकार होय ७ अपस्मारि नाम जिस कुल

में मिर्गी रोग होय ८ श्वित्रि नाम जिस कुल में श्वेत कुष्ठ होय ९ और कुष्ठि नाम जिस कुल में गलित कुष्ठ होय १० इन दश कुलों की कन्याओं को विवाह के लिये ग्रहण न करें क्योंकि जो रोग पिता माता के शरीर में होता है सोई संतानों में भी कुछ २ रोग आवेगा इस्से उनका ग्रहण करना उचित नहीं ॥ नोद्वहेत्कपिलांकन्यां नाधिकाङ्गीन्नरोगिणीम्। नालोमिकान्नातिलोमान्नवाचाटान्नपिङ्गलाम् ॥ नर्क्ष वृक्ष नदीनाम्नीन्नान्यपर्वतनामिकाम्। नपक्ष्यहिप्रेष्यनाम्नीन्नचभीषणनामिकाम् ॥ कपिला नाम बिलाई की नांई जिस कन्या के नेत्र होवैं उसके साथ विवाह न करै क्योंकि सन्तानों के भी वैसे नेत्र होंगे नाधिकाङ्गी नाम जिस कन्या के अङ्ग वर से अधिक होवैं अर्थात् कन्या का शरीर लम्बा चौड़ा वर का शरीर छोटा और दुबला होय उनका परस्पर विवाह न होना चाहिये अर्थात् दोनों के शरीर स्थूल अथवा दोनों के शरीर कृषित होवैं तब विवाह होना चाहिये परन्तु स्त्री के शरीर से पुरुष का शरीर लम्बा होना चाहिये हाथ के कन्धे तक स्त्री का सिर आवै उस्से अधिक स्त्री का शरीर न होना चाहिये न्यून होय तो होय अन्यथा गर्भ स्थिर न होगा और गर्भच्छेद भी होजाय तो आश्चर्य नहीं इस्से स्त्री का शरीर पुरुष के शरीर से छोटाही होना चाहिये रोगिणी नाम स्त्री के शरीर में कोई रोग न होना चाहिये और स्त्री भी पुरुष की परीक्षा करै कि उसके शरीर में स्थिर रोग कोई न होवै कोई महारोग न होय इस प्रकार की कन्या से विवाह न करै कि जिसके शरीर में सूक्ष्म भी लोम न होय और जिसके शरीर के ऊपर बड़े २ लोम होवैं उस्से भी विवाह न करै वा चाटा नाम बहुत बोलने वाली जो स्त्री है उसके साथ विवाह न करै अर्थात् परिमित भाषण करै अधिक बकवाद न करै जिसका पीतवर्ण हर्दी की नांई

होय उस स्त्री के साथ विवाह न करे और जिसका नक्षत्र के ऊपर नाम होय जैसा कि अश्विनी, भरणी, इत्यादिक तथा वृक्ष के ऊपर जैसा कि आम्रा, अश्वत्था, इत्यादिक और नदी के ऊपर जैसा कि नर्मदा, गङ्गा, इत्यादिक अन्त्य नाम चांडाली, चर्मकारिणी, इत्यादिक पर्वत के ऊपर जिसका नाम होवै जैसे कि हिमालया, विन्ध्याचला, इत्यादिक जिसका पक्षी के ऊपर होय जैसा कि हंसी, काकी, इत्यादिक जिसका सर्प के ऊपर होय जैसे कि सर्पिणी इत्यादिक जिसका दासी इत्यादिक नाम होय जिसका भयङ्करी, चण्डी और भैरवी, काली, इत्यादिक नाम होवै इस प्रकार के नाम वाली स्त्री से विवाह न करना चाहिये नक्षत्रादिक जितने नाम हैं वे सब अयुक्त हैं मनुष्यों के न रखना चाहिये कैसी स्त्री का विवाह होना चाहिये कि ॥ अव्यङ्गाङ्गींसौम्यनाम्नीं हंसवारणगामिनीम् । तनुलोमकेशदशनां मृद्वङ्गीमुद्वहेत्स्त्रियम् ॥ अव्यङ्गाङ्गी नाम जिसके टेढ़े अङ्ग न होवैं अर्थात् सब अङ्ग सूधे होवैं सौम्य जिसका नाम सुन्दर होवै जैसा कि यशोदा, कामदा, धर्मदा, कलावती, सुखवती, सौभाग्यवती, इत्यादिक हंसवारणगामिनीम् जैसे कि हंस और हाथी चलता है वैसी चाल जिसकी होवै ऐसी चलने वाली स्त्री न होय कि ऊंट और काक की नांई चले तनु नाम सूक्ष्म लोम केश और सूक्ष्म दांतवाली होय जिसके अङ्ग कोमल होवैं ऐसी स्त्री के साथ पुरुष विवाह करे ब्राह्मादिक ८ आठ विवाह मनुस्मृति में लिखे हैं वे कौन हैं कि ॥ ब्राह्मोदैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः । गान्धर्वोराक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोधमः ॥ ये सब श्लोक मनुस्मृति के हैं ब्राह्म विवाह उसको कहते हैं कि कन्या और वर का सत्कार करना यथावत् होमादि करके और विद्या शीलादिकों की परीक्षा

करके कन्यादान देना उसका नाम ब्राह्म बिवाह है मास वा दोमास पर्यन्त होम होता रहै और आमातादी ऋत्विक् होवै यज्ञ के अन्त दक्षिणा स्थान में कन्या देना उसका नाम दैव बिवाह है एक गाय और एक बैल वा दो गाय और दो बैल बर से लेके कन्या को देना उसका नाम आर्ष बिवाह है प्राजापत्य नाम बर और कन्या से प्रतिज्ञा का होना अर्थात् कन्या बर से प्रतिज्ञा करै कि मैं आप से व्यभिचार, अधर्म और अप्रियाचरण कभी न करूंगी तथा बर कन्या से प्रतिज्ञा करै कि मैं तुमसे व्यभिचार अधर्म और अप्रियाचरण कभी न करूंगा पीछे बिधि पूर्वक बिवाह होना उसका नाम प्राजापत्य बिवाह है आसुर नाम अपने कुटुंबियों को थोड़ा सा धन देना और बर के कुटुंबियों को भी थोड़ा सा धन देना सत्कार के लिये कन्या और बर को भी थोड़ा २ धन देना होमादिक बिधि से बिवाह करना उसका नाम आसुर बिवाह अर्थात् दैत्यों का बिवाह है कन्या और बर के परस्पर प्रसन्न होने से बिवाह का होना उसको गान्धर्व बिवाह कहते हैं इसमें माता, पिता और बंध्वादिकों का कुछ प्रयोजन नहीं कन्या और बर ये दोनों आपही से स्वतन्त्र होके सब बिधि कर लेवैं इसी का नाम गान्धर्व बिवाह है कोई कन्या अत्यन्त रूपवती और सब गुणों से जिसकी प्रशंसा अर्थात् हजारहों कन्याओं के बीच में श्रेष्ठ होवै और कहने सुनने से उसका पिता न देता होय कन्या को भी बन्ध करके रक्खै तब वहां जाके बल से कन्या को ले लेना है उसको राक्षस बिवाह कहते हैं फिर होमादिक बिधि करके बिवाह करलेवैं अर्थात् जैसे कि राक्षस लोग बल से परप दार्थों को छीन लेते हैं वैसा यह बिवाह है अष्टम बिवाह यह है कि कहीं एकान्त में कन्या सूती अथवा मत्त अथवा

ग वा मद्यादिक पीके प्रमत्त हो अथवा कोई रोग से भ्रष्ट होय उससे समागम करे विवाह के पहिलेही समागम का होना है वह पैशाच विवाह कहाता है वह सब विवाहों से नीच विवाह है इन आठ विवाहों में ब्राह्म, दैव और प्राजापत्य ये तीन विवाह सर्वोत्तम हैं इन तीनों में भी ब्राह्म अति उत्तम है और गान्धर्व भी श्रेष्ठ है उससे नीच आसुर, उससे नीच राक्षस, और सब से नीच पैशाच विवाह है इनको कभी न करना चाहिये ॥ अनिन्दितैःस्त्रीविवाहैरनिन्द्या भवति प्रजा । निन्दितैर्निन्दितानॄणां तस्मान्निन्द्यान्विवर्जयेत् ॥ मनुष्यों को निन्दित विवाह कभी न करना चाहिये जैसी परीक्षा और जो काल लिखा है उससे विरुद्ध विवाहों का करना वे निन्दित नाम भ्रष्ट विवाह हैं और भ्रष्ट विवाहों के करने से उनके सन्तान भी भ्रष्ट होते हैं जैसे कि बाल्यावस्था में विवाह का करना उससे जो सन्तान होता है वह सन्तान रोगादिक पूर्वोक्त दूषितही होगा श्रेष्ठ कभी न होगा जो परीक्षा के बिना विवाह का करना उससे बहुत क्लेश होंगे और सन्तान भी बहुत क्लेशित होजायगे उनके धनादिकों का नाश भी होजायगा इससे निन्दित विवाह मनुष्यों को कभी न करना चाहिये और जो ब्राह्मादिक उत्तम विवाह हैं उनका काल तथा परीक्षा लिखी है उस रीति से जो विवाह होते हैं वे अनिन्दित अर्थात् श्रेष्ठ विवाह हैं उन विवाहों के करने से स्त्री पुरुष और कुटुंबियों को सदा सुखही होगा और उनको प्रजा भी अनिन्दित अर्थात् श्रेष्ठही होगी सदा माता, पिता और कुटुंबियों को वे पुत्रादिक सन्तान सुखही देवेंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं महाभारत में जितने विवाह लिखे हैं वे युवावस्थाही में लिखे हैं परस्पर परीक्षा और परस्पर प्रसन्नताही से विवाह होते थे जैसे कि द्रौपदी,

न्ती, गान्धारी, दमयन्ती, लोपामुद्रा, अरुन्धती, मैत्रेयी, त्यायनी और शकुन्तलादिकों के विवाह इसी प्रकार से हुये तथा मनुस्मृति में भी लिखा है ॥ बाल्ये पितुर्वशे तिष्ठेत्पाणिग्राहस्य यौवने। पुत्राणां भर्तरि प्रेते नभजेत्स्त्री स्वतन्त्रताम् ॥ ल्यावस्था न्यून से न्यून षोडश वर्ष पर्यन्त होती है तब तक ता के वश में कन्या रहै और षोडश वर्ष से लेके २४ वर्ष र्यन्त जिस वर्ष में विवाह होय तब अपने पति के वश में रहै व पति न रहै तब पुत्रों के वश में स्त्री रहै स्त्री स्वतन्त्र न होवै योंकि स्त्री का स्वभाव चञ्चल होता है इससे आप कुमार्ग में लेगी और धनादिकों का नाश भी करेगी इससे स्त्री को वतन्त्र न रखना चाहिये और जो लोग यह बात कहते हैं कि ता के घरमें कन्या रजस्वला जो होय तो पितादिकों का र्म नष्ट हो जायगा और पितादिक सब नरक में जांयगे यह ात सत्य है वा नहीं यह बात मिथ्याही है क्योंकि कन्या के जस्वला होने से पितादिक अधर्मी हो जांयगे और नरक ें जावेंगे यह बड़ा आश्चर्य है पितादिकों का क्या अपराध है कि रजस्वला का होना तो स्त्री लोगों का स्वाभाविक है तो ़हा होहीगा इसमें पितादिकों का क्या सामर्थ्य है कि बन्द रदेवैं सो यह बात प्रमाण शून्य है बुद्धिमान् इस बात को भी न मानैं इसमें मनु भगवान का प्रमाण भी है ॥ त्रीणिवर्षाण्युदीक्षेत कुमार्यृतुमतीसती। ऊर्द्ध्वन्तुकालादेतस्माद्विन्देत सदृशंपतिम् ॥ पिता के घरमें कन्या जब रजस्वला होय तब से के तीन वर्ष तक विवाह करने के लिये पति की परीक्षा करै ीन वर्ष के पीछे जैसी वह कन्या है वैसेही अपने तुल्य सवर्ण ति को ग्रहण करै कन्या के शरीर में धातु क्षीणादिक ोग न होवैं तो सोलहवें वर्ष रजस्वला होगी इससे पहिले ाहीं और जो उक्त रोग होगा तो १५ पन्द्रहवें वा १४

[illegible]वें अथवा १३ तेरहवें वर्ष कोई कन्या रोगी रजस्वला [illegible]जाय तो भी तीनवर्ष पीछे विवाह करेंगे तो १६ सोलहवें १७ सतरहवें वा १८ अठारवें वर्ष विवाह करना उचित [औ]र जब सोलहवें वर्ष रजस्वला होय तो १९ वा २० [बी]सवें वर्ष विवाह होना चाहिये क्योंकि शरीर से जो रज [नि]कलता है सो स्त्री के शरीर की शुद्धि होती है इस कारण [र]जस्वला स्त्री के साथ ४ दिन तक सङ्ग करने का निषेध है [क्यों]कि स्त्रीके शरीर से एक प्रकार की उष्णता निकलती है उसके निकलने से नाड़ी और उसका शरीर शुद्ध होजाता है [इस]लिये रजस्वला होने के पीछेही विवाह का करना उचित है [जो] जन्मपत्र देखके विवाह करते हैं सो बात सत्य है वा मिथ्या [य]ह बात मिथ्याही है क्योंकि जन्मपत्र को तो मिलाते हैं परंतु उनके स्वभाव, गुण, आयु और बल को न मिलाने से सदा [उ]नको क्लेशही होता है इसलिये वह बात मिथ्याही है जन्मपत्र [मि]लाने को बुद्धिमान लोग सत्य कभी न जानें इसमें प्रमाण [भी] है ॥ उत्कृष्टायाभिरूपाय वरायसदृशायच। अप्राप्तामपितांत-[स्मै] कन्यान्दद्याद्यथाविधि ॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि उत्कृष्ट नाम उत्तम विद्यादिक गुणवान् अभिरूप अर्थात् जैसी कन्या रूपवती होय वैसा वर भी होवै और श्रेष्ठ स्वभाव दोनों का तुल्य होय अप्राप्त नाम निकट [स]म्बन्ध में भी होय तो भी उसी को कन्या देवै अर्थात् दोनों [तु]ल्य गुण और रूपवाले होंय तब विवाह का करना उचित है अन्यथा नहीं इसमें यह मनुस्मृति का प्रमाण है ॥ काममाम-रणात्तिष्ठे द्गृहेकन्यर्त्तुमत्यपि। नचैवैनाम्प्रयच्छेत्तु गुणहीनाय-कर्हिचित् ॥ इसका यह अभिप्राय है कि ऋतुमती कन्या अपने पिता के घरमें मरण तक भी बैठी रहै यह बात तो श्रेष्ठ है परन्तु गुणहीन अर्थात् विद्याहीन पुरुष को कन्या कभी

न देवे अथवा कन्या आप भी दुष्ट पुरुष से विवाह न करे तथा पुरुष भी मूर्ख वा दुष्ट कन्या से विवाह न करे यही गृहस्थों को यथोक्त प्रकार से जैसा कि कहा वैसा विवाह करना सब सुखों का मूल है अन्यथा दुःखही है कभी सुख न होगा जो शीघ्रबोध में ये दो श्लोक लिखे हैं कि ॥ अष्टवर्षाभवेद्गौरी नववर्षाचरोहिणी । दशवर्षाभवेत्कन्या ततऊर्द्ध्वं रजस्वला १। माताचैवपिताचैव ज्येष्ठभ्रातातथैवच । त्रयस्तेनरकंयान्ति दृष्ट्वा कन्यांरजस्वलाम् ॥ २ ॥ ये दोनों श्लोक मिथ्याही हैं क्योंकि आठवें वर्ष विवाह करने से जो कृष्णवर्ण वाली स्त्री गौरवर्ण वाली कैसे होगी वा महादेव की स्त्री उसका गौरी नाम है उस्से विवाह कैसे हो सकेगा, वैसे रोहिणी नक्षत्र लोक है सो आकाश में रहती है वह जड़ पदार्थ है उस्से विवाह कैसे होगा कभी नहीं होसक्ता जो रोहिणी बलदेव की स्त्री थी वह तो मर गई मरी हुई का विवाह कभी नहीं होसक्ता और दशवर्ष में कन्या होती है यह भी मिथ्याही है क्योंकि जब तक विवाह नहीं होता तब तक कन्याही कहाती है और पिता के सामने तो सदा कन्याही और बन्धु के सामने भगिनी रहती है फिर उसका जो नियम है कि दश वर्ष में कन्या होती है सो बात काशिनाथ की मिथ्याही है जो कहता है कि दशवर्ष के आगे रजस्वला होती है यह भी मिथ्याही है सुश्रुत में १६ वर्ष के आगे धातुओं की वृद्धि लिखी है सो ठीक है उस समय में सोलह वर्ष से लेके आगेही रजस्वला होने का संभव है सो सज्जनों को यही बात मानना चाहिये और काशिनाथ की बात कभी न मानना चाहिये जो उसने यह बात लिखी है कि कन्या रजस्वला होने से पितादिक नरक में जायेंगे सो मनुस्मृति वा वेदादिक सत्यशास्त्रों और प्रमाणों से विरुद्ध है इस बात में तो

उसकी बड़ी भारी मूर्खता है क्योंकि माता पितादिकों का क्या दोष है कन्या रजस्वला होने से वे नरक में जांय यह कहना उसका बड़ा पामरपन है पूर्वपक्ष पिता ने काल में विवाह न किया इस्से उनको दोष होता होगा और दश वर्ष के आगे उसको विवाह का फल न होता होगा इस्से उस काशिनाथ ने लिखा होगा उत्तर यह बात भी उसकी मिथ्या है क्योंकि सोलहवर्ष के पहिले कन्या और २५ वर्ष के पहिले पुरुष का विवाह करने से अवश्य पितादिकों को पाप का संभव होता है अथवा उन स्त्री पुरुषों को तो पाप होने का सम्भव होता है किन्तु पाप का फल दुःख है सो बाल्यावस्था में विवाह करने से वीर्य्यादिक धातुओं के नाश और विद्यादिक गुण न होने से अवश्य वे दुःखी होते हैं और होंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं है इस्से इस काशिनाथ का नाम काशिनाश रखना चाहिये क्योंकि काशि नाम प्रकाश का है इसने विद्यादिक गुणों का नाश कर दिया इस्से इसका नाम काशिनाशही ठीक है जो इसने ग्रन्थ का नाम शीघ्रबोध रक्खा है उसका नाम शीघ्रनाश रखना चाहिये क्योंकि बाल्यावस्था में विवाह करने से शीघ्रही रोग होंगे और बहुत रोग होने से शीघ्रही मर जांयगे इस्से इसका नाम शीघ्रनाशही ठीक है इस प्रकार से श्लोक हम लोग भी रच ले सक्ते हैं ॥ ब्रह्मोवाच । एकयामाभवेद्गौरो द्वियामाचैवरोहिणी । त्रियामातुभवेत्कन्या ततऊर्द्धं रजस्वला ॥ १ ॥ मातातस्याःपिताचैव ज्येष्ठोभ्राताताथानुजः । एतेवैनरकंयान्ति दृष्ट्वाकन्यांरजस्वलाम् ॥ २ ॥ पूर्वपक्ष ये दो श्लोक कौन शास्त्र के हैं तो मैं पूछता हूं कि काशिनाथ के श्लोक कौन शास्त्र के हैं वे काशिनाथ के ग्रन्थ के हैं। तो यह श्लोक मेरे ग्रन्थ के हैं आप के ग्रन्थ का क्या प्रमाण है तो काशिनाथ के ग्रन्थ का क्या प्रमाण है काशिनाथ के ग्रन्थ को तो

बहुत लोग मानते हैं जिसको बहुत मनुष्य मानैं वही श्रेष्ठ होय तो जैन यमुमसी और महम्मद के मत को मानने वाले बहुत हैं इनी को मानना चाहिये व हम लोगों के मत से विरुद्ध हैं इसे हम लोग नहीं मानते तो आपलोगों का कौन मत है जो वेदोक्त और धर्मशास्त्रोक्त है सोई तो हम लोगों के मत से काशिनाथ का मत विरुद्ध हुआ क्योंकि आप लोगों का मत वेद और मनुस्मृत्युक्त ही हुआ उस धर्मशास्त्र में मनुस्मृति भी है इसे विरुद्ध होने से आप लोगों को काशिनाथ का मत मानना उचित नहीं और आप ने जो श्लोक बनाये उसके आगे ब्रह्मोवाच क्यों लिखा यह दृष्टान्त के लिये लिखा इसे क्या दृष्टान्त हुआ कि इसी प्रकार से ब्रह्मोवाच, विष्णुरुवाच, नारदउवाच, नारायणउवाच, पाराशरउवाच, वसिष्ठउवाच, याज्ञवल्क्यउवाच, अत्रिरुवाच, अङ्गिराउवाच, युधिष्ठिरउवाच, व्यासउवाच, शुकउवाच, परीक्षितउवाच, कृष्णउवाच, अर्जुनउवाच, इत्यादिक नाम लिखके अष्टादश पुराण अष्टादश उपपुराण, १७ सतरह पाराशरादिक स्मृतियां, निर्णयसिन्धु, धर्मसिन्धु, नारदपंचरात्र, काशिखण्ड, काशिरहस्य, और सत्यनारायणकथा, इत्यादिक ग्रन्थ सम्प्रदायी लोग और पण्डित लोगों ने रच लिये हैं तथा महादेवउवाच, पार्वत्युवाच, भैरवउवाच, भैरव्युवाच, दत्तात्रेयउवाच, इत्यादिक लिख के बहुत तन्त्रग्रन्थ लोगों ने रच लिये हैं यह तो दृष्टान्त भया जैसे कि मैंने अपने श्लोकों के पहिले अपनी इच्छा से ब्रह्मोवाच लिखा वैसेही इनों ने ब्रह्मोवाच इत्यादिक रख के ग्रन्थ रच लिये हैं इस लिये कि श्रेष्ठों के नाम लिखने से ग्रन्थों का प्रमाण होजाय प्रमाण के होने से सम्प्रदायों और आजीविका की वृद्धि होवै उसे बिना परिश्रम से धन आवै और बहुत सुख होवैं इस लिये धूर्तता रची है जैसा कि ब्रह्मोवाच मेरा लिखना वृथा है वैसा

उनका भी ब्रह्मोवाच इत्यादिक लिखना हुआही है और जैसे ये श्लोक दोनों मिथ्या हैं वैसे उनके पुराणादिक ग्रन्थ और काशिनाथ का ग्रन्थ आर्य्यावर्त्त देशवासी लोगों के सत्यानाश करने वाले हैं इनको सज्जन लोग मिथ्याही जानें इस से क्या आया कि मरण तक भी कन्या विवाह के बिना घरमें बैठो रहै तो भी पितादिकों को कुछ दोष नहीं होता परन्तु दुष्ट पुरुष के साथ श्रेष्ठ कन्या अथवा दुष्ट कन्या के साथ श्रेष्ठ पुरुष का विवाह कभी न करना चाहिये किन्तु तुल्य श्रेष्ठ गुण वालों का परस्पर विवाह होना चाहिये जो दुष्ट पुरुष के साथ श्रेष्ठ कन्या वा श्रेष्ठ के साथ दुष्ट कन्या का विवाह होगा तो परस्पर दोनों को दुखही होगा इस से दोनों का परस्पर विचार करके वर और कन्या का विवाह करें क्योंकि श्रेष्ठ विवाह से उन्हीं को सुख और दुष्ट विवाह से उन्हीं को दुःख होगा इसमें माता पितादिकों का कुछ भी अधिकार नहीं उन दोनों के विचार और प्रसन्नताही से विवाह होना चाहिये विवाह में बहुत धन का नाश करना अनुचितही है क्योंकि वह धन व्यर्थही जाता है इस से बहुत राज्य नष्ट होगये और बहुत लोगों का भी विवाह में धन के व्यय से दिवाला निकल जाता है सब लोगों का मिथ्या धन का व्यय करना अनुचित है इस से धन का नाश विवाह में कभी न करना चाहिये एकही स्त्री से विवाह करना उचित है बहुत स्त्री के साथ विवाह करना पुरुषों को उचित नहीं स्त्री को भी बहुत विवाह करना उचित नहीं क्योंकि विवाह सन्तान के लिये है सो एक स्त्री एक पुरुष को बहुत है देखना चाहिये कि एक व्यभिचारिणी स्त्री अथवा वेश्या वे बहुत पुरुषों को वीर्य्य के नाश से निर्बल कर देती हैं इस से एक पुरुष के लिये एक स्त्री क्या थोड़ी है अर्थात बहुत है एक स्त्री के साथ भी सर्वथा वीर्य्य का नाश करना

उचित नहीं क्योंकि वीर्य के नाश से पूर्वोक्त सब दोष हो जांयगे इस विवाहिता उसके साथ भी वीर्य का नाश बहुत न करना चाहिये केवल सन्तान के लिये वीर्य्य का दान करना चाहिये अन्यथा नहीं और स्त्री भी केवल सन्तानहो की इच्छा करै अधिक नहीं दोनों परस्पर सदा प्रसन्न रहैं पुरुष स्त्री को सदा प्रसन्न रक्खै और स्त्री पुरुष को विरोध वा क्लेश परस्पर कभी न करैं ॥ संतुष्टोभार्य्ययाभर्त्ता भर्त्रा भार्य्यातथैवच । यस्मिन्नेवकुलेनित्यं कल्याणंतत्रवैध्रुवम् ॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि स्त्री प्रियाचरण से पुरुष को सदा प्रसन्न रक्खै और पुरुष भी स्त्री को जिस कुल में इस प्रकार की व्यवस्था है उस कुल में दुःख कभी नहीं होता किंतु सदा सुखही रहता है और जो परस्पर अप्रसन्न रहेंगे तो यह दोष आवेगा ॥ यदिहिस्त्रीनरोचेत पुमांसन्नप्रमोदयेत् । अप्रमोदात्पुनःपुंसः प्रजननंनप्रवर्त्तते ॥ १ ॥ स्त्रियान्तुरोचमानायां सर्वन्तद्रोचतेकुलम् । तस्यान्त्वरोचमानायां सर्वमेवनरोचते ॥ २ ॥ ये दोनों मनुस्मृति के श्लोक हैं इनका यह अभिप्राय है कि जो स्त्री प्रीति और सेवा से पुरुष को प्रसन्न न करेगी तो पुरुष को अप्रसन्नता से हर्ष न होगा जब हर्ष न होगा तब प्रजनं नाम वीर्य की अत्यन्त उत्पत्ति और गर्भस्थिति भी न होगी तो स्त्री को पुरुष के अप्रीति से कुछ भी सुख न होगा और जो पुरुष स्त्री को प्रसन्न न रक्खेगा तो उस पुरुष को कुछ भी गृहाश्रम करने का सुख न होगा स्त्री को जो प्रसन्न रक्खेगा उसको सब आनन्द होगा तथाच ॥ पितृभिर्भ्रातृभिश्चैताः पतिभिर्देवरैस्तथा पूज्याभूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभिः ॥ १ ॥ यत्रनार्यस्तुपूज्यन्ते रमंतेतत्रदेवताः । यत्रैतास्तुनपूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाःक्रियाः ॥ २ ॥ शोचन्तिजामयोयत्र विनश्यत्याशुतत्कुलम् । नशोचन्तितुयत्र

भर्ता बहुतैर्हितिस्सर्वदा ॥ ३ ॥ जामयोयानिगेहानि शपन्त्यप्रतिपूजिताः। तानिकृत्याहतानीव विनश्यन्तिसमन्ततः ॥ ४ ॥ तस्मादेताःसदापूज्या भूषणाच्छादनाशनैः। भूतिकामैर्नरैर्नित्यं सत्कारेषूत्सवेषुच ॥ ५ ॥ ये सब मनुस्मृति के श्लोक हैं इनका यह अभिप्राय है कि पिता, भ्राता, पति और देवर ये सब लोग स्त्रियों की पूजा करैं देखना चाहिये कि पूजा का अर्थ घण्टा, झांझ, झालरी, मृदङ्ग, धूप, दीप और नैवेद्यादिक षोड़शोपचारों को पूजा शब्द से जो लेते हैं सो मिथ्याही लेते हैं क्योंकि स्त्रियों की ऐसी पूजा करनी उचित नहीं और न कोई ऐसी पूजा करता है इस्से पूजा शब्द का अर्थ सत्कारही है सत्कार जो होता है सो चेतनही का होता है जो सत्कार को जाने इस्से स्त्री लोगों का सदा सत्कार करना चाहिये जिस्से कि वे सदा प्रसन्न रहैं और उनको यथाशक्ति आभूषणों से प्रसन्न रक्खें जिन गृहस्थों का बड़ा भाग्य होता है और बहुत कल्याण की जिनको इच्छा होवै वे इस प्रकार से स्त्रियों को प्रसन्नही रक्खैं ॥ १ ॥ जिस कुल में नारी लोग रमण नाम आनन्द से क्रीड़ा करती और प्रसन्न रहती हैं तिस कुल में देवता नाम विद्यादिक गुण जिनों से कि वह कुल प्रकाशित होजाता है वे गुण सदा उस कुल में बढ़ते रहते हैं जिस कुल में स्त्रियों का सत्कार और उनको प्रसन्नता नहीं होती उस गृहस्थ की सब क्रिया निष्फल होती है और दुर्दशा भी होती है इस्से स्त्रियों को प्रसन्नही रखना चाहिये ॥ २ ॥ और जिस कुल में जामय नाम स्त्री लोग शोक से दुःखित रहती हैं उस कुल का नाश शीघ्रही होजाता है जिस कुल में स्त्री लोग शोक नहीं करतीं अर्थात् प्रसन्न रहती हैं उस कुल की वृद्धि और आनन्द सदा होता है और आज काल आर्य्यावर्त्त में कोई एक राजा वा धनाढ्य बिवाहिता स्त्री को तो कैद को नाईं

बन्द करके रखते हैं और आप वेश्या और पर स्त्री के पास गमन करते हैं उसमें अपने धन और शरीर का नाश करते हैं और उनकी विवाहित स्त्रियां रोती और बड़ी दुखित रहती हैं परन्तु उन मूर्ख पुरुषों को कुछ भी लज्जा नहीं आती कि यह स्त्री तो मेरे साथ विवाहित है इसको छोड़ के मैं अन्य स्त्री गमन करता हूं यह मैं न करूं ऐसा विचार उन पुरुषों के मन में कभी नहीं आता अन्य स्त्री और वेश्या गमन जो करते हैं सो तो बुराही काम करते हैं परन्तु बालकों से भी बुरा काम करते हैं यह बड़ा आश्चर्य है कि स्त्री का काम पुरुषों से करते हैं इनको तो अत्यन्त भ्रष्ट बुद्धि सज्जनों को जाननी चाहिये ३ जिन पुरुषों को स्त्री दुःखित होके श्राप देती हैं उन कुलों का नाशही होजाता है जैसे कि कोई विषदान करके कुल का नाश कर देवै वैसेही उन कुलों का नाश हो जाता है इसे सज्जनों को स्त्रियों का सत्कार सदा करना चाहिये जिसे कि स्त्री लोग प्रसन्न होके गृह का कार्य धर्माचरण और मङ्गलाचरण सदा करैं ४ तिसे स्त्रियों का सत्कार सदा करना चाहिये आभूषण, वस्त्र, भोजन और मधुर वाणी से स्त्रियों को प्रसन्न रक्खैं जिनको कि ऐश्वर्य की इच्छा होय वे यज्ञादिक उत्सवों में स्त्रियों का बहुत सत्कार करैं अर्थात् स्त्रियों को प्रसन्नही रक्खैं तथा स्त्री लोग भी सब प्रकार से पुरुषों को प्रसन्न रक्खैं ॥ ५ ॥ पाणिग्राहस्यसाध्वीस्त्री जीवतोवामृतस्यवा । पतिलोकमभीप्सन्ती नाचरेत्किञ्चिदप्रियम् ॥ १ ॥ जिसके साथ विवाह होय उसको स्त्री सदा प्रसन्न रक्खै जिसे वह अप्रसन्न होय ऐसी बात कभी न करै सोई स्त्री श्रेष्ठ कहाती है यहां तक की पति मर भी गया होय तो भी अप्रियाचरण न करै उस स्त्री को सदा श्रेष्ठ पति इस जन्म वा जन्मान्तर में भी प्राप्त होता है ॥ १ ॥ अनृताष्टतुकालेच मन्त्रसंस्कारकृत्पतिः । सुखस्यनित्यंदातेह परलो

ता वर्द्धतेतद्धिसर्वदा ॥ ३ ॥ जामयोयानिगेहानि शपन्त्यप्रति-पूजिता: । तानिकृत्याहतानीव विनश्यन्तिसमन्तत: ॥ ४ ॥ तस्मादेतास्सदापूज्या भूषणाच्छादनाशनै: । भूतिकामैर्नरैर्नित्यं स-त्कारेषूत्सवेषुच ॥ ५ ॥ ये सब मनुस्मृति के श्लोक हैं इनका यह अभिप्राय है कि पिता, भ्राता, पति और देवर ये सब लोग स्त्रियों की पूजा करैं देखना चाहिये कि पूजा का अर्थ घण्टा, झांझ, झालरी, मृदङ्ग, धूप, दीप और नैवद्यादिक षोड़शोपचारों को पूजा शब्द से जो लेते हैं सो मिथ्याही लेते हैं क्योंकि स्त्रियों की ऐसी पूजा करनी उचित नहीं और न कोई ऐसी पूजा करता है इस्से पूजा शब्द का अर्थ सत्कारही है सत्कार जो होता है सो चेतनही का होता है जो सत्कार को जानै इस्से स्त्री लोगों का सदा सत्कार करना चाहिये जिस्से कि वे सदा प्रसन्न रहैं और उनको यथाशक्ति आभूषणों से प्रसन्न रक्खैं जिन गृहस्थों का बड़ा भाग्य होता है और बहुत कल्याण की जिनको इच्छा होवै वे इस प्रकार से स्त्रियों को प्रसन्नही रक्खैं ॥ १ ॥ जिस कुल में नारी लोग रमण नाम आनन्द से क्रीड़ा करती और प्रसन्न रहती हैं तिस कुल में देवता नाम विद्यादिक गुण जिनों से कि वह कुल प्रकाशित होजाता है वे गुण सदा उस कुल में बढ़ते रहते हैं जिस कुल में स्त्रियों का सत्कार और उनको प्रसन्नता नहीं होती उस गृहस्थ की सब क्रिया निष्फल होती है और दुर्दशा भी होती है इस्से स्त्रियों को प्रसन्नही रखना चाहिये ॥ २ ॥ और जिस कुल में जामय नाम स्त्री लोग शोक से दु:खित रहती हैं उस कुल का नाश शीघ्रही होजाता है जिस कुल में स्त्री लोग शोक नहीं करतीं अर्थात् प्रसन्न रहती हैं उस कुल की वृद्धि और आनन्द सदा होता है और आज काल आर्य्यावर्त्त में कोई एक राजा वा धनाढ्य विवाहिता स्त्री को तो कैद की नांई

बन्द करके रखते हैं और आप वेश्या और पर स्त्री के पास गमन करते हैं उसमें अपने धन और शरीर का नाश करते हैं और उनकी विवाहित स्त्रियां रोती और बड़ी दुखित रहती हैं परन्तु उन मूर्ख पुरुषों को कुछ भी लज्जा नहीं आती कि यह स्त्री तो मेरे साथ विवाहित है इसको छोड़ के मैं अन्य स्त्री गमन करता हूं यह मैं न करूं ऐसा विचार उन पुरुषों के मन में कभी नहीं आता अन्य स्त्री और वेश्या गमन जो करते हैं सो तो बुराही काम करते हैं परन्तु बालकों से भी बुरा काम करते हैं यह बड़ा आश्चर्य है कि स्त्री का काम पुरुषों से करते हैं इनकी तो अत्यन्त भ्रष्ट बुद्धि सज्जनों को जाननी चाहिये ३ जिन पुरुषों को स्त्री दुःखित होके श्राप देती हैं उन कुलों का नाशही होजाता है जैसे कि कोई विषदान करके कुल का नाश कर देवै वैसेही उन कुलों का नाश हो जाता है इसे सज्जनों को स्त्रियों का सत्कार सदा करना चाहिये जिस्से कि स्त्री लोग प्रसन्न होके गृह का कार्य धर्माचरण और मङ्गलाचरण सदा करैं ४ तिस्से स्त्रियों का सत्कार सदा करना चाहिये आभूषण, वस्त्र, भोजन और मधुर वाणी से स्त्रियों को प्रसन्न रक्खैं जिनको कि ऐश्वर्य की इच्छा होय वे यज्ञादिक उत्सवों में स्त्रियों का बहुत सत्कार करैं अर्थात् स्त्रियों को प्रसन्नही रक्खैं तथा स्त्री लोग भी सब प्रकार से पुरुषों को प्रसन्न रक्खैं ॥ ५ पाणिग्राहस्यसाध्वीस्त्री जीवतोवामृतस्यवा । पतिलोकमभीप्सन्ती नाचरेत्किञ्चिदप्रियम् ॥ १ ॥ जिसके साथ विवाह होय उसको स्त्री सदा प्रसन्न रक्खै जिस्से वह अप्रसन्न होय ऐसी बात कभी न करै सोई स्त्री श्रेष्ठ कहाती है यहां तक की पति मर भी गया होय तो भी अप्रियाचरण न करै उस स्त्री को सदा श्रेष्ठ पति इस जन्म वा जन्मान्तर में भी प्राप्त होता है ॥ १ ॥ अनृतावृतुकालेच मन्त्रसंस्कारकृत्पतिः । सुखस्यनित्यंदातेह परलो

न्यायोषितः ॥ २ ॥ वेद मन्त्रों से जिस पुरुष से विवाह का संस्कार भया वही ऋतु काल वा अऋतु काल और इस लोक वा परलोक में नित्य सुख देने वाला है और कोई नहीं इसे विवाहित पुरुष की स्त्री सदा सेवा करै जिस्से कि वह प्रसन्न रहै और घर का जितना कार्य है वह स्त्री के अधिकार में रहै। सदाप्रहृष्टयाभाव्यं गृहकार्येषुदक्षया । सुसंस्कृतोपस्करया व्यये चामुक्तहस्तया ॥ ३ ॥ सदा स्त्री प्रसन्न होके गृह कार्य चतुरता से करै पाक को अच्छी प्रकार से संस्कार करै जिस्से कि औषधवत् अन्न होय और गृह में जो पात्र लवणादिक पदार्थ और अन्न सदा शुद्ध रक्खै जितने घर हैं उन्हको सब दिन शुद्ध रक्खै जाला धूली वा मलिनता घरमें कुछ भी न रहै घर में लेपन प्रक्षालन और मार्जन करै जिस्से कि घर सब दिन शुद्ध बना रहै और घर के दास दासी नौकर इत्यादिकोंपरसब दिन शिक्षा की दृष्टि रक्खै जो पाक करने वाला पुरुष वा स्त्री होवे उसके पास पाक करने समय बैठ के शिक्षा करै जैसी पाक की रीति वैद्यकशास्त्र में लिखी है उस रीति से पाक करै और करावै नये घर को बनाना वा सुधारना होय उस को स्त्रीही करावै शिल्पशास्त्र की रीति से अर्थात् जितना घर का जो कार्य है सो स्त्रीही के आधीन रहै उस में जो नित्य नित्य वा मास २ में खर्च होय वह पति को समझा देवैं और जितना बाहर का कार्य होय सो सब पुरुष के आधीन रहै परस्पर सदा प्रसन्न से घर के कार्यों को करैं घर इस प्रकार का बनावै कि जिसमें सब ऋतु में सुख होय और जिस स्थान में वायु शुद्ध होय चारो ओर पुष्पों की सुगन्ध वाटिका लगावै जिस्से कि सदा चित्त प्रसन्न रहै और व्यर्थ धन का नाश कभी न करैं धर्महीसे धन का संग्रह करैं अधर्म से कभी नहीं अच्छे से अच्छा भोजन करैं जो विद्या पढी होवै उसको सदा पढ़ावैं और

विचारते रहैं आज काल के लोग कहते हैं कि स्त्री लोगों को पढ़ना न चाहिये ऐसा विद्याहीन पुरुष कहते हैं वे पाखण्डी और धूर्त्त हैं क्योंकि स्त्री लोग जो पढ़ैंगी तो उनके सामने हमारी धूर्त्तता न चलेगी फिर उनसे धन भी न मिलेगा और वे जब विद्या से धर्मात्मा होंगी तब हम लोगों से व्यभिचार भी न करेंगी बिना व्यभिचार से वे स्त्री धन भी न देंगी फिर हम लोगों का व्यवहार न चलेगा ऐसे आर्य्यावर्त्त देश में गोकुलस्थ गुसांई आदिक सम्प्रदाय हैं कि जिन की व्यभिचार और स्त्रीहो लोगों से बढ़ती होती है वे इस प्रकार का उपदेश करते हैं कि स्त्री लोगों को कभी न पढ़ना चाहिये परन्तु देखना चाहिये कि मनु भगवान ने यथावत् आज्ञा दी है ॥ वैवाहिकोविधिःस्त्रीणां संस्कारोवैदिकस्मृतः। पतिसेवागुरौवासो गृहार्थोग्निपरिक्रिया ॥ ४ ॥ विवाह की जितनी विधि है सो वेदोक्तही है स्त्रियों का विवाह वेद की रीति से होना चाहिये और पति की सेवा अत्यन्त करनी चाहिये यही स्त्री का मुख्य कर्म है और विवाह के पहिले गुरौ वास नाम सो लोग पढ़ने के लिये ब्रह्मचर्य्याश्रम करैं और गृह कार्य्य जानने के लिये अवश्य विद्या पढ़ै अग्नि परिक्रिया नाम अग्निहोत्रादिक यज्ञ करने के लिये अवश्य वेदों को पढ़ैं अन्यथा कुछ भी न जानेंगी नित्य स्त्री और पुरुष मिलके अग्निहोत्र प्रातः और सायंकाल करैं अन्य यज्ञों को भी सामर्थ्य के अनुकूल करैं और जो विद्या न पढ़ी वा आप न जानती होंगी तो अग्निहोत्रादिक यज्ञ और घर के सब कार्य्य को कैसे करेंगी विद्या अन्य के पास होय तो उस विद्या को जिस प्रकार से मिलै उस प्रकार से लेवै क्योंकि मरण तक भी गुण ग्रहण करने की इच्छा मनुष्यों को करनी चाहिये उसी से मनुष्यों को सुख होता है ॥ ४ ॥ स्त्रियोरत्नान्यथोविद्या सत्यंशौचंसुभाषितम्। वि

विद्यानिचशिल्पानि समादेयानिसर्वतः ॥ ५ ॥ ये पांच मनुस्मृति के श्लोक हैं स्त्री हीरादिक रत्न सत्यविद्या, सत्यभाषण, पवित्रता, मधुरवाणी, नाम भाषण करने की रीति और विविध अर्थात् अनेक प्रकार के शिल्प ये सब जिस में होवें उससेही लेना चाहिये भाषण की रीति यह है कि ॥ सत्यंब्रूयात्प्रियंब्रूया न्नब्रूयात्सत्यमप्रियम्। प्रियंचनानृतंब्रूया देषधर्मःसनातनः ॥ १ ॥ भद्रम्भद्रमितिब्रूया द्भद्रमित्येववावदेत्। शुष्कवैरंविवादञ्च नकुर्य्यात्केनचित्सह ॥ २ ॥ ये दो श्लोक मनुस्मृति के हैं इसका यह अर्थ है कि सत्यही कहै मिथ्या कभी न कहै सदा सब जनों को जो प्रिय लगे वैसाही कहै पूर्वपक्ष प्रिय तो वेश्यागामी पर स्त्रीगामी और चोरी करने वाले आदि पुरुषों से उनी बातों को कहै तब उनको अनुकूल प्रिय होता है अन्यथा प्रिय नहीं होता इस्से ऐसाही कहना चाहिये वा नहीं उत्तरपक्ष इसको प्रियवचन न कहना चाहिये क्योंकि वेश्यादिक गमन की इच्छा जब वे करते हैं तभी उनके हृदय में शङ्का भय और लज्जा हो जाती है वह काम तो उनके हृदय को प्रियही नहीं है और उनका आचरण करना भी अधर्म है किन्तु उनका जो निषेध करना है वही ठीक २ प्रिय है जैसे कोई बालक अग्नि पकड़ने को चलै उसको उसकी माता कहै कि तू अग्नि पकड़ वह वचन बालक को प्रिय न होगा किन्तु आगी में हाथ नावेगा तब हाथ जल जायगा उस्से बालक को अप्रिय होगा अर्थात दुःखही होगा किन्तु बालक को निषेध जो करना है कि तूं आग को मत पकड़ वही वचन उसको प्रिय है प्रिय उसका नाम है कि कभी जिस वचन से किसी का अहित न होय उसको प्रियवचन कहते हैं और सत्य होय वह अप्रिय होय तो उसको न कहै जैसे किसी ने किसी से पूछा कि विवाह किस लिये करना होता है और तेरा जन्म किस प्रकार भया तब उसको इतनाही

कहना उचित है कि विवाह का करना सन्तान के लिये है और मेरा जन्म मेरी माता और पिता से हुआ है जो गुप्त क्रिया है स्त्री से और माता पिता की उसको कहना उचित नहीं यद्यपि यह बात सत्यही है तो भी सब लोगों को अप्रिय के होने से उस बात का कहना उचित नहीं तथा दश पांच पुरुष कहीं बैठे होवें और उस समय में काना, अन्धा, मूर्ख वा दरिद्र पुरुष आवें उनसे वे पुरुष कहें कि काना आओ अन्धा आओ मूर्ख आ वा दरिद्र आओ ऐसा कहना उचित नहीं यद्यपि यह बात सत्य है तो भी अप्रिय के होने से न कहना चाहिये किन्तु देवदत्त आ यज्ञदत्त आओ ऐसा उनसे कहना उचित है फिर आप के आंख में कुछ रोग भया था वा जन्म से ऐसी हो है तब वह प्रसन्नता से सब बात कह देगा जैसी की भई थी इससे इस प्रकार का सत्य होय और वह अप्रिय भी होय तो कभी न कहै॥ प्रियंचनानृतंब्रूयात्। और जो बात अन्य को प्रिय होय परन्तु वह अनृत अर्थात मिथ्या होय तो उसको कभी न कहै जैसे कि आज काल इन राजा और धनाढ्य लोगों के पास खुशामदी लोग बहुत से धूर्त रहते हैं वे सदा उनको प्रसन्न करने के लिये मिथ्याही कहते रहते हैं आप के तुल्य कोई राजा वा अमीर न हुआ न है और न होगा और जो राजा मध्य दिवस के समय में कहै कि इस समय में आधी रात है तब वे खुशामदी लोग कहते हैं कि हां महाराजाधिराज हां देखिये चांद और चांदनी भी अच्छी खिल रही है फिर वे कहते हैं कि महाराज के तुल्य कोई बुद्धिमान् न भया न है न होगा तब तो वह मूर्ख राजा और धनाढ्य प्रसन्नता से फूल के ढोल हो जाते हैं फिर वे ऐसी बात कहते हैं कि महाराज आप के प्रताप के सामने किसी का प्रताप नहीं चलता है आप का प्रताप कैसा है जैसा कि सूर्य और

चाद ऐसा कह २ के बहुत धन हरण कर लेते हैं वे राजा और धनाढ्य लोग उन्हीं से प्रसन्न रहते हैं क्योंकि आप जैसा मूर्ख वा पण्डित होता है उसको वैसेही पुरुष से प्रसन्नता होती है कभी उनको सत्पुरुषों का सङ्ग नहीं होता और कभी सत्पुरुषों का सङ्ग होजाय तो भी वे खुशामदी धूर्त्त राजा और धनाढ्य लोगों को मूर्खता के होने से उनको प्रसन्नता सत्य बात के सुनने से कभी नहीं होती क्योंकि जैसा जो पुरुष होता है उसको वैसाही संग मिलता है ऐसे व्यवहार के होने से आर्य्यावर्त्त देश के राज्य और धन बहुत नष्ट होगये और जो कुछ है उसकी भी रक्षा इस प्रकार से होनी दुर्लभ है जब तक कि सत्य व्यवहार सत्यशास्त्र और सत्सङ्गों को न करेंगे तब तक उनका नाशही होता जायगा कभी बढ़ती न होगी खुशामदी लोगों के विषय में यह दृष्टान्त है कि कोई राजा था उसके पास पण्डित वैरागी और नौकर वे खुशामदी लोग बहुत से रहते थे किसी दिवस राजा के रसोई में बैंगन का शाक मसाले डालने से बहुत अच्छा बना फिर राजा भोजन करने को जब बैठा तब स्वाद के होने से उस शाक को अधिक खाया राजा भोजन करके सभा में आया जहां कि वे खुशामदी लोग बैठे थे उन से राजा ने कहा कि बैंगन का शाक बहुत अच्छा होता है तब वे खुशामदी लोग सुन के बोले कि वाहवा महाराज की नांई कोई बुद्धिमान् नहीं है महाराज आप देखिये कि जब बैंगन उत्तम है तब तो परमेश्वर ने उसके ऊपर मुकुट रख दिया तथा मुकट के चारों ओर कलगीं रख दी है और बैंगन का वर्ण श्रीकृष्ण के शरीर का जैसा घनश्याम है वैसाही बनाया है और उसका गूदा मक्खन की नांई परमेश्वर ने बनाया है इस्से बैंगन का शाक उत्तम क्यों न बने फिर जब उस शाक ने बादी की तब रात भर नींद भी न आई और ८

दश बार शौच भी गया उस्से राजा बड़ा क्लेशित भया फिर जब प्रातःकाल भया तब भीतर से राजा बाहर आया वे खुशामदी लोग भी आये जब राजा का मुख बिगड़ा देखा तब उन खुशामदी लोगों ने भी उनसे अधिक मुख बिगाड़ लिया फिर वे सब खुशामदी लोग राजा के पास जाके बैठे राजा बोले कि बैंगन का शाक तो अच्छा होता है परन्तु बादी करता है तब वे बोले कि वाहवा महाराज के तुल्य कोई बुद्धिमान् नहीं है एकही दिन में बैंगन की परीक्षा कर ली देखिये महाराज कि जब बैंगन भ्रष्ट है तब तो उसके ऊपर परमेश्वर ने खूंटी गाड़ दी है उस खूंटी के चारो ओर कांटे लगा दिये हैं उस दुष्ट का वर्ण भी कोइले के तुल्य रक्खा है तथा परमेश्वर ने उस का गूदा भी श्वेतकुष्ठ के नांई बना दिया है तब उन खुशामदीयों से राजा ने पूछा कि शाम को तुम लोगों ने मुकुट, कलँगी, घनश्याम और मक्खन के तुल्य बैंगन के अवयव वर्णन किये उसी बैंगन के अवयवों को खूंटी, कांटे, कोइला और कुष्ठ के नांई बनाये हम कौन बात को सत्य मानें कि जो कल शाम को कही थी उसको मानें वा आज के कहे को मानें वाहवा महाराज किस प्रकार के विवेकी हैं कि विरोध को शीघ्रही जान लिया सुनिये महाराज जिस बात से आप प्रसन्न होंगे उसी बात को हम लोग कहैंगे क्योंकि हम लोग तो आप के नौकर हैं सो आप झूंठी वा सच्ची बात कहैंगे उसी बात को हम लोग पुष्ट करेंगे और हम लोग वह साले बैंगन के नौकर नहीं हैं कि बैंगन की स्तुति करैं हम को बैंगन से क्या लेना है हम को तो आप की प्रसन्नता से प्रसन्नता है आप असत्य कहो तो भी हम को सत्य है वे इस प्रकार की सम्मति रखते हैं कि राजा सब दिन नशा करै और मूर्खही बना रहै फिर जब वे और कोई राजा वा धनाढ्य के पास जाते हैं तब उसी की

खुशामद करते हैं जिसके पास पहिले रहते थे उसकी निन्दा करते हैं इस प्रकार से खुशामदी मनुष्यों ने राजाओं की और धनाढ्यों की मति भ्रष्ट कर दी है जो बुद्धिमान् राजा और धनाढ्य लोग हैं इस प्रकार के मनुष्यों को पास भी नहीं बैठने देते न आप उनके पास बैठते तथा न उनकी बात सुनते हैं और जो कोई मिथ्या बात उनके पास कहता है उसी समय उसको उठा देते हैं और सदा बुद्धिमान्, सत्यवादी, विद्यावान् पुरुषों का सङ्ग करते हैं जो कि मुख के ऊपर सत्य २ कहैं मिथ्या कभी न कहैं उन राजाओं और धनाढ्यों की सदा बढ़ती ऐश्वर्य और सुख होता है इससे सज्जनों को श्रेष्ठही पुरुषों का संग करना चाहिये दुष्टों का कभी नहीं सत्य बात के आचरण में निन्दा वा दुःख होय तो भी न भय करना चाहिये भय तो एक परमेश्वर और अधर्मही से करना चाहिये और किसी से नहीं क्योंकि परमेश्वर सब काल में सब बातों को जानता है कोई बात परमेश्वर से गुप्त नहीं रहती इससे सज्जनों को परमेश्वरही से भय करना चाहिये कि परमेश्वर की आज्ञा के विरुद्ध हम लोग कुछ भी कर्म न करैं तथा अधर्म के आचरण से भय करना चाहिये क्योंकि अधर्म से दुःखही होता है सुख कभी नहीं और एक पुरुष की सब लोग स्तुति करैं अथवा निन्दा करैं ऐसा कोई भी नहीं है निन्दा इसका नाम है कि॥ गुणेषुदोषारोपणमसूया तथादोषेषुगुणारोपणमप्यसूयार्थापत्त्या वेद्या॥ जो कि गुणों में दोषों का स्थापन करना उसका नाम निन्दा है वैसेही अर्थापत्ति से यह आया कि दोषों में गुणों का आरोपण भी निन्दा होती है इससे क्या आया कि ॥ गुणेषुगुणारोपणंस्तुतिः दोषेषुदोषारोपणंचतद्विरोधत्वात् । गुणों में गुणों का जो स्थापन करना और दोषों में दोषों का उसका नाम स्तुति है जो जैसा पदार्थ है उसको वैसाही जानैं अर्थात्

यथावत् सत्यभाषण करना स्तुति है और अन्यथा अर्थात् मिथ्या भाषण करना निन्दा है इसलिये सज्जन लोगों को सदा स्तुतिही करनी चाहिये निन्दा कभी नहीं मूर्ख लोग सत्यबात कहने और सत्याचरण के करने में निन्दा करें तोभी बुद्धिमान लोगों को दुःख वा भय न मानना चाहिये किन्तु प्रसन्नताही रखनी चाहिये क्योंकि उनकी बुद्धि भ्रष्ट है इसलिये भ्रष्ट बात भी सदा कहते हैं जैसे वे भ्रष्ट लोग भ्रष्टता को नहीं छोड़ते हैं तो श्रेष्ठ लोग श्रेष्ठता को क्यों छोड़ें किन्तु भ्रष्टता भ्रष्ट लोगों की भी अवश्य छोड़नी चाहिये यदि सब भ्रष्ट लोग विरोध भी अत्यन्त करें यहांतक कि मरण की भी अवस्था आजाय तोभी सत्यवचन और सत्याचरण सज्जनों को कभी न छोड़ना चाहिये क्योंकि यही मनुष्यों के बीच में मनुष्यत्व है और इसको छोड़ने से मनुष्यत्व तो नष्टही हो जाता है किन्तु पशुत्व भी आजाता है आजीविका भी सत्य से करनी चाहिये असत्य से कभी नहीं इसमें यह मनु भगवान का प्रमाण है । नलोकवृत्तंवर्त्तेतवृत्तिहेतोःकथंचन । इसका यह अभिप्राय है कि संसार में बहुत धूर्त्तलोग असत्य और पाखण्ड से आजीविका करते हैं वैसे आचरण कभी न करै इति अर्थात् आजीविका के हेतु भी असत्य भाषणादिक न करै किन्तु सत्यही भाषण से आजीविका करै यही धर्म सनातन है कि अनृत अर्थात् मिथ्या वही दूसरे को प्रिय होय तो कभी न करै किंच सदा सत्य भाषणही करै दूसरा मनु भगवान का श्लोक है कि भद्रंभद्रमित्यादि । भद्र है कल्याण का नाम सोतीन बार श्लोक में पाठ किया है इसी हेतु कि कल्याण कारक वचनसदा कहै जिसको सुनके मनुष्य धर्मनिष्ठ होयऔर अधर्म त्याग करै शुष्कवैर अर्थात् मिथ्या वैर और विवाद किसी से न करना चाहिये जैसे कि आज काल के पण्डित और विद्यार्थी लोग हठ दुराग्रह और क्रोध से बाद विवाद कर्तेर लड़ पड़ते हैं उनके हाथ सिवाय दुःख के कुछ

भी नहीं लगता है इससे जो कुछ अपने को अज्ञात होय उस विषय को प्रीति पूर्व्वक विवाद छोड़ कर पूछने आप जो सत्य २ जानता होय सो औरों से कह दे ॥ परित्यजेदर्थकामौयौस्यातांधर्मवर्जितौ। यह मनुस्मृति का वचन है इसका यह अभिप्राय है कि स्वाध्याय अर्थात् विद्या पठन पाठन और धन उपार्जन यदि धर्म से विरुद्ध होवें तो उनको छोड़ दे परन्तु विद्या प्रचार और धर्म को कभी न छोड़े । संतोषंपरमास्थायसुखार्थीसंयतोभवेत् संतोषमूलंहिसुखंदुःखमूलंविपर्ययः । इत्यादिक सब मनुस्मृति के श्लोक लिखेंगे सो जान लेना । संतोष इसका नाम है कि सम्यक प्रसन्न रहैं सदा अत्यन्त पुरुषार्थ रक्खें आलस्य और पुरुषार्थ का छोड़ना संतोष नहीं किन्तु सब दिन पुरुषार्थ में तत्पर रहै सब दिन सुखार्थी और जितेन्द्रिय होवे कभी हर्ष और शोक न करै किंच जितना सुख है सो संतोष से ही है और जितना दुःख होता है सो लोभ ही से होता है॥ इन्द्रियार्थेषुसर्वेषुनप्रसज्येतकामतः अतिप्रसक्तिश्चैतेषां मनसासन्निवर्त्तयेत् ॥ २ ॥ श्रोत्रादि इन्द्रियों के शब्दादिक जो विषय हैं उन में कामातुर हो के प्रवृत्त कभी न होवै किन्तु धर्म के हेतु प्रवृत्त होवै और मन से उन में अत्यन्त प्रीति छोड़ता जाय धर्म और परमेश्वर में प्रीति बढ़ाता जाय ॥ २ ॥ बुद्धिवृद्धिकराण्याशुधन्यानिचहितानिच नित्यंशास्त्राण्यवेक्षेतनिगमांश्चैववैदिकान् ॥ ३ ॥ जो शास्त्र शीघ्रही बुद्धि धन और हित को बढ़ाने वाले हैं उन शास्त्रों को नित्य विचारै जैसे कि छः दर्शन चारों उपवेद और वेदों को नित्य विचारै उनके विचार से अनेक पदार्थविद्या को प्रकाश करै। किञ्चयथायथाहिपुरुषःशास्त्रंसमभिगच्छति तथातथाविजानातिविज्ञानंचास्यरोचते ॥ ४ ॥ जैसे २ पुरुष शास्त्र का विचार करता है तैसे २ उसका विज्ञान बढ़ता जाता है फिर विज्ञान ही से उसको प्रीति होती है और में नहीं ॥ ४ ॥ ऋषियज्ञंदेव-

यज्ञंभूतयज्ञंचसर्वदा नृयज्ञंपितृयज्ञंचयथाशक्तिनहापयेत् ॥ ५ ॥ ऋषियज्ञ अर्थात् पठन पाठन और संध्योपासन १ देवयज्ञ अर्थात् अग्नि होमादिक २ भूतयज्ञ अर्थात् बलिवैश्वदेव ३ नृयज्ञ अर्थात् अतिथि सेवा ४ और पितृयज्ञ नाम श्राद्ध और तर्पण अपने सामर्थ्य के अनुकूल यथा शक्ति करै उन्हें कभी न छोड़ै इतने सब कर्म अविद्वान् पुरुषों के वास्ते हैं और जो ज्ञानी हैं वे तो यथावत् पदार्थविद्या और परमेश्वर को जानते हैं । योगाभ्यास करै सब शास्त्रों को बिचारै ब्रह्म विद्या की प्राप्ति और उपदेश भी करै इसमें मनु भगवान का प्रमाण है एतानेकेमहायज्ञान्यज्ञशास्त्रविदोजना: अनीहमाना:सततमिन्द्रियेष्वेवजुह्वति ॥ ६ ॥ जितने ज्ञानी हैं वे पांच महायज्ञों को ज्ञान क्रिया ही से कर्ते हैं बाह्य चेष्टा से नही क्योंकि वे यज्ञशास्त्र के तत्वों को जानते हैं उनको अनीहमान अर्थात् बाहर की चेष्टा न देख पड़ै ज्ञान और योगाभ्यास से विषयों को इन्द्रियों में होम करदेते हैं तथा इन्द्रियों को मनमें मनको आत्मा में और आत्मा को परमेश्वर से योग कर्ते हैं उनको बाहर की चेष्टा करना आवश्यक नही ॥ ६ ॥ वाच्येकेजुह्वतिप्राणं प्राणेवाचंचसर्वदा वाचिप्राणेच पश्यन्तो यज्ञनिर्वृत्तिमक्षयाम् ॥ ७ ॥ कितने योगी और ज्ञानी लोग वाणी में प्राण का होम कर्ते हैं कितने प्राण में वाणी का होम कर्ते हैं सदा वाणी और प्राण में यज्ञ की सिद्धि अक्षय अर्थात् जिसका नाश नही होता उसको देखते हैं अर्थात् वाणी तो प्राणही से उत्पन्न होती है और प्राण आत्मा से आत्मा अविनाशी है उसको परमात्मा से युक्त कर देते हैं इससे उनको मुक्ति ही हो जाती है फिर कभी उनको दु:ख का संग नहीं होता है इससे उन को बाह्य क्रिया का करना आवश्यक नहीं ॥ ७ ॥ ज्ञानेनैवापरेविप्रा यजन्त्येतैर्मखै: सदा ज्ञानमूलांक्रियामेषां पश्यन्तोज्ञानचक्षुषा ॥ ८ ॥ जो

ज्ञान चक्षु से सब पदार्थों को यथावत् जानते हैं वे ज्ञान होते ब्रह्म यज्ञादिक पांच महायज्ञों को कर्ते हैं क्योंकि ज्ञानयज्ञों से उनका सब प्रयोजन सिद्ध है एब क्रिया उन की ज्ञानमूलक होी है क्योंकि उनके हृदय मन और आत्मा सब शुद्ध हो गये हैं उन का बाह्य अडंबर करना आवश्यक नहीं बाह्य क्रिया तो उन लोगों के लिये है कि जिनका हृदय और आत्मा शुद्ध नहो व अग्नि होत्रादिक यज्ञों को बाह्य क्रिया से अवश्य करैं क्योंकि उनके करने बिना हृदय शुद्ध नहो होगा उन ज्ञानियों को सेवा और सङ्ग से ज्ञानोपदेश लेवैं जिस्से कि क-र्मियों की भो बुद्धि बढै ॥ ८ ॥ आसनाशनशय्याभिरद्भिर्मूलफले-नवा नकस्यचिद्वसेद्गेहेशक्तितोनर्चितोतिथिः ॥ ९ ॥ गृहस्थ के घर किसी समय कोई अतिथि आवै तो असत्कृत अर्थात् सत्कार बिना न रहै जैसा अपना सामर्थ्य हो वैसा सत्कार करना चाहिये आसन भोजन शय्या जल कंद और फल से अवश्य स-त्कार करै ॥ ९ ॥ परन्तु ऐसे मनुष्य का सत्कार कभी न करै । पाखण्डिनोविकर्मस्थान्वैडालव्रतिकाञ्शठान् हैतुकानवकवृत्तींश्च-वाङ्मात्रेणापिनार्चयेत् ॥ १० ॥ पाषंडि अर्थात् वेद विरुद्ध मार्ग में चलने वाले चक्रांकितादिक वैरागी और गोकु-लिये गोसाईं आदिकों का वचन से भी सत्कार गृहस्थ लोग कभी न करैं वैसे चोरी वेश्या गमनादिक विरुद्ध कर्म करने वाले पुरुषों का भी सत्कार न करैं वैडाल व्रतिक नाम परकार्य के नाश करने वाले अपने कार्य में तत्पर हैं जैसे कि बिलार मूसे का तो प्राण हरले और अपना पेट भरले ऐसे पुरुषों का वचनसेभी गृहस्थ लोग सत्कार न करैं शठनाम मूर्खों का भी सत्कार न करैं शठ वे होते हैं कि उन्हे बुद्धि न होय और अन्य का प्रमाण भी न करैं हैतुका नाम वेद शास्त्र विरुद्ध कुतर्क के करने वाले उनका भी वचन से सत्कार न करैं

वृक्षहरि अर्थात् जैसे बैरागियों में खाखी लोग भस्म लगा लेते जटा बढ़ालेते और काठ की कौपीन धारण कर लेते हैं फिर ग्राम वा नगर के समीप जाके ठहरते और शंखादिक बजादेते हैं अर्थात् सूचना कर देते हैं कि गृहस्थ लोग आवें और हमको धन आदिक पदार्थ देवें जब गृहस्थ लोग आते हैं तब दूर से देख के ध्यान लगाते हैं प्रसाद में विष भी देदेते हैं और उनका धन सब हरण कर लेते हैं उनका गृहस्थ लोग बचन से भी सत्कार न करें ऐसे जितने मंडली बांध के फिरते हैं बैरागी और साधु इत्यादिक उनको साधु न जानना चाहिये, किन्तु बड़ा ठग जानना चाहिये और कितने गृहस्थ लोग सदावर्त्त और छेत्र करते हैं वे अनुचित करते हैं क्योंकि बड़े धूर्त गांजा और भांग पीनेवाले तथा चोर और डांकू वैसेही लुच्चे सदावर्तों से अन्न लेते और छेत्रों में भोजन कर लेते हैं फिर कुकर्मही करते रहते और हरामी हो जाते हैं बहुत से लोग अपना काम काज छोड़ सदावर्तों और छेत्रों के ऊपर घर के सब काम और नौकरी चाकरी छोड़ के साधु वा भिखारी बन जाते हैं फिर उनका अन्न खाते और सोते पड़े रहते हैं अथवा कुकर्म करते रहते हैं इससे संसार की बड़ी हानि होती है सो जो कोई सदावर्त्त छेत्र करता है उससे सज्जन वा सत्पुरुष कोई नहीं जाता इससे उन गृहस्थों का पुण्य कुछ नहीं होता किन्तु पापही होता है इससे गृहस्थ लोग अन्नादिक दान करना चाहैं तो पाठशाला रचलेवें उसी में सब दान करैं अथवा जो श्रेष्ठ धर्मात्मा गृहस्थ और विरक्त होवें उन को अन्नादिक देवें और यज्ञ करैं तब उनको बड़ा पुण्य होय पाप कभी न होवै तथा मनु भगवान् का वचन है। वेद-विद्याव्रतस्नानात् श्रोत्रियानगृहमेधिनः । पूजयेद्धव्यकव्येनविपरीतांश्चवर्जयेत् ॥ ११ ॥ जिनों ने ब्रह्म चर्य्याश्रम करके

वेदविद्या अर्थात् सब विद्या को पढ़ा है और धर्माचरण से शुद्ध होवें ऐसे श्रोत्रिय अर्थात् विद्वान् और गृहस्थ लोगों का हव्य नाम देवकार्य औ कव्यनाम पितृकार्य में गृहस्थ लोग सत्कार करैं उन से विपरीत लोगों का सत्कार कभी न करैं। ११ ॥ शक्तितोपचमानेभ्यो दातव्यं गृहमेधिना संविभागश्च भूतेभ्यः कर्तव्योऽनुपरोधतः ॥ १२ ॥ जो सन्यासीसमस्त विद्यावान् और धर्मात्मा होवें उन की भी गृहस्थ लोग सेवा करैं और भी जितने अनाथ होवें अर्थात अन्धे लंगड़े लूले और जिनका कोई पालन करने वाला न होवे उनका भी गृहस्थ लोग पालन करैं ॥ १२ ॥ नोपगच्छेत्प्रमत्तोपिस्त्रियमार्त्तवदर्शने। समानशयने चैवनशयीततयासह ॥ १३ ॥ जब स्त्री रजस्वला होय उस दिन से लेके चार दिन तक काम पीड़ा से प्रमत्त भी होय तो भी स्त्री का संग न करै और एक शय्या में स्त्री के साथ कभी न सोवे ॥ १३ ॥ रजसाभिलुप्तांनारींनरस्यह्युपगच्छतः।प्रज्ञातेजोबलंचक्षुरायुश्चैवप्रहीयते ॥ १४ ॥ जो पुरुष रजस्वला स्त्री से समागम कर्ता है उसको बुद्धि तेज बल नेत्र और आयु ये पांच नष्ट हो जाते हैं क्योंकि स्त्री के शरीर से एक प्रकार का अग्नि निकलता है उससे पुरुष का शरीर रोगयुक्त होता है रोग युक्त होने से बुध्यादिक नष्ट हो जाते हैं ॥ १४ ॥ तांविवर्जयतस्तस्यरजसासमभिलुप्ताम् प्रज्ञातेजोबलंचक्षुरायुश्चैवप्रवर्द्धते ॥ १५ ॥ जो पुरुष रजस्वला स्त्री का संग नहीं कर्ता उस पुरुष के बुद्धि तेज बल नेत्र और आयु ये सब बढ़ते हैं ॥ १५ ॥ ब्राह्मे मुहूर्त्तेबुध्येतधर्मार्थौचानुचिन्तयेत् कायक्लेशांश्चतन्मूलान् वेदतत्त्वार्थमेवच ॥ १६ ॥ एक पहर रात जब रहै तब सब मनुष्य उठैं उठके प्रथम धर्म का विचार करैं कि यह २ धर्म की बात हमको करनी होगी तथा यह २ अर्थ नाम व्यवहार की बात अवश्य करना होगा उस धर्म और अर्थ के आचरण में विचार करैं कि परीश्रम थोड़ा होय और

वह कार्य सिद्ध हो जाय और जो शरीर में रोगादि क्लेश हों उनका औषध पथ्य और निदान का इस्से यह रोग भया है इन सबको विचारै विचार के उनके निवारण का विचार करै फिर वेदतत्त्वार्थ नाम परमेश्वर की प्रार्थना करै और उठ के मल मूत्रादिक त्याग करै हस्त पाद का प्रक्षालन करै फिर जो इच्छा दूध वाले होवें उनसे दन्त धावन करै अथवा खैर के चूर्ण वा सूंघनी से युक्त करके दन्त धावन से दांतों को मलै और स्नान करै सूर्योदय से पहिले १ वा दो कोस भ्रमण करै एकान्त में जाके संध्योपासन जैसा कि लिखा है वैसा करै सूर्योदय के पीछे घर में आके अग्निहोत्र जैसा जिस वर्ण का व्यवहार पूर्वक लिखा है वैसा करै जब तक पहर दिनन चढ़ै तबतक दूसरे प्रहर के प्रारंभ में तर्पण बलिवैश्वदेव और अतिथि सेवा करके भोजन करै तब जो जिसका व्यवहार है उस व्यवहार को यथावत् करै ग्रीष्मऋतु को छोड़के दिवस में न सोवै क्योंकि दिन को सोने से रोग होते हैं और ग्रीष्म में अर्थात् वैशाख और ज्येष्ठ में थोड़ा सोने से रोग नहीं होता क्योंकि निद्रा से शरीर में उष्णता होती है सो ग्रीष्म में उष्णताही अधिक होती हैं जल भी अधिक पीने में आता है फिर जब मनुष्य सोता है तब सब द्वार अर्थात् लोम द्वार से भीतर से जल बाहर निकलता है उस्से सब मार्ग शुद्ध हो जाते हैं इस्से ग्रीष्म ऋतु में सोने से रोग नहीं होता है अन्य ऋतु में सोने से होता है और जो कुछ आवश्यक कार्य होय तो ग्रीष्म ऋतु में भी न सोवै तो बहुत अच्छा है फिर जब चार वा पांच घड़ी दिन रहै तब सब कार्यों को छोड़के भोजन के लिये जावै पहिले शौच स्नानादिक क्रिया करै तदनन्तर बलिवैश्वदेव फिर अतिथि सेवा करके भोजन करै भोजन करके फिर भी संध्योपासन के वास्ते एकान्त में चला जाय संध्योपासन करके फिर अपने अग्निहोत्र स्थान में आके अग्नि-

होम करै जब २ अग्निहोत्र करै तब २ स्त्री के साथही करै फिर जो जिसका व्यवहार होय वह उसको करै अथवा समग्र करै किंतु एक प्रहर रात तक व्यवहार करै फिर सोवै दो प्रहर अथवा डेढ़ प्रहर तक फिर उठके वैसे ही नित्य क्रिया करै सो मध्यरात्रि के मध्य दो प्रहर में जब २ वीर्य दान करै उसके पीछे कुछ ठहर के दोनों स्नान करैं पीछे अपने २ शय्या में पृथक् २ जाके सोवैं जो स्नान न करेंगे तो उनके शरीर में रोगही हो जायगे क्योंकि उसमें बड़ी उष्णता होती है इसलिये स्नान करने से वह विकार न होगा और वीर्यतेज भी बढ़ेगा इससे उस समय स्नान अवश्य करना चाहिये इसमें मनुभगवान् के बचन का प्रमाण है। भोजनंहिगृहस्थानांसायंप्रातर्विधीयते स्नानंमैथुनिनः स्मृतम् ॥ इसका अर्थ यह है कि दो वेर गृहस्थ लोगों को भोजन करना चाहिये सायं और प्रातः काल, जो मैथुन करै तो उसके पीछे स्नान अवश्य करै तथाचश्रुतिः अहरहःसंध्यामुपासीतअहरहरग्निहोत्रंजुहुयात्। इनका यह अभिप्राय है कि सायं और प्रातः काल में दो वेर संध्योपासन और अग्निहोत्र करै दोई संध्या हैं प्रातः और सायंकाल मध्यान संध्या कहीं नहीं क्योंकि संध्या नाम है सन्धिका सन्धि दो काल होती है प्रातःकाल प्रकाश और अन्धकार की संधि होती है तथा सायं काल प्रकाश और अन्धकार की सन्धि होती है मध्यान में केवल प्रकाशही है इससे मध्यान्ह में संध्या नहीं हो सकी। संध्यायन्तिपरंतत्त्वं नामपरमेश्वरंयस्यांसासंध्या। इस समय परमेश्वर का ध्यान कर्त्ते हैं इससे इसका नाम संध्या है अथवा संधयेहितासंध्या मन और जीवात्मा का परमेश्वर से जिस कर्म से सन्धान होय उसका नाम सन्धि है संधि के लिये जो अनुकूल कर्म होता है उसका नाम संध्या है सो दोई हैं। तस्मादहोरात्रस्यसंयोगेब्राह्मणः संध्यामुपासीत ॥ यह

सामवेद के ब्राह्मण की श्रुति है। उद्यन्तमस्तंयान्तमादित्यमभिध्यायन् ब्राह्मणोविद्वान्सकलंभद्रमश्नुते। यह यजुर्वेद के ब्राह्मण की श्रुति है इसका यह अभिप्राय है कि जिस्से अहोरात्र अर्थात रात्रि और दिवस के संयोग में संध्या करैं जब जीवात्मा बाहर व्यवहार करने को चाहता है तब बहिर्मुख होता है मन और इन्द्रियों को भी बहिर्मुख कर्ता है और जीव भी नेत्र ललाट और श्रोत्र ऊपर के अंगो में विहार कर्ता है जैसे कि सूर्यउदय होकर ऊपर २ विहार कर्ता है वैसे जीव भी जब सोना चाहता है तब हृदय पर्यन्त नीचे के अंगो में चला जाता है रात्रि की नांई अन्धकार हो जाता है विना अपने स्वरूप के किसी पदार्थ को नही देखता जैसे कि सूर्य जब अस्त हो जाता है तब अन्धकार होने से कुछ नहीं देख पड़ता है ऐसही जीव के ऊपर आने और नीचे जाने का व्यवहार उसका सन्धान दोनों संध्याकाल में करैं इसके सन्धान करने से परमेश्वर पर्यन्त का कालान्तर में मनुष्यों को बोध हो जाता है और जीवका कभी नाश नहीं होता इस्से इसका नाम आदित्य है इस श्रुतिका अर्थ हो गया अर्थात। उद्यन्तमस्तंयान्तमादित्यमभिध्यायन् ब्राह्मणः सकलंभद्रमश्नुते। इसहेतु उदय और सायंकाल की दो संध्या निकलती हैं सो जान लेना तथा मनुस्मृति के श्लोक भी हैं। नतिष्ठतितुयःपूर्वाम् नोपास्ते यश्चपश्चिमाम्। सशाधुभिर्वहिष्कार्यः सर्वस्माद्द्विजकर्मणः ॥ १ ॥ प्रातःसंध्यांजपंस्तिष्ठेत्सावित्रीमार्कदर्शनात्। पश्चिमांतुसमासीनः सम्यगृक्षविभावनात् ॥ २ ॥ जो प्रातः और सायम् काल की संध्या नहीं करता उसको श्रेष्ठ द्विज लोग सब द्विज कर्माधिकारों से निकाल देवैं अर्थात् यज्ञोपवीत को तोड़ के शूद्र कुल में कर देवैं वह केवल सेवाही करै जो कि शूद्र का कर्म है ॥ १ ॥ इस्से दो सन्ध्या निकलती हैं दूसरे श्लोक में सन्ध्या के काल का नियम और दोनों सन्ध्या

हैं दो घड़ी रात से लेके सूर्योदय पर्यन्त प्रातः संध्या के काल का नियम है तथा एक वा आध घड़ी दिन से लेके जब तक तारा न निकलैं तब तक सायं सन्ध्या के काल का नियम है और गायत्री का अर्थ और जैसा ध्यान उसका कहा है वैसाही दोनों काल में करैं और जो कहता है कि मध्यान संध्या क्यों न होय तो उनसे पूंछना चाहिये कि मध्य रात्रि में संध्या क्यों न होय और दो पहर के दो मुहूर्त्त और दो क्षण में संध्या क्यों न होजाय ऐसा कहने से तो हजारों संध्या हो जांयगी और उसके मत में अनवस्था भी आजायगी इससे उसका कहना मिथ्याही है ॥ २ ॥ अधार्मिकोनरोयोहि यस्यचाप्यनृतं-धनम् । हिंसारतश्चयोनित्यं नेहासौसुखमेधते ॥ ३ ॥ जो नर अधार्मिक अर्थात अधर्म का करने वाला है और जिसका धन भी अनृत अर्थात असत्य से आया होय और नित्य हिंसारत अर्थात पर पीड़ाही में नित्य रहता होय वह पुरुष इस संसार में सुख को कभी नहीं प्राप्त होता ॥ ३ ॥ नसीदन्नापिधर्मेण मनो-ऽधर्मेनिवेशयेत् । अधार्मिकाणांपापानामाशुपश्यन्विपर्ययम् ॥ ४ ॥ यदि मनुष्य बहुत क्लेशित भी होय और धर्म के आचरण से भी बहुत दुःख पावै तो भी अधर्म में मनको प्रविष्ट न करै क्योंकि अधर्म करने वाले मनुष्यों का शीघ्रही विपर्यय अर्थात नाश हो जाता है ऐसा देखने में भी आता है इससे मनुष्य अधर्म करने की इच्छा कभी न करै ॥ ४ ॥ नाधर्मश्चरितोलोके सद्यःफलतिगौ-रिव । शनैरावर्त्तमानस्तु कर्त्तुर्मूलानिकृन्तति ॥ ५ ॥ जो पुरुष अधर्म करता है उसको उसका फल अवश्य होता है जो शीघ्र न होगा तो देर में होगा जैसे कि गाय जिस समय उसकी सेवा करते हैं उस समय दूध नहीं देती किन्तु कालान्तर में देती है वैसेही अधर्म का भी फल कालान्तर में होता है धीरे २ जब अधर्म पूर्ण होजायगा तब उसके करने वालों का मूल अर्थात सुख

के कारणों को छेदन कर देगा इस्से वे दुःख सागर में गिरेंगे ॥५ ॥ अधर्मेणैधतेतावत्ततोभद्राणिपश्यति । ततःसपत्नान्जयति समूलस्तुविनश्यति ॥ ६ ॥ जब मनुष्य धर्म को छोड़ के अधर्म में प्रवृत्त होता है तब छल कपट और अन्याय से पर पदार्थों को हरण कर लेता है हरण करके कुछ सुख भी करता है फिर शत्रु को भी अधर्म छल और कपट से जीत लेता है परंतु उसके पीछे जैसा मूल सहित वृक्ष उखड़कर गिर जाता है वैसा मूल सहित उस अधर्म करनेवाले पुरुष का नाश होजाता है ॥६॥ इस्से किसी मनुष्य को अधर्म करना न चाहिये किन्तु । सत्यधर्मार्यवृत्तेषु शौचेचैवारमेत्सदा । शिष्यांश्चशिष्याद्धर्मेण वाग्बाहूदरसंयतः ॥ ७ ॥ सत्य धर्म और आर्य जो श्रेष्ठ मनुष्य हैं उनमें और उनके आचरण में सदा स्थित हो शौच पवित्रता अर्थात हृदय की शुद्धि और शरीरादिक पदार्थों की शुद्धि करने में सदा रमण करैं तथा अपने शिष्य पुत्र और विद्यार्थियों को यथावत् धर्म से शिक्षा करैं और वाणी बाहु उदर इनका संयम करें अर्थात् वाणी से वृथा भाषण, बाहु से अन्यथा चेष्टा, और उदर का संयम अर्थात भोजन का बहुत लोभ न रक्खैं ॥ ७ ॥ नपाणिपादचपलो ननेत्रचपलोऽनृजुः । नस्याद्वाक्चपलश्चैव नपरद्रोहकर्मधीः ॥ ८ ॥ पाणि हाथ पाद अर्थात पैर उनसे चपलता नाम चंचलता न करै तथा नेत्र से भी चपलता न करै अनृजु अर्थात अभिमान कभी न करै सदा सरल होय और वाक् चपल न होवै अर्थात बहुत न बोलै जितना उचित हो उतनाही भाषण करै और पराये का द्रोह अर्थात ईर्ष्या कभी न करै और कर्मही परम पदार्थ है उपासना और ज्ञान कुछ भी नहीं ऐसी बुद्धि कभी न करै किन्तु कर्म से उपासना और उपासना से ज्ञान श्रेष्ठ है ऐसी बुद्धि सदा रक्खै ॥८॥ येनास्यपितरोयाताः येनयाताःपितामहाः । तेनयायात्सतांमार्ग-

तेनगच्छन्नरिष्यते ॥ ६ ॥ जिस मार्ग से उसके पिता और पितामह गये हों उसी मार्ग से आप भी आवे उस मार्ग पर जाने से मनुष्य नष्ट नहीं होता किन्तु सुखीही होता है और दुःख कभी नहीं पाता। पूर्वपक्ष-यदि पिता और पितामह कुकर्मी होंय तो भी उनकी रीति से चलना चाहिये वा नहीं। उत्तर-नहीं क्यों कि इसी लिये मनु भगवान ने सतामिति विशेषण दिया है कि यदि पिता और पितामह सत्पुरुष अर्थात् धर्मात्मा होवें तो उन की रीति से चलना और यदि अधर्मी होवें तो उनकी रीति से कभी न चलना चाहिये ॥ ६ ॥ ऋत्विक्पुरोहिताचार्यैर्मातुलातिथिसंश्रितैः। बालवृद्धातुरैर्वैद्यैर्ज्ञातिसम्बन्धिबान्धवैः ॥ १० ॥ मातापितृभ्यांयामीभिर्भ्रात्रापुत्रेणभार्यया। दुहित्रादासवर्गेण विवादंनसमाचरेत् ॥ ११ ॥ ऋत्विक्, पुरोहित, आचार्य, मातुल अर्थात मामा, अतिथि, तथा संश्रित अर्थात मित्र, बालक, वृद्ध, आतुर, नाम दुःखी, वैद्य, ज्ञाति, संबधी अर्थात श्वसुरादिक, बान्धव अर्थात कुटुम्बी, माता, पिता, तथा दमाद, भ्राता, पुत्र, तथा भार्या अर्थात स्त्री, दुहिता अर्थात कन्या, दासवर्ग अर्थात सेवकलोग इनसे विवाद कभी न करै और औरों से भी विवाद न करै विवाद का करना दुःख मूलही है इस्से सज्जनों को किसी से विरुद्ध वाद करना न चाहिये ॥ ११ ॥ प्रतिग्रहसमर्थोपिप्रसङ्गन्तत्रवर्जयेत्। प्रतिग्रहेणह्यस्याशु ब्राह्मंतेजःप्रशाम्यति ॥ १२ ॥ प्रतिग्रह लेने में समर्थ अर्थात गुणवान भी होय और उसको लोग देते भी होंय तो भी किसी से दान न लेवै किंतु अध्यापन नाम पढ़ाना याजन नाम यज्ञ का कराना अथवा अपने परीश्रम से आजीविका को करै और जो पुरुष प्रतिग्रह लेता है उसका ब्राह्म तेज अर्थात् विद्या नष्ट हो जाती है क्योंकि वह खुशामदी होजायगा इस्से दान का लेना उचित नहीं ॥ १२ ॥ अतपास्त्वनधीयानः प्रतिग्रहरुचिर्द्विजः। अम्भस्यश्मप्लवेनेव सहतेनैवमज्ज-

ति ॥ १२ ॥ जो पुरुष तपस्वी और विद्वान् नहीं और प्रतिग्रह में रुचि रखता है वह उसी दान के साथ पाप समुद्र में डूब मरेगा जैसे कोई पाषाण की नौका से समुद्र वा नदी को तरे वह तरेगा तो नहीं परंतु डूब के मर जायगा वैसेही प्रतिग्रह लेनेवाले मूर्ख की गति होगी ॥ १३ ॥ त्रिष्वप्येतेषुदत्तंहि विधिनाप्यर्जितंधनम्। दातुर्भवत्यनर्थाय परत्रादातुरेवच ॥ १४ ॥ एक तो अविद्वान् दूसरा वैडालव्रतिक तीसरा वकव्रतिक इन तीनों को तो जल का भी दान न देवे और जिसने विधि अर्थात धर्म से धन का संचय किया होय उस धन को तीनों को कभी न देवे जो कोई दाता देगा उसको बड़ा दुःख होगा और परलोक में उन तीन पुरुषों को इस लोक में भी बड़ा दुःख होगा ॥ १४ ॥ यथाप्लवेनौपलेननिमज्जत्युदकेतरन्। तथानिमज्जतोधस्तादज्ञौदातृप्रतीच्छकौ ॥ १५ ॥ जैसे कोई पाषाण की नौका पर चढ़ के उदक में तरा चाहै वह तर तो नहीं सकेगा परंतु डूब के मर जायगा तैसेही परीक्षा के बिना दुष्टों को जो दान देता है और जो दुष्ट लेने वाले हैं वे सब अज्ञान के होने से अधोगति को जायंगे अर्थात् दुःख और नरक को प्राप्त होंगे उनको कभी कुछ सुख न होगा इससे परीक्षा करके श्रेष्ठ और धर्मात्माओंही को दान देना चाहिये अन्य को नहीं वैडालव्रतिक और वकव्रतिक मनुष्यों का यह लक्षण है ॥ १५ ॥ धर्मध्वजीसदालुब्धश्छाद्मिकोलोकदम्भकः। वैडालव्रतिकोज्ञेयोहिंस्रःसर्वाभिसन्धकः ॥ १६ ॥ अधोदृष्टिर्नैष्कृतिकःस्वार्थसाधनतत्परः। शठोमिथ्याविनीतश्चवकव्रतचरोद्विजः ॥ १७ ॥ जो मनुष्य धर्मध्वजी अर्थात धर्म तो कुछ न करै अथवा कुछ करै भी तो फिर अपने मुख से कहै कि मैं बड़ा पंडित वैराग्यवान् योगी तपस्वी और बड़ा धर्मात्मा हूं इसको धर्मध्वजी कहते हैं जो बड़ा लोभी होय अर्थात् जो कुछ पावै सो भूमि में अथवा

जहां तहां रख छोड़े खाने में भी लोभ करै और बड़ा कपटी छली होय लोगों को दंभ का उपदेश करै अर्थात् जैसे कि संप्रदायी लोग उपदेश करते हैं कि तुलसी की माला धारण करने से बैकुंठ को जाता है और सब पापों से छूट जाता है तथा रुद्राक्ष माला धारण करने से कैलास को जाता है और सब पापों से दूर हो जाता है और गङ्गादिक तीर्थ राम शिवादिक नाम स्मरण और काश्यादिकों में मरण से मुक्ति होजाती है इस प्रकार के उपदेश करके दंभ और अभिमान में लोगों को गिरा देते हैं और आप भी गिरे रहते हैं इससे दुःख और बन्धन तो हो होगा और मुक्ति कभी न होगी किंतु धर्माचरण विद्या और ज्ञान इनके बिना मुक्ति कभी नहीं होसक्ती हिंस्रः नाम रात दिन जिसका चित्त प्राणियों को पीड़ा देने में नित्य प्रवृत्त रहै उसको हिंस्र कहते हैं सर्वाभिसन्धक अर्थात् अपने प्रयोजन के लिये दुष्ट तथा श्रेष्ठों से मेल रक्खै सो मेल धर्म से नहीं किन्तु अधर्म ही से धनादिक हरण करने के लिये प्रीति करै उनको सर्वाभिसन्धक कहते हैं यह वैडालव्रतिक का लक्षण है ॥ क्रोध के मारे वा कपट छल से अधोदृष्टि नाम नीचे देखता रहै कोई जाने कि वह बड़ा शान्त और वैराग्यवान् है नैष्कृतिक नाम यदि कोई एक कठिन बचन उसे कहै और उसके बदले में दस कठिन बचन भी उसको कहै तो भी उसकी शान्ति न होय उसको नैष्कृतिक कहते हैं स्वार्थ साधन तत्पर अर्थात अपने स्वार्थ साधन में ही तत्पर अर्थात् किसी को पीड़ा तथा हानि होजाय और वह अपने स्वार्थ के आगे कुछ न गिनै शठ अर्थात मूर्ख जो हठ दुराग्रह से निर्बुद्धि होय और अन्य का उपदेश न मानै उसको शठ कहते हैं मिथ्या विनीत नाम विनय तथा नम्रता करै सो कुटिलता से करै शुद्ध हृदय से नहीं ऐसे लक्षण वाले को बकव्रतिक कहते हैं अर्थात जैसे बक नाम बकुला जल

समीप ध्यानावस्थित होके खड़ा रहता है और मत्स्य को
[illegible]ता भी रहता है जब मत्स्य उसके पेच में आता है तब उस
[illegible] उठा के खा लेता है तथा जितने धूर्त पाखण्डी होते हैं व
[illegible]रे का प्राण भी हरण कर लेते हैं तिसपर उनको कभी दया
[illegible]हीं आती ऐसेही जितने शैव शाक्त गाणपत्य वैष्णवादिक संप्र-
[illegible]ाय वाले हैं इनमें कोई लाखों में एक अच्छा होता है और
[illegible]ब वैसेही होते हैं इससे गृहस्थ लोग इनकी सेवा कभी न करें
[illegible]७ ॥ सर्वेषामेवदानानांब्रह्मदानंविशिष्यते। वार्यन्नगोमहीवा-
सस्तिलकाञ्चनसर्पिषाम् ॥ १८ ॥ वारि नाम जल अन्न गाय
मही अर्थात पृथिवी वास नाम वस्त्र तिल कांचन नाम सुवर्ण सर्पि
नाम घी ८ इन सब दानों से ब्रह्म अर्थात वेद विद्या का दान
सब से श्रेष्ठ दान है ऐसा अन्य कोई दान नहीं है इससे
सब गृहस्थों को अर्थ सहित वेद पढ़ने और पढ़ाने में शरीर
मन और धन से अत्यन्त पुरुषार्थ करना उचित है ॥ १८ ॥
धर्मंशनैःसञ्चिनुयाद्वल्मीकमिवपुत्तिकाः। परलोकसहायार्थं सर्व-
भूतान्यपीडयन् ॥ १९ ॥ सब भूतों को पीड़ा के बिना धीरे धीरे
धर्म का संचय मनुष्यों को करना उचित है जैसे कि चींटी
धीरे २ मिट्टी को बाहर निकाल के संचय कर देती है तथा
धान्य कणों का भी धीरे २ बहुत संचय कर देती हैं वैसेही
मनुष्यों को धर्म का संचय करना उचित है क्योंकि धर्मही के
सहाय से मनुष्यों को सुख होता है और किसी के सहाय से
नहीं ॥ १९ ॥ नामुत्रहिसहायार्थंपितामाताचतिष्ठतः। नपुत्र
दारंनज्ञातिर्धर्मस्तिष्ठतिकेवलः ॥ २० ॥ परलोक में सहाय के
करने को पिता माता पुत्र तथा स्त्री ज्ञाति नाम कुटुम्बी लोग
कोई समर्थ नहीं है केवल एक धर्मही सहायकारी है और
कोई नहीं ॥ २० ॥ एकःप्रजायतेजन्तुरेकएवप्रलीयते। एकोऽनु-
भुंक्ते सुकृतमेकएवचदुष्कृतम् ॥ २१ ॥ देखना चाहिये कि जब

जन्म होता है तब एकही का होता है और मरण होता है तो भी एकही का होता है तथा सुख का भोग करता है तो एकही करता है अथवा दुःख का भोग करता है तो एकही करता है इसमें संग किसी का नहीं इससे सब मनुष्यों को यह उचित है कि अपना पालन वा माता पितादिकों का पालन धर्मही से जितना धनादिक मिले उतनेही से व्यवहार और पालन करें अधर्म से कभी नहीं क्योंकि॥ एकःपापानिकुरुते-फलंभुङ्क्तेमहाजनः। भोक्तारोविप्रमुच्यन्ते कर्त्तादोषेणलिप्यते॥ यह महाभारत का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि जो अधर्म करेगा उसका फल वही भोगेगा और माता पितादिक सुख के भोग करने वाले तो हो जायंगे परंतु दुःख जो पाप का फल उसमें से भाग कोई न लेगा किन्तु जिसने किया वही पाप का फल भोगेगा और कोई नहीं॥ २१॥ मृतंशरीरमुत्सृज्य काष्ठलोष्ठसमंक्षितौ। विमुखाबान्धवायान्ति धर्मस्तमनुगच्छति॥ २२॥ देखना चाहिये कि जब कोई मर जाता है तब काष्ठ वा लोष्ठ जैसा कि मिट्टी के ढेले को पृथिवी में फेंक के चले जाते हैं वैसे मरे हुए शरीर को अग्नि वा पृथिवी में डाल के विमुख नाम पीठ करके कुटुम्बी लोग चले आते हैं कुछ सहायता नहीं करते॥ २२॥ तस्माद्धर्मंसहायार्थं नित्यंसंचिनुयाच्छनैः। धर्मेणहिसहायेन तमस्तरतिदुस्तरम्॥ २३॥ तिससे नित्यही सहाय के लिये धीरे २ धर्मही का संचय करें क्योंकि धर्मही के सहाय से दुस्तर जो तम अर्थात् जन्म मरणादिक दुःखसागर का जो संयोग उसका नाश और मुक्ति अर्थात् परमेश्वर की प्राप्ति और सर्व दुःख की निवृत्ति धर्मही से होती है अन्यथा नहीं॥ २३॥ धर्मप्रधानंपुरुषं तपसाहतकिल्बिषम्। परलोकन्नयत्याशुभास्वन्तंखशरीरिणम्॥ २४॥ जिस पुरुष को धर्मही प्रधान है अधर्म में लेशमात्र भी जिसकी प्रवृत्ति नहीं

तथा तप जो धर्म का अनुष्ठान है और पाप का त्याग इससे जिस का पाप नष्ट होगया है उसको वही धर्म परलोक अर्थात् स्वर्ग लोक अथवा परमानन्द परमेश्वर को प्राप्त कर देता है वह किस प्रकार का शरीरवाला होता है भास्वन्त अर्थात तेजोमय वा ज्ञान युक्त, और आकाशवत् अदृष्ट, अच्छेद्य काटने वा दाह करने में न आवे ऐसा उसका सिद्ध शरीर होता है जैसा कि योगियों का ॥ २४ ॥ दृढकारीमृदुर्दान्तः क्रूराचारैरसंवसन्। अहिंस्रोदमदानाभ्यां जयेत्स्वर्गंतथाव्रतः॥ २५॥ म० दृढकारी अर्थात् जो कुछ धर्म कार्य अथवा धर्म युक्त व्यवहार को करै सो दृढही निश्चय से करै और मृदु अर्थात अभिमानादिक दोष से रहित होय दान्त अर्थात जितेन्द्रिय होय और क्रूराचार अर्थात् जितने दुष्ट हैं उनका साथ कभी न करै किन्तु श्रेष्ठ पुरुषोंही का संग करै दम अर्थात जिसका मन वशीभूत होय दान अर्थात वेद विद्या का नित्य दान करना और अहिंस्र अर्थात किसी से वैर बुद्धि नहीं ऐसाही लक्षणवाला पुरुष स्वर्ग को प्राप्त होता है अन्य नहीं॥ २५॥ वाच्यर्थानियताःसर्वे वाङ्मूलावाग्विनिःसृताः। तांस्तुयःस्तेनयेद्वाचं ससर्वस्तेयकृन्नरः॥ २६॥ जिस पुरुष को प्रतिज्ञा मिथ्या होती है अथवा जो मिथ्या भाषण कर्त्ता है उसने सब चोरी करली क्योंकि वाणीही में सब अर्थ निश्चित रहते हैं केवल वचनहीं व्यवहारों का मूल है उस वाणी से जो मिथ्या बोलता है वह सब चोरी आदिक पापों को अवश्य कर्त्ता है इससे मिथ्या भाषण करना उचित नहीं॥ २६॥ आचाराल्लभतेह्यायुराचारादीप्सिताःप्रजाः। आचाराद्धनमक्षय्यमाचारोहन्त्यलक्षणम्॥ २७॥ जो सत्पुरुषों के श्रेष्ठ आचार के करने से आयु, श्रेष्ठ, प्रजा और अक्षय्यधन प्राप्त होते हैं और पुरुष में जितने दुष्ट लक्षण हैं वे सब सत्पुरुषों के आचरण

और संग करने से नष्ट होजाते हैं और श्रेष्ठ लक्षण भी उसमें आजाते हैं इससे श्रेष्ठही आचार को करना चाहिये २७ ॥ दुराचारोहिपुरुषोलोकेभवतिनिन्दितः । दुःखभागीचसततंव्याधितोऽल्पायुरेवच ॥ २८॥ दुष्ट आचार करनेवाला पुरुष लोक में निन्दित होता है निरन्तर दुःखीही रहता है अनेक काम क्रोधादिक हृदय के रोग और ज्वरादिक शरीर के रोगों से शीघ्र मर भी जाता है इससे दुष्टों का आचार कभी न करना चाहिये ॥ २८ ॥ यद्यत्परवशंकर्मतत्तद्यत्नेनवर्जयेत् । यद्यदात्मवशंतुस्यात्तत्तत्सेवेतयत्नतः ॥ २९ ॥ जो जो पराधीन कर्म होय उनको यत्न से छोड़ देवै और जो स्वाधीन होंय उनको यत्न से कर्त्ता जाय ॥ २९ ॥ सर्वंपरवशंदुःखंसर्वमात्मवशंसुखम् । एतद्विद्यात्समासेनलक्षणंसुखदुःखयोः ॥ ३० ॥ जो जो पराधीन कर्म हैं वे सब दुःख रूपही हैं और जो २ स्वाधीन कर्म हैं सो २ सब सुख रूप हैं सुख और दुःख का समास अर्थात संक्षेप से यही लक्षण है सो जान लेवैं ॥ ३० ॥ यमान्सेवेतसततंनियमान्केवलान्बुधः । यमान्पतत्यकुर्वाणोनियमान्केवलान्भजन् ॥ ३१ ॥ यमों का निरन्तर सेवन करना चाहिये वे यम पूर्व कह दिये हैं वहीं जान लेना और यमों को छोड़ के पांच जो नियम हैं उनका सेवन न करैं वे नियम ये हैं । शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानियमाः । यह योगशास्त्र का सूत्र है शौच नाम पवित्रता रात दिन नहाने धोने में लगा रहै सन्तोष अर्थात् केवल आलस्य से दरिद्र बना रहै तप नाम निरन्तर कृच्छ चांद्रायणादिकों में प्रवृत्त रहै स्वाध्याय अर्थात केवल पढ़ने और पढ़ानेही में प्रवृत्त रहै धर्मानुष्ठान अथवा विचार कभी न करै और ईश्वर प्रणिधान अर्थात् स्वार्थ के लिये ईश्वर की प्रसन्नता चाहै ये अर्थ व्यवहारों की रीति से पांच नियमों के किये गये और योगशास्त्र की रीति

से नियमों के इस प्रकार के अर्थ हैं मृत्तिका और जलादिकों से बाह्य शरीर की शुद्धि और शान्त्यादिकों के ग्रहण और ईर्ष्यादिकों के त्याग से चित्त की शुद्धता इसका नाम शौच है धर्मयुक्त पुरुषार्थ करने से जितने पदार्थ प्राप्त होंय उतनेही में संतुष्ट रहै और पुरुषार्थ का त्याग कभी न करै इसका नाम सन्तोष है क्षुधा, तृषा, शीत और उष्ण इत्यादिक द्वंद्वों को सहै और कृच्छ्र, चांद्रायणादिक व्रत भी करै इसका नाम तप है मोक्ष शास्त्र अर्थात उपनिषदों का अध्ययन करै ओंकार के अर्थ का विचार और जप करै उसका नाम स्वाध्याय है पाप कर्म कभी न करै यथावत् पुण्यकर्मों को करके सिवाय परमेश्वर को प्राप्ति के फल की इच्छा न करै इसका नाम ईश्वर प्रणिधान है इनको तो करता रहै परन्तु यमों को न करै उस को उत्तम सुख नहीं होता किन्तु यमों का करना उसके साथ, गौण नियमों का भी करनाहीं उचित है और केवल नियमों का करना उचित नहीं ऐसे यथावत् विवाह करके गृहस्थ लोग वर्तमान करैं यह जितनी विद्यावाली स्त्री और पुरुष द्विज अर्थात् ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य पूर्वोक्त नियम से करैं विवाह का विधान संक्षेप से लिख दिया और सब मनुष्यों के बीच में स्त्री और पुरुष जो मूर्ख होंय उनका यज्ञोपवीत भी हुआ होय तो उसको तोड़ के शूद्र कुल में करदे उनका परस्पर यथायोग्य विवाह भी होना चाहिये वे सब द्विजों की सेवा करैं और द्विज लोग उनको अन्न वस्त्रादिक उनके निर्वाह के लिये देवैं और यह बात भी अवश्य होना चाहिये कि देश देशान्तर से विवाह का होना उचित है क्योंकि पूर्व, उत्तर, दक्षिण और पश्चिम देशों में रहने वाले मनुष्यों में परस्पर विवाह के करने से प्रीति होगी और देश देशान्तरों के व्यवहार भी आने जावेंगे बलादिक गुण भी तुल्य होंगे और भोजन व्यवहार भी एकही होगा

इस से मनुष्यों को बड़ा सुख होगा जैसे कि पूर्व दक्षिण देश की कन्या और पश्चिम उत्तर देश के पुरुषों से विवाह जब होगा और पश्चिम उत्तर देश के मनुष्यों की कन्या और पूर्व तथा दक्षिण देश में रहने वाले पुरुषों से विवाह होगा तब बल बुद्धि पराक्रमादिक तुल्य गुण हो जायंगे पत्र द्वारा और आने जाने से परस्पर प्रीति बढ़ेगी और परस्पर गुण ग्रहण होगा और सब देशों के व्यवहार सब देशों के मनुष्यों को विदित होंगे परस्पर विरोध जो है सो नष्ट होजायगा इस से मनुष्यों को बड़ा आनन्द होगा पूर्वपक्ष जैसे स्त्री मर जाती है तब पुरुष का दूसरी बार विवाह होता है वैसे स्त्री का पति मरने से विधवाओं का विवाह होना चाहिये वा नहीं उत्तर विवाह तो न होना चाहिये क्योंकि बहुत बार विवाह की रीति जो संसार में होगी तो जब तक पुरुष के शरीर में बल होगा तब तक वह स्त्री उसके पास रहेगी जब वह निर्बल होगा तब उसको छोड़ के दूसरे पुरुष के पास जायगी जब दूसरा भी बल रहित होगा तब वह तीसरे के पास जायगी जब तीसरा भी बल रहित होगा तब चौथे के पास जायगी ऐसी स्त्री जब तक वृद्धा न होगी तब तक बहुत पुरुषों का नाश कर देगी जैसे कि एक वेश्या बहुत पुरुषों को नष्ट कर देती है वैसे सब स्त्री हो जायगी और विषदानादिक भी होने लगेंगे इस से द्विज कुल में दोबार विवाह का होना उचित नहीं स्त्रियों का और पुरुषों का भी बहुत विवाह होना उचित नहीं क्योंकि पुरुषों को भी वीर्य की रक्षा करनी उचित है जिस से शरीर में बल पराक्रमादिक भी मरण तक बने रहैं और एक पुरुष बहुत स्त्री के साथ विवाह करता है यह तो अत्यन्त दुष्ट व्यवहार है इस को कभी न करना चाहिये तथा कन्या और वर का पिता जो धन लेके विवाह करते हैं यह भी अत्यन्त दुष्ट व्यवहार है जैसे कि आः

काल कान्यकुब्जों में है बहुत गृहस्थ इस्से दरिद्र होजाते हैं धन के नाश होने से दरिद्र लोग बिवाह करने में बड़ा दुःख पाते हैं बहुत कन्या वृद्ध होजाती हैं और बिवाह के बिना वृद्ध होके मर भी जाती हैं इस्से इस दुष्ट व्यवहार को छोड़ना उचित है और बंगाले में कुलीन लोगों में बहुत स्त्रियों के साथ एक पुरुष बिवाह कर लेता है एक जो वह मर जाय तो एक के मरने से वे सब स्त्री बिधवा होजाती हैं यह भी अत्यन्त दुष्ट व्यवहार है इसको सज्जनों को छोड़नाही चाहिये और जो बिधवा होजाती हैं उनका कुछ आधार नहीं होने से भी बहुत अनर्थ होते हैं वे कन्या बाल्यावस्था वा युवावस्था में बिधवा होजाती हैं बहुत दुःखी होती और वे कुकर्म भी करती हैं बहुत गर्भहत्या और बालहत्या भी होती है इस्से बिधवाओं का पति के बिना रहना भी उचित नहीं क्योंकि इस्से बहुत अनर्थ होते हैं इस्से इस व्यवहार का रहना भी उचित नहीं फिर क्या करना चाहिये कि प्रथम तो जब पूर्ण युवावस्था होय तब बिवाह होना चाहिये जिस्से कि बिधवा भी बहुत न होंगी फिर जब कोई बिधवा होय तब छः पीढ़ी अथवा अपने गोत्र और अपनी जाति में देवर अथवा ज्येष्ठ जो संबंध से होय उस्से बिधवा का पाणिग्रहण होना चाहिये परन्तु स्त्री की इच्छा से जब जिस स्त्री का पति मर जाय और मरने का शोक भी निवृत्त होजाय अर्थात् त्रयोदश दिवस के अनन्तर जब कुटुम्ब के श्रेष्ठ मनुष्य बिधवा स्त्री के पास जाके उससे पूछें कि तेरी क्या इच्छा है जो वह बिधवा कहै कि मेरी इच्छा न सन्तान और न नियोग की है तब तो वह स्त्री चान्द्रायणादिक ब्रत तथा परमेश्वर का ध्यान और धर्म का अनुष्ठान करै ऐसेही मरण तक धर्म का आचरण करै दूसरे पुरुष का मन से भी चिन्तन न करै और जो बिधवा कहै कि मेरा पुत्र के बिना निर्वाह न

इस्से मनुष्यों को बड़ा सुख होगा जैसे कि पूर्व दक्षिण देश की कन्या और पश्चिम उत्तर देश के पुरुषों से विवाह जब होगा और पश्चिम उत्तर देश के मनुष्यों की कन्या और पूर्व तथा दक्षिण देश में रहने वाले पुरुषों से विवाह होगा तब बल बुद्धि पराक्रमादिक तुल्य गुण हो जांयगे पत्र द्वारा और आने जाने से परस्पर प्रीति बढ़ेगी और परस्पर गुण ग्रहण होगा और सब देशों के व्यवहार सब देशों के मनुष्यों को विदित होंगे परस्पर विरोध जो है सो नष्ट होजायगा इस्से मनुष्यों को बड़ा आनन्द होगा पूर्वपक्ष जैसे स्त्री मर जाती है तब पुरुष का दूसरी बार विवाह होता है वैसे स्त्री का पति मरने से विधवाओं का विवाह होना चाहिये वा नहीं उत्तर विवाह तो न होना चाहिये क्योंकि बहुत बार विवाह की रीति जो संसार में होगी तो जब तक पुरुष के शरीर में बल होगा तब तक वह स्त्री उसके पास रहेगी जब वह निर्बल होगा तब उसको छोड़ के दूसरे पुरुष के पास जायगी जब दूसरा भी बल रहित होगा तब वह तीसरे के पास जायगी जब तीसरा भी बल रहित होगा तब चौथे के पास जायगी ऐसी स्त्री जब तक हड्डा न होगी तब तक बहुत पुरुषों का नाश कर देगी जैसे कि एक वेश्या बहुत पुरुषों को नष्ट कर देती है वैसे सब स्त्री हो जांयगी और विषदानादिक भी होने लगेंगे इस्से द्विज कुल में दोबार विवाह का होना उचित नहीं स्त्रियों का और पुरुषों का भी बहुत विवाह होना उचित नहीं क्योंकि पुरुषों को भी वीर्य की रक्षा करनी उचित है जिस्से शरीर में बल पराक्रमादिक भी मरण तक बने रहैं और एक पुरुष बहुत स्त्री के साथ विवाह करता है यह तो अत्यन्त दुष्ट व्यवहार है इस को कभी न करना चाहिये तथा कन्या और वर का पिता जो धन लेके विवाह करते हैं यह भी अत्यन्त दुष्ट व्यवहार है जैसे कि आज

त कान्यकुब्जों में है बहुत गृहस्थ इससे दरिद्र होजाते हैं
के नाश होने से दरिद्र लोग विवाह करने में बड़ा दुःख
ते हैं बहुत कन्या वृद्ध होजाती हैं और विवाह के बिना वृद्ध
के मर भी जाती हैं इससे इस दुष्ट व्यवहार को छोड़ना
चित है और बंगाले में कुलीन लोगों में बहुत स्त्रियों के
ाथ एक पुरुष विवाह कर लेता है एक जो वह मर जाय
ो एक के मरने से वे सब स्त्री विधवा होजाती हैं यह भी
त्यन्त दुष्ट व्यवहार है इसको सज्जनों को छोड़नाही चाहिये
ौर जो विधवा होजाती हैं उनका कुछ आधार नहीं होने से
भी बहुत अनर्थ होते हैं वे कन्या बाल्यावस्था वा युवावस्था में
विधवा होजाती हैं बहुत दुःखी होती और वे कुकर्म भी करती
हैं बहुत गर्भहत्या और बालहत्या भी होती है इससे विधवाओं
का पति के बिना रहना भी उचित नहीं क्योंकि इससे बहुत
अनर्थ होते हैं इससे इस व्यवहार का रहना भी उचित नहीं
फिर क्या करना चाहिये कि प्रथम तो जब पूर्ण युवावस्था
होय तब विवाह होना चाहिये जिससे कि विधवा भी बहुत न
होंगी फिर जब कोई विधवा होय तब छः पीढ़ी अथवा अपने
गोत्र और अपनी जाति में देवर अथवा ज्येष्ठ जो संबंध से होय
उससे विधवा का पाणिग्रहण होना चाहिये परन्तु स्त्री की इच्छा
से जब जिस स्त्री का पति मर जाय और मरने का शोक भी
निवृत्त होजाय अर्थात् त्रयोदश दिवस के अनन्तर जब कुटुम्ब
के श्रेष्ठ मनुष्य विधवा स्त्री के पास जाके उससे पूछें कि तेरी
क्या इच्छा है जो वह विधवा कहे कि मेरी इच्छा न सन्तान
और न नियोग की है तब तो वह स्त्री चांद्रायणादिक व्रत तथा
परमेश्वर का ध्यान और धर्म का अनुष्ठान करै ऐसेही मरण
तक धर्म का आचरण करै दूसरे पुरुष का मन से भी चिन्तन
न करै और जो विधवा कहै कि मेरा पुत्र के बिना निर्वाह न

होगा तब सब पुरुषों के साम्हने देवर वा ज्येष्ठ का पाणिग्रहण करले उससे एक वा दो पुत्र उत्पादन करले अधिक नहीं इसमें ऋग्वेद के मन्त्र का प्रमाण है॥ कुहस्विद्दोषाकुहवस्तोरश्विना-कुहाभिपित्वङ्करतः कुहोषतुः कोवांशयुत्राविधवेवदेवरंमर्यन्नयो-षाकृणुतेसधस्थऽआ। इसका यह अभिप्राय है कि स्त्री और पुरुष ये दोनों के प्रति प्रश्न की नांई कहा है आप दोनों दोषा अर्थात रात्रि कुह नाम कौन स्थान में वास करते भये और किस स्थान में अश्वि नाम दिवस में वास किया था किस स्थान में इन दोनों ने अभिपित्वं अर्थात प्राप्ति इन पदार्थों की की थी इन दोनों का निवासस्थान किस देश में था और शयुत्रा नाम शयनस्थान इन दोनों का किस स्थान में है यह दृष्टान्त भया और इससे यह अभिप्राय भी आया कि स्त्री और पुरुष का वियोग कभी न होना चाहिये सब दिन स्थान और सब देशों में संगही संग रहैं अब यह दृष्टान्त है कि जैसे विधवा देवर के साथ रात्रि दिवस और प्राप्ति का करना एक देश में वास एक स्थान में शयन और संग २ रहती है और देवर को सधस्थ अर्थात स्थान में आकृणुते अर्थात स्वीकार करके रमण और सन्तानोत्पत्ति करती है वैसे उन दोनों से भी वेदमन्त्र से पूंछा गया और देवर शब्द का निरुक्त में भी अर्थ लिखा है कि॥ देवरःकस्माद्द्वितीयोवरउच्यते। देवर अर्थात विधवा को जो दूसरा वर पाणिग्रहण करके होता है उस पुरुष को देवर कहते हैं इस निरुक्त से वर का बड़ा भाई अथवा छोटा भाई वा और कोई भी विधवा का जो दूसरा वर होय उसी का नाम देवर आया इस मन्त्र से विधवा का नियोग अवश्य करना चाहिये यह अर्थ आया और मनुस्मृति में भी लिखा है॥ देवराद्वासपिण्डाद्वास्त्रियासम्यङ्नियुक्तया। प्रजेप्सिताधिगन्तव्या-सन्तानस्यपरिक्षये॥ १॥ देवर अथवा छः पीढ़ी देवर वा

ज्येष्ठ के स्थान में कोई पुरुष होय उस्से विधवा स्त्री का नियोग करना चाहिये और जिसका उस स्त्री के साथ नियोग भया वह उस स्त्री के साथ गमन करै परन्तु जिस स्त्री को सन्तान की इच्छा होय और सन्तान के अभाव में भी नियोग का होना उचित है ॥ १ ॥ विधवायांनियुक्तस्तुघृताक्तोवाग्यतोनिशि। एकमुत्पादयेत्पुत्रंनद्वितीयंकथंचन ॥ २ ॥ द्वितीयमेकेप्रजनंमन्यन्ते-स्त्रीषुतद्विदः। अनिर्वृत्तंनियोगार्थम्पश्यन्तोधर्मतस्तयोः ॥ ३ ॥ जो विधवा के साथ नियुक्त होय सो रात्रि के दोनों मध्य प्रहरों में घृत का शरीर में लेपन करके ऋतुमती विधवा को वीर्य प्रदान करै मौन करके अर्थात बहुत मोहित होके क्रीड़ाशक्त न होय किन्तु सन्तानोत्पत्ति मात्र प्रयोजन रक्खै ॥ २ ॥ कई एक आचार्य ऋषि लोग ऐसा कहते हैं कि दूसरा भी पुत्र विधवा को होना चाहिये क्योंकि एक पुत्र जो हो जाता है, उस्से नियोग का प्रयोजन सब सिद्ध नहीं होता ऐसेही धर्म से विचार करके कहते हैं कि दो पुत्र का होना उचित है ॥ ३ ॥ विधवायांनियोगार्थेनिर्वृत्तेतुयथाविधि। गुरुवच्चस्नुषावच्चवर्तेया-तांपरस्परम् ॥ ४ ॥ विधवा में नियोग का जो प्रयोजन कि दो पुत्र का होना सो विधि पूर्वक जब होगया उसके पीछे वह विधवा नियुक्त पुरुष को गुरुवत् मानै और वह पुरुष उस विधवा को पुत्र की स्त्री की नाईं मानै अर्थात फिर समागम कभी न करै और जैसे कि पहिले सब कुटुम्बियों के साम्हने पाणिग्रहण किया था और नियम भी किया था कि जब तक दो पुत्र न होवें तब तक नियोग रहै फिर वैसे फिर भी सब कुटुम्बियों के साम्हने दोनों कह देवें कि हम लोगों का नियम पूर्ण होगया अब हम लोग वैसा काम न करेंगे ॥ ४ ॥ नियु-क्तौयौविधिंहित्वावर्त्तेयातांतुकामतः। तावुभौपतितौस्यातांस्नु-षागगुरुतल्पगौ ॥ ५ ॥ फिर जो वे दोनों विधि अर्थात उस

मर्यादा को छोड़ के कामातुर होके समागम करैं तो पतित होजांय क्योंकि ज्येष्ठ और कनिष्ठ इन दोनों को जैसे पुत्र वा गुरु की स्त्री से गमन करने का पाप होता है वैसाही पाप होता है अर्थात फिर कभी परस्पर कामक्रीड़ा न करैं ॥५॥ नान्यस्मिन्विधवानारीनियोक्तव्याद्विजातिभिः । अन्यस्मिन्हिनियुंजानाधर्मंहन्युःसनातनम् ॥ ६ ॥ उक्त प्रकार से भिन्न पुरुष के साथ विधवा का नियोग कभी न करैं अपने कुटुम्बही में करैं जिस्से स्त्री जहां की तहां बनी रहै और सन्तान से भी कुल की वृद्धि बनी रहै क्षय कभी न होय जो और किसी पुरुष के साथ नियोग करैंगे तो स्त्री हाथ से जायगी और सन्तान की हानि होने से कुल की भी हानि होगी फिर जो कुल की वृद्धि करना सो सनातन धर्म नष्ट होजायगा इस्से अपनेही कुटुंब में नियोग करना उचित है इस बात की सज्जन लोग शीघ्रही प्रवृत्ति करैं क्योंकि इसके बिना विधवा लोगों को अत्यन्त दुःख होता है और बड़ा पाप होता है संसार में इस बात के करने से यह दुःख और पाप कभी न होंगे ॥५॥ ज्येष्ठोयवीयसोभार्य्यांयवीयान्वाग्रजस्त्रियम् । पतितौभवतोगत्वा नियुक्तावप्यनापदि ॥ ६ ॥ ज्येष्ठ कनिष्ठ की तथा कनिष्ठ ज्येष्ठ की स्त्री से नियुक्त भी होवें तो भी आपत्काल के बिना अर्थात दो पुत्र होने के पीछे जो गमन करैं तो पतित होजांय इस्से आपत्कालही में नियोग का विधान है ॥ ६ ॥ यस्याम्रियेतकन्याया वाचासत्येकृतेपतिः । तामनेनविधानेननिजोविंदेतदेवरः ॥७॥ जिस कन्या का पाणिग्रहण मात्र तो होजाय और पति का समागम न होय तो उस स्त्री का देवर के साथ विवाह होना उचित है ॥ ७ ॥ परंतु इस प्रकार से दोनों विधान करैं ॥ यथाविध्यधिगम्यैनांशुक्लवस्त्रांशुचिव्रताम् । मिथोभजेताप्रसवात्सकृत्सकृदृतावृतौ ॥ ८ ॥ यथाविधि विधवा से देवर विवाह करके

परस्परऋतु२मेंएक२वारसमागमकरैं परंतुवहस्त्रीशुक्लवस्त्रधारण करैपरंतुजिसकाश्रेष्ठआचारहोयउसीकातोऔरदुष्टाचारवालेका नहीं ८ साचेदक्षतयोनिःस्याद्गतप्रत्यागतापिवापौनर्भवेनभर्त्रासा पुनःसंस्कारमर्हति॥ ९। जोस्त्रीअक्षतयोनिअर्थातविवाहतथाजाने आनेमात्रव्यवहारतोहुआहो परंतुपुरुषसेसमागमनभयाहोय तो पौनर्भवपुरुषअर्थात विधवाकेनियोगसे जोउत्पन्नभयाहोय उसके साथउसविधवाकाविवाहहोहोनाउचितहै ॥ ९ ॥ यहविधवानि-योगकाप्रकरणपूराहोगया जोविधवानहींहै औरकिसीप्रकारका आपत्कालहै उनकेलियेऐसाविधानहै किजिसकापतिपरदेशचला जाय औरसमयकेऊपरनआवै उसस्त्रीकेलियेइसप्रकारकाविधान शास्त्रमेंहैऔरपुरुषकेलियेभीहै। प्रोषितोधर्मकार्यार्थंप्रतीक्ष्योऽष्टौ-नरःसमाः। विद्यार्थंषट्यशोर्थंवाकामार्थंत्रींस्तुवत्सरान्॥ १० ॥ जो पुरुषस्त्रीकोछोड़केपरदेशकोजाय औरजोधर्महीकेलियेगयाहो तो आठवर्षपर्यन्तस्त्री पतिकीमार्गप्रतीक्षाकरै, औरजोउससमयवह नआवै तोस्त्रीपूर्वोक्तप्रकारसेनियोगकरकेपुत्रोत्पत्तिकरै, औरजो पतिबीचमेंआजाय तोनियोगछूटजाय जिस्सेविवाहकियागयाथा उसीकेपासस्त्रीरहैऔरकिसीउत्तमविद्यापढ़नेवाकीर्तिकेलियेगया होय तोछःवर्षतक परीक्षाकरै तथाकामवाधनकेलियेगयाहोय किमैंधनलाकेखूबविषयभोगकरूंगा उसकीतीनवर्षतकस्त्रीप्रतीक्षा करै फिरउक्तप्रकारसे नियोगकरके पुत्रोत्पत्तिकरलेवै ॥ १० ॥ संवत्सरंप्रतीक्षेतद्विषन्तीयोषितंपतिः । ऊर्द्ध्वं संवत्सरात्त्वेनांदायं-हृत्वानसंवसेत् ॥ ११ ॥ जोदुष्टताकरकेस्त्रीप्रतिकूलहोजाय अर्थात अपनेपितावाभाईकेपास रुष्टहोकेचलीजाय तोपतिएकवर्षपर्यन्त राहदेखै फिरदायअर्थातजोकुछस्त्रीकोगहनादिकदियाथाउसको लेकेउसकासङ्गनकरै अर्थातदूसराविवाहकरलेवै॥ ११ ॥ मद्यपा-साधुवृत्ताचप्रतिकूलाचयाभवत् । व्याधितावाधिवेत्तव्याहिंस्त्रार्थ-घ्नीचसर्वदा ॥ १२ ॥ जोस्त्रीमद्यपीतीहोय तथाविपरीतहोचलै कि

आज्ञाकोनमानै व्याधिनामरोगयुक्त होजाय वाविषादिकदेकेकोई मनुष्यकोमारडालै औरघरकेपदार्थोंकोसदानाशकर्तीहोय तो उसस्त्रीकोछोड़केदूसराविवाहकरलेवै ॥ १२ ॥ वन्ध्याष्टमेधिवेद्याऽब्दे दशमे तु मृतप्रजा। एकादशे स्त्रीजननी सद्यस्त्वप्रियवादिनी ॥१३॥ विवाहकेपीछे ८ आठवर्षतकगर्भ नरहै, औरवैद्यकशास्त्रकीरीतिसे परीक्षाभीकरले फिरअष्टमेवर्षदूसराविवाहकरले औरवन्ध्याका यथावत्पालनकरैपरंतुसमागमनकरै औरजिसकेसंतानहोकेमर जांय औएकभीनजीयेतो१०मेवर्षदूसराविवाहकरलेवै औरउसको अन्नवस्त्रादिकदेवै औरजिसस्त्रीसेकन्याहीबहुतहोवैं पुत्रएकभीनहो यतो ११ग्यारहवेंवर्षदूसराविवाहकरले औरउसस्त्रीकापालनकरै जोदुष्टस्त्रीहोय औरअप्रियवचनबोलै तोउसकोशीघ्रहीछोड़केदूसराविवाहकरलेवै १३ वैसापुरुषभीदुष्टहोजाय, तोस्त्रीभीउसको छोड़केधर्मसेनियोगकरकेपुत्रोत्पत्तिकरले औरएकयहभीव्यवहार है इसकोजाननाचाहिये किअपनेशरीरसेपुत्रनहोय अर्थातरोग सेवीर्यहीनहोगयाहोयअथवापीछेकिसीरोगसेनपुंसकहोगयाहोय तोअपनेस्वजातिकेपुरुषसेवीर्यलेकेपुत्रोत्पत्तिकरालेवै परन्तुधर्मसे व्यभिचारसेनहीं इसीप्रकारसे १२पुत्रमनुस्मृतिमेंलिखेहैं जिसकोदेखनेकीइच्छाहोयसोदेखलेवै नियोगमें औरक्षेत्रजादिकपुत्रोंकेहोनेमें महाभारतमें दृष्टान्तभीहै जैसेकिचित्रांगद औरविचित्रवीर्य दोनोंजबमरगए तबबड़ेभाईजोव्यासजीउनकेवीर्यसे तीनपुत्रउत्पन्नकरालिये एकधृतराष्ट्र,दूसरापाण्डु,तीसराविदुर येतीनपुत्र सबसंसारमेंप्रसिद्धहैं औरयुधिष्ठिर,भीम,अर्जुन,नकुल औरसहदेवयेपांचओरोंकेनियोगसेउत्पन्नभयेहैं यहबातसंसारमेंप्रसिद्धहै, इस्सेनियोगकाकरना औरक्षेत्रजादि पुत्रोंकाहोना शास्त्रकीरीति और युक्तिसेठीकहै इसमेंसबश्लोक मनुस्मृतिकेलिखेहैं पूर्वपक्ष औरस्मृतिकेश्लोकक्योंनहीलिखे उत्तरपक्ष अन्यस्मृतियोंका वेदोंसे विरोध औरवेदमें प्रमाणभीकिसीकानहीहै ऋषिमुनियोंकीकिई

भीकोई स्मृति नहीं सिवाय मनुस्मृति के ॥ यद्वै किञ्चनमनुरवदत्त
द्भेषजंभेषजतायाः । यह छांदोग्यउपनिषद्‌की श्रुति है इसका यह
अभिप्राय है कि जो कुछ मनुजी ने उपदेश किया है सो यथावत वेदोक्त
है और सत्य ही है जैसे कि रोग के नाश करने का औषध वैसा ही है यह
एक मनुस्मृति ही का वेद में प्रमाण मिलता है और किसी स्मृति का नहीं
और सब लोगों को भी यह बात सम्मत है ॥ वेदार्थोपनिबन्धृत्वात्प्रा-
धान्यं हि मनोस्मृतम् । मन्वर्थविपरीतायासास्मृतिर्नप्रशस्यते ॥
इस श्लोक के सब पंडित लोग कहते हैं कि मनुस्मृति के अनुकूल जो स्मृति
उसको मानना चाहिये और उससे विरुद्ध किसी स्मृति को नहीं सो एक
बात में तो पंडितों की और मेरी सम्मत हो गई परन्तु एक बात में विरो-
ध होता है कि मनु के अनुकूल स्मृतियों को वे मानते हैं और मैं नहीं
मानता क्योंकि मनुस्मृति के अनुकूल तो तब कोई स्मृति होगी जब मनु-
स्मृति के अर्थ ही को कहै फिर मनुजी ने तो वह अर्थ कह दिया है उसका
कहना दूसरी बार व्यर्थ है, क्योंकि पीसे भये पिसान का जो पीसना सो
व्यर्थ ही होता है और मनुस्मृति में जो उपदेश करना था सो सब कर
दिया है कुछ बाकी नहीं रक्खा इससे भी अन्य स्मृति का होना व्यर्थ ही है
इस बात को पंडित लोग विचार कर लेवैं तो बहुत अच्छी बात है और
महाभारत में भी जहां २ प्रमाण लिखा तहां २ मनुस्मृति ही का लिखा
और किसी स्मृति का नहीं इससे जाना जाता है कि मनुष्यों ने ऋ-
षियों के नाम प्रमाण के वास्ते लिख २ के अपने प्रयोजन के वास्ते
बना लिया है और जो यह बात कहते हैं कि कलौ पाराशरीस्मृतिः ।
सो तो अत्यन्त अयुक्त है क्योंकि द्वापर के अन्त में व्यास जी ने मनुस्मृति
का ही प्रमाण लिखा सो क्यों लिखा शङ्कराचार्य जी ने भी मनुस्मृति का
ही प्रमाण लिखा है और जो सत्य बात है उसका सब दिन प्रमाण होता
है इसमें कुछ शङ्का नहीं इससे जो पुरुष कहते हैं कि कलौ में पाराशरी
स्मृति का प्रमाण है सो मिथ्या बात है और पाराशरीस्मृति के आरंभ में
यह बात लिखी है कि ऋषि लोगों ने व्यास जी के पास जाके पूछा आप हम

सेवर्णाश्रमयथावत्कहैं तबउनसेव्यासजीनेकहाकिमैंयथावत्वर्णाश्रमधर्मोंकोनहींजानता इससे मेरेपिताजोपाराशरउनसेचलके पूछें वेसबधर्मोंकोयथावत्कहेंगे फिरउनकेपासजाकेसबलोगोंने प्रश्नकिया औरपाराशरजोउनसेकहनेलगे उसमेंहीपाराशरजीने कहाकि कलौपाराशराःस्मृताः इसमेंविचारनाचाहिये किव्यासजीवेदादिकसबशास्त्रजाननेवाले वर्णाश्रमधर्मकोक्यानहींजानतेथे किन्तुअवश्यहीजानतेथे औरपाराशरअपनेमुखसेकैसेकहेंगे कि कलौमेंपाराशरउक्तधर्मोंकोमाननायहअयुक्तहै औरउसीमेंऐसे२ अयुक्तश्लोकलिखेहैं किकोईबुद्धिमानउनकाप्रमाणभीनकरै जैसे कि। पतितोपिद्विजश्रेष्ठोनचशूद्रोजितेन्द्रियः। निर्दुग्धावापिगौःपूज्यानचदुग्धवतीखरी ॥ १ ॥ अश्वालम्भङ्गवालम्भंसन्यासंपललपैतृकम्। देवराच्चसुतोत्पत्तिं कलौपंचविवर्जयेत् ॥ नष्टे मृतेप्रव्रजिते क्लीवेचपतितेपतौ। पञ्चस्वापत्सुनारीणां पतिरन्योविधीयते ३ ॥ इनमेंदेखनाचाहिये किकुकर्मीजोहैसोईपतितहोताहै वहश्रेष्ठ कैसेहोगाकभीनहोगा औरजितेन्द्रियअर्थात्श्रेष्ठकर्मकरनेवाला पुरुषहै सोश्रेष्ठकैसेहोगा किन्तुकभीनहोगा औरगायतोपशु है, सोपशुकोक्यापूजाकरनाउचितहै कभीनहीं किन्तुउसकोतो यहीपूजाहै किघास,जलइत्यादिकसेउसकीरक्षाकरना सोभीदुग्धादिकप्रयोजनकेवास्तेअन्यथानहीं औरगधीकीभीपूजावैसीही होतीहै जिसकोप्रयोजनरहताहै वहप्रयोजनकेवास्ते करतीहीहै ॥ १ ॥ औरदूसराश्लोकअश्वालम्भनामअश्वमेध गवालम्भनामगोमेध औरसन्यासग्रहण औरमांसकापिण्डदान औरविवाहसेदेवरके नियोगसेपुत्रोत्पत्ति येपांचसबकालमेंकरनाचाहिये इनकात्याग कभीनहीं इनसेबड़ासंसारकाउपकारहै औरकुछपापनहीं इसके कहनसेअग्निहोत्रादिकोंकात्यागनहींआया अश्वमेधऔरगोमेधका जोकरनाउससे बड़ासंसारकाउपकारहै सोपहिलेकहदिया और संन्यासकात्यागकरैतोअर्थात्पाखण्डकरेगा जैसेकिवैरागीआदिक

उससे तोसंसारकीबड़ीहानिहोती इससे संन्यासकाहोनाअवश्यहै, औरमांसकेपिण्डदेनेमेंतोकुछपापनहीं क्योंकि यदन्ना:पुरुषालोकेतदन्ना:पितृदेवता ॥ १ ॥ यहमहाभारतकावचनहै । मधुपर्केतथायज्ञेपित्र्यदैवतकर्म्मणि । अत्रैवपशवोहिंस्यानान्यत्रेत्यब्रवीन्मनुः ।२ ॥ जोपदार्थआपखायउसीसेपञ्चमहायज्ञकरै अर्थात्पितृदेवपूजाभीउसीसेकरै अर्थात्श्राद्धऔरहोमउसीकाकरै मधुपर्क विवाहादिक औरगोमेधादिकयज्ञ औरदेवपितृकार्य इनमेंमांस कोजोखाताहोय तोउनकेवास्ते मांसकेपिण्डकरनेका विधान है इससे मांसकेपिण्ड देनेमेंभीकुछपापनहीं देवरवाज्ये एसे नियोग काविधिलिखदिया सोवहीजानलेना कलिमेंपांचोंकानकरनासो यहबातमिथ्याहीहै २ अर्थातपरदेशकोपतिचलागयाहोय तोस्त्री दूसरापतिकरले फिरजोपूर्वविवाहितपतिआजायतोदोनोंमेंबड़ा बखेड़ाहोगा क्योंकिएककहेगामेरीस्त्रीहै दूसराकहेगामेरीस्त्रीहै फिरक्यावेआधी २ स्त्रीकोकरलेंवापारीलगालें सोइसप्रकारकाकहनामिथ्याहीहै औरपांचप्रकारकेआपत्कालकेछूटहोआपतआवेगीतावहस्त्रीक्याकरैगीइससेयतीनोंश्लोकमिथ्याहीहैंवेनहींपाराशरीमेंमिथ्याअयुक्तबहुतश्लोककहेहैं औरजोकोईसत्यहैसामनुस्मृतिहीकाहै इससेपाराशरीकाप्रमाणकरना सज्जनोंको उचितनहीं औरजैसीपाराशरीवैसीयाज्ञवल्क्यादिकस्मृतियांहैं इससे मनुस्मृति कोछोड़केऔरकिसीकाप्रमाणकरनाउचितनहीं इसवास्तेजहां२ प्रमाणलिखावहां २ मनुस्मृतिहीकालिखागया जबजिसदिनस्त्री रजस्वलाहोय उसदिनसेलेके१६सोलहदिनतकऋतुकालहै उनमेंसेपहिलेकेचारदिनत्याज्यहैं और११ग्यारहवां,और१३तेरहवां दिनछोड़देना औरअमावस्याऔरपौर्णमासीभीत्याज्यहै अर्थात सोलहमेंसे८आठदिनबाकीरहे उनमेंसेभीछठवां,आठवां,दशवां और१२वांदिन वीर्यदानकरनेमेंअच्छेहैं क्योंकिइनदिनोंमेंस्त्रीके शरीरकोधातुस्वस्वभावसेतुल्यवर्तमानरहतीहैं और५वां,७वां

औरध्वां येतीनदिनमध्यमहैं क्योंकिउसदिनस्त्रीकेधातुओंकाअधिकबलहोताहै सोपहिले ४ चार दिनोंमें वीर्यदान करेगा तो प्राय:पुत्रहीहोगा अथवा कन्या होगी तो अच्छी होगी औरजो तीन दिनोंमें वीर्यदान करेगा तो प्राय: कन्या होगी औरनपुंसकभीहोजायतोआश्चर्यनहीं इस्से ४चारदिनअथवा७सातदिन वीर्य्यदानके उत्तमऔरमध्यमहैं, अन्यदिनमेंसमागमकरेगा तो चीणबलसंतानहोगा इस्से ११ग्यारहवांवा१३तेरहवांअमावस्या औरपौर्णमासीइनमें वीर्यदानकरेगातोवीर्यनष्टहोजायगा और जोसन्तानहोगासोभीनष्टहोगा रोगकेहोनेसे क्योंकिउनदिनोंमें स्त्रीकोधातुविषमहोजातीहैं एक २ मासमेंस्त्रीस्वभावसेरजस्वला होतीहै, सोउक्तप्रकारकेसोलहदिनकेपीछेस्त्रीकासमागमकभीन करै क्योंकिमिथ्यावीर्यनष्टहोगा औरगर्भकभीनरहेगा इस्से मिथ्यावीर्यकानाशकभीनकरनाचाहिये जिसदिनसेगर्भहोवैउसदिन सेलेके एकवर्षतकस्त्रीकात्यागकरनाअवश्यचाहिये क्योंकिगर्भका नाश औरपुरुषकाबलभीनष्टहोजाताहै इस्से एकवर्षतकत्यागअवश्यकरनाचाहिये जोपुरुषपरस्त्री अथवावेश्या गमनसे वीर्यनाश कर्तेहैं वेबड़ेमूर्खहैं क्योंकिउनकावीर्यमिथ्याहोजायगा औरबड़े रोगहोंगे|जोकभीगर्भरहेगातोभीउसकोकुछफलनहीं क्योंकिजिसकीस्त्रीहै उसीकासन्तानहोगा औरवीर्यदेनेवालेकानहीं और वेश्यासेजोपुत्रहोगा सोभडुवाहीहोगा औरजोकन्याहोगी तो वहवेश्याहीहोगी इस्सेवीर्यदेनेवालेकोकुछलाभनहीं सिवायहानिके औररोगभीउनकोबड़े २ होतेहैं जिस्सेकीबड़ादु:खपातेहैंक्योंकि जबपरस्त्री गमनकोइच्छाकर्ताहै अथवाजिसवक्तसमागमकर्ताहै, तबउसके हृदयमेंभय,शंका औरलज्जापूर्णहोतीहै किइसकर्मको कोईनजानैं जोकोईजानेगातोमेरीदुर्दशाहोजायगी एकतोयहअग्नि दूसरामैथुनकाअग्निऔरतीसराचिन्ताग्नि किरातदिनउसी चिन्तासेजलताजायगा येतीनोंअग्निसेउसकोधातुसबदग्धहोजा-

तौहैं इस्से महारोगीहोकेमरजाताहै औरयहबड़ापापभीहै इस्से
मनुष्यवास्त्रीअल्पायुहोजातेहैं औरजोवेश्यागमनकर्ताहै कुत्ताकी
नांईवहपुरुषहै क्योंकिजैसेकुत्तासबकाजूंठ औरछांटकियेअन्नको
खालेताहै उसकोघृणानहींहोती वैसेहीघृणाकेनहोनेसेसज्जनलोग
उसपुरुषकोकुत्तेकेनांईजानैं औरजोव्यभिचारिणीस्त्री औरवेश्या
उनकोभीकुत्तीकीनांईजानैं क्योंकिइनकोभीघृणानहींहोतीहै और
देखना चाहिये किमालीऔरखेतीकरनेवालेलोग अपनेबागमें
औरअपनेहीखेतमेंवृक्षवाअन्नबोतेहैं अन्यकेबागवाखेतमेंनहीं ये
मूर्खभीहैं तोभीपराएबागवाखेतमेंकभीकुछनहींबोतेऔरजोलौंडे
बाजीकरतेहैं वेतोसूवरवाकौवेकीनांईहैं क्योंकिजैसेसूवरवाकौवे
विष्टासेबड़ीप्रीतिरखतेहैं औरअरुचिकभीनहींकरतेवैसेवेभीपुरुष
विष्टाजिसमार्गसेनिकलतीहै उसमार्गमेंबड़ीप्रीतिरखतेहैं, इस्से
इसप्रकारकेजोमनुष्यहैंवेमूर्खमेंबढ़करहैं किवीर्यजोसबबीजोंसेउ-
त्तमबीजहै उसकोव्यर्थनष्टकरतेहैं औरकेवलपापहीकमातेहैं जो
युक्तिसेवीर्यकेरखनेमेंसुखहोताहै उतनासुखलाखवक्तस्त्रीकेसमा-
गमसेभीनहींहोताऔरजब४८वा४४वा४०वा३६वर्षतकब्रह्मचर्या-
श्रमसेवीर्यकोरक्षाकरैं फिरजबपूर्णबलशरीरमेंहोजायऔरस्त्रीभी
ब्रह्मचर्य्याश्रमकरकेपूर्णयुवतीहोजाय तबजोउनदोनोंकोएकबार
विषयभोगमेंसुखहोताहै सोबाल्यावस्थामेंबिवाहकरनेसेलाखवक्त
समागममेंभीसुखनहींहोता औरसंतानभीरोगयुक्तनष्टभ्रष्टहोते
हैं जोब्रह्मचर्याश्रमकरनेवालेकेसन्तानहोंगे तोबड़ेसामर्थ्यवान्
धनवान्शूरवीरविद्यावान्औरसुशीलहीहोंगे इस्से बारंबारलि-
खनेकायहीप्रयोजनहै किब्रह्मचर्याश्रमतथाविद्याकेबिनामनुष्यश-
रीरधारनाहीनष्टहै सदाधर्मयुक्तपुरुषार्थसेविद्या,धनतथाशरीर
औरनानाप्रकारकेशिल्प इनोंकोवृद्धिहीकरनीउचितहै औरस्त्री
लोगोंकेछ दूषणहैं उनकोस्त्रीलोगछोड़दें औरसबपुरुषछोड़ादेवें।
पानन्दुर्जनसंसर्गःपत्याचविरहोटनम्। स्वप्नोन्यगेहवासश्चनारी-

संदूषणानिषट् ॥ यहमनुकाश्लोकहै इसकायहअभिप्रायहै किपानं अर्थातमद्यऔरभंगादिकनशाकाकरना दुर्जनसंसर्गअर्थातदुष्टपु-रुषोंकासंगहोना पत्याविरहअर्थातपति औरस्त्रीका वियोगनाम स्त्री अन्यदेश में और पुरुषअन्यदेश में रहै अटन अर्थातपतिको छोड़केजहांतहांस्त्रीभ्रमणकरै जैसेकिनानाप्रकारकेमंदिरोंमेंतथा तीर्थोंमेंस्नानकेवास्ते औरबहुतपाखण्डियोंकेदर्शनकेवास्तेस्त्रीका भ्रमणकरना स्वप्नोन्यगेहवासश्च अर्थातअत्यन्तनिद्राअन्यकेघरमें स्त्रीकासोनाऔरअन्यकेघरमेंवासकरै पतिकेबिनाऔरअन्यपुरुषों केसंगकाहोना येछःअत्यन्तदूषणस्त्रियोंकेभ्रष्टहोनेकेवास्तेहैं किइन छःकर्मोंहीसेस्त्रीअवश्यभ्रष्टहोजायगी इसमेंकुछसंदेहनहीं और पुरुषोंकेवास्ते भीऐसेबहुतदूषणहैं ॥ मात्रास्वस्रादुहित्रावानविवि-क्तासनोभवत् । बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपिकर्षति ॥ १ ॥ माताऔरस्वसा अर्थातभगिनी दुहितानामकन्या इनकेसाथभी एकान्तमें निवासकभीनकरै औरअत्यन्तसंभाषणभीनकरै और नेत्रसेउनकास्वरूपऔरउनकीचेष्टानदेखै जोकुछउनसेकहनावा सुननाहोय सोनीचेदृष्टिकरकेकहैवासुनै इसमेंक्याआयाकिजितनी व्यभिचारणीस्त्रीवावेश्या औरजितनेवेश्यागामीवापरस्त्रीगामीपुरु-षहैं उनमेंप्रीतिवासंभाषणअथवाउनकासंगकभीनकरै इसप्रकार केदूषणोंसेहीपुरुषभ्रष्टहोजाताहै क्योंकियहजोइन्द्रियग्राम अर्थात मनऔरइन्द्रियांयेबड़े प्रबलहैं जोकोईविद्वानअथवाजितेन्द्रियवा योगीवेभीइसप्रकारकेसंगोंसेभ्रष्टहोजातेहैं तोसाधारणजोगृहस्थ वामूर्ख वहतोअवश्यभ्रष्टहीहोजायगा इसवास्ते स्त्री वा पुरुषसदा इनदुष्टसङ्गोंसेबचेरहैं औरजोस्त्रियोंकोअत्यन्तबन्धनमेंरखतेहैं यह भीबड़ाभ्रष्टकामहै क्योंकिस्त्रियोंकोबड़ादुःखहोताहै श्रेष्ठपुरुषों कातोदर्शनभीनहींहोता औरनीचपुरुषोंसेभ्रष्टहोजातीहैं देखना चाहिये किपरमेश्वरनेतो सबजीवोंकोस्वतन्त्ररचेहैं औरउनको मनुष्यलोग बिनाअपराधसेपरतन्त्र अर्थातबन्धनमेंरखदेतेहैं। वे

बड़ापापकर्ते हैं सोइसबातको सज्जनलोगकभीनकरैं यहबातमुसल्मानोंकेराज्यमेंप्रवृत्तभईहै आगेनथी कौन्ती,गान्धारीऔरद्रौपद्यादिक,स्त्रियांराजसभामें जहांकिराजालोगोंकी सभाहोती थी औरवार्तासंभाषणकरतीथीं अपनेपतिकोपंखा औरजलादिकोंसे सेवाभीकरतीथीं औरगार्गीमैत्रेयीइत्यादिक ऋषिलोगोंकीस्त्रियां भीसभामेंशास्त्रार्थकरतीथीं यहबातमहाभारत औरबृहदारण्यक उपनिषद्में लिखीहै इसकोअवश्यकरनाचाहिये, मुसल्मानलोगों काजबराज्यभयाथा तबजिसकिसीकी कन्या वा स्त्री कोपकड़लेते, औरभ्रष्टकरदेतेथे उसीदिनसेये सबआर्य्यावर्तदेशवासीलोगस्त्रियों कोघरमेंरखनेलगे औरस्त्रीलोगभीमुखकेऊपरवस्त्ररखनेलगीं सो इसबातकोछोड़देनाचाहियेक्योंकिइसव्यवहारमेंसिवायदुःखके सुखकुछनहीं जैसेदाक्षिणात्यलोगोंकीस्त्रियांवस्त्रधारणकर्तीहैं वैसा होपहिलेथा क्योंकिकभीवस्त्र अशुद्धनहीरहता सबदिनजैसेपुरुषों केवस्त्रशुद्धरहतेहैं वैसेस्त्रीलोगोंकेभीशुद्धरहतेहैं इससे इसप्रकारका वस्त्रधारणकरनाउचितहै, स्त्रीलोगोंकोपतिकीसेवा औरतीर्थ के स्थानमें सास,श्वसुर इनतीनोंकीसेवाजोहै सोई उत्तम कर्म है और अपने घरका कार्य और धनादिकोंकी रक्षा करना और सबकुटुंबमेंपरस्परप्रीतिकाहोना सबदिनविद्या औरनानाप्रकार केशिल्पोंकीउन्नतिस्त्रीलोगकरैंऔरपुरुषलोगभीघरमेंकलहनकरैं परस्परप्रसन्नहोकेरहना यहीगृहस्थलोगोंकाभाग्यऔरसुखकीउन्नतिहै यहगृहस्थलोगोंकोशिक्षासंक्षेपसेलिखदिया औरजोविस्तारसेदेखनाचाहै तोवेदादिकसत्यशास्त्रऔरमनुस्मृतिमेंदेखलेवै इसकेआगेवानप्रस्थ औरसन्यासियोंकेविषयमें लिखाजायगा॥

इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषा विरचिते चतुर्थः समुल्लासः संपूर्णः॥ ४॥

अथवानप्रस्थसन्यासविधिंवक्ष्यामः। ब्रह्मचर्याश्रमंसमाप्यगृही भवेत् गृहीभूत्वावनीभवेत् वनीभूत्वाप्रव्रजेत् यहवृहदारण्यकउपनिषदकीश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहैकिब्रह्मचर्याश्रम अर्थात्यथावत् विद्याओंकोपढ़के फिरगृहाश्रमीहोय फिरवानप्रस्थहोय औरवानप्रस्थहोकेसन्यासीहोय ऐसाक्रमहैकिइसमें जितनेश्लोक लिखेंगेवेसवमनुस्मृतिहीकेजानलेउसकेआगेम॰ऐसाचिन्हलिख देंगे। एवंगृहाश्रमेस्थित्वाविधिवत्स्नातकोद्विजः। वनेवसेत्तुनियतोयथावद्विजितेन्द्रियः॥ १ ॥ इसप्रकारसेविधिवत्गृहाश्रममेंरहकेस्नातकद्विज अर्थात्विद्यावाले ब्राह्मण,क्षत्रियऔरवैश्य,येतीनों वानप्रस्थहोवैं सोवनमेंजाकेवासकरै यथावत्निश्चयकरकेऔरजितेन्द्रियहोकेसोकिससमयवानप्रस्थहोयकि १॥गृहस्थस्तुयदापश्येत्वलीपलितमात्मनः। अपत्यस्यैवचापत्यं तदारण्यंसमाश्रयेत् २ म॰जवगृहस्थावलीअर्थातशरीरकाचर्मढीलाहोजाय पलितनाम केशश्वेतहोजांयऔरउसकापुत्रब्रह्मचर्यसेसवविद्याओंकोपढ़केविवाहकरलेवे फिरजवपुत्रकाभीपुत्रहोय तववहगृहस्थवनकोचला जाय॥२॥ संत्यज्यग्राम्यमाहारंसर्वंचैवपरिच्छदम् पुत्रेषुभार्यांनिक्षिप्यवनंगच्छेत्सहैववा॥ ३॥ म॰ग्रामोंकेजितनेपदार्थहैं उन सभोंकोछोड़देऔरअच्छेवस्त्रादिकभीछोड़दे अर्थातनिर्वाहमात्र लेजाय उसकोभीछोड़दे वनमेंजाकेअपनीस्त्रीको पुत्रकेपासरखदे अथवास्त्रीजोकहेकिसेवाकेवास्तेमैंचलूंगीतोसंगमेंलेकेवनकोदोनों जाय जोस्त्रीकहैकिमैं पुत्रोंकेपासरहूंगी तोउसकोछोड़के एकाकी जाय॥३॥अग्निहोत्रंसमादायगृह्यंचाग्निपरिच्छदम्। ग्रामादरण्यंनिःसृत्य निवसेन्नियतेन्द्रियः॥ ४ ॥ म॰ अग्निहोत्रकोसव सामग्रीअर्थातकुण्डऔरपात्रादिकोंकोलेकेग्रामसेनिकलकेजितेन्द्रियहोकेवनमेंवासकरै॥ ४॥ मुन्यन्नैर्विविधैर्मेध्यैःशाकमूलफलेनवा। एतानेवमहायज्ञान् निर्वयेद्विधिपूर्वकम्॥ ५॥ म॰मुन्यन्न नामुनियोंकेविविधजोअन्नसांवाकाचावलजोकिवनमेंविनाबोए

तेहैं वेमेध्यहोतेहैं अर्थात बुद्धिवृद्धि करनेवालेहैं उनसेशाकजो
पत्रऔरपुष्पमूलनामकन्द जोकिभूमिमेंसेनिकलतेहैं औरफल
नसेपूर्वोक्तपंचमहायज्ञोंकोविधिपूर्वकनित्यकरै॥ ५ ॥ वसीतचर्म-
चीरंवासायंस्नायात्प्रगेतथा । जटाश्चविभृयान्नित्यं श्मश्रुलोमन-
खानिच ॥ ६ ॥ भ० मृगचर्मअथवाचीरजोकिवृक्षोंकेछालसेहोता
है उसकोधारणकरै शरीरकीरक्षाकेवास्ते सायंकालऔरप्रातः
कालदोवेरस्नानकरै जटादाढ़ीमोंछलोमऔरनखइनकोनित्यधा-
रणकरै अर्थातगृहाश्रममेंइनकाधारणकरनाचाहिये सोईलिखा
है ॥ ६ ॥ केशान्तःषोडशेवर्षे ब्राह्मणस्यविधीयते । आद्विंशात्क्ष-
त्रबन्धोराचतुर्विंशतेर्विशः ॥ ७ ॥ भ०सोलहवर्षमेंब्राह्मण २२वर्ष
मेंक्षत्रिय२४वर्षमेंवैश्यऔरशूद्रभीदाढ़ीमोंछऔरनखकभीनरक्खैं
इस्सेयहांवानप्रस्थकेवास्तेधारणलिखा ॥ ७ ॥ यद्भक्षंस्यात्ततोदद्या-
त्बलिंभिक्षांचशक्तितः । अम्मूलफलभिक्षाभिरर्चयेदाश्रमागता-
न् ॥ ८ ॥ भ०जोआपभक्षणकरैउसीसेपंचमहायज्ञसामर्थ्यकेअनु-
कूलकरै जलमूलनामकन्दफल औरभिक्षाइनसेअपने आश्रममें
कोईअतिथिआवै उसकाभीसत्कारकरै ॥ ८ ॥ स्वाध्यायेनित्ययुक्तः-
स्याद्दान्तोमैत्रःसमाहितः । दातानित्यमनादातासर्वभूतानुकम्प-
कः ॥ ९ ॥ भ० स्वाध्याय अर्थातशास्त्रकेविचार अथवायोगाभ्यास
मेंनित्ययुक्तहोय औरदान्तनामउदारतासेसबइन्द्रियोंकोजीतेसब
सेमित्रतारक्खै समाहितनामशरीरऔरचित्तकासमाधानरक्खै
अपथ्यकर्मकाभीसमाधानरक्खै नित्यऔरोंकोदेवैआपकिसीसेन
लेवैऔरसबजीवोंकेऊपरकृपारक्खै पक्षिआदिकभीययावत्करै ।
९॥ नफालकृष्टमश्नीयादुत्सृष्टमपिकेनचित् । नग्रामजातान्यार्तो-
ऽपिमूलानिचफलानिच ॥ १० ॥ भ० फालकृष्टअर्थातहलकेजोतनेसे
क्षेत्रमेंजोकुछहोताहै उसकोकभीनग्रहणकरै औरखेतवाखलि-
हानमेंछूटाभयाजोअन्न उसकाभीग्रहणनकरै औरजोग्रामकेमूल
वाफलउनकोग्रहणकभीनकरै ॥१० ॥ अग्निपक्काशनोवाकालपक्क-

भुगेचवा। अश्मकुट्टोभवेद्वापिदन्तोलूखलिकोपिवा॥ ११॥ म० अग्निपक्काशनअर्थातअग्निमेंपकाकेखावै कालपक्कभुगअर्थातजोआप सेहत्तोंमेंफलपकजांय उनकोखावे अश्मकुट्टअर्थातपाषाणसेकूटर के फलादिकोंकोखाय दन्तोलूखलिकनाम दांततोमूमलकीनांई औरमुखउलूखलकीनांई वैसेहोहाथसे फलादिकलेके मुखऔर दांतोसेखालेवै ११॥ सद्यःप्रक्षालकोवास्यात्माससंचयिकोपिवा। षण्मासनिचयोवास्यात्समानिचयएववा॥ १२ ॥ म० एकतोयह दोचाहैकिजितनेसेअपनानिर्वाहहोयउतनाहीलेआवै दूसरेदिन केवास्ते नरक्खै दूसरीयहदिचाहैकिमासभरकेवास्ते फलादिकों कासंचयकरलेवै अथवाछ:मासपर्यन्तकासंचयकरलेवै यहतीसरी दोचाहै चौथीदोचाययहहैकिसालभरकासंचयकरले इत्यादिक बहुतवानप्रस्थकेवास्त व्रतलिखेहैं १२॥ ग्रीष्मेपंचतपास्तुस्याद्वर्षास्वभ्रावकाशिकः। आर्द्रवासास्तुहेमन्तेक्रमशोवर्द्धयंस्तपः॥१३॥ म० ग्रीष्मनामवैशाखज्येष्ठमेंजबसूर्यदशघंटाकेऊपरआवैतबचारोदिशाओंमेअग्निकरदे आपबीचमेंबैठे जबतकतीननबजैतबतकऔर वर्षाकालमेंमैदानमेंबैठे औरअपनेऊपरछायाकुछनरहै शीतकाल मेंगीलेवस्त्रधारणकरै इत्यादिकप्रकारोंसेअत्यन्तउग्रतपकरै क्योंकि विनातपअन्तःकरण शुद्धनहीहोता और इन्द्रियोंकाजय भीनहीं होता इससेअवश्यतपकरनाचाहिये॥१३॥ अग्नीनात्मनिवैतानान्समारोप्ययथाविधि। अनग्निरनिकेतःस्यान्मुनिर्मूलफलाशनः॥ २४॥ म० जपतपसेमनऔरइन्द्रियांसबवशीभूतहोजांय तबअग्नि आहवनीहगार्हपत्यदाक्षिणात्यसभ्यऔरआवसथ्य यहपांचप्रकार का अग्नि होता है औरवैतान अर्थात इष्टियों की सामग्री और अग्निहोत्र को सामग्री उनको वाह्यक्रिया को छोड़दे क्योंकिजितनीवाह्यक्रियाहैं वेमनकीशुद्धीकेलियेहैं, सोजबमनशुद्धहोजाय तबउनकेकरनेकाकुछप्रयोजननहीं किन्तुकेवलभीतरकीजोक्रिया अर्थातयोगाभ्यासऔरविचारइन्होंकोकरै॥ १४ ॥ अप्रयत्नःसुखा-

र्थेषुब्रह्मचारीधराशयः । शरणेष्वममश्चैववृक्षमूलनिकेतनः १५ ॥
स० शरीरवाइन्द्रियोंकेसुखकीकुछइच्छानकरै किन्तुउनकात्याग
हीकरै औरब्रह्मचारीरहै अर्थातअपनीस्त्रीसंगमेभीहोयतोभीउससे
संगकभीनकरै किन्तुस्त्रीतोबनमेंसेवाकेवास्ते होहै औरभूमिमेंश-
यनकरै शरणअर्थातजहां२रहै अथवाबैठैउसमेंममताकियहमेरा
होहै ऐसाअभिमान कभीनकरै किन्तुवहांसेकोईउठादे तो उठ
केचलाजाय दूसरीजगहजाकेबैठे क्रोधादिककुछभीनकरै, किन्तु
प्रसन्नहीरहै॥ १५ ॥ तापसेष्वेवविप्रेषु यात्रिकंभैक्षमाहरेत्। गृह-
मेधिषुचान्येषुद्विजेषुवनवासिषु॥ १६ ॥ बनमेंअन्यजितनेवानप्रस्थ
लोगहोवें उनसेअपनेनिर्वाहमात्र भिक्षाकरलेअधिकनहीं अथ-
वाब्राह्मणक्षत्रियऔरवैश्ययेतीनोंगृहाश्रमीवनमेंरहतेहोवें उनसे
अपनेनिर्वाहमात्रभिक्षाकरले ॥ १६ ॥ ग्रामादाहृत्यवाश्नीयादष्टौ
ग्रामान्वनेवसन्। प्रतिगृह्यपुटेनैवपाणिनाशकलेनवा॥ १७ ॥ स०
जबदृढजितेन्द्रियहोजाय तोभीवनमेंरहै परंतुकभी२ग्रामसेचला
आवैभिक्षाकरनेकेवास्ते अपनेदोहाथ वाएकहाथमें जोगृहस्थों
कोघरमेंअन्नभयाहोय उसकोप्रीतिसेजितनाकोईदेवैउतनालेलवै
परन्तुआठग्रासमात्रले फिरउसकोलेके बनमेंचलाजाय जहांकि
जलहोय वहांबैठकेआठग्रासखालेअधिकनहीं ॥ १७ ॥ एताश्चा-
न्याश्चसेवेतदीक्षाविप्रोवनेवसन्। विविधाश्चौपनिषदीरात्मसंसिद्ध-
येश्रुती॥ १८ ॥ स० ऋषिभिर्ब्राह्मणैश्चैवगृहस्थैरेवसेविताः। वि-
द्यातपोविवृद्ध्यर्थंशरीरस्यचशुद्धये ॥ १९ ॥ स० इनदीक्षाओंकोऔर
अन्यदीक्षाओंकोभीवनमेंरहनाभया वहवानप्रस्थसेवनकरै नाना
प्रकारकीजोउपनिषदोंकीश्रुति उनकोआत्मज्ञानअर्थातब्रह्मविद्या
केवास्तेनित्यविचारै ॥ १८ ॥ ऋषियोंनेअर्थातयथावत्वेदकेमन्त्रो
केअर्थजाननेवाले औरब्राह्मणोंनेअर्थातब्रह्मविद्याके जाननेवालों
ने औरगृहस्थोंनेअर्थातपूर्णविद्यावाले धर्मात्माओंने जिनश्रुति-
योंका सेवनकियाहोय उनकोनित्ययोगाभ्यास औरज्ञानदृष्टि से

विचारकरैं क्योंकिविद्या अर्थातब्रह्मविद्या औरतप अर्थात योग सिद्धिइनकीवृद्धिके औरशरीरको शुद्धिकेवास्ते अर्थात दशेन्द्रियां पांचप्राण मन,बुद्धि,चित्तऔरअहंकार इन १९ सतत्त्वोंके मिलनेसेलिंगशरीरकहाताहै इसकशुद्धिकेवास्ते ॥ १९ ॥ आसांमहर्षिचर्याणांत्यक्त्वान्यतमयातनुम्। वीतशोकभयोविप्रोब्रह्मलोकेमहीयते ॥२०॥ भ० इनमहर्षियोंकीक्रियाओंकेमध्यकिसीक्रियाको करकेशरीरछूटजाय तोभीवहविद्वानशोकभयादिकदुःखोंसे छूटके ब्रह्मलोकअर्थात परमेश्वरकोप्राप्ति अथवाउत्तमस्वर्गकीप्राप्तिउसे होतीहै।२० वनेषुचविहृत्यैवंतृतीयंभागमायुषः।चतुर्थमायुषोभागं त्यक्त्वासंगान्परिव्रजेत् ॥२१॥ भ० इसप्रकारसेवानप्रस्थाश्रमकोयथावत् आयुकेतीसरेभागकोसमाप्तिपर्यन्त बनोंमेंविहारकरकेजब आयुकाचतुर्थभाग अर्थात७०सत्तरवर्षकेऊपर आयुकेचतुर्थभाग मेंसबसंगोंका अर्थातस्त्रीयज्ञोपवीत शिखादिककोछोड़के परिव्राट् अर्थातसबदेशान्तरमेंभ्रमणकरैकिसीपदार्थमेंमोहवापक्षपातकभी नकरै वहस्त्री अपनेपुत्रोंकेपासचलीजाय अथवाबनमेंतपश्चर्याकरै ॥ २१ ॥ इसमेंकोईशंकाकरै कियज्ञोपवीतादिकचिन्होंकेछोड़नेसे क्याहोताहै अर्थातइनकोनछोड़नाचाहिये उत्तर अच्छायज्ञोपवीतादिकचिन्होंकेरखनेसेक्याहोताहै पूर्वपक्षयज्ञोपवीतादिकोंसे द्विजदेखपड़ताहै औरविद्याकेचिन्हसे विद्याकीपरीक्षाभीहोतीहै उत्तर किजबसंसारकेव्यवहार औरअग्निहोत्रादिक वाह्यक्रियां जिनमेंउपवीतिनिवीति औरप्राचीनावीति यज्ञोपवीतसेक्रियाकरनीहोतीहैं उनअग्निहोत्र वाह्यक्रियाओंकोतोछोड़दिया और कहींप्रतिष्ठाविद्यासेकरानीउसकोनहीं फिरयज्ञोपवीतादिकका रखनाउसकोव्यर्थहीहै इसमेंयहप्रमाणहै। प्राजापत्यांनिरूप्येष्टिं तस्यांसर्ववेदसंहुत्वाब्राह्मणःप्रव्रजेत्॥ यहयजुर्वेदकेब्राह्मणकीश्रुति है इसकायहअभिप्रायहै किप्राजापत्यइष्टिकोकरकेउसमें सर्ववेद स्ववेदसविहलाभे जोरयज्ञोपवीतादिक वाह्यचिन्हप्राप्तहुयेथे उन

र्मोंको छत्वानामत्यक्वा अर्थात छोड़के ब्राह्मणविद्याग्निहोत्र वैराग्य इत्यादिक गुणवाला परिव्रजेत् परितः सर्वतः व्रजेत् सब संसार के बन्धनोंसे मुक्त होके सन्यासी हो जाय। लोकैषणायाश्च वित्तैषणायाश्च पुत्रैषणायाश्चोत्थायाथ भिक्षाचर्यं चरन्ति। यह बृहदारण्यक उपनिषदकी श्रुति है इसका यह अभिप्राय है कि लोकैषणा अर्थात लोककोजन निन्दा करैवा स्तुति करै और अप्रतिष्ठा करै तो भी जिसके चित्तमें कुछ हर्ष और शोक होय और जितने लोकके विषयभोग हैं, स्त्री धन हस्त्यश्च चन्दनादिक इनसे उठके अर्थात इनको तुच्छ जानके जो सब हर्ष शोकके देनेवाले हैं वैसे यथावत समझके सत्यधर्म और मुक्ति अर्थात सब दुःखोंकी निवृत्ति और परमेश्वरकी प्राप्ति इनमें स्थिर होके आनन्दमें रहै और किसीका पक्षपात अथवा किसीसे भय कभी न करै वित्तैषणा अर्थात धनकी इच्छा और धनकी प्राप्तिमें प्रयत्न और लोभ कि मुझको धन अधिक होय और जितने धनाढ्य हैं उनसे धन प्राप्तिके वास्ते बहुत प्रीति करै द्रव्यको बड़ा पदार्थ जानके संचय करना और दरिद्रोंसे धनके नहीं होनेसे प्रीतिका न करना और धनाढ्यों को स्तुति न करना इन सब बातोंका जो छोड़ना उसका नाम वित्तैषणाका त्याग है पुत्रैषणा अर्थात अपने पुत्रोंमें मोहका करना वा जो सेवक लोग हैं उनसे मोह अर्थात प्रीति करना और उनके सुखमें हर्षका होना और उनके दुःखमें शोकका होना उसका पुत्रैषणा नाम है एषणा नाम इच्छाका तीन पदार्थोंमें होना इन तीनों एषणाओंसे जो बद्ध नहीं है वही सन्यासी होता है और पक्षपातरहित भी सन्यासी यथावत् होता है क्योंकि जितने ब्रह्मचारी, गृहस्थ और वानप्रस्थ हैं उनको बहुत व्यवहारोंके होनेसे बुद्धिमान होय तो भी भय, शंका और लज्जा कुछ किसी व्यवहारमें रहती ही है और जो सन्यासी होता है उसको किसी संसार सम्बन्धी व्यवहारका करना आवश्यक नहीं वा किसी मनुष्यसे शंका, लज्जा, भय और पक्षपात कभी न ही होता। आश्रमादाश्रमं गत्वा हुतहोमो जितेन्द्रियः। भिक्षाबलिपरिश्रान्तः प्रव्रजन्प्रेत्य व-

र्द्धते ॥ २२ ॥ म० आश्रमसेआश्रमकोजाकेअर्थातक्रमसेब्रह्मचर्या-
श्रमादिकतीनोंकोकरके यथावत् अग्निहोत्रादिक यज्ञोंकोकरके
जितेन्द्रियजबहोजाय भिक्षादेदेऔरबलीअर्थातबलीवैश्वदेवकरके
परिश्रान्तअत्यन्तश्रमयुक्तजबहोय तबसन्यासलेतोउसका सन्यास
यथावत्बढ़ताजायखंडितनहोय ॥ २२ ॥ ऋणानित्रीण्यपाकृत्यम-
नोमोक्षेनिवेशयेत्। अनपाकृत्यमोक्षन्तुसेवमानोव्रजत्यधः॥ २३ ॥
भ० तीनऋणअर्थातऋषिपितृऔरदेवऋण इनकोकरके मोक्षके
वास्तेसन्यासमेंचित्तप्रविष्टकरैऔरइनतीनोंकोनकरकेजोसन्यास
कोइच्छाकर्ताहै सोनीचेगिरपड़ताहै उसकोमोक्षनहीप्राप्तहोता
२३ ॥ वेकौनतीनऋणहैं अधीत्यविधिवद्वेदान्पुत्रानुत्पाद्यधर्मतः।
इष्ट्वाचशक्तितोयज्ञैर्मनोमोक्षेनिवेशयेत्॥ २४॥ भ० विधिवत्अर्था-
तउक्तप्रकारसे ब्रह्मचर्याश्रमकोकरके सबवेदोंकोपढ़ै अर्थसहित
औरअङ्गउपवेद औरछःशास्त्रसहितपढ़ै फिरपढ़केयथावत्पढ़ावै,
क्योंकिविद्याकालोपइसप्रकारसेकभीनहोगा यहप्रथमऋषिऋण
है इसमें जपऔरसंध्योपासनभीजानलेना सबमनुष्योंकेऊपरयह
परमेश्वरकीआज्ञाहै किब्रह्मचर्याश्रमसेविद्याओंकोपढ़नाऔरप-
ढ़ाना इसकेबिनासबआश्रमनष्टहैं जैसेकिमूलकेबिना वृक्षनष्टहो
जाताहै उक्तप्रकारसेपुत्रोंकोशिक्षा धर्मकीविद्यापढने औरपढाने
कोकरै अपनीकन्याअथवाअपनापुत्र विद्याकेबिनाकभीनरहै सब
श्रेष्ठगुणवालेहोवेंऐसाकर्ममातापिताकोकरनाउचितहै औरजो
अपनेसन्तानोंकोश्रेष्ठगुणवालेनकरेंगे तोउनमातापिताओंनेबा-
लककोजैसामारडाला फिरमारनातोअच्छा परन्तुमूर्खरखना
अच्छानहीं इसीमेंउक्तप्रकारसेतर्पण औरश्राद्धभीजानलेना यह
दूसरापितृऋणहै फिरगृहाश्रममेंयथावत्अग्निहोत्रादिकोंकाअ-
नुष्ठानकरै जिस्सेकिसबसंसारकाउपकारहोय इस्से उसकाभीबड़ा
उपकारहै अर्थातपुण्यसेसुखपाताहै सोइनतीनऋणोंकोउतारके
मोक्षअर्थातसन्यासकरनेमेंचित्तदेवें अन्यथानहीं ॥ २४ ॥ अनधी-

त्यद्विजोवेदाननुत्पाद्यतथासुतान्। अनिष्ट्वाचैवयज्ञैश्चमोक्षमिच्छन्‌-व्रजत्यधः॥ २५॥ भ० द्विजअर्थातब्राह्मणक्षत्रियऔरवैश्यवेदोंकोन पढ़के,यथावतधर्मोंसे पुत्रोंकाउत्पादनभीनकरैं अग्निहोत्रादिक यज्ञभीनकरैं फिरजोमोक्षअर्थात्सन्यासकोइच्छाकरै सन्यासतो उसकानहोगाकिन्तुसंसारहीमेंगिरपड़ेगा॥ २५॥ एकबाततोस-न्यासकेक्रमकीहोगई दूसरीयहबातहैकि प्राजापत्यांनिरूप्येष्टिंस-र्ववेदसदक्षिणाम्। आत्मन्यग्नीन्समारोप्य ब्राह्मणःप्रव्रजेगृहात्॥ २६॥ भ० प्राजापत्यइष्टिकासबयथावतनिरूपणकरके उसमेंसर्व-वेदसअर्थातयज्ञोपवीतादिकजितनेचिन्हप्राप्तभयेथे उनकोदक्षिणा मेंदेकेऔरपूर्वोक्तपांचअग्नियोंकोआत्मामेंसमारोपणकरकेब्राह्म-णअर्थातविद्वानवानप्रस्थकोभीनकरै अर्थात्गृहाश्रमहीसेसन्यास लेलेवै॥ २६॥ योदत्वासर्वभूतेभ्यःप्रव्रजत्यभयंगृहात्। तस्यतेजोम-यालोकाभवन्तिब्रह्मवादिनः॥ २७॥ भ० जोसबभूतोंकोअभयदान अर्थात ब्रह्मविद्यादानदेके घरसेहीसन्यास लेताहै तिसको तेजो-मयलोकप्राप्तहोताहै अर्थातपरमेश्वरहीप्राप्तहोतेहैं फिरवभीज-न्ममरणमेंवहपुरुषनहीआता सदाआनन्दमेंहीपरमेश्वरको प्राप्त होकेरहताहै॥२७॥ आगारादभिनिष्क्रान्तःपवित्रोपचितोमुनिः। समुपोढेषुकामेषुनिरपेक्षःपरिव्रजेत्॥ २८॥ भ० आगारअर्थात ब्रह्मचर्याश्रमसेभीसन्यासलेले परन्तुअभिनिष्क्रान्तजबअन्तसुखमन होजाय किविषयसेवाकी इच्छाथोड़ीभीनहोय औरपवित्रगुणोंसे अर्थात शमदमादिकोंसे उपचित नाम जबयुक्त होय और मुनि अर्थात मनन शील सत्य२ विचार वाला होय और सब कामों कोजीतले कोईकामउसकेमनको अबमेंनलगासके स्थिरचित्त होय निरपेक्षकिसीसंसारकेपदार्थकी सिवायपरमेश्वरकीप्राप्तिके अपेक्षानहो यतबब्रह्मचर्याश्रमसेभीसन्यासलेवैतोभीकुछदोषनहीं २८॥ इसमेंश्रुतियोंकाभीप्रमाणहै यदहरेवविरजेत्तदहरेवप्रा-व्रजेद्वनाद्वागृहाद्वा १ ब्रह्मचर्यादेवप्रव्रजेत् २॥ यहयजुर्वेदकेब्राह्मण

कोश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहै किजिसदिनपूर्णवैराग्यहोय उसी दिन सन्यासीहोजाय वानप्रस्थाश्रम अथवा गृहाश्रमसे औरजब पूर्णविद्याऔरपूर्णवैराग्यऔरपूर्णज्ञान, औरबिषयभोगकोइच्छा कुछभीनहोय तोब्रह्मचर्याश्रमसेहीसन्यासलेलेवैतोभीकुछदोषन- नीं पूर्वपक्षयहबातपरमेश्वरकीआज्ञासेविरुद्धहै क्योंकिपरमेश्वर काअभिप्रायप्रजाकीवृद्धिकरनेमेंजानाजाताहै औरप्रजाकीहानिमें नहीं जोकोईसन्यासलेगा सोबिवाहनकरेगा इस्से संसारकीवृद्धि नहोगी इसवास्ते सन्यासकालेनाउचितनहीं जबतकजियेतबतक गृहाश्रममें रहकेसंसारकेव्यवहार औरशिल्पबिद्याओंकोउन्नति करै इस्से सन्यासकाकरना उचितनहीं किन्तु ब्रह्मचर्याश्रमसेवि- द्यापढ़केगृहाश्रमहीमेंरहनाउचितहै उत्तरपक्षऐसाकहनाउचि तनहींक्योंकिब्रह्मचर्याश्रमनहोगातोबिद्याकीउन्नतिनहोगी और गृहाश्रमनकरनेसे आगेमनुष्यकीउत्पत्ति संसारकाव्यवहारयेसब नष्टहोजांयगे औरबानप्रस्थके नहोनेसे मनभी शुद्धनहोगा और सन्यासकेनहोनेसे सत्यविद्या औरसत्योपदेशकी उन्नति नहोगी पाखंडऔरअधर्मका खण्डनभीनहोगा इस्से संसारकी उन्नतिका नाशहोगा क्योंकिज्ञानकीवृद्धिहोनेसे सबसुखोंकीवृद्धिहोतीहै अ- न्यथानहीं इसमेंदेखनाचाहिए किब्रह्मचारीकोपढ़नेसेरातदिनअ- वकाशहीनहीरहताऔरगृहस्थकोभीबहुतव्यवहारकेहोनेसेचित्त फसाहीरहताहै औरबानप्रस्थकातपहीमेंचित्तरहताहै औरकुछ बिचारभीकर्ताहै जोसन्यासीहोगा वह बिचारकेबिना अन्यव्यव- हारहोनरहेगा इस्से पृथ्वीसेलकेपरमेश्वरपर्यन्तपदार्थोंकायथा र्थबिचारकरकेऔरोंकोभीउपदेशकरेगा सबदेशोंमेंभ्रमणकरेगा इस्से सबदेशोंकेमनुष्योंकोउसकेसंग औरसत्यउपदेशके सुननेसेब- ड़ालाभहोगा जोगृहस्थहोगा उसकाजहां २घरहै वहां २ प्रायः रहेगाअन्यत्रभ्रमणनकरसकेगा इस्से सन्यासकाहोनाभीउचितहै परमेश्वरन्यायकारीहै औरविद्याकीउन्नतिभीचाहताहै जिसको

विषयभोगकीइच्छानहोगी उसकोपरमेश्वरकैसेआज्ञादेगें कितू विवाहकर जैसेकिकोईपुरुषको रोगकुछनहीं उससे वैद्यकहेकितू कुछऔषधखा वहऔषधक्योंखायगा औरजिसकोभोजनकरनेकी इच्छानहोय उसकोकोईवलसे कहेकितू अवश्यभोजनकर तोवह विनाक्षुधाकेभोजनकैसेकरेगाकिन्तु कभीनकरेगा ऐसेहोजिसको विषयभोग औरसंसारकेव्यवहारोंकीइच्छानहीं वहविवाह और संसारकेव्यवहारकैसेकरेगा कभीनकरेगा संसारकेजनोंसेकुछप्रयोजन न होने से सबके मुख पर सत्यही कहेगा अपने सामने जैसा राजा वैसोही प्रजा को समझेगा इसवास्ते जिस पुरुषको विद्या, ज्ञान, वैराग्य, पूर्णजितेन्द्रियता होय और विषय भोग कीइच्छानहोय उसीको सन्यासलेना उचितहै अन्यको नहीं जैसे किआजकालआर्यावर्त्तदेशमेंबहुत मतसंप्रदायीलोगहोगयेहैंवेकेवल धूर्त्तातासेपरायाधनहरणकरलेतेहैं औरपराईस्त्रीकोभ्रष्टकरदेते हैं औरमूर्खतातथापक्षपातकेहोनेसे मिथ्याउपदेशकरके मनुष्यों कोबुद्धिनष्टकरदेतेहैंऔरअधर्ममेंप्रवृत्तकरादेतेहैंइससेइनकातोबन्दहोनाउचितहै क्योंकिइनके होनेसेसंसारकाबहुतअनुपकार होताहै ॥ कपालंवृक्षमूलानिकुचैलमसहायता । समताचैवसर्वस्मिन्नेतन्मुक्तस्यलक्षणम् ॥ २८ ॥ भा० कपालअर्थातभिक्षापात्रवृक्षके जडमेंनिवास औरकुत्सितवस्त्र औरसबकेऊपरसमबुद्धि नकिसीसे प्रीति औरनकिसीसेवैर यहमुक्तपुरुष अर्थातसन्यासीका लक्षण है ॥ २८ ॥ नाभिनन्देतमरणंनाभिनन्देतजीवितम् । कालमेवप्रतीक्षेतनिदेशंभृतकोयथा ॥ ३० ॥ भा० जोसन्यासीहोय वहमरने औरजीनेमेंशोकवाहर्षनकरे किन्तु कालकोप्रतीक्षाकियाकरे जब मरणसमयआवेतबशरीरछोडदे शरीरसेमोहकुछनकरे जैसाकि छोटानौकरस्वामीकीआज्ञाजबहोतीहै तभीवहकामकरनेलगता है जहांकहेवहांचलाजाताहै औरसन्यासीकिसीपदार्थसे सिवाय परमेश्वरकेमोहवाप्रीतिनकरे ॥ ३० ॥ दृष्टिपूतंन्यसेत्पादंवस्त्रपूतंज-

लंपिबेत्। सत्यपूतांवदेद्वाचंमनःपूतंसमाचरेत्॥ ३१ ॥ म॰ इसका
अर्थतो पहिलेकरदियाहै परन्तु सन्यासधर्मकेप्रकरणमें लिखनेका
यहप्रयोजनहै किबहुतलोगकहतेहैं किसन्यासीकिसीकोउपदेशन
करै इनसेपूछनाचाहिएकि सत्यपूतांवदेद्वाचं सत्यअर्थातप्रमाण
औरविचारसे यथावत निश्चयकरके सत्यउपदेशकरै सबविद्यासे
जोपूर्ण विद्वान् सन्यासी सोतो उपदेश न करै और जितने पा-
खण्डी मूर्खलोग हैंवे उपदेश करैं तभीतो संसार का सत्यानाश
होताहै जितनेमूर्खपाखण्डी उनकातो ऐसाप्रबन्धकरनाचाहिए
कि वेउपदेशहीनकरनेपावैं औरजितने विद्वानसन्यासी लोगहैं वे
सदाउपदेशकियाकरैं अन्यकोईनहीं अन्यथामूर्खपाखण्डियोंकेउ-
पदेशसेदेशकानाशहोताहै जैसेकिआजकालआर्यावर्त्तदेशकीअ-
वस्थाभईहै ॥ ३१ ॥ क्रुध्यन्तंप्रतिनक्रुध्येदाक्रुष्टःकुलंवदेत् । स-
प्तद्वारावकीर्णाञ्चनवाचमनृतांवदेत्॥ ३२ ॥ म० जोकोईक्रोधकरै
उससे सन्यासीक्रोधनकरै औरकोईनिन्दाकरै उसकोभीकल्याणका
उपदेशहीकरै किञ्चसप्तद्वारमुखनासिकाकेदोछिद्रदोछिद्रआंखके
औरकानकेइनसातद्वारोंमेंजोवाणीबिखररहीहै उससेमिथ्याकभी
नकहै अर्थातसन्यासीसदासत्यहीबोलै ॥ ३२ ॥ क्लृप्तकेशनखश्मश्रुः
पात्रीदण्डीकुसुम्भवान् । विचरेन्नियतोनित्यं सर्वभूतान्यपीड़यन्
॥ ३३ ॥ म० केशसिरकेसबबालनखऔरश्मश्रु अर्थातदाढ़ीमोंछइ-
नकोकभीनरक्खै अर्थातछेदनकरादेवैपात्रीएकहीपात्ररक्खै और
एकही दंड रक्खै इससे तीनदण्डोंका धारना पाखण्डही है जै-
साकिचक्रांकितोंका कुसुंभारंगसरंगेवस्त्रपहिरैं औरगेरूवास्त-
तिकाकेरंगेनहीं अथवाश्वेतवस्त्रधारणकरैं निश्चयबुद्धिहोकेसबभू-
तोंसेरागद्वेषछोड़केअपनेब्रह्मानन्दमेंविचरै ॥ ३३ ॥ एककालंचरे-
द्भैक्षंनप्रसज्जेतविस्तरे। भैक्षे प्रसक्तोहियतिर्विषयेष्वपिसज्जति ॥
३४ ॥ एकवेरभिक्षाकरै अत्यन्तभिक्षामेंआसक्तनहोय क्योंकिजो
भोजनमेंआसक्तहोगा सोविषयमेंभीआसक्तहोगा ॥ ३४ ॥ विधूमे-

सन्नमुसले व्यङ्गारे भुक्तवज्जने । वृत्ते शरावसंपाते भिक्षांनित्यंय-
तिश्चरेत॥ ३५ ॥ भ० जबगांवमेंधूमनदेखपड़ै मूसलवाचक्कीकाश-
ब्दनसुनपड़ै किसोकेघरमेंअंगारनदेखपड़ै सबगृहस्थलोगभोजन
करचुकें औरभोजनकरके पत्तोंऔरसकोरेबाहरकोफेंकदेवें उस
समयसन्यासीगृहस्थलोगोंकेघरमें भिक्षाकेवास्ते नित्यजांय और
जोऐसाकहतेहैंकिहमपहिलेहीभिक्षाकरेंगे यहउनकापाखंडई
जानना क्योंकिगृहस्थलोगोंकोपीड़ाहोतीहै औरजोविरक्तहों
वैरागीआदिकअपनेहाथमेंलेकेकरतेहैं वेबड़ेपाखण्डीहैं ॥ ३५
अलाभेनविषादीस्याल्लाभेचैवनहर्षयेत् । प्राणयात्रिकमात्रःस्या
न्मात्रासंगाद्विनिर्गतः ॥ ३६ ॥ भ० जबभिक्षाकालाभनहोयतबवि-
षादनकरै औरलाभमेंहर्षनकरै प्राणरक्षणमात्र प्रयोजनरक्खै
भिक्षामेंप्रसक्तनहोय औरविषयोंकेसंगोंसेपृथकरहै ॥ ३६ ॥ अभि-
पूजितलाभांस्तुजुगुप्सेतैवसर्वशः । अभिपूजितलाभैश्चयतिर्मुक्तो-
पिवध्यते ॥ ३७ ॥ भ० अत्यन्तश्रेष्ठपदार्थ स्तुत्यादिकउनकी निंदा
हीकरै क्योंकिस्तुत्यादिक बन्धनहीं करनेवाले हैं मुक्तभीहै।यती
भी इससे बद्धहीहोजाताहै ॥ ३७ ॥ अल्पान्नाभ्यवहारेण रहःस्था-
नासनेनच । ह्रियमाणानिविषयैरिन्द्रियाणिनिवर्तयेत् ॥ ३८ ॥ इ-
न्द्रियाणांनिरोधेनरागद्वेषक्षयेणच । अहिंसयाचभूतानाम् मृत-
त्वायकल्पते ॥ ३९ ॥ भ० इन्द्रियोंकानिरोधरागद्वेषऔरअहिंसा
इनचारोंकाजोत्यागकर्ताहै सोईमोक्षकाअधिकारीहोताहै अन्य
कोईनहीं ॥ ३९ ॥ दूषितोपिचरेद्धर्मं यत्रतत्राश्रमेरतः । समस-
र्वेषुभूतेषुनलिंगंधर्मकारणम् ॥ ४० ॥ भ० जिसकिसीआश्रममेंदोष
युक्तपुरुषभीहोय परन्तुधर्महीकोकरै औरसबभूतोंमेंसमबुद्धि अ-
र्थातरागद्वेषरहितहोय सोईपुरुषश्रेष्ठहै जितनेबाह्यचिन्हहैं य-
ज्ञोपवीतदंड दोनोंकोधारणकरैऔरधर्मनकरैतो धारणमात्रही
सेकुछनहीहोसक्ता औरतिलक,छापा,मालायेतो सबपाखण्डोंही
केचिन्हहैं इनकोतोकभीनधारनाचाहिये ॥ ४० ॥ फलंकतकवृक्ष-

स्य यद्यप्यम्बुप्रसादकम्। न नामग्रहणादेव तस्य वारि प्रसीदति ॥४१॥ म० यद्यपि कतक नाम निर्मली वृक्ष का फल जल को शुद्ध करनेवाला है सो जब उसको पीस के जल में डालै तब तो जल शुद्ध होजाता है और जो पीस के न डालै कतकवृक्षस्य फलाय नमः ऐसा माला लेके जप किया करै वा उसका नाम जल के पास लिया करै, उससे जल कभी न शुद्ध होगा वैसे ही नाममात्र से कुछ नहीं होता जबतक धर्म नहीं करता ४१

प्राणायामा ब्राह्मणस्य त्रयोऽपि विधिवत्कृताः। व्याहृतिप्रणवैर्युक्ता विज्ञेयं परमं तपः ॥४२॥ म० ओम्भूः, ओम्भुवः, ओम्स्वः, ओम्महः, ओम्जनः, ओम्तपः, ओम्सत्यं इस मन्त्र का हृदय में उच्चारण करै पूर्वोक्त रीति से तीन बार भी प्राणों का निग्रह करै तो भी उस संन्यासी का परम तप जानना ॥४२॥ दह्यन्ते ध्मायमानानां धातूनां हि यथा मलाः। तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते दोषाः प्राणस्य निग्रहात् ॥४३॥ म० जैसे सुवर्णादिक धातुओं को अग्नि में तपाने से मैल नष्ट होजाता है वैसे ही प्राण के निग्रह से इन्द्रियों के मल भस्म होजाते हैं। ॥४४॥ प्राणायामैर्दहेद्दोषान् धारणाभिश्च किल्विषम्। प्रत्याहारेण संसर्गान् ध्यानेनानीश्वरान् गुणान् ॥४५॥ म० प्राणायामों से सब इन्द्रिय और शरीर के दोषों को भस्म करदे और धारणा योगशास्त्र की रीति से करै उससे विराग और द्वेष जो हृदय में पाप उसको छोड़ादे प्रत्याहार से इन्द्रियों का विषयों से निरोध करके सब दोषों को जीतले और ध्यान से अल्पज्ञादिक अनीश्वर के जितने गुण उनको छोड़ादे अर्थात सर्वज्ञादिक गुण सम्पादन करै ॥४५॥ उच्चावचेषु भूतेषु दुर्ज्ञेयामकृतात्मभिः। ध्यानयोगेन संपश्येद्गतिमस्यान्तरात्मनः ॥४६॥ म० स्थूल और सूक्ष्म जगत् में जो परमेश्वर व्याप्त है और अपने शरीर में जो अपना आत्मा और परमात्मा उनको जो गति नाम ज्ञान उसको समाधि से सम्यक् देखले जो दुष्ट लोगों को देखने में कभी नहीं आती ॥४६॥ सम्यग्दर्शनसम्पन्नः कर्मभिर्न निबध्यते। दर्शनेन विहीनस्तु संसारं प्रतिपद्यते ॥४७॥ म० जब संन्यासी सम्यक्ज्ञान से सम्पन्न होता है तब कर्मों से बद्ध

नहींहोता औरजोज्ञानसेहीनसन्यासीहै सोमोक्षकोतोनहींप्राप्त होता। किन्तु संसारहीमेंगिरपड़ताहै ॥ ४७ ॥ अहिंसयेन्द्रियासंगैर्वैदिकैश्चैवकर्मभिः। तपसश्चरणैश्चोग्रैःसाधयन्तीहतत्पदम् ४८॥ भ० वेरइन्द्रियोंसेविषयोंकाअसंगवैदिककर्मकाकरना अत्यन्तउग्र तपइन्होंसेमोक्षपदकोसिद्धलोगप्राप्तहोतेहैंअन्यथानहीं ॥४८॥ अस्थिस्थूणंस्नायुयुतं मांसशोणितलेपनम्। चर्मावनद्धंदुर्गन्धिपूर्णंमूत्रपुरीषयोः॥ ४९ ॥ भ० जराशोकसमाविष्टं रोगायतनमातुरम्। रजस्वलमनित्यंचभूतावासमिमंत्यजेत् ॥ ५०॥ भ० हाड़जिसकाखंभाहै नाड़ियोंसेबांधाभयामांस, औररुधिरका ऊपरलेपन चामसेढपाहुवादुर्गन्धमूत्रऔरविष्टासेपूर्ण ॥ ४९ ॥ जराऔरशोकसेयुक्तरोगकाघरक्षुधातृषादिकपीड़ाओंसे नित्यआतुरऔरनित्यहीरजस्वलअर्थातजैसीरजस्वलास्त्रीनित्यजिसकीस्थितिनहीं और सबभूतोंकानिवास ऐसाजोयहदेह इसकोसन्यासी योगाभ्याससे छोड़दे ॥ ५० ॥ नदीकूलंयथावृक्षो वृक्षंवाशकुनिर्यथा। तथात्यजन्निमंदेहं कृच्छ्राद्ग्राहाद्विमुच्यते ॥ ५१ ॥ भ० जैसेवृक्षजबनदीकेतटसेजलमेंगिरकेचलाजाय वैसेहीसमावियोगसेइसकोछोड़ै तबबड़ा भारी जन्म मरण रूप संसार के सब दुःख से छूटके मुक्त हो जाय ॥ ५१ ॥ प्रियेषुस्वेषुसुकृतमप्रियेषुचदुष्कृतम्। विसृज्यध्यानयोगेनब्रह्माभ्येतिपरंपदम् ॥ ५२ ॥ भ० जितनेअपनीसेवाकरनेवालेउनमेंध्यानयोगसेसबपुण्यकोछोड़दे औरदुःखदेनेवालेपुरुषोंमेंसबपापोंकोछोड़दे इससे पापपुण्यरहितजबशुद्धहोताहै तबसनातनपरमोत्कृष्टब्रह्मउसकोप्राप्तहोताहै फिरकभीदुःखसागरमेंनहीं आता ॥ ५२ ॥ यदाभावेनभवतिसर्वभावेषुनिस्पृहः। तदासुखमवाप्नोतिप्रेत्यचेहचशाश्वतम् ॥ ५३ ॥ भ० जबसबप्रकारसेसन्यासीकाअन्तःकरण औरआत्मशुद्धहोजाताहै, उसकायहलक्षणहै कि किसीपदार्थमेंमोहनहींहोता तबवहपुरुषजीताभयाऔरमृत्युहोकेनिरन्तरब्रह्म सुखउसकोप्राप्तहोताहै अन्यथानहीं ॥ ५३ ॥ अ-

नेनविधिनासर्वांस्त्यक्त्वासंगानशनैःशनैः। सर्वद्वन्द्वविनिर्मुक्तोब्रह्म-ण्येवावतिष्ठते॥ ५४॥ म० इसविधिसेजितनेदेहादिक अनित्यप-दार्थहैं इनकोधीरे २छोड़ औरहर्ष,शोक,सुख,दुःख,शीत,उष्ण रागद्वेष,जन्ममरणादिकसबद्वन्द्वोंसेछूटकेशोताभया अथवाशरीर छोड़केब्रह्महीमेंसदारहताहै फिरदुःखसागरमेंकभीनहींगिरता क्योंकि पूर्व सबदुःखों कोभोगसे अनुभव किया है फिरबड़े भाग्य औरअत्यन्तपरिश्रमसेपरमेश्वरकीप्राप्तिभई क्यावहमूर्खहै किपर-मानन्दकोछोड़केफिरदुःखमेंगिरैकभीनगिरेगा॥ ५४॥ ध्यानिकं सर्वमेवैतद्यदेतदभिशब्दितम्। नह्यनध्यात्मवित्कश्चित्क्रियाफलमु-पाश्नुते॥ ५५। म० सन्यासकायहीमार्गहै किनित्यध्यानावस्थित होके एकान्तमेंसबपदार्थोंकायथावतज्ञानकरना सोइसप्रकरण मेंसबध्याननाममात्रसेकहदिया परन्तुइसकायथावतविधानपा-तञ्जलदर्शनमेंलिखाहै वहांसबदेखलेवैं अन्यथासिद्धकभीनहोगा क्योंकिप्राणायामादिकअध्यात्मविद्याजोकोईनहींजानता उसको सन्यासग्रहणका कुछंफलनहींहोता उसकासन्यासग्रहणहीव्यर्थ है॥ ५५॥ अधियज्ञंब्रह्मजपेदधिदैविकमेवच। आध्यात्मिकञ्चस-ततंवेदान्ताभिहितंचयत्॥ ५६॥ म० अधियज्ञब्रह्मजोओंकारउ-सकाजपउसकाअर्थजोपरमेश्वरउसमेंनित्यचित्तलगावै औरअधि-दैविकइन्द्रियांऔरअन्तःकरणउसकेदिशादिकदेवतासोचादिकों केउनकाजोपरस्परसंबंधउसकोयोगसेसाक्षात्कारै औरअध्यात्मिक जीवात्मा औरपरमात्माका यथावतज्ञान औरप्राणादिकोंकानि-ग्रहइसकोयथावतकरै तबउसपुरुषकामोक्षहोसक्ताहै अन्यथान-हीं॥ ५६॥ एषधर्मोऽनुशिष्टो वोयतीनांनियतात्मनाम्। वेदस-न्यासिकानांतुकर्मयोगंनिबोधत॥ ५७॥ म० मुख्य सन्यासीनिय-तात्मानामजिनकाआत्मास्थिरशुद्धहोगयाहै उनकाधर्मऋषिलोग सेमनुजीकहतेहैं मैंनेकहदिया औरजोवेदसन्यासिकअर्थातगौण सन्यासीउसकाकर्मयोगमुझसेआपसुनलेवैं॥ ५७॥ ब्रह्मचारीगृ-

हस्थश्चवानप्रस्थोयतिस्तथा । एतेगृहस्थप्रभवाश्चत्वारःपृथगाश्रमाः ॥५८॥ भा० ब्रह्मचारीगृहस्थवानप्रस्थऔरसन्यासी येचारोंगृहस्थाश्रमसेउत्पन्नहोतेहैं, पृथक२क्योंकिगृहाश्रमनहोय तोमनुष्यकीउत्पत्तिहीनहोय फिरब्रह्मचर्यादिक आश्रमकभीनहोंगे इसेउत्पत्तितथासबआश्रमोंकाअन्नवस्त्रस्थान औरधनादिकदानोंसेगृहस्थलोगहीपालनकरतेहैं इनदोबातोंमेंगृहस्थहीमुख्यहैं विद्याग्रहणमेंब्रह्मचारीतपमेंवानप्रस्थविचारयोगऔरज्ञानमेंसन्यासीश्रेष्ठहैं ॥५८॥ सर्वेपिक्रमशस्त्वेतेयथाशास्त्रंनिषेविताः । यथोक्तकारिणंविप्रंनयन्तिपरमाङ्गतिम् ॥५९॥ भा० सबआश्रमोंयथावत् शास्त्रोक्तक्रमजोधर्माचरणउसमेंचलनेवालेपुरुषोंकाचेआश्रमोंकेजितनेव्यवहारश्रेष्ठहैं उनसेसबआश्रमीलोगमोक्षपासकतेहैं परन्तु बाहरदेखनेमात्रभेदरहेगा उनकाभीतरव्यवहारसन्यासवत एकहीहोगा ॥५९॥ चतुर्भिरपिचैवैतैर्नित्यमाश्रमिभिर्द्विजैः । दशलक्षणकोधर्मःसेवितव्यःप्रयत्नतः ॥६०॥ भा० ब्रह्मचारीआदिकसब आश्रमीलक्षणहैजिसधर्मकेउसधर्मकानित्यसेवनकरें वे लक्षणयेहैं ॥६०॥ धृतिःक्षमादमोऽस्तेयंशौचमिन्द्रियनिग्रहः । धीर्विद्यासत्यमक्रोधोदशकंधर्मलक्षणम् ॥६१॥ भा० धर्महैनामन्यायकाक्या यहैनामपक्षपातकाछोड़ना उसकापहिलालक्षणअहिंसाकिसीसे वैरनकरना दूसरालक्षणधृतिकिजधर्मसेचक्रवर्तीराज्यभीमिलता होय तोभीधर्मकोछोड़केचक्रवर्तीराज्यकाग्रहणनकरना तीसरा लक्षणक्षमाकोईस्तुतिवानिन्दाअथवावैरकरैतोभीसबकोसहलेपरन्तुधर्मकोनछोड़े तथासुखदुःखादिकभीसबसहले परन्तुअधर्म कभीनकरैदमनामचित्तसेअधर्मकरनेकोइच्छानकरै इसकानाम हैदमअस्तेयअर्थातचोरीकात्याग किसीकापदार्थआज्ञाकेविनाले लेनाइसकानामचोरीहै इसकाजोसदात्यागउसकानामहैअस्तेय शौचनामपवित्रतासदाशरीरवस्त्रस्थान अन्नपाच औरजलतथाघृतादिकशुद्धदेशमेंनिवासरागद्वेषादिककात्यागइसकानामशौचहै

इन्द्रियनिग्रहश्रोत्रादिकइन्द्रियवेअधर्ममेंकभीनजावें औरइन्द्रियों कोसदाधर्ममेंस्थिररक्खें तथापूर्वोक्तजितेन्द्रियताकाकरनाइसका नामइन्द्रियनिग्रहहै शास्त्रपठन,सत्पुरुषोंकासंगयोगाभ्याससुविचारएकान्तसेवनपरमेश्वरमेंविश्वास औरपरमेश्वरकोप्रार्थना स्तुतिऔरउपासनाशीलसंतोषकाधारणइनसेसदाबुद्धिवृद्धिकरनी इसकानामधीहै विद्यानामपृथिवीसेलेके परमेश्वरपर्यन्त पदार्थों काज्ञानहोना जोजैसापदार्थहैउसकोवैसाहीजाननाउसकानाम विद्याहै सत्यसदाभाषणकरनापूर्वोक्तनियमसे अक्रोधनाम क्रोध कामलोभमोहशोकभयादिकोंकात्यागउसकानामअक्रोधकात्यागहै इतनेसंक्षेपसेधर्मके ग्यारहलक्षणलिखदिये परन्तु वेदादिक सत्य शास्त्रोंमेंधर्म इत्यादिक सहस्रों लक्षणलिखेहैं जिसकोइच्छाहोय उनशास्त्रोंमेंदेखलेवैअबइसकेआगेअधर्मकेलक्षणलिखेजातेहैं अधर्मनामअन्यायका अन्यायनामपक्षपातकानछोड़ना इसकेभीएकादशलक्षणहैं पहिलालक्षणअहिंसा अर्थातवैरबुद्धिकाकरना ॥ ६२ ॥ परद्रव्येष्वभिध्यानंमनसानिष्टचिन्तनम्। वितथाभिनिवेशश्चत्रिविधंकर्ममानसम्॥ ६२ ॥ म० पारुष्यमनृतंचैवपैशुन्यमपिसर्वशः। असंबद्धप्रलापश्चवाङ्मयंस्याच्चतुर्विधम् ॥ ६३ ॥ म० अदत्तानामुपादानंहिंसाचैवाविधानतः। परदारोपसेवाचशारीरंत्रिविधंस्मृतम्॥ ६४ ॥ म० परद्रव्यहरणकरनेकीछलकपटऔरअन्यायसेइच्छायहदूसरालक्षणअधर्मकाहै औरतीसरालक्षणपरकाअनिष्टचिन्तनअन्यजीवोंकोदुःखदेनाअपनासुखचाहना चौथावितथाभिनिवेशअर्थातमिथ्यानिश्चयजोजैसापदार्थहैउसकोवैसानजानना किन्तुविपरीतहीजानना जैसेकिविद्याको अविद्याऔरअविद्याकोविद्याजानना सत्यअचौरश्रेष्ठसाधु इनकोअसत्यचौरअश्रेष्ठअसाधुजानना औरपाषाणादिकमूर्त्तिऔरउनकेपूजनेसेदेवबुद्धिऔरमुक्तिकाहोना इत्यादिकमिथ्यानिश्चयसेजानलेना येतीन मनसेअधर्मकेलक्षणउत्पन्न होतेहैं पारुष्यनाम कठोरवचनबो-

लना जैसेकिआगच्छकाणइत्यादिक इसकानामपारुष्यहै मिथ्या
भाषणनामअसत्यकाबोलनादेखनेसुननेऔरहृदयमेंबिरुद्धबोलना
उसकानामअसत्यभाषणहै पैशून्यनामचुगलीखानाजैसेकिकिसीने
धनदेनेकोकहावादिया उस्से राजाकेवाअन्यकेसमीपजाकेउसकी
कार्यकोहानिकरनी औरउनकेसामनेउसकीनिन्दाकरनीअर्थात
अन्यपुरुषकीप्रतिष्ठावासुखदेखकेहृदयसेबड़ादुःखितहोयफिरजहां
तहांचुगलीखाताफिरै इसकानामपैशून्यहै असंबद्धप्रलापनामपू-
र्वापरविरुद्धभाषणऔरप्रतिज्ञाकीहानि जैसेकिभागवतादिकऔर
कौमुद्यादिकग्रन्थोंमें पूर्वापरविरुद्धऔरमिथ्याभाषणहैं इसकाना-
मअसंबद्धप्रलापहै अदत्तानामुपादानं बिनाआज्ञासेपरपदार्थका
ग्रहणकरना अर्थातचोरीविधानकेबिना हिंसानामपशुओंकाह-
ननकरना अपनीइन्द्रियोंकीपुष्टकेवास्ते मांसकाखाना औरपशु-
ओंकामारना यहराक्षसविधानहै औरयज्ञकेवास्ते जोपशुओंकी
हिंसाहैसोविधिपूर्वकहननहै औरजिनपशुओंसेसंसारकाउपका
रहोताहै उनपशुओंकोकभीनमारनाचाहिए क्योंकिइनकोमा-
रनेसे आगेपशुदूधऔर घीकी उत्पत्तिही मारीजातीहै औरइ-
न्होंसेसंसारका पालनहोताहै इस्सेपशुओंकी स्त्रियोंकोतो कभीन
मारनाचाहिए औरजोइनपशुओंकोमारनाहै इसकानामअवि-
धानसेहिंसाहै परदारोपसेवनपरस्त्रीगमन अर्थातवेश्यावा अन्य
किसीकीस्त्रीकेसाथगमनकरनाऔरअन्यपुरुषोंकेसाथस्त्रीलोगोंका
गमनकरनादोनोंकोतुल्यपापहै यएकादशअधर्मकेलक्षणकहदिये
इनसेअन्यभी वेदादिकशास्त्रोंमें अभिमानादिक सहस्रों अधर्मके
लक्षणलिखेहैं सोउनकेबिनापठनऔरअधर्मनजाननेसेकभीज्ञान
नहीहोगा धर्मऔरअधर्मसबमनुष्योंकेवास्तेएकहीहैं इनमेंभेद
नहीं जितनेभेदहैं वेसबभ्रमहीसेहैं क्योंकिसबका ईश्वरएकहीहै
इस्से उसकी आज्ञाभी सबकेवास्ते एकरसही निश्चित होनीचा-
हिए किन्तु जोसत्यबातवाअसत्यबातहै सोतोसर्वत्रएकहीहोतीहै

उसीको जितने बुद्धिमान लोगजानतेहैं वेकिसी जालवा बन्धनमें नहींगिरते किन्तु धर्महीकरते हैं औरअधर्मको छोड़देतेहैं यही बुद्धिमानोंकामार्गहै औरजितनेसंप्रदायजाल,पाखण्डहैं वेमूर्खों हीकेहैं चारोंआश्रमवाले पुरुषधर्महीकासेवनकरैं अधर्मकाकभी नहीं॥ दशलक्षणकंधर्ममनुतिष्ठन्समाहितः। वेदान्तंविधिवच्छ्रुत्वासन्यास्येदनृणोद्विजः॥ ६५॥ म० दशलक्षणऔरएकयोगशास्त्र कीरीतिसेएवंग्यारहलक्षणजिसधर्मकेलक्षणकहदिये उसधर्मका अनुष्ठानयथावत्करें समाहितचित्तहोकेवेदान्तशास्त्रकोविधिवत् सुनके अनृणजोद्विजनामब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य,येतीनविद्वानहोके यथाक्रमसेसन्यासग्रहणकरैं॥ ६५॥ सन्यस्यसर्वकर्माणि कर्मदोषानपानुदन्। नियतोवेदमभ्यस्यपुत्रैश्वर्यैसुखंवसेत्॥ ६६॥ म० बाह्यजितनेकर्मउनकात्यागकरै औरआभ्यन्तरयोगाभ्यासादिकजितनेकर्मउनकोयथावतकरै इससे सबकर्मदोषअर्थातअन्तःकरणकी मलिनताराग द्वेषइत्यादिकोंकोछोड़ादै निश्चिंतहोकेवेदकाअभ्यासदाकरै औरअपनेपुत्रोंसेअन्नवस्त्रशरीरनिर्वाहमात्रलेलेवै नगरकेसमीपएकान्तमेंजाकेवासकरै नित्यघरसेभोजन आच्छादन करै हानिवालाभमेंकुछदृष्टिनदे किसीकाजन्मवामरणहोय घरमें तोभीकुछउससेंमोहवाद्वेषनकरै अपनीमुक्तिकेसाधनमेंसदातत्पररहै॥ ६६॥ एवंसन्यस्यकर्माणि स्वकार्यपरमोस्पृहः। सन्यासेनापहत्यैनःप्राप्नोतिपरमाङ्गतिम्॥ ६७॥ म० इसप्रकारसेसबबाह्यकर्मोंकोछोड़दे स्वकार्यजोमुक्तिकाहोना अर्थातसबदुःखोंसेछूटकेपरमेश्वरकोप्राप्तहोना इसकार्यमेंतत्परहोय इससे भिन्नपदार्थ कोइच्छाकभीनकरै इसप्रकारकेसन्याससे सबपापोंकानाशकरदे औरपरमगतिजोमोक्षउसकोप्राप्तहोजाय पूर्वपक्षसन्यासीधातुओं कास्पर्शकरैवानहीं उत्तर अवश्यधातुओंकेस्पर्शकविना किसीकानिर्वाहनहींहोसक्ता क्योंकिभूआदिकधातुओंकास्पर्शभाषावासंस्कृत बोलनेमेंनिश्चितहोकरेगा औरवियादिक७सातधातुओंकाभीस्प-

शनिश्चितहोगा औरसुवर्णादिकजितनीधातुहैं उनकाभीस्पर्शहो-
गापूर्वपक्ष ॥ यतीनांकांचनंदद्यात्तांबूलंब्रह्मचारिणाम् । चौराणा-
मभयंदद्यात्सनरोनरकंव्रजेत् ॥ इसश्लोकसेयहआपकाकथनविरुद्ध
हुआ संन्यासीकोसुवर्णब्रह्मचारीकोतांबूल चौरोंकोअभयकादेने
वालापुरुषनरकमेंजाताहै ॥ उत्तरपक्ष ब्रह्मोवाच गृहीणांकाञ्चनं
दद्याद्वस्त्रंवैब्रह्मचारिणाम्। चौराणामासनन्दद्यात्सनरोनरकंव्रजे-
त् ॥ इससे आपकाकहनाविरुद्धहुवा जैसाकिमेरावचनउसश्लोकसे
यहकौनशास्त्रकाश्लोकहै अच्छावहकौनशास्त्रकाहै यहतोपद्धतिका
है अच्छातोयहहमारीपद्धतिकाहै औरब्रह्माकाकहाहै ऐसाश्लोक
ब्रह्माजीकभीनरचेंगे अच्छातोयहमैंनेरचाहै जैसाकिवहकिसीने
रचलियाहैयेदोनोंश्लोकअर्थविचारनेसेमिथ्याहीहैं क्योंकिसंन्यासी
कोकाञ्चननामसुवर्णकेदेनेसेइननेनरकलिखा इससेपूछनाचाहिए
किचांदीहीरादिकरत्नभूमिराज्यऔरस्थानदेनेसेतोनरककोनहीं
जायगाऔरब्रह्मचारीके विषयमेंभीजानलेना चौरकेविषयमेंजोइ
सनेलिखासोतोठीकहीहैऔरसबमिथ्याकथनहै अच्छातोश्लोकका
ऐसापाठहै॥ यदिहस्तेधनन्दद्यात्तांबूलंब्रह्मचारिणाम्। अन्यत्पूर्ववत्
यहभीमिथ्याश्लोकहै क्योंकियतीकेपात्र औरआगे वा वस्त्रसेबांधके
धनदेनेमेंतो पापनहोगा इससे ऐसीजोबातकहना सोमिथ्याहीहै
औरजोधनमेंदोषअथवागुणहै सोसर्वत्रतुल्यहीहै जैसाउपद्रवधन
केरखनेमेंगृहस्थोंकोहोताहै इससे संन्यासीकोधनकेरखनेमेंकुछअ-
धिकउपद्रवहोगा क्योंकिगृहस्थोंकेस्त्रीपुत्रऔरभृत्यादिकरक्षाकर-
नेवालेहैं उसकोकोईनहीं शरीरकेनिर्वाहमात्रधनरखले तबतो
विरक्तकोभीकुछदोषनहीं औरजोअधिकरक्खेगा सोतोमोक्षपद
कोअप्राप्तहोकेसंसारमेंगिरपड़ेगा जैसेकिवैरागी,गुसांईबहुतसम-
हन्तऔरमठधारीहोगयेहैंजैसेकिगृहस्थोंसेभीनीचहोजातेहैंऔर
सांईधनकोपाके अमीरहोजाताहै इससे क्याआयाकिपहिलेतोअ-
धिकारकेबिना संन्यासग्रहणहीनहींकरनाचाहिए जबतकविद्या

ज्ञान,वैराग्य,औरजितेन्द्रियता,पूर्णनहोजाय तबतकगृहाश्रमही
में रहनाउचितहै इससे धातुस्पर्श धनदेने औरलेनेमेंदोष करतेहैं
यहबातमिथ्याहीहै उनकोकोईदेऔरविरक्तलेवै अथवानलेवैअ-
पनीर इच्छाकेआधीनव्यवहारहै एकबातदेखनाचाहिएकिजोवि-
द्वानसोसबपदार्थोंकागुणऔरदोषजानताहै उसकोदेनेवालास्वर्ग
जायसोतोठीकबातहै परन्तु नरककोवहजाताहै यहबातअत्यन्त
नष्टहै वहविद्वानजोसन्यासीसत्कार औरउत्तमपदार्थोंकोप्राप्ति
मेंहर्षकभीनकरेगा अपत्कारऔरअनिष्टपदार्थोंकीप्राप्तिमेंशोक
नकरेगा सोदेनेलेनेवाले दोनोंधर्मात्मा औरविद्यावानहोंगे तब
तोउभयत्रसुखहोसक्ताहै औरजोदोनोंकुकर्मीहैं तोपापहीहैजैसे
किचक्रांकितादिक वैरागीऔरगोकुलिये,गुसांईऔरनानक,क-
बिरादिकोंकेसम्प्रदायीलोगहैं औरमूर्खब्रह्मचारी गृहस्थवानप्रस्थ
औरसन्यासीइनकोंदेनेमेंपापहीहोगा पुण्यकुछनहीं क्योंकिपुण्य
तोबिद्वान औरधर्मात्माओंकोदेनेमेंहै अन्यथानहीं चारवर्णऔर
चारआश्रम इनकोशिक्षा संक्षेपसेलिखदिया औरविस्तारसेजो
देखनाचाहै सोवेदादिकसत्यशास्त्रोंमेंदेखलेवै इससेआगेराजाऔर
प्रजा केविषयमें लिखाजायगा ॥

इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषा विरचिते पंचम-समुल्लासः संपूर्णः ॥ ५ ॥

अथराजाप्रजाधर्मान्व्याख्यास्यामः ॥ राजधर्मान्प्रवक्ष्यामिय-
थावृत्तोभवेन्नृपः। सम्भवश्चयथातस्य सिद्धिश्चपरमोयथा॥ १ ॥ म०
राजधर्मोंकोमनुभगवानकहतेहैं किमैंकहूंगा जिसप्रकारसेरा-
जाकोवर्तमानकरनाचाहिए जिनगुणोंसेराजाहोताहै औरजिन

कर्मोंकेकरनेसेपरमसिद्धिहोतीहै किराज्यकरैऔरसङ्गतिभीउस-
कीहोय इसकोयथावतप्रतिपादनआगे२कियाजायगा ॥ १ ॥ ब्राह्मं
प्राप्तेनसंस्कारंक्षत्रियेणयथाविधि । सर्वस्यास्ययथान्यायकर्त्तव्यं
परिरक्षणम् ॥ २ ॥ भ० जैसाब्राह्मणोंका संस्कारहोताहै वैसाही
सबसंस्कारयथाविधिजिसकाहोताहै अर्थातसबविद्याओंमेंपूर्णबल
बुद्धि,पराक्रम,तेज,जितेन्द्रियताऔरशूरवीरता जिसमनुष्यमेंइस
प्रकार केगुणहोवैं औरकोईमनुष्य उसदेशमें विद्यादिकगुणोंमें
उससे अधिकनहोय ऐसेपुरुषकोदेशकाराजाकरनाचाहिए तबवह
देशआनन्दितऔरअत्यन्तसुखीहोताहै अन्यथानहीं उसराजाका
मुख्ययहीधर्महैकिअपनीप्रजाकीयथावत्रक्षाकरै ॥ २ ॥ अराज-
केहिलोकेस्मिन्सर्वतोविद्रुतेभयात् । रक्षार्थमस्यसर्वस्य राजानम-
सृजत्प्रभुः ॥ ३ ॥ भ० जिसदेशमेंधर्मात्माराजाविद्वाननहींहोता उ-
सदेशमेंभयादिकदोष संसारमेंबहुतहोजातेहैं इसवास्ते राजाको
परमेश्वरनेउत्पन्नकियाहै कियहसबजगत्कीरक्षाकरै औरजगतमें
अधर्मनहोनेपावै ॥३॥ इन्द्रानिलयमार्काणामग्नेश्चवरुणस्यच चंद्र-
वित्तेशयोश्चैवमात्रा निर्हृत्यशाश्वतीः ॥ ४ ॥ भ० इन्द्रअनिलनाम
वायुअर्कनामसूर्य,अग्नि,वरुण,चन्द्र,वित्तेशअर्थातकुबेर इनआठ
राजाओंकीनीतिऔरगुणोंसे मनुष्यराजाहोनेकाअधिकारीहोता
है तैसेहीइन्द्रकागुण शूरवीरतादाताकाहोना इन्द्रजैसाप्रजाकी
रक्षा सबप्रकारसेकरताहै तैसेहीराजा,वायुकागुण,बल औरदूत
द्वारासबप्रजाकोवर्तमानकाजानना जैसाकिवायुसबकेहृदयमेंव्याप्त
होकेधारणकरताहै औरसबमर्मोंकोजानताहै यमकागुणपक्षपातको
छोड़ना सदान्यायहीकरना अन्यायकभीनहीं जैसाकिभरतराजा
नेअपनेपुत्रजोअन्यायकारी ८ नवउनकास्वहस्तसेशिरच्छेदनकर
दिया औरसगरनेअपनाएकजोपुत्रअसमंजा थोड़ेअपराधसेबनमें
निकालदिया यहबातमहाभारतमेंविस्तारसेलिखीहै किअपनेपुत्र-
काजबपक्षपातनकिया तोऔरका कैसेकरेंगे अर्कनामसूर्य जैसा

किसबपदार्थोंकोतुल्यप्रकाशकरताहैऔर अन्धकार का नाशकर देताहै ऐसेहीराजासबराज्यमें प्रजाकेऊपरतुल्यप्रकाशकरै और अधर्मकरनेवालेजितनेदुष्ट अन्धकाररूप उनकानाशकरदे और जैसेअग्निमेंप्राप्तभयापदार्थदग्धहोजाताहै वैसेहीधर्मनीतिसेविरु- करनेवालेपुरुषोंकोदग्धअर्थातयथावतदण्डदेवै जैसाकिअग्निसूखे वागीलेपदार्थोंकाभस्मकरदेताहै औरमित्रशत्रुजब२अधर्मकरैं तब२कभीदण्डकेबिनानछोड़ै वरुणकागुणऐसेपाशअर्थातबन्धनोंसे दुष्टोंकोबांधेकिफिरछूटनेनपावैं औरकभीछूटैंतोऐसादु:खपावैं कि उसदु:खकाविस्मरणकभीनहोय जिस्से अधर्ममें उनकाचित्तकभी नजाय चन्द्रकागुणजैसेकिचन्द्रमासबप्राणियोंकोतथास्थावरऔष- धियोंको शीतलप्रकाश औरपुष्टिसे आनन्दयुक्त करदेताहै और राजाअपनीप्रजाकेऊपरकृपादृष्टिरक्खै औरप्रजाकीपुष्टिकिकिसी प्रकारसेप्रजादुखितनहोवै सदाप्रसन्नहोरहै कुवेरकागुणजैसेकि कुवेरबड़ाधनाढ्यहै धनकीवृद्धि औरधनकीरक्षा यथावतकरताहै वैसेराजाभीधनकीरक्षासदाकरै जिस्सेकिराजाकेऊपरऋणवाद- रिद्र कभीन होवै अपने वा प्रजाकेऊपर जबआपत्कालआवै तब उसधनसे अपनीवाप्रजाकीरक्षाकरलेवैं इनआठगुणोंसेराजाहो- ताहै अन्यथानहीं ॥ ४ ॥ सोग्निर्भवतिवायुश्चसोऽर्क:सोम:सधर्म- राट्। सकुवेर:सवरुण:समहेन्द्र:प्रभावत: ॥ ५ ॥ म० प्रभावअर्थात गुणोंहीसे अग्नि,वायु,आदित्य,सोम,धर्मराज,कुवेर,वरुण और महेन्द्रनामइन्द्रराजाहोइनगुणोंसेजबयुक्तहोताहै तबवहीराजाये आठनामवालाहोताहै ॥ ५ ॥ कार्यंसोऽवेक्ष्यशक्तिञ्चदेशकालौच- तत्त्वत: । कुरुतेधर्मसिद्ध्यर्थंविश्वरूपंपुन:पुन: ॥ ६ ॥ म० सोराजा कार्यऔरशक्तिनामसामर्थ्य देशऔरकालतत्त्वअर्थातयथावतइन- कोविचारकेकरै किरकेवास्ते किधर्मसिद्धिकेवास्ते वारंवारविश्व- रूपधारणकरताहै ॥ ६ ॥ यस्यप्रसादेपद्माश्रीर्वि यस्यपराक्रमे मृत्युश्चवसितक्रोधे सर्वतेजोमयोहिस: ॥ ७ ॥ म० जिसकोकृपामें

हैं अपनेस्वधर्मअर्थातजो२जिसकाव्यवहारकरनेकाअधिकारउस्से भिन्नमार्गमेंकभीनहींचलते॥१०॥ तंदेशकालौशक्तिञ्चविद्यांचा- वेच्यतत्वतः। यथार्हतःसंप्रणयेन्नरेष्वन्यायवर्त्तिषु॥११ भ० उस दण्डकोअन्यायकरनेवालेजोमनुष्यहैं उनमेंयथावतस्थापनकरैं अ- र्थात्यथावतदण्डदेवै परन्तुदेशकालसामर्थ्य औरविद्याइनसेय- थावततत्त्वका विचारकरकेदण्डदे क्योंकिअदण्ड्यपुरुष अर्थातध- र्मात्माको कभीनदण्डदियाजाय औरअधर्मात्मा पुरुषदण्डकेबि- नात्यागकभीनकियाजाय॥११॥ सराजापुरुषोदण्डःसनेताशासि- ताचसः। चतुर्णामाश्रमाणांचधर्मस्यप्रतिभूःस्मृतः॥१२॥ राजा पुरुषनेताअर्थात व्यवस्थामें सबजगत्को चलानेवाला शासिताअ- र्थातयथावतशिक्षकदण्डहीहै किन्तुराजाऔरप्रजास्थ मनुष्यसब तुल्यहीहैं जैसाराजामनुष्यहै वैसाहीऔरसबमनुष्यहैं इसवास्ते मनुभगवान्नेंलिखा किदण्डहीराजा,दण्डहीपुरुष,दण्डहीनेता औरदण्डहीशासिता,जिसमेंयथावतविद्यादिकगुण औरदण्डकी व्यवस्थाहोयसोईराजाहै, अन्यकोईनहीं औरब्रह्मचर्याश्रमादिक चारआश्रमऔरचारोवर्णोंकायथावतस्थापनतथाउनकारक्षक- रनेवालादण्डहीहै किन्तुप्रतिभूःअर्थातजामिनहैइसकेबिनाधर्म- यावर्णाश्रमव्यवस्थानष्टहोजातीहै कभीनहींचलती उसव्यवस्थाके बिनाजितनेउत्तमव्यवहारहैंवेतोनष्टहोहोजातेहैंकिन्तुभ्रष्टव्यवहा- रभीहोजातेहैं जैसेकिआजकलआर्यावर्त्तदेशकीव्यवस्थाहै॥१२॥ दण्डःशास्तिप्रजाःसर्वादण्डएवाभिरक्षति। दण्डःसुप्तेषुजागर्त्ति- दण्डंधर्मंविदुर्बुधाः॥१३॥ भ० सबप्रजाकोदण्डहीशिक्षाकरताहै औरदण्डहीसबजगत्कारक्षकहै जबप्राणीसोजातेहैंतबप्रायमृतक होजातेहैं परन्तुदण्डहीनहींसोताइस्से सबआनन्दसेसोकेउठतेहैं उठकेअपना२कामकाजऔरआनन्दकरतेहैं औरजोदण्डसोजाय तोजगत्कानाशहीहोजाय इस्से जोदण्डहैसोईधर्महैऐसाबुद्धिमान लोगोंकादृढनिश्चयहै॥१३॥ समीक्ष्यसधृतस्सम्यक्सर्वारञ्जयतिप्र-

जा:। असमीक्ष्यप्रणीतस्तु विनाशयति सर्वत:॥१४॥ म० उसदण्ड
कोसम्यक्विचारकरकेधारणकरताहै वहराजा सबप्रजाकोप्रस-
न्नकरदेताहै औरजोविचारकेबिनादण्डदेताहै वाआलस्य,मूर्खता
सेदण्डकोछोड़देताहै वहीराजासबजगत्कानाशकरनेवालाहोता
है राजृदीप्तौइसधातुसेराजाशब्दसिद्धहोताहै दीप्तिनामप्रकाशका
है जोसबधर्मोंकाप्रकाश औरअधर्ममात्रकानाश करै उसका
नामराजाहै औरजोऐसानहीं है उसकानामराजातोनहीं रखना
चाहिए किन्तुउसकानामडांकूऔरअन्यकाररखनाचाहिये।१४।
दुष्येयु:सर्ववर्णाश्चभिद्येरन्सर्वसेतव:। सर्वलोकप्रकोपश्चभवेद्दण्ड-
स्यविभ्रमात्।१५॥ म० दण्डकेनाशसेसबवर्णाश्रमनष्टहोजातेहैं
तथाधर्मकीजितनीमर्यादाहैंवेभीसबनष्टहोजातीहैं औरसबलोगोंमें
प्रकोपअर्थातअधर्मपूर्णहोजाताहै इससे दण्डकोकभीनछोड़नाचा-
हिए॥१५॥ यत्रश्यामोलोहिताक्षोदण्डश्चरतिपापहा। प्रजास्त-
त्रनमुह्यन्तिनेताचेत्साधुपश्यति॥१६॥ म० जिसदेशमेंश्यामवर्ण
रक्तजिसकेनेत्र ऐसाजोपापनाश करनेवालादण्डविचरताहै उस
देशमेंप्रजामोहवादु:खकोनहींप्राप्तहोती परन्तु,दण्डकाधारणक-
रनेवालाराजाविद्वानऔरधर्मात्माहोयतोअन्यथानहींकैसाराजा
होयकि॥१६॥ तस्याहु:संप्रणेतारंराजानंसत्यवादिनम्। समी-
क्ष्यकारिणंप्राज्ञंधर्मकामार्थकोविदम्॥१७॥ म० इसदण्डका
सम्यक्चलानेवालासत्यवादीकिकभीमिथ्यानबोलै औरजोकुछक-
रैसोविचारहोसेसत्य२करै असत्यकभीनहींप्राज्ञअर्थातपूर्णविद्या
औरपूर्णबुद्धिजिसकोहोय धर्मअर्थऔरकाम इनकोयथावतजान-
ताहोय उसकोदण्डचलानेका अधिकारीकहतेहैं औरकिसीको
नहीं॥१७॥ तंराजाप्रणयनसम्यक्त्रिवर्गेणाभिवर्द्धते। कामात्मा
विषम:क्षुद्रोदण्डेनैवनिहन्यते॥१८॥ म० उसदण्डअर्थातधर्म
कोराजायथावतनिश्चयसेकरेगा तोधर्मअर्थऔरकामयेतीनराजा
केसिद्धहोजायगेऔरजोकामात्माअर्थातवेश्या,परस्त्री,लौंडे,इत्या-

दिकोंकेसाथ फसारहताहै तथानम्रता,शील,नीति,विद्या,धैर्य,
बुद्धि,बल,पराक्रमतथासत्य,इनोंकासंग इनकोछोड़के विषमनाम
कुटिलअर्थातअभिमानईर्ष्या,द्वेष,मात्सर्यऔरक्रोधइनसेयुक्तहोके
कर्मविपरीतकरनेसेवहराजाविषमपुरुषहोजाताहै नीचबुद्धिनीच
संगनीचकर्मऔरनीचस्वभाव इत्यादिकदोषोंसेपुरुषजबयुक्तहोगा
तबवहपुरुषनामराजाचुद्रहोजायगा जबधर्मनीतिसेदण्डयथावत्
नकरसकेगा तबउसीकेऊपरदण्डआकेगिरेगा सोदण्डरूहतहो
जायगा जैसेकिआजकालआर्यावर्त्तदेशकेराजाओंकीदशानित्यदे-
खनेमेंआतीहै ॥ १८ ॥ दण्डोहिसुमहत्तेजोदुर्द्धरश्चाकृतात्मभिः।
धर्माद्विचलितंहन्तिनृपमेवसबान्धवम ॥ १९ ॥ ततोदुर्गंचराष्ट्रञ्च-
लोकंचसचराचरम्। अन्तरीक्षगतांश्चैव मुनीन्देवांश्चपीडयेत् ॥
२० ॥ म० दंडजोहैसो बड़ाभारीतेजहै उसकाधारणकरनामूर्ख
लोगोंकोकठिनहै जबवेदण्डअर्थात धर्मसेविचलजातेहैं तबकुटु-
म्बसहितराजाकावहदण्डनाशकरदेताहै ॥ १९ ॥ तदनन्तरदुर्गजो
किला राष्ट्रनाम राज्यचर अचर लोग अन्तरिक्ष में रहनेवाले
अर्थात सूर्य चन्द्रादिक लोगों में रहने वाले अथवा मुनिनाम
विचार करने वाले देवनाम पूर्ण विद्या वाले उनका नाश और
अत्यन्त पीड़ा करता है इसकेक्याआयाकि पक्षपात कोछोड़के य-
थावतदण्डकरनाचाहिए तभीसुखकीउन्नतिहोगी औरजोदण्ड
कोयथावतन्यायसेनकरेंगे तोउनकाही नाशहोजायगा ॥ २० ॥
सोऽसहायेनमूढेनलुब्धेनाकृतबुद्धिना। नशक्योन्यायतोनेतुंसक्ते-
नविषयेषुच ॥ २१ ॥ म० सोअसहायपुरुषोंकेसहायसेरहितमूढनाम
मूर्ख,लुब्धनामबड़ालोभी,अकृतबुद्धिजिसकोबुद्धिनहीहै सोराजा
मूर्खहै वहन्यायसेदंडकभीनदेसकेगा क्योंकिजोजितेन्द्रियहोताहै
वहीराज्यकरनेकाअधिकारीहोताहै औरजोविषयासक्ततथामूढ़
सोकभीदण्डदेनेवाराज्यकरनेकोसमर्थनहीहोता ॥ २१ ॥ राजा
कैसाहोना चाहिएकि ॥ शुचिनासत्यसन्धेन यथाशास्त्रानुसारि-

णा । प्रणेतुंशक्यतेदण्डःसुसहायेनधीमता॥ २२ ॥ भा० शुचिजो
बाहरभीतरअत्यन्तपवित्रहोय सत्यधर्ममेंसदा शिष्टकासन्धानरक्खै
तथाजैसेशास्त्रमेंपरमेश्वरकीआज्ञाहैवैसाहीकरै सुसहायअर्थात
सत्पुरुषोंकासङ्गजोकरताहै औरबड़ाबुद्धिमानवहीराजादण्डव्य-
वस्थाकरनेकोसमर्थहोताहैअन्यथानहीं॥२२॥ वृद्धांश्चनित्यंसेवेत्-
विप्रान्वेदविदःशुचीन्। वृद्धसेवीहिसततंरक्षोभिरपिपूज्यते २३॥
भा० जितनेज्ञानवृद्धविद्यावृद्धतपोवृद्ध,पवित्रविचक्षणवेदवित्धर्मा-
त्माधैर्यवान्होवैं उनकोहीराजा नित्यसेवाऔररक्षाकरै जोइनपु-
रुषोंकाराजासंगकरैगा तोउसकाराक्षसअर्थातदुष्टपुरुषभीसत्का-
रऔरआज्ञाकरैंगे ॥ २३ ॥ एभ्योऽधिगच्छेद्विनयंविनीतात्मापि-
नित्यशः । विनीतात्माहिनृपतिर्नविनश्यतिकर्हिचित्॥ २४ ॥ जो
राजाविनीतात्माहोवै अर्थातसबश्रेष्ठगुणोंसेसम्पन्नभीहोवै तोभी
उत्तमपुरुषोंसे विनयकोग्रहणकरै क्योंकिजोअभिमानादिकदोषों
सेरहितऔरविद्यानम्रतादिकगुणोंसेयुक्तहोताहै उसराजाकाक-
भीनाशनहींहोता॥ २४ ॥ त्रैविद्येभ्यस्त्रयींविद्यांदण्डनीतिंचशा-
श्वतीम् । आन्वीक्षिकींचात्मविद्यांवार्त्तारम्भांश्चलोकतः ॥ २५ ॥
भा०तीनोंवेदोंकोजोपाठस्वरऔअर्थसहितपढ़ाहोवैउससेतीनवेदों
कोराजायथावतपढ़ै दण्डनीतिजोकिसनातनराजधर्मशिक्षाअ-
र्थातदण्डकीजोव्यवस्थाहै इसकोभीपढ़ै तथाआन्वीक्षिकीजोन्याय
शास्त्र,आत्मविद्याऔरश्रेष्ठमनुष्योंसेकहनेपूछने औरनिश्चयकरने
केवास्ते वार्त्ताओंकाआरंभ इनकोराजायथावत्पढ़ै औरपढ़केय-
थावत्करै॥ २५ ॥ इन्द्रियाणांजयेयोगं समातिष्ठेद्दिवानिशम् ।
जितेन्द्रियोहिशक्नोतिवशेस्थापयितुंप्रजाः॥ २६ ॥ भा० राजारात
दिनइन्द्रियोंके जीतनेमेंनित्यहीप्रयत्नकरै क्योंकिजोजितेन्द्रियरा-
जाहोताहै वहीप्रजाकोवशमें स्थापनकरनेमें समर्थहोताहै और
जोअजितेन्द्रियअर्थातकामीसोतोआपहीनष्टभ्रष्टहोजाताहै फिर
प्रजाकोवशकैसेकरैगा इससे क्याआयाकि जोशरीर,मनऔरइ-

न्द्रिय इनकोवशमेंरखताहै सोईराजाप्रजाको वशमेंकरसकताहै अ-
न्यथ कभी प्रजावशमेंराजाकेनहीं होतो जब तक प्रजावश में न-
होगी तबतकनिश्चितराज्यकभीनहोगा इससे जितेन्द्रियहोयउ-
सकोहीराजाकरनाचाहिए अन्यकोनहीं ॥ २६ ॥ दशकामसमु-
त्थानितथाष्टौक्रोधजानिच । व्यसनानिदुरन्तानि प्रयत्ने नविवर्ज-
येत् ॥ २७ ॥ भ० जोराजाकामीहोताहैउसमेंदशदुष्टव्यसनअवश्य
होंगे औरजोराजाक्रोधीहोगा उसमेंआठदुष्टव्यसनअवश्यहोंगे
उनकोअत्यन्तप्रयत्नसेछोड़दे अन्यथाराजाहो राज्यसहितनष्टहो
जाताहै ॥ २७॥ फिरक्याहोगाकि। कामजेषुप्रसक्तोहिव्यसनेषुम-
हीपतिः । वियुज्यतेऽर्थधर्माभ्यां क्रोधजेष्वात्मनैवतु ॥ २८ ॥ भ०
जोराजा कामसेउत्पन्नभये जोदशदुष्टव्यसनउनमें जबफसजायगा
तबउसकाअर्थनामद्रव्य औरराज्यादिकसबपदार्थ तथाधर्मइनसे
रहितहोजायगा अर्थातदरिद्रऔर पापीहोजायगा औरक्रोधसे
उत्पन्नहोतेहैं जोआठदुष्टव्यसनउनमेंफसजानेसेवहआपराजाहो
मरजाताहै इससे इनअठारहदुष्टव्यसनोंकोराजाछोड़दे जोअपने
कल्याणकोइच्छाहोवे कौनसे१८अठारहदुष्टव्यसनहैं ॥ २८ ॥ मृ-
गयाक्षोदिवास्वप्नःपरिवादःस्त्रियोमदः । तौर्यत्रिकंवृथाट्याचकाम
जोदशकोगणः ॥ २९ ॥ भ० मृगयानामशिकारकाखेलना अक्ष-
नामफांसाओंसेक्रीड़ा वा द्यूतकाकरना दिवास्वप्नदिवसमेंसोना
परिवादनामकथावार्त्तावाकिसीकीनिन्दाकरना स्त्रीनामवेश्याओ-
रपरस्त्रीगमनतोअत्यन्तभ्रष्टहै किन्तु अपनीजोविवाहितस्त्रीउसमें
भीकामसेआसक्तहोकेअत्यन्तफसजाना वास्त्रीमेंअत्यन्तवीर्यका
नाशकरना मदनामभांग,गांजा,अफीमऔरमद्यइनकासेवनक-
रना तौर्यत्रिकंनृत्यकादेखनाऔरकरनावादित्रोंकाबजानावासु-
नना गानकासुनना वाकरनावृथाट्यानाम वृथाजहांतहांभ्रमण
करना अथवावृथावार्त्तावाहास्यकरना यहकामसेदशव्यसनसमू-
हगणउत्पन्नहोतेहैं इसकोप्रयत्नसेराजाछोड़दे इसकोजानछोड़े

गा तो धर्म और अर्थ अर्थात धनसहित राज्य नष्ट होजायगा इसमें कुछ सन्देह नहीं क्रोधसे आठ उत्पन्न जो दुष्टव्यसन वे ये हैं ॥ २९ ॥ पैशुन्यं साहसंद्रोह ईर्ष्यासूयार्थदूषणम्। वाग्दण्डजंच पारुष्यं क्रोधजोपिगणोऽष्टकः ॥ ३० ॥ भ० पैशुन्य नाम चुगली करना साहस नाम विचार के विना अन्यायसे परपदार्थका हरण करलेना अभिमान बलयुक्त होके द्रोह नाम सज्जनों से भी प्रीति का न करना ईर्ष्या नाम पर सुख न सहना असूया नाम गुणों में दोष और दोषों में गुणों का कहना अर्थदूषण नाम अपने पदार्थों का वृथा नाश करना अथवा अभिमानसे दूसरे के कहे अर्थ में अनर्थ का लगाना वाग्दण्डज पारुष्य नाम बिना बिचारे मुखसे बोलदेना अथवा कठोर वचन का कहना इसका नाम वाक् है पारुष्य विना विचारे दण्ड का देना वा अपराध के विना किसी को दण्ड देना अपराध के ऊपर भी पक्षपात से मित्रादिकों को दण्ड का न देना यह क्रोधसे आठ दुष्टव्यसनयुक्त गण उत्पन्न होता है इसको अत्यन्त प्रयत्न से राजा छोड़दे अन्यथा अपने शरीरसहित शीघ्रही राज्यका नाश होजाता है इन दोनों गणों का जो मूल है सो यह है ॥ ३० ॥ द्वयोरप्येतयोर्मूलं सर्वेकवयोविदुः। तंयत्नेनजयेल्लोभंतज्जावेतावुभौगणौ ॥ ३१ ॥ भ० जिससे कामज और क्रोधज दोनों गण उत्पन्न होते हैं अर्थात सब पाप और सब अनर्थों का मूल लोभही है ऐसा सब विद्वान लोग जानते हैं उस लोभको प्रयत्नसे राजा छोड़दे क्योंकि लोभही से दोनों गण पूर्वोक्त कामज और क्रोधज उत्पन्न होते हैं इससे राजा और सज्जन लोग जो सब पापों का मूल उसी को छेदन करदेवें इसके छेदन से सब अनर्थ और पाप नष्ट होजायेंगे जैसे कि मूलछेदन से वृक्ष नष्ट होजाते हैं ॥ ३१ ॥ पानमक्षाःस्त्रियश्चैव मृगयाचयथाक्रमम्। एतत्कष्टतमंविद्याच्चतुष्कं कामजेगणे ॥ ३२ ॥ भ० पान नाम मद्यादिक नशाका करना अक्ष तथा स्त्री मृगया पूर्वोक्त सब जानलेना ये चार कामजगण में अत्यन्त दुष्ट हैं ऐसा राजा जाने ॥ ३२ ॥ दण्डस्यपातनंचैववाक्पारुष्यार्थदूषणे। क्रोधजेपिगणेविद्यात्कष्टमेतत्त्रि-

कंसदा ॥ ३३ ॥ भा० दण्डकानिपातन वाक्पारुष्य और अर्थदूषण ये तीन क्रोधके गणमें अत्यन्तदुष्ट हैं १८ अठारहमेंसे ये सात अत्यन्तदुष्ट हैं ॥ ३३ ॥ सप्तकस्यास्यवर्गस्यसर्वत्रैवानुषंगिणः । पूर्वंपूर्वंगुरुतरं-विद्याद्व्यसनमात्मवान् ॥ ३४ ॥ भा० चारकामके गणमें और तीन क्रोधके गणमें सर्व ये अनुसंगी हैं कि एक होवै तो दूसराभी होजाय इन सातोंमें पूर्व२ अत्यन्तदुष्ट हैं ऐसा विचारवान्को जानना चाहिये जैसे कि अर्थदूषणसे वाक्पारुष्यदुष्ट है वाक्पारुष्यसे दण्डकानिपातन दंडके निपातनसे शिकार शिकारसे स्त्रियोंका सेवन इससे अक्षक्रीड़ा और सबसे मद्यादिकपान दुष्ट है ऐसानिश्चितसब सज्जनोंको जानना चाहिए ॥ ३४ ॥ व्यसनस्यचमृत्योश्चव्यसनंकष्टमुच्यते । व्यसन्यधोऽधो-व्रजतिस्वर्यात्यव्यसनीमृत: ॥ ३५ ॥ भा० व्यसन और मृत्यु इन दोनोंमें जो व्यसन है सो मृत्युसेभी बुरा है क्योंकि जो व्यसनीपुरुष है सो पापोंमें फसके नीच २ गतिको चलाजाता है और जो व्यसनरहितपुरुष है सो मरजायतोभी स्वर्ग अर्थात सुखको प्राप्त होता है इससे जिसकाबड़ा दुष्टभाग्य होता है वहीदुष्टव्यसनमें फसजाता है और जिसकाभाग्य अच्छा होता है वह दुष्टव्यसनोंसे दूर रहता है ॥ ३५ ॥ मौलान्शास्त्र-विद:शूरान्लब्धलक्ष्यान्कुलोद्गतान् । सचिवान्सप्तचाष्टौवाप्रकु-र्वीतपरीक्षितान् ॥ ३६ ॥ भा० फिर राजा सातवा आठपुरुषोंको अपनेपास रक्खे वे कैसे होवें कि बड़े उदार सबशास्त्रके जाननेवाले शूरवीर, जिनोंने प्रमाणोंसे पदार्थविद्या पढ़लियाहै धीमानोंके उत्तम कुलमें जिनका जन्म होय उनको यथावत् परीक्षा करके राजा रक्खे क्योंकि राज्यके कार्य एकसे कभी नहीं होसक्ते इससे जितने पुरुषोंसे अपना काम होसके उतने पुरुषोंको परीक्षा कर२ के रखले उनसे यथावत काम लेवै परन्तु बिना परीक्षा मूर्खको कभी न रक्खे और बिना उन सभासदोंकी सम्मतिसे किसी छोटे कामको भी राजा स्वतन्त्र होके न करै और जो स्वाधीन होके कुकर्म राजा करै तो वे सभासद् प्रकृष राजाको दण्डदें फिर दण्डसेभी न मानै तो उसको निकालके

दूसराराजाउसीवक्तबैठादें॥३६॥ सेनापत्यंचराज्यंचदण्डनेतृत्व-
मेवच। सर्वलोकाधिपत्यंच वेदशास्त्रविदर्हति॥ ३७॥ म० सेना-
पतिराज्यकरनेके योग्यराजादण्डदेनेवाला सर्वलोकाधिपतिअ-
र्थात्राजाकेनीचेमुख्यसर्वोपरिजिसकानामदीवानकहतेहैंयेचार
अधिकारवेदऔरसबसत्यशास्त्रइनमेंपूर्णविद्वानहोवैं उनहीकोदेवैं
अन्यकोनहीं क्योंकिवेचारअधिकारमुख्यहैं बिनाविद्वानोंकेवेचार
अधिकारयथावतनहींहोते औरजोमूर्खकाम,क्रोधादिक,दोषयुक्त
इनकोदेनेसेवेचारअधिकारनष्टहोजांयगे इसवास्तेअत्यन्तपरीक्षा
करकेचारपुरुषविद्वानोंकोचारअधिकारदेनाचाहिए जिस्सेकित्रि-
जयराज्यवृद्धिधर्मन्याय औरसबव्यवहारोंकी यथावतव्यवस्थाहोय
अन्यथासबराज्यऔरऐश्वर्यनष्टहोजातेहैं॥३७॥ तेषामर्थेनियुञ्जी-
तशूरान्दक्षान्कुलोद्गतान्। शुचिनाकरकर्मान्तेभीरूनन्तर्निवेशने॥
३८॥ म० उनअमात्योंकेसमीपराज्यकार्यकरनेकेवास्ते राजाशूर
चतुर,कुलीनपवित्रजोहोवें उनकोराजारक्खैवै अमात्यउनसेसब
राज्यकार्योंकोसिद्धकरैं उनमेंसेजितनेशूरहोवें उनकोजहां२शंका
वायुद्धवहां२रक्खदे औरजितनेभीरुहोंयउनकोभीतरगृहकेअधिका-
रमेंरक्खै जहांकिस्त्रीलोगऔरकोशवहांडरनेवालोंकोरक्खै और
जहांशूरवीरलोगोंकाकामहोयवहांशूरवीरोंकोरक्खै।३८॥ दूतं-
चैवप्रकुर्वीतसर्वशास्त्रविशारदम्। इङ्गिताकारचेष्टज्ञंशुचिन्दक्षंकु-
लोद्गतम्३९॥म०फिरराजादूतकोरक्खैवहदूतकैसाहोयकिसबशा-
स्त्रविद्यासेपूर्णहोयमनुष्यकोहृदयकीबातगमनशरीरकीआकृतिऔ
रचेष्टाइनसेजानलेना जोकिउसकेहृदयमेंहोय पवित्रचतुर और
बड़ेकुलकाजोपुरुषहोयऐसेपुरुषकोराजादूतकाअधिकारदेवै३९॥
अनुरक्तःशुचिर्दक्षः स्मृतिमान्देशकालवित्। वपुष्मानभीर्वाग्मी
दूतोराज्ञःप्रशस्यते॥ ४०॥ म० फिरवैसेकोदूतकरैकिराजामेंबड़ी
प्रीतिजिसकीहोय दक्षनामबड़ाचतुर एकबक्तकहीबातको कभीन
भूलै औरजैसादेशजैसाकाल वैसीबातकोजानै वपुष्मान्नामरूप

बलऔरशूरवीरता जिसमेंहोय वीतभीनामकिसीसेजिसकोभयन
होय वाग्मीवड़ाबक्ताधृष्टऔरप्रगल्भहोवै ऐसाजोदूतराजाकाहोय
सोश्रेष्ठहोताहै ॥४०॥ अमात्येदण्डआयत्तोदण्डेवैनयिकीक्रिया।
नृपतौकोशराष्ट्रे चदूतेसन्धिविपर्ययौ ॥ ४१ ॥ भ० दण्डदेनेकाजि-
तनाव्यवहारवहसर्वशास्त्रवितधर्मात्मापुरुषोंकेआधीनरक्खै और
दण्डअन्यायसेनहोनेपावै किन्तु विनयपूर्वकहोहोवै कोशऔररा-
ज्ययहदोनोंराजाकेअधिकारमेंरहैं सन्धिनाममिलापविपर्ययनाम
विरोधयेदोनोंदूतकेआधीनराजारक्खै ॥ ४१ ॥ तस्मादायुधसम्प-
न्नंधनधान्येनवाहनैः। ब्राह्मणैःशिल्पिभिर्यन्त्रैर्यवसेनोदकेनच ॥
४२ ॥ भ० तत्नामदुर्गकिलासबप्रकारकेआयुध धनधान्यनामअ-
न्नवाहनसवारीब्राह्मणविद्वान शिल्पीनामकारीगरलोग नानाप्र-
कारकेयन्त्रतथाघासआदिकचारा औरउदकनामजल इनसेपूर्ण
सदारहैकमतीकिसीबातकीनहोय॥४२॥ तस्यमध्ये सुपर्याप्तंका-
रयेद्गृहमात्मनः। गुप्तंसर्वर्तुकंशुभ्रंजलवृक्षसमन्वितम् ॥४३॥ भ०
उसके बीचमेंसबप्रकारसेश्रेष्ठअपनाघरराजारहनेकोबनवावैसब
प्रकारसेउसस्थानकीरक्षाकरैऔरसबऋतुओंमेंजिसघरमेंसुखहोवै
शुभ्रतामसुफेदवहघरहोवै चारोंओरघरकेजलऔरश्रेष्ठ२ वृक्ष
हरे२पेड़रहैं उसमेंआपरहै सबराज्यकोदेखभालकरै औरसब-
केऊपरसदादृष्टिरक्खै जिस्से कोईअन्यायनकरनेपावै ॥ ४३ ॥ त-
दध्यास्योद्वहेद्भार्यांसवर्णांलक्षणान्विताम्। कुलेमहतिसम्भूतांहृ-
द्यांरूपगुणान्विताम् ॥ ४४ ॥ भ० उसस्थानमेंरहकेअपनेवर्णकोसब
श्रेष्ठलक्षणोंसेयुक्तऔरबड़ेकुलमेंउत्पन्नभई अत्यन्तहृदयकोप्रसन्न
करनेवाली उत्तमजिसकारूपऔरसबविद्यादिकश्रेष्ठगुणोंसेसम्प-
न्नस्त्रीकेसाथराजाविवाहकरै देखनाचाहिएकिब्रह्मचर्याश्रमसेसब
विद्याकापढ़ना सबराज्यकार्यका प्रबन्धकरना औरसबव्यवहारों
कोयथावतजानना पीछेराजाकाविवाहमनुभगवाननेलिखा इस्से
क्याआयाकि ४८,वा४४ वा४०चालीसवा३६सवर्षमें राजाकोवि-

बाहकरनाउचितहै इससेपहिलेकभीनहीं औरस्त्रीभी२०वर्षसऊपर
२५वर्षतककोहोनाचाहिए तबराजाकासन्तानसर्वोत्तमहोय अ-
न्यथानष्टभ्रष्टहोहोजाताहै ॥ ४४ ॥ पुरोहितंचकुर्वीतवृणुयादेवच-
र्त्विजम् । तेऽस्यगृह्याणिकर्माणिकुर्युर्वैतानिकानिच ॥ ४५ ॥ म०
सबशास्त्रोंमेंविशारदनामनिपुण धर्मात्माजितेन्द्रियऔरसत्यवादी
जोकिपूर्वोक्तलक्षणवालाकहाउसकोपुरोहितकरै औरऋत्विजभी
वैसेहीकोकरै एराजाकेजितनेअग्निहोत्रादिकगृह्यकर्मऔरइष्टि-
यांउनकोनित्यकरैं ॥ ४५ ॥ यजेतराजाक्रतुभिर्विविधैराप्तदक्षिणैः । ध-
र्मार्थंचैवविप्रेभ्योदद्याद्भोगान्धनानिच ॥ ४६ ॥ म० अग्निष्टोमसे
लेकेजितने अश्वमेधतकयज्ञहैं उनमेंसेकोईयज्ञको राजाकरै सो
पूर्णक्रियाऔरपूर्णदक्षिणासेकरै जितनेविद्वान औरधर्मात्माहोवैं
उनकोनानाप्रकारकेभोजनकरावैऔरदक्षिणाभीदेवै ॥ ४६ ॥ सां-
वत्सरिकमाप्तैश्चराष्ट्रादाहारयेद्बलिम् । स्याच्चाम्नायपरोलोकेवर्ते-
तपितृवन्नृषु ॥ ४७ ॥ म० श्रेष्ठपुरुषोंकेद्वारावर्ष२कप्रजासेकरोंको
राजालियाकरै केवलवेदविहितऔरधर्मशास्त्रोक्तआचारमेंतत्पर
होवै जितनीप्रजामेंकन्यायुवती औरवृद्धहोवैं इनकोकन्याभगिनी
औरमाताकीनांईराजाजाने जितनेबालकयुवाऔरवृद्धउनकोपुत्र
भाईऔरपिताकीनांईराजाजानै अधिकक्या किसबप्रजाकोपुत्रकी
नांईजानै औरअपनेपिताकीनांईवर्तमानकरै ॥ ४७ ॥ अध्यक्षान्वि-
विधान्कुर्यात्तत्रतत्रविपश्चितः । तेऽस्यसर्वाण्यवेक्षेरन्नृणांकार्या-
णिकुर्वताम् ॥ ४८ ॥ म० जहां२जैसा२कामहोय वहां२नानाप्र-
कारकेमन्त्रियोंकोरखदेवै सबप्रजाकेसुखकेवास्ते सबकार्योंकोदे-
खतेरहैं औरव्यवस्थाकर्त्तारहैं जिससे किअवर्मनहोनेपावे परन्तुवे
मूर्खनहोवैंकिन्तु सबविद्वानहीहोवैं ॥ ४८ ॥ आवृत्तानांगुरुकुला-
द्विप्राणांपूजकोभवेत् । नृपाणामक्षयोह्येषनिधिर्ब्राह्मोऽभिधीयते ॥
४९ ॥ म० नतंस्तेनानचामित्राहरन्तिनचनश्यति । तस्माद्राज्ञा-
निधातव्योब्राह्मणेष्वक्षयोनिधिः ॥ ५० ॥ म० नस्कन्दतेनव्यथतेनवि-

नश्यतिकर्हिचित्। परिष्टमग्निहोमेभ्यो ब्राह्मणस्यमुखेहुतम्॥५१॥
भ० जोब्रह्मचर्याश्रमसेगुरुकुलमेंगुरूकेपास विद्यापढ़केपूर्णविद्वान
होकेआवैं उनकोराजायथायोग्यसत्कारकरै औरयथायोग्यउन-
कोअधिकारभीदेवै जिस्सेकिसत्यविद्याका लोपकभीनहोय किन्तु
सबविद्यासबमनुष्योंकेबीचमें सदाप्रकाशितरहै अर्थातपुरुषवाल्रो
विद्यारहितनरहनेपावै यहीराजाओंकाअक्षयनिधिअर्थातअक्षय
पुण्यहैजोकिब्रह्मनामवेदकायथावतपढ़नाऔरयथावतवेदोक्तकर्मों
काकरना इस्से आगेकोईपुण्यनहीहैक्योंकि॥४९॥ जितनेधनहैं
सुवर्णरजतादिकपुत्रदाराऔरशरीरउनकोचोरलेसक्ते हैं शत्रुभी
हरणकरसक्ते हैं औरउनकानाश भीहोजाताहै परन्तुजोविद्या
निधिहैउसकोनचोरनशत्रुहरसक्ते हैं औरनकभीउसकानाशहो-
ताहै इस्से राजालोगोंको विद्याकाप्रकाशरूपजोनिधि उसकोवि-
द्वानोंकेबीचमेंस्थापनकरनाचाहिए औरनित्यउसकाप्रचारकरना
चाहिए॥५०॥ जोविद्यानिधिहैउसकोकोईउठाईगिराउठानहीं
सक्ता नउसकोव्यथाअर्थातकभीपीड़ाहोतीहै अग्निहोत्रादिकजि-
तनेयज्ञहैं उनसेयहजोविद्यारूपयज्ञ औरमुखमेंब्रह्मकेजाननेवाले
अथवापढ़नेवाले केसुखरूपवेदिमेंहोम अर्थातविद्याकाजो स्थापन
करनाहै सोविशिष्टअर्थातश्रेष्ठहै इस्से राजालोगोंकोअवश्य२चा-
हिए किशरीर,मन औरधनसेअत्यन्तप्रयत्न विद्याकेप्रचारमेंकरैं
इसीसेराजालोगोंकाऐश्वर्यपूर्ण आयु,बल,बुद्धिऔरपराक्रमसदा
अधिकहोतेहैं॥५१॥ संग्रामेष्वनिवर्त्तित्वं प्रजानांचैवपालनम्।
शुश्रूषाब्राह्मणानांच राज्ञांश्रेयस्करंपरम्॥५२॥ भ० संग्रामों
सेकभीनिवृत्तनहोना किजबतकउसशत्रुकोनजीतले तबतकउपाय
मेंहीरहै किन्तुभागनेकेसमयमेंभागभीजाना औरपराक्रमकेस-
मयमेंपराक्रमकरना इसकानामशूरवीरपनाहै जोकिपशुकीनांई
मारखानावामरजाना इसकानामशूरवीरतानहीं किन्तुबुद्धिही
सेविजयहोताहै अन्यथाकभीनहीं प्रजाओंकापालनकरना जितने

विद्वानसत्यवादीधर्मात्माब्राह्मण अर्थातब्रह्मवित्सबविद्याओंमेंपूर्ण उनकायथावतसत्कारकरना यहीराजालोगोंकाकल्याणकरनेवालापरमश्रेष्ठकर्महै अन्यकोईनहीं ॥ ५२ ॥ आहवेषुमिथोन्योऽन्यंजिघांसन्तोमहीक्षितः । युध्यमानाःपरंशक्त्यास्वर्गंयान्त्यपराङ्मुखाः ॥ ५३ ॥ म० प्रजाकेपालनकरनेकेवास्ते श्रेष्ठधर्मात्माओंका यथावतपालन औरदुष्टोंकाताड़नकरनेकेलिये जितनाअपनासामर्थ्य उसेयथावतसबपुरुषमिलके परस्परजोराजालोगहननदुष्टोंकाकरतेहैं उसमेंअपनेभीमरणसे जोशंकानहींकरतेहैं औरयुद्धमें पीठनहीदेखातेहैं अर्थातकभीयुद्धसेभागतेनहींपरमहर्षऔरशूरवीरतासेजोयुद्धकरतेहैं उनकाइसलोकमेंअखण्डितराज्यहोताहै औरमरजांयतोमरनेकेपीछे परमस्वर्गकोप्राप्तहोतेहैं क्योंकिउन राजालोगोंकाजितनाकर्महै सोसबधर्मकेवास्ते होहै औरशूरवीरतासेउत्साहपूर्वकनिर्भयसमयमेंदेहकाजोछोड़ना सोईस्वर्गजानेकाकारणहै ॥ ५३ ॥ युद्धमेंधर्मसेइतनेनियमराजालोगोंकोअवश्य माननाचाहिए । नकूटैरायुधैर्हन्याद्युध्यमानोरणेरिपून् । नकर्णिभिर्नापिदिग्धैर्नाग्निज्वलिततेजनैः ॥ ५४ ॥ म० नचहन्यात्स्थलारूढंनक्लीबंनकृताञ्जलिम् नमुक्तकेशंनासीनंनतवास्मीतिवादिनम् ॥ ५५ ॥ नसुप्तंनविसन्नाहंननग्नंननिरायुधम् । नायुध्यमानंपश्यन्तंनपरेणसमागतम् ॥ ५६ ॥ म० नायुधव्यसनप्राप्तंनार्त्तंनातिपरीक्षतम् नभीतंनपराहत्तंसतांधर्ममनुस्मरन् ॥ ५७ ॥ म० कूटआयुधअर्थातकपट,छल,सेकोईकोकभीयुद्धमेंनमारै रिपु नामशत्रुओंकाकर्णिनामकुटिलशस्त्र विषसेयुक्तशस्त्रसेतथाअग्निसे तपायेहुएनशस्त्रोंसेशत्रुकोकभीनमारै ॥ ५४ ॥ जोआसनमेंबैठाहोय नपुंसकहाथकोजोड़ले जिसकेशिरकेबालखुलजांय मैंआपकाहूं मुझकोमतमारोजोऐसाकहै ॥ ५५ ॥ जोसोताहोय जोयुद्धसेभाग खड़ाहोय विषादकोप्राप्तभयाहोय वानग्नहोगयाहोय आयुधसेरहित किजिसकेहाथमेंशस्त्रनहोय जोयुद्धनकरताहोय वादेखनेको

आयाहोय अथवादूसरेकेसाथआयाहोय मूर्छितहोगयाहोय शस्त्रकेप्रहारसेदुःखितहोगयाहोय औरशस्त्रोंकेलगनेसे शरीरमेंछेदनहोगयाहोय भयभीतहोगयाहोय भूमिमेंखड़ाक्लीवनाम नपुंसकऔरभयसेहाथजोड़ले इनकोयुद्धमेंराजाकभीनमारै क्योंकिमत्पुरुषराजाओंकायहीधर्महै जोयुद्धकरनेकोआवै शूरवीरतासे उसीकोमारै अन्यकोनहीं किन्तु पकड़केसुखमें अपनेवशमें उसीवन्नाकरले जोस्त्रीऔरबालकहैं उनकोमारनेकोइच्छाभी राजालोगनकरैं क्योंकिजोयुद्धकीइच्छावायुद्धनहींकरतेहैं उनकेमारनेमेंबड़ापापहै इससे कभीइनकोनमारै ॥ ५७ ॥ औरजोराजाकाभृत्यहोय वहयुद्धनकरैवायुद्धसेभागजाय अथवाछल,कपट,रक्खै युद्धमेंउसकोबड़ाभारीपापहोताहै । यस्तुभीतःपराहृत्तःसंग्रामेहन्यतेपरैः । भर्त्तुर्यद्दुष्कृतंकिंचित्तत्सर्वंप्रतिपद्यते ॥ ५८ ॥ म० जोभृत्यभययुक्तहोकेयुद्धसेभागजाताहै औरभागेहुएकोभीशत्रु लोगमारडालैं तोबड़ीकृतघ्नताउसनेकिया क्योंकिराजानेउसकापालन औरसत्कारकियाथा सोयुद्धकेवास्तेहीकियाथा सोयुद्धउनसेकुछकियानहीं राजाकेकियेकोनाशकरनेसे महाकृतघ्नहोताहै औरजोराजाकाकुछपापउसकोवहीप्राप्तहोताहै ॥ ५८ ॥ यच्चास्यसुकृतंकिंचिदमुत्रार्थमुपार्जितम् । भर्तातत्सर्वमादत्ते पराहृत्तहतस्यतु ॥ ५९ ॥ म० उसभृत्यनेजोकुछपरलोककेवास्ते पुण्यकियाथा इससबपुण्यकोराजालेलेताहै औरउसभृत्यकोघोरनरकहोताहै सुखकभीनहीं यहीधर्मस्वामी औरसबसेवकोंकाभीहै किजोजिसकास्वामीवाजोजिसकाभृत्यवेपरस्पर हितकरनेहीमें सदाप्रवृत्तरहैं छलऔरकपटमनसे भीनकरै अन्यथादोनोंअधर्मीहोतेहैं ॥ ५९ ॥ रथाश्वंहस्तिनंछत्रंधनंधान्यंपशून्स्त्रियः । सर्वद्रव्याणिकुप्यञ्चयोयज्जयतितस्यतत् । ६० ॥ म० रथघोड़ाहाथीछाता,धनधान्यपशुगायछेरी,आदिकस्त्री औरवस्त्रादिकसबद्रव्य घीवातेलकाकुप्पा इनकोजोयुद्धकरनेवालाजीतेसोईलेलवै उनमेंसेराजाकुछनले ॥ ६० ॥ राज्ञश्चदद्युरुद्धारमित्ये-

षावैदिकीश्रुतिः। राज्ञाचसर्वयोधेभ्योदातव्यमपृथग्जितम् ९१ ॥
म० परन्तुसबभृत्यलोगसोलहवांहिस्साउनद्रव्योंमेंसेराजाकोदे-
वें औरराजाऔरसेनाने मिलकेजीताहोय द्रव्यमिलाभया उसमेंसे
राजाभीसोलहवांहिस्साभृत्योंकोदेवै इसमेंराजाअधिकवान्यूनता
कभीनकरै क्योंकिइसकेविनायुद्धमेंउत्साहकभीकोईनकरेगा ९१।
अलब्धमिच्छेद्दण्डेनलब्धंरक्षेदवेक्षया। रक्षितंवर्द्धयेद्वृद्ध्यावृद्धं
दानेननिःक्षिपेत् ॥ ९२ ॥ म० चारभेदहैंपुरुषार्थकेअलब्धजोरा-
ज्यादिकउनकोदण्डसेग्रहणकरै जोप्राप्तभयाउसकोखूबबुद्धिऔर
प्रीतिसेरक्षाकरै औररक्षितपदार्थोंकोव्याजादिकउपायोंसेवढ़ा-
वै औरजोबढ़ाभयाधन उसकोविद्यादान यज्ञधर्मात्माओंका पा-
लनऔरअनाथोंकेपालनमेंलगावै इनमेंसेभीवेदादिकसत्यशास्त्रों
केपढ़नेऔरपढ़ानेंहीमें बहुधाधनखर्चकरै अन्यमेंनहीं ॥ ९२ ॥
बकवच्चिन्तयेदर्थान्सिंहवच्चपराक्रमेत्। वृकवच्चावलुम्पेत शशवच्च
विनिष्पतेत्॥ ९३ ॥ म० राजासबअर्थोंकेसंग्रहकरनेमेंअत्यन्तबुद्धि
सेविचारकरै जैसाकिमत्स्यादिकग्रहणकरनेकेवास्ते बकुलाध्याना
वस्थितहोकेविचारकरताहै वैसेराजाध्यानावस्थितहोकेसबअर्थों
काविचारकरै युद्धसमयमेंसिंहकी नांईपराक्रमकरै जिस्से विजय
होवै औरपराजयकभीनहोय आपत्कालमेंअथवादुष्टोंकेनिग्रहक-
रनेकेवास्ते ऐसागुप्तरहै जैसाकिचीतावाभेड़ियाऔरखरहाजैसे
अपनेबिलसेनिकलकेकूदतादौड़ताचलाजाताहै वैसेहीराजाशत्रु
कोसेनासे निकलकेभागजाय वाछिपजाय अथवाकिला तोड़नेमें
औरशत्रुग्रहणकरनेमेंपराक्रमकरै ॥ ९३ ॥ शरीरकर्षणात्प्राणाः
क्षीयन्ते प्राणिनांयथा। तथाराज्ञामपिप्राणाः क्षीयन्ते राष्ट्रकर्ष-
णात् ॥ ९४ ॥ म० जैसेशरीरदुर्बलकरनेसेबलादिकजोप्राणवेक्षीण
होजातेहैं वैसेहीराज्यकेनाश अर्थातअरक्षणसे राजालोगोंकेभी
प्राणक्षीणहोजातेहैं अर्थातराज्यसहितनष्टहोजातेहैं॥ ९४ ॥ य-
थाल्पाऽल्पमदन्त्याद्यं वार्योकोवत्सषट्पदाः। तथाल्पाऽल्पोग्रही-

तव्योराष्ट्राद्राज्ञाब्दिकःकरः । ६५॥ स० जैसेजोंकवछरा और भौंरा
थोड़ा२ रुधिर दूध और सुगन्धको भिनसे ग्रहणकरतेहैं उनकोनाश
कभीनहींकरतेवैसेहीराजाप्रजासेथोड़ा२ करग्रहणकरैसाल२ में॥
६५ ॥ परस्परविरुद्धानांतेषांचससमुपार्जनम् । कन्यानांसम्प्रदानांच
कुमाराणांचरक्षणम् ॥ ६६ ॥ स० जबसबआमात्योंकेसाथवाप्रजा-
स्थपुरुषोंकेसाथकोईव्यवहारकेनिश्चयकेवास्ते राजाविचारकरै उ-
नसे जिसबातमें परस्परविरोधहोय उसमेंसेविरुद्धांशको छोड़ाके
सिद्धान्तमें सबकीजबएकताहोय उसबातकाआरंभकरै अन्यकान-
हीं कन्याओंकासोलहवेंवर्षसेपहिलेविवाहकभीनहोनेपावै तथा
चौबीसवर्षकेआगेकन्याविवाहकेबिनाकभीनरहनेपावै जिसकोकी
विवाहकीइच्छाहोय तथाकुमारपुरुषोंका२५ वर्षकेपहिले विवाह
किसीकानहोनेपावै और४०,४४वा४८,वर्षकेआगेविवाहकेबिना
पुरुषभीनरहैं तबतककन्याओरपुरुषोंकोविद्यादानराजाकरै और
उनसेकरावै तथाउनकीरक्षाभीराजाकरावै जिस्से किकोईभ्रष्टन
होवै औरविद्याहीनभीकोईकन्या वापुरुषनरहै यहीराजालोगों
कापरमधर्म औरपरमपुरुषार्थहै जिस्सेसबव्यवहारउत्तमहोतेहैं
अन्यथानहीं औरजिसपुरुषवाकन्याको विवाहकीइच्छाहीनहोवै
उसकेऊपरराजावाअन्यकाकुछबलनहीं॥ ६६ ॥ दूतसंप्रेषणंचैव-
कार्यशेषंतथैवच । अन्तःपुरप्रचारञ्चप्रणिधीनांचचेष्ठितम् ६७ ।
दूतकोभेजना औरउस्से सबयथावतव्यवहारोंकाजानना कार्यशेष
नामदूतनाकार्यसिद्धिहोगया औरदूतनाकार्यसिद्धवाकोहै उसको
विचारसेयथावतपूर्णकरै जिसनगरमें वाजिसस्थानमेंरहै उनम-
नुष्योंकायथावतअभिप्रायजानले प्रणिधीनामदूतोंअथवादासी दू-
नकोभीचेष्टाकोयथावतजानै जिस्से किकोईविघ्ननहोनेपावै ६७ ॥
कृत्स्नंचाष्टविधंकर्मपञ्चवर्गंचतत्त्वतः । अनुरागापरागौचप्रचारं-
मण्डलस्यच॥ ६८॥ स० येआठविधजोकर्मराजाअमात्यसेनाकोश
औरराज्ययेपांचवर्गहैं जिसमेंउसकर्मकोतत्त्वसेजाने औरउसको

रक्षाभीकरै अपनेमेंसबकोप्रीति वाअप्रीति तथामण्डलके राजा
ओंकाव्यवहार औरउनकेमनकीइच्छाइसकोयथावत्राजाजान-
तारहै जिस्से आपत्कालअकस्मात्कभीनआवै॥ ६८॥ मध्यमस्यप्र-
चारञ्च विजिगीषोश्चचेष्टितम्। उदासीनप्रचारंच शत्रोश्चैवप्रय-
त्नतः ॥ ६९ ॥ अपनेऔरपरराज्यकीसीमामें जोराजाहोय विजि-
गीषुनामशत्रुकेतरफसेजो जीतनेकोआवै उदासीनजोअपनेवाशत्रु
के पक्षमेनहो।वैऔरशत्रु,इनचारोंकीचेष्टाऔरअभिप्रायकोयथा-
वत्राजाजानलेवै अन्यथासुखकभीनहोगा इस्सेअत्यन्तप्रयत्नपूर्वक
राज्यकेमूलजितनेहैं उनकोकहै औरतत्परहोकेजानैजानकेयथा-
वत्व्यवस्थाकरै ॥ ६९॥ इनकोसामअर्थात्मिलाप,दानअर्थात्धन
कादेना भेदनामपरस्परसभोंकोतोड़फोड़रक्खै औरदण्डयेचार
राजालोगोंकेसाधनहैं परन्तु उनचारोंमेंसेमिलापउत्तमहै उस्से
नीचेदाम औरभेदसबसेकनिष्टदण्डहै इस्से तीनउपायसेजबकार्य
सिद्धिनहोवैतबदण्डकरै इनकातत्वयहहै किजिस्से बहुतधर्मात्मा
होवैं औरदुष्टनहोवैं ऐसेउपाय विद्यादिकदानोंसे राजासदाक-
रतारहैएकतोउक्तप्रकारसेयुवावस्थामेंब्रह्मचर्याश्रमसेविद्याकोप-
ढ़केविवाहकाहोना औरपांचवेंवर्षपुत्रवाकन्याको पढ़नेकेवास्ते न
भेजैं तोउनकेमातापितादिकोंकेऊपरराजा अवश्यदण्डकरै यथा-
वत्पठनऔरपाठन कीव्यवस्थाकरै जोकोईइसमर्यादाकोभङ्गकरै
विद्यादिकगुणग्रहणनकरै तबउसमनुष्यकोशूद्रकाअधिकारदेदे-
वै औरशूद्रादिकनीचोंमेंकोईउत्तमहोवै उसकोयथायोग्यद्विजका
अधिकारदेवै जैसेकिब्राह्मण,क्षत्रियवावैश्योंकेदुष्टपुत्रवाकन्यामूर्ख
होजांय तबउनकोशूद्रकुलमेंरक्खे औरशूद्रादिकोंमेंजबद्विजत्वअ-
धिकारकेयोग्यहोवैं तबयथायोग्यद्विजकाअधिकारदेवै अर्थात्द्विज
बनादेवै तबजिसब्राह्मणक्षत्रियवावैश्यकेपुत्रवाकन्या एकदोतीनवा
जितनेशूद्रहोगयेहोंय उनकेबदलेपुत्रवाकन्याओंकोराजाभिन२के
देवै तथाशूद्रादिकोंकोभीक्योंकिजिसकोएकहीपुत्रवाकन्याहै और

वहशूद्रहोगया अथवाशूद्रकोपुत्र वाकन्याद्विजहोगई फिरउसका
वंशतोछिन्नहीहोगया दूसरेराजालोगोंसेयथायोग्य गिन२केलिये
जांयऔरदियेभीजांयदूसरीबातयहहैकिवेदादिकसत्यशास्त्रोंकाअ-
त्यन्तप्रचारकरै औरजोकोईजालपुस्तकरचैवापढ़ैपढ़ावैउसकोरा-
जाशिरच्छेदनतकदण्डदेवै जिस्से किकोईमिथ्याजालपुस्तकनरचै
तीसरीबातयहहैकिजबकोईजितेन्द्रिय,पूर्णविद्यावान,पूर्णज्ञान-
वान,सत्यवादीदयालुऔरतीव्रबुद्धिवालाविवाहकरना औरविरक्त
होनाचाहैउसकोराजायथावत्परीक्षाकरकेआज्ञादेवै औरकहदे
किआपसत्यविद्यासत्यउपदेशकाप्रचारसंसारमेंकरैंउसकाआकार
स्वभावऔरगुणपत्रमेंलिखेऔरग्राम२नगर२मेंविदितकरदेजिस्से
किकोईपुरुषउसका अपमाननकरै औरउसके वेषवानामसे कोई
फिरनेनपावै चौथीबातयहहैकिकोईमूर्ख,धूर्त्त,अधर्मीऔरमिथ्या
वादीविरक्तनहोनेपावै क्योंकिउसकेविरक्तहोनेसेसबसंसारकीबुद्धि
भ्रष्टहोजातीहैजैसीउसकीभ्रष्टबुद्धिहोगीवैसाहीउपदेशकरेगा अ-
च्छाकहांसेकरेगाइस्सेऐसापुरुषविरक्तनहोनेपावैजोविरक्तहोयतो
उसकोपकड़केदण्डदे पांचवींबातयहहैकिजोकोईकर्मकाण्डकाअ-
धिकारीहोय उसकोकर्मकाण्डमेंरक्खै सोकर्मकाण्डवेदोक्तलेना
तन्त्रवापुराणकीएकबातभीनलेनी पूर्वमीमांसाअर्थात्जैमिनिजो
व्यासजीकेशिष्यकेकियेसूत्रोंकेअनुसार कर्मकाण्डकीव्यवस्थाराजा
नित्यरक्खै संध्योपासन,अग्निहोत्रसेलेकेअश्वमेधतककर्मकाण्डहै
उसकेदोभेदहैं एकतोसकामदूसरानिष्काम सकाम यहकहताहै
किविषयभोगऐश्वर्यकेवास्ते कर्मकाकरना औरनिष्कामयहहैकि
कर्मोंसेमुक्तिहोकाचाहना उस्से भिन्नपदार्थोंकोचाहनानहीं उ-
समेंवेदकेजोमन्त्रहैंवेहीदेवहैं इनसेभिन्नकोईदेवनहींऔरमन्त्रों
के कहनेवाले परमेश्वरपरमदेवहैं ऐसाहीनिश्चय पूर्वमीमांसा-
दिकों औरनिरुक्तादिकोंमेंकियाहै दूसराउपासनाकाण्डहैसोभी
वेदोक्तहीलेना उसकेव्यवस्थाकेनिमित्तपातञ्जलिमुनिकेसूत्रऔर

उसकेऊपरव्यासमुनिजीकाकियाभाष्य तथादशउपनिषदइन्होंको रक्खै इनमेंजैसी उपासना की व्यवस्थाहै उसी पूर्वक आप और अपनीप्रजाकोचलावै पाषाणादिकमूर्त्ति पूजनादिक उपासनाहो नहीं इससे इसकोछोड़नाछोड़ानाहीउचितहै तीसराज्ञानकाण्ड है उसमेंपृथ्वीसेलेकेपरमेश्वरपर्यन्त पदार्थोंकायथावत्तत्त्वज्ञान काहोना इसकाविधानवेदशउपनिषदऔरव्यासजीकाकिया शा॰ रीरकसूत्रउनकीरीतिसेज्ञानदण्डकीव्यवस्थाकरै उसमेंआपराजा चलैऔरप्रजाकोभीचलावैऔरजितनेपूर्वोक्तशैववैष्णवशाक्तादिक पाखण्डलिखेहैं उनकोकभीनप्रचलितकरै क्योंकियेसबपाखण्डहै तीनोंकाण्डमेंनहींहैउनसेविरुद्धहीहैंइनपाखण्डोंकेचलनेसेराजा औरराज्यनष्टहोजातेहैं सोअत्यन्तप्रयत्नोंसेइनपाखण्डोंकाअंकुर मात्रभीनरहनेपावै जैसेकिआजकलआर्यावर्त्तदेशमें मण्डलीकी मण्डलीफिरतीहैं लाखोंपुरुषोंमेंविरक्तताधारणकियाहै यहमि- थ्याजालहीहै इनलाखोंमेंकोईएकपुरुषविरक्तताकेयोग्यहै और सब पाखण्डमेंरहेहैं इनकोराजा यथावत्परीक्षाकरै सत्यवादी, जितेन्द्रिय,सबविद्याओंमेंनिपुण औरशान्त्यादिकगुणजिसमेंहोय उसकोतोविरक्तहीरहनेदे इससे जितनेविपरीतहोंय उनकोयथा- योग्य हलग्रहणादिककर्मोंमें राजालगादेवै इसव्यवस्थाको अ- वश्यकरै अन्यथाकभी सुखनहोगा ॥ सन्धिंचविग्रहंचैव यानमा- सनमेवच। द्वैधीभावंसंश्रयञ्च षड्गुणांश्चिन्तयेत्सदा ॥ ६५ ॥ स- न्धिनाममिलापविग्रहनामबिरोधयाननामयात्रा किशत्रु केऊपर चढ़ना आसननामयुद्धध्यानकरना औरअपनेराज्यकाप्रबन्धकरके घरमेंबैठरहनाद्वैधीभावनामदोप्रकारकाबलअर्थातसेनारचलेना इनछ:गुणोंका बिचारकियाहै सोमनुस्मृतिमें विचारलेना और भीबहुतप्रकारकेराजकर्मोंकाउसीमेंविचारकियाहैसोदेखलेवें॥ प्रमाणानिचकुर्वीततेषांधर्म्यान्यथोदितान्। रत्नैश्चपूजयेदेनंप्रधा- नपुरुषै:सह॥ ६६॥ म॰ जिसराजाकोजीतलेउससे नियमकरदे कि

जबहमतुमकोबोलावैं वाजैसीआज्ञाकरैंउसकोयथावतकरनाऔ-
रमेरेअमात्यकेतुल्यहोके यथोक्तमेरोआज्ञाकरो यथावततुमधर्म
सेसबकामकरोअन्यायमतकरोपराजयकेशोकनिवारणकेनिमित्त
राजाऔरराजाकेसबपुरुषमिल.के उनकोरत्नादिकदेके उसराजा
कोप्रसन्नकरैं जिस्से किउसकोपराजयसेदुःखभयाहोय उसकास-
त्कारसेनिवारणहोजाय फिरउनकोयथावतआजीविकाकरदे जि-
स्से उनके भोजनादिकोंका निर्वाहोसके उतनो जीविका करदे
औरजोराजाधर्मसेराज्यकरै विद्या,बुद्धि,बल,पराक्रम, औरजि-
तेन्द्रियहोय उस्से नयुद्धकरै नउस्से राज्यलेनेकोइच्छाकरै किन्तु
उसकोबन्धुऔरमित्रवत्जानै॥ ६६ ॥प्राज्ञंकुलीनंशूरंचदक्षंदा-
तारमेवच । कृतज्ञंधृतिमन्तञ्च कष्टमाहुररिंबुधाः॥ ६७ ॥ म०
पण्डित, कुलीन, शूर,वीर, चतुर, दाता,कृतज्ञ और धैर्यवान
पुरुषसेवैरकभीनकरै जोकभीवैरकरैगा तोउसको दुःखहीहोगा
ऐसेपुरुषकापराजयकभीनहींहोसक्ता॥ ६७ ॥ एवंसर्वमिदंराजा-
सहसंमन्त्र्यमन्त्रिभिः । व्यायाम्याप्लुत्यमध्याह्नेभोक्तुमन्तःपुरंविशे-
त्॥ ६८ ॥ म० इसप्रकारसेसर्वराजसम्बन्धीजोकर्मउसकाविचार
मन्त्रियोंकेसाथकरकेव्यायामनामदण्डमुद्गरकरकेसिंहकीनांई अ-
थवानटकीनांईअभ्यासकरकेमध्यान्हसमयकेपहिलेभोजनकरै भो-
जनकरकेन्यायघरमेंजाके सबन्यायोंकोयथावतकरैजितनोराजस-
म्बन्धीबातेंलिखीहैंये सबमनुस्मृतिसप्तमाध्यायकीहैं यहांतोसंक्षे-
पसेलिखीहैं विस्तारसे देखाचाहैतोवहांदेखलैएकयहबातअवश्य
होनीचाहिए किजोमनुष्य राजाहो उसीकी आज्ञामें चलैं यह
बातठीकनहीं क्योंकिराजातोप्रतिष्ठा औरमानकेवास्ते सर्वोपरि
है परन्तुविचारकरनेकोएकपुरुषसमर्थनहींहोताजितनेदेशवाअ-
न्यदेशमेंबुद्धिमानपुरुषहोवेंउनसबकोराजाएकसभारक्खैउससभा
मेंआपभीरहैफिरसबपुरुषोंकेविचारसेजोबातठीक२ठहरेउसबात
कोसबकरैं इस्सेक्याआयाकिजोराजाअन्यायकारीहोजाय तोउस-

कोनिकालबाहरकरैं औरउसीकेस्थानमेंउत्तमलक्षणवालेक्षत्रियको बैठादेवैं क्योंकिराजातोप्रजाकेभयसेअन्यायनकरसकेगा औरप्रजा राजाकेभयसे अन्यायनकरसकैगी राजाजबअन्यायकरैतबउसको यथावत्दण्डदेदे॥कार्षापणंभवेद्दण्ड्योयत्रान्यःप्राकृतोजनः। तत्रराजाभवेद्दण्ड्यःसहस्रमितिधारणा ६९॥ म० जिसअपराधमेंप्रजास्थ पुरुषकेऊपरएकपैसादण्डहोय उसीअपराधकोजोराजाकरैउसकेऊपरहजारपैसादण्डहोय यहकेवलउपलक्षणमात्रहै किप्रजासे हजारगुनोदंडराजाकेऊपरहोय क्योंकिराजाजोअधर्मकरेगा तो धर्मकापालनकौनकरेगा कोईभीनकरेगाइससेदोनोंकेऊपर दण्ड कोव्यवस्थाहोनीचाहिए ॥६९॥ अष्टापाद्यन्तुशूद्रस्यस्तेयेभवतिकिल्बिषम्। षोडशैवतुवैश्यस्यद्वात्रिंशत्क्षत्रियस्यच ॥७०॥ ब्राह्मणस्यचतुःषष्टिःपूर्णंवापिशतंभवेत्। द्विगुणावाचतुःषष्टिस्तद्दोषगुणविद्धिसः ७१॥ जितनापदार्थकोईचोरावैवहमूर्खवाबालकनहोय किन्तु गुणऔरदोषोंकोजानताहोवै सोजोशूद्रचोरहोयतोउससे आठ गुणादण्डलेवै वैश्यसेसोलहगुण, क्षत्रियसे३२गुण, और१०० वा१२८ गुणदण्डराजाब्राह्मणसेलेवै क्योंकिश्रेष्ठहोकेनीचकर्मकरै उसको अधिकहीदण्डहोनाचाहिए॥ ७१ ॥ पिताचार्यःसुहृन्माताभार्यापुत्रःपुरोहितः। नादण्ड्योनामराज्ञोस्तियस्स्वधर्मेनतिष्ठति ७२॥ म० पिताआचार्यविद्यादातासुहृत्नाममित्रमाता भार्यानामस्त्री पुत्रऔरपुरोहितजब२अपराधकरैं तब२कभीदण्डकेबिनानछोड़ै क्योंकिराजाकेसामनेकोईअपराधीअदण्ड्यनहीं क्योंकिस्वधर्ममें स्थितनरहै॥ ७२॥ अदण्ड्यान्दण्डयन्राजादण्ड्यांश्चैवाप्यदण्डयन्। अयशोमहदाप्नोतिनरकंचैवगच्छति ७३॥म० जोराजाअन्याय करनेवालेकोदण्डनहींदेता औरअनपराधीकोदण्डदेताहै उसकोबड़ीअपकीर्तिहोतीहै औरनरककोभी वहजाताहै इससे राजा कोअवश्यचाहिएकिपक्षपातकोछोड़के यथावत्दण्डव्यवस्थारक्खै किसीकापक्षपातकभीनकरै इससे क्याआयाकि किसीनेंमनुस्मृति

वाअन्यत्रसेऐसेश्लोकप्रक्षिप्तकियाहोय किब्राह्मणवासंन्यासीआदि-
कोदण्डनदेनाउसकोसज्जनलोगमिथ्याहीमानैं ॥ ७३ ॥ क्योंकि
धर्मोविद्धस्त्वधर्मेणसभांयत्रोपतिष्ठते । शल्यंचास्यनकृन्तन्तिविद्धा-
स्तत्रसभासदः ॥७४॥ म० धर्मऔरअधर्मसेविद्धअर्थातघायलभया
राजाऔरसभासदोंकेपासधर्मऔरअधर्मदोनोंआवैंफिरउसध-
र्मकाजोघावउसकोराजाऔरसभासदननिकालैंजैसेकिघावकोऔ-
षध्यादिकयत्नोंसेअच्छाकरतेहैंवैसेहीधर्मात्माकासत्कारऔरदुष्टों
केऊपरदण्ड जिससभामें यथावत नहोगा उससभाके राजाऔर
सभासदसबमनुष्योंकोमुरदाहीजानना तथाजहां२शिष्टपुरुषोंको
अथवासत्यासत्य निश्चयकेवास्तेसभाहोवै फिरजिससभामेंसत्यका
स्थापननहोयऔरअसत्यकाखण्डनवेभीसबसभासदमूढ़होहैं और
मुरदेक्योंकि ॥७४॥ सभांवानप्रवेष्टव्यंवक्तव्यंवासमंजसम् । अब्रु-
वन्विब्रुवन्वापिनरोभवतिकिल्विषो ॥ ७५ ॥ म० पुरुषप्रथमतोस-
भामेंप्रवेशहीनकरै औरजोसभामेंप्रवेशकरै तोसत्यहीकहै मिथ्या
कभीनकहै क्योंकिजानताभयापुरुषसत्यासत्यकोनकहै अथवाजैसा
जानताहोय उस्से विरुद्धकहैतोभीवहमनुष्यपापीहोजाताहै इस्से
क्याआयाकिजैसाजोपुरुष हृदयसेजानताहोय वैसाहीकहै उस्से
विरुद्धकभीनकरै क्योंकिसत्यबोलनाहीसबधर्मोंकामूलहै औरअ-
सत्यअधर्मकामूलहै इसमेंमहाभारतकाप्रमाणहै नसत्याद्विपरो-
धर्मोनानृतात्पातकंपरम् । इसकायहअभिप्रायहैकिसत्यबोलनेसे
बढ़करकोईधर्मनहींऔरमिथ्याबोलनेसेबढ़करकोईपापनहीं इस्से
सत्यभाषणहीसदाकरनाचाहिए मिथ्याकभीनहीं ॥ ७५ ॥ यत्रध-
र्मोह्यधर्मेणसत्यंयत्रानृतेनच । हन्यतेप्रेक्षमाणानांहतास्तत्रस-
भासदः । ७६ ॥ म० जिसराजाकीसभामें धर्म अधर्मऔरसत्यका
राजातथाअमात्योंकेदेखतेभी अनृतनाशकरताहै फिरवेन्यायन-
करैं तथासर्वत्रसभामें उनकोभीसज्जनलोग नष्टहोजानैं क्योंकि
॥ ७६ ॥ धर्मएवहतोहन्तिधर्मोरक्षतिरक्षितः । तस्माद्धर्मोनहन्त-

व्योमानोधर्मोहतोवधीत्॥ ७७॥ भ० जोपुरुषधर्मकानाशकरता है अर्थातधर्मकोछोड़के अधर्मकरताहै उसकोअवश्यही धर्ममार डालताहै उसअधर्मीकीरक्षाकरनेको ब्रह्मादिकदेवभीसमर्थनहीं औरपरमेश्वरभीअपनीआज्ञाकोअन्यथानहींकरते क्योंकिपरमेश्वरतोसत्यसङ्कल्पहीहै इससे जैसीआज्ञाविचारकेयथावतकियाहै वहीरहतीहै किअधर्मकरैसो अधर्मकाफलपावै औरधर्मकरैसो धर्मका औरजोपुरुषधर्मकीरक्षाकरताहै उसकीधर्मभीसदारक्षा करताहैउसकानाशकरनेकोतीनोंलोकमेंकोईभीसमर्थनहीं इससे सबसज्जनलोगधर्मकानाशऔरअधर्मकाआचरणकभीनकरैं ७७ वृषोहिभगवान्धर्मस्तस्ययःकुरुतेह्यलम्। वृषलन्तंविदुर्देवास्तस्माद्धर्मंनलोपयेत्॥ ७८॥ भ० जोमनुष्यधर्मकालोप अर्थातधर्मको छोड़केअधर्मकरताहै वहीशूद्रवाभंड़ुवाहै क्योंकिवृषनामधर्मका है औरभगवान्भीतीनोंलोकमेंधर्महीहै जोआज्ञाकरनेवालाहै सोआज्ञासेभिन्ननहीं क्योंकिउसकेआत्मरूपहीआज्ञाहै उसधर्म कोजोत्यागकरताहै उसकोदेवनाम विद्वानलोगशूद्र वा भंड़ुवाको नाईजानतेहैं इससे धर्मकात्यागकभीनकरनाचाहिए॥ ७८॥ एक एवसुहृद्धर्मो निधनेप्यनुयातियः। शरीरेणसमंनाशं सर्वमन्यद्धिगच्छति॥ ७९॥ भ० देखनाचाहियेकिसबजगतमेंएकधर्महीसब मनुष्योंकामित्रहै अन्यकोईनहीं क्योंकिधर्ममरनेकेपीछेभीसाथरहताहै औरधर्मसेभिन्न जितनेपदार्थहैं वेशरीरकेछोड़नेके साथही छूटजातेहैं परन्तुधर्मकासंगसदाबनारहताहै इससेधर्मकोकोईकभीनछोड़ै॥ ७९॥ पादोधर्मस्यकर्त्तारं पादःसाक्षिणमृच्छति। पादःसभासदःसर्वान्पादोराजानमृच्छति॥ ८०॥ भ० जिससभा मेंअन्यायहोताहै उससभामेंयहबातहोतीहै किजोअधर्मकोकरता है उसकोअधर्मकाचौथाहिस्साप्राप्तहोताहै उसकेजोमिथ्यासाक्षी हैं उनकोअधर्मकाचौथियांशमिलताहै जितनेसभासदहैं किराजा केअमात्य उनकोएकअंशअधर्मका राजाकोमिलताहै अर्थातउस

अधर्मकेमारेहिस्से होजातेहैं औरचारोंकोउसाप्रकारसेएकरहि-
स्सामिलजाताहै ॥ ८० ॥ राजाभवत्यनेनास्तु मुच्यन्तेचसभासदः ।
एनोगच्छतिकर्त्तारंनिन्दार्होयत्रनिन्द्यते ॥ ८१ ॥ भा० जिससभामें
धर्मऔरअधर्मकाविवेकयथावतहोताहै कियथावत्पक्षपातकोछो-
ड़केसत्यरहीन्यायहोताहै उससभाकेराजासाक्षी औरअमात्यसब
धर्मात्माहोजातेहैं औरजिसनेअधर्मकिया उसीकेऊपरसबअधर्म
होताहै किन्तुवहीअधर्मकाफलभोगताहै राजादिकआनन्दसेपुण्य
काफलभोगतेहैं दुःखकभीनहीं इससे राजाअमात्यऔरसाक्षी प-
क्षपातसेअन्यायकभीनकरैं ॥ ८१ ॥ वाह्यैर्विभावयेल्लिङ्गैर्भावमन्त-
र्गतन्नृणाम् । स्वरवर्णेङ्गिताकारैश्चक्षुषाचेष्टितेनच ॥ ८२ ॥ भा०
जबकोईवादीप्रतिवादीकान्यायकरनेलगै तबबाहरकेचिन्होंसे भी-
तरकेभावकोजानलेवै उसकाशब्दरूप इङ्गितनामसूक्ष्महृदयऔ-
रनाड़ीकीचेष्टाआकृतितथानेत्रकीचेष्टाऔरवाह्यअंगोंकीभीचेष्टा
इनसेसत्यरनिश्चयकरले किइननेअपराधकियाहै औरइननेनहीं
किया एकबातयहभी परीक्षाकीहै जो हाथकेमूलमें धमनीनाड़ी
औरहृदयउनकोवैद्यकशास्त्रकीरीतिसे स्पर्शकरकेयथावतपरीक्षा
करै फिरयथावत्दण्ड औरअदण्डकरै इन१८अठारहस्थानोंमें
विचारकीव्यवस्थाहै ॥ ८२॥ तेषामाद्यमृणादानंनिःक्षेपोस्वामि-
विक्रमः । संभूयचसमुत्थानंदत्तस्यानपकर्मच ॥ ८३ ॥ वेतनस्यैव-
चादानंसंविदश्चव्यतिक्रमः । क्रयविक्रयानुशयो विवादःस्वामिपा-
लयोः ॥ ८४ ॥ सीमाविवादधर्मश्च पारुष्ये दण्डवाचिके । स्तेयंच-
साहसंचैवस्त्रीसंग्रहमेवच ॥ ८५ ॥ स्त्रीपुंधर्मोविभागश्चद्यूतमाह्व-
यएवच । पदान्यष्टादशैतानि व्यवहारस्थिताविह ॥ ८६ ॥ एषु-
स्थानेषुभूयिष्टं विवादंचरतान्नृणाम् । धर्मंशाश्वतमाश्रित्य कुर्या
त्कार्यविनिर्णयम् ॥ ८७ ॥ भा० ऋणका लेना औरदेना १ नि-
क्षेपकेदोभेदहैं जोगिनकेतौलके वाकिसीकेपासपदार्थरक्खै उस-
कानामनिक्षेपहै दूसरागुप्तबांधकेकिसीकेपासधरावटरक्खी और

आधेरधनसे व्यवहारकरना २ अस्वामिविक्रयनाम अन्यकाप-
दार्थकोईबेचले वाकिसीकापदार्थकोईदबाले३ संभूयसमुत्याननाम
धर्मार्थयज्ञार्थ वा दक्षिणाकेवास्ते धनदियाजाय इनमें विवादका
होनावाअन्यथाकरना ४ औरदियेभयेपदार्थकोछिपाले ५ नौकरी
कादेनावानदेना अथवानलेना ६ प्रतिज्ञाकाभंगकरना ७ वेच-
नाऔरखरीदना ८ पशुओंकास्वामीऔरउनकेपालनेवालेमेंवि-
वादकाहोना सीमामेंविवादकाहोना १० कठोरवचन औरविना
विचारे दण्डदेना ११ चोरी १२ साहसनामपरस्परस्त्रीपुरुषोंका
व्यभिचारऔरडांकूपना १३ किसीकोस्त्रीकोबलसेवाफुसलाकरले
लेना १४ स्त्रीऔरपुरुषोंकेपरस्परनियमउनकोभंगकरना १५ दाय-
भाग १६ द्यूतनामजूवा १७ और जोप्राणिअर्थातस्त्रीपुत्रकुटुम्बगाय
हस्ती,अश्वादिकपशुओंकोदबाकरद्यूतकाकरना उसकानामस-
माह्वयहै १८ इनअठारहव्यवहारोंमें प्रजामेंअत्यन्तविवादहोता
है इनकाउक्तलक्षणइतप्रेषण औरपूछनेसराजायथावतन्यायकरै
इनन्यायोंकाविधानयथावत्मनुस्मृतिके अष्टमाध्याय औरनवमा
ध्यायकीरीतिसेकरनाचाहिये॥ ८७॥ दातव्यं सर्ववर्णेभ्योराज्ञा-
चौरैर्हृतंधनम्। राजातदुपयुञ्जानश्चौरस्याप्नोतिकिल्बिषम् ८८॥
जोप्रजामेंचोरीहोयतोउसमेंजितनेपदार्थचोरीजांयउनसबपदार्थों
कोचोरोंकानिग्रहकरके जोजिसकापदार्थ चोरीगयाहोय उसको
चोरोंसेलेकेपदार्थकेस्वामीकोराजादेदे औरजोचोरनपकड़ाजाय
औरपदार्थनमिलै तोअपनेपाससेराजादेदेक्योंकिइसीवास्ते राजा
काहोनाआवश्यकहै प्रजानित्यराजाकोदेतीहैइसवास्ते किअपना
पालनराजायथावत्करै जोयथावत्पालननकरेगाऔरप्रजासेध-
नलेगातोवहीराजाचोरऔरडाकूकेपापकाभागीहोगाजोचोरोंसे
मिलके चोरीकेधनकोग्रहण करनेकीइच्छाकरै वहराजानहींहै
किन्तु वहीचोरऔरडांकूहै ॥ ८८॥ यादृशाधनिभि:कार्याव्यवहा-
रेषुसाक्षिण: । तादृशान्संप्रवक्ष्यामियथावाच्यमृतंचतै: ॥ ८९ ॥

भ० राजाऔरधनिकलोगोंकोजिसप्रकारकेसाक्षीव्यवहारोंमेंकरनाचाहिए उनकोयथावतकहतेहैं औरसाक्षियोंकोजैसासत्यरहीकहनाचाहिए ॥ ८९ ॥ गृहिणःपुत्रिणोमौलाःक्षत्रविट्शूद्रयोनयः। अर्थ्युक्ताःसाक्ष्यमर्हन्तिनयेकेचिदनापदि ॥ ९० ॥ भ० गृहस्थपुत्रवालेऔरवेउदारहोवैं फिरक्षत्रिय,वैश्य,शूद्र,शूद्रवर्णोंमें सेकार्यवाला पुरुषजिनकोकहै कियेमेरे साक्षीहैं औरकोईआपत्कालकेविनानहोय ॥ ९० ॥ आप्ताःसर्वेषुवर्णेषु कार्याःकार्येषुसाक्षिणः। सर्वधर्मविदोऽलुब्धाविपरीतांस्तुवर्जयेत् ॥ १०० ॥ भ० ब्राह्मणादिक सबवर्णोंमें जोआप्त बड़ाधर्मात्मा, सत्यवादी औरजितेन्द्रियहोवै तथासर्वधर्मको जानताहोय और काम,क्रोध,लोभ, मोह,भयशोकादिक दोषजिसमेंनहोवैं सत्यबोलनेहीका जिसका नियमहोय ऐसेहीकोराजाऔरप्रजासाक्षीकरैं इनसेविपरीतमनुष्योंकोकभीसाक्षीनकरैं ॥ १०० ॥ नार्थसम्बन्धिनोनाप्तानसहायानवैरिणः। नदृष्टदोषाःकर्तव्यानव्याध्यार्त्तानदूषिताः ॥ १०१ ॥ भ० जिननेपरस्परव्यवहारसेसम्बन्धरखतेहोंय अनाप्तनामजिनमेंकाम क्रोध,लोभ,मोह,भयमूर्खत्वादिदोषहोवैं सहायकारीहोवैंवाशत्रुहोवैं जोवादीप्रतिवादीकेदोषवा गुणोंकोजानताहोय रोगसेआर्त्तहोय वादुष्टकर्मकोकरनेवाले इसप्रकारकेमनुष्योंकोराजावाप्रजासाक्षीकभीनकरैं ॥ १०१ ॥ नसाक्षीनृपतिःकार्योनकारुककुशीलवौ। नश्रोत्रियोनलिंगस्थो नसंगेभ्योविनिर्गतः ॥ १०२ ॥ भ० राजाकारुकनामशिल्पी कुशीलवनामकुदारीसेआजीविकाकरनेवाले श्रोत्रियनामवेदपढ़ानेवाला लिंगस्थब्रह्मचारीऔरवानप्रस्थ संगेभ्योविनिसृतनामसन्यासीइनकोभीराजावाप्रजासाक्षीनकरैं क्योंकि कारुक और कुशीलव तो मूर्ख हैं राजा न्यायकरनेवाला होताहै वेदपाठी,ब्रह्मचारी,वानप्रस्थऔरसन्यासीइनकोसाक्षीकरनेसे पढ़नापढ़ानातपऔरविचारमेंविघ्नहोगा इससेइनकोसाक्षीनकरनाचाहिये। १०२ ॥ नाध्यधीनोनवक्तव्योनदस्युर्नविकर्मकृत्।

नवृद्धोनशिशुर्नैकोनान्त्योनविकलेन्द्रियः॥ १०३॥ म० पराधीनव-
क्तव्यनाम लिखाने सेसाक्षीहोवै डांकू विरुद्ध कर्मकरनेवाला वृद्ध
बालकनीचऔरअजितेन्द्रिय तथाएकहीपुरुषसाक्षी इनकोराजा
वाप्रजाकभीसाक्षीनकरैं॥ १०३॥ नार्त्तोनमत्तोनोन्मत्तोनक्षुत्तृष्णो
पपीडितः। नश्रमार्त्तोनकामार्त्तोनक्रुद्धोनापितस्करः॥ १०४॥
म० दुःखीमत्तनाम भांगमद्यादिकपीनेवाला उन्मत्तनामपागल
क्षुधा औरतृषासे जोपीड़ितहोवै श्रमकरकेदुःखीहोवै कामातुर
क्रोधीऔरचोर इनकोराजाऔरप्रजासाक्षीकभीनकरैं॥ १०४॥
स्त्रीणांसाक्ष्यंस्त्रियःकुर्युर्द्विजानांसदृशाद्विजाः। शूद्राश्चसन्तःशूद्रा-
णामन्त्यानामन्त्ययोनयः॥ १०५॥ म० विद्यासत्यभाषणजितेन्द्रि-
यजोस्त्रियांहोवैं वेस्त्रियोंकीसाक्षीहोवैं द्विजोंकेसदृशसत्यवादी द्विज
शूद्रोंकेसत्यवादीशूद्र चांडालादिकोंकेसत्यवादी चांडालादिकसा-
क्षीहोवैं अन्यकोईनहीं औरभीमनुस्मृतिकेअष्टमाध्यायमेंविस्तार
सेसाक्षीकाविधानलिखाहै जोदेखाचाहैसोदेखले॥ १०५॥ सा-
हसेषुचसर्वेषुस्तेयसंग्रहणेषुच। वाग्दण्डयोश्चपारुष्येनपरीक्षेतसा-
क्षिणः॥ १०६॥ जिसनेबलात्कारकेकर्मचोरीपरस्त्रीसेव्यभिचारवा
ग्रहणकठोरवचनवा विनाविचारेदण्डकादेना इनकर्मोंमेंसाक्षी
कीपरीक्षाहीराजानकरै किन्तुयथावत्बिचारकरके इनकोदण्ड
देना उचित है॥ १०६॥ सत्येनपूयतेसाक्षी धर्मःसत्येनवर्द्धते।
तस्मात्सत्यंहिवक्तव्यंसर्ववर्णेषुसाक्षिभिः॥ १०७॥ म० सत्यबोलने
सेसाक्षी पवित्र और मिथ्या बोलने से महापापी होता है धर्म
भीसत्यबोलनेहीसे बढ़ताहै इससे सबमनुष्योंकोसत्यही साक्षी दे-
नीचाहिएमिथ्याकभीबोलनानहीं॥ १०७॥ आत्मैवह्यात्मनःसा-
क्षीगतिरात्मातथात्मनः। मावमंस्थाःस्वमात्मानंनृणांसाक्षिणमु-
त्तमम्॥ १०८॥ म० साक्षीसेपूछनाचाहिये कितेरेआत्माकासा-
क्षीतूंहीहै औरतेरीमुक्तिकाकरनेवालाभीतूंहीहै क्योंकिजोतूं
सत्यबोलेगातोतुझकोकभीदुःखनहोगा औरमिथ्याबोलनेससदातूं

दुःखीहीरहेगा इसमेंकुछसन्देहनहीं इससे हेमित्रसबसाक्षियोंमें
सेउत्तमजोसाक्षीअपनाआत्मा उसकामिथ्याबोलनेसे अपमानतू
मतकर औरजोतूंअपमानस्वात्माकाकरेगा तोकिसीप्रकारसेते-
रीसद्गतिनहींहोगी किन्तुअसद्गतिहोहोगी इससे सत्यहीसाक्षीबो-
ले मिथ्याकभीनहीं ॥ १०८ ॥ ब्रह्मघ्नोयेस्मृतालोकायेचस्त्रीबालघा-
तिनः । मित्रद्रुहःकृतघ्नस्य तेतेस्युर्ब्रुवतोमृषा ॥ १०९ ॥ भ० ब्रह्मघ्न
नामब्रह्मवित्पुरुषोंकामारनेवाला औरवेदोक्तकर्मोंकात्यागीस्त्री
और बालकोंकामारनेवाला मित्रकाद्रोही कृतघ्नइनकोजैसेकुम्भी
पाकादिकदुःखरूपीलोकऔरजन्मप्राप्तहोतेहैं वेतुझकोसबहोवेंजो
तूंसत्यनबोले ॥ १०९ ॥ जन्मप्रभृतियत्किंचित्पुण्यंभद्रत्वयाकृतम् ।
तत्तेसर्वंशुनोगच्छेद्यदिब्रूयास्त्वमन्यथा ॥ ११० ॥ हेभद्रहेसाक्षिन्
जोतूंमिथ्याकहेगा तोतैनेंजितनापुण्यजन्मभरकियाहैवहसबतेरा
पुण्यकुत्तेकोप्राप्तहोय इससे तूंसत्यबोले ॥ ११० ॥ एकोऽहमस्मीत्या-
त्मानंयत्त्वंकल्याणमन्यसे । नित्यंस्थितस्तेहृद्येषपुण्यपापेक्षितामु-
निः ॥ १११ ॥ हेकल्याणतूंजानताहैकिमैंएकहीहूं ऐसातूंमतजा-
न क्योंकिन्यायकारीसर्वज्ञजोपरमेश्वरसबजगतमेंव्यापीनित्यस्थि-
तहै सोईतेरेहृदयमेंभीव्यापकहै तेराजोपापवापुण्यइनसबकोय-
थावत्जानताहै इससे तूंपरमेश्वर औरअधर्मसे भयकरकेसत्यही
बोल ॥ १११ ॥ यमोवैवस्वतोदेवोयस्तवैषहृदिस्थितः । तेनचेदवि-
वादस्ते मागंगांमाकुरून्गमः ॥ ११२ ॥ भ० जो यमनाम यथावत्
न्यायसेव्यवस्थाकरनेवाला वैवस्वतनामसूर्यादिकसबजगत्काप्रका-
शकरनेवाला देवनामस्वप्रकाश स्वरूपसर्वान्तर्यामी तेरेहृदयमें
भीनित्यस्थितहै उसपरमेश्वरसे शत्रुतावाविवाद तुझकोनकरना
होय तोतूंसत्यहीबोलऔरजोतूंपरमेश्वरहीसेविरोधरक्खेगातो
तुझकोकभीसुखनहोगा औरजोतूंसत्यहीबोलेगा तोगङ्गावाकुरु-
क्षेत्रमेंप्रायश्चितकरना वाराजगृहमेंदण्ड अथवापरलोक परजन्म
मेंनरकादिकसबदुःखोंकीप्राप्तितुझकोकभीनहोगी इससे तुझकोअ-

वक्तव्यसत्यहीबोलनाचाहियेमिथ्याकभीनहीं ॥ ११२ ॥ यस्मिन्विद्वान्
ह्निवदतःक्षेत्रज्ञोनाभिशङ्कते । तस्मान्नदेवाःश्रेयांसंलोकेऽन्यंपु-
रुषंविदुः ॥ ११३ ॥ भा० जिसपुरुषकाक्षेत्रज्ञजोहृदयस्थआत्मा वि-
द्वान्नाम सबपापपुण्यकोजाननेवाला सोईअपनाआत्माजिसकर्म
मेंशंकानहींकरताहै जिसमेंभयशङ्का औरलज्जाहोवै उसकर्मको
कभीनहींकरता किसत्याचरणऔरसत्यवचनहीबोलताहै उससेअ-
धिकअन्यधर्मात्मापुरुषकोईनहीं ऐसादेवनामविद्वान्लोगनिश्चि-
तजानतेहैं औरभीमनुस्मृतिकेअष्टमाध्यायमें बहुतसाविस्तारलि-
खाहै सोदेखलेना व्यवहारोंकोनिश्चयकरनेकेवास्तेदूतकाभेजना
औरउनप्रकारोंसेयथावत्निश्चयहोसक्ताहै अन्यथानहीं ॥ ११३ ॥
उपस्थमुदरंजिह्वाहस्तौपादौचपञ्चमम् । चक्षुर्नासाचकर्णौचधनं
देहस्तथैवच । ११४ ॥ भा० उपस्थनामलिंगेन्द्रिय,उदर,जिह्वा,हस्त
पाद,चक्षु,नासिका,कान,धनऔरदेहयेदशदण्डदेनेकेस्थानहैं इ-
न्हींमेंदण्डकास्थापनहोताहै ॥ ११४ ॥ वाग्दण्डंप्रथमंकुर्याद्धिग्द-
ण्डंतदनन्तरम । तृतियंधनदण्डन्तुवधदण्डमतःपरम् ॥ १०५ ॥
भा० प्रथम तो वाग्दण्ड करै कि ऐसा काम कोईदुष्ट न करै दू-
सराधिक्दण्ड कितुझकोधिक्कारहै दुष्टतैंनेनीचकर्मकिया तीसरा
धनदण्डकिउससे धनलेलेना चौथावधदण्डकिउसकोमारडालना
॥ ११५ ॥ अनादेयस्यचादानादादेयस्यचवर्जनात् । दौर्बल्यंख्या-
प्यतेराज्ञःसप्रेत्येहचनश्यति ॥११६॥ राजाजोनलेनेकीवस्तुहैउस-
कोकभीनले औरलेनेकाअपनाजोकरउसमेंसेएककौड़ीभीनछोड़ै
क्योंकिइससेराजाकीदुर्बलताजानीजातीहै उसराजाकाइसलोक
वापरलोकमें नाशहोहोताहै इससेक्याआयाकि राजाअपने अं-
शोंकोप्रजासेयथावत्लेताहै औरप्रजाकेअंशकोकभीग्रहणनहींक-
रता सोईराजाश्रेष्ठहै ॥ ११६ ॥ यस्त्वधर्मेणकार्याणिमोहात्कुर्या-
न्नराधिपः । अचिरात्तंदुरात्मानंवशेकुर्वन्तिशत्रवः ॥ ११७ ॥ भा०
जो राजा अन्याय तथा मोहसे कार्योंको करताहै उसराजाका

शीघ्रहीनाशहोजाताहै क्योंकिउसकोशत्रुलोग शीघ्रहीवशमें कर
लेतेहैं ॥ ११७ ॥ संभोगोदृश्यतेयत्रनदृश्येतागमःक्वचित्। आगमः
कारणंतत्रनसंभोगइतिस्थितिः ॥ ११८ ॥ प्रजामेंभोगनानाप्रकार
का देखपड़े उसको राजा विचारकरै किआमदनी इनकोकहां
से होती है जोआमदनी निश्चितहोय तोकुछ चिन्तानहीं और
जोनौकरीव्यापारवाकुछउद्यमनकरै औरभोगनानाप्रकारकाक-
रताहोय उसकोपकड़केराजादराडदे क्योंकिअवश्ययहचौर्यादिक
कुकर्मकरताहोगा इसकेमालधनकहांसेआया भोगकाकारण
आगमहोहै औरसंभोगकाकारण संभोगकभीनहीं ऐसीमर्यादा
है इसकोराजाअवश्यपालनकरै ॥ ११८ ॥ धर्मार्थंयेनदत्तंस्यात्क-
स्मैचिद्याचतेधनम्। पश्चाच्चनतथातत्स्यान्नदेयंतस्यतद्भवेत् ११९ ॥
भ० किसीनेकिसीकोपठनपाठनअग्निहोत्रादिकयज्ञसुपात्रोंकोदेने
केवास्तेवाअपनभोजनादिकनिर्वाहकेनिमित्तधनदियागया किइ-
तनेकामकेहेतु हमआपको धनदेतेहैं सोआपइतनाही कामइससे
करैं औरपुण्यकेवास्ते दानदियाहोय फिरवहवैसाकर्मनकरै कि
वेश्यागमन,वानशादिकप्रमादउसधनसेकरैतोउससे सबधनलेलि-
याजाय जिसनेकिदियाथावहलेलेऔरजोउसकोवहनदेतोराजा
उसकोपकड़केदराडसेदिलादे ॥ ११९ ॥ धनुःशतंपरीहारोग्रामस्य-
स्यात्समन्ततः। शम्यापातास्त्रयोवापि त्रिगुणोनगरस्यतु ॥ १२० ॥
भ० गांवकेचारोंओर१००सौधनुष्य परिमाणसेमैदानरक्खै धनु-
ष्यहोताहै साढतीनहाथकाअथवाकोईबलवानपुरुषएकदराडाको
लेके खूबबलसेफेंकेजहांवहदराडपड़े उससे फिरफेंके उसस्थानसेभी
तीसरीबारफेंकेजहांवहदराडाजायवहांतकमैदानरक्खै इससेसौ
धनुष्यसेकुछअधिकमैदानरहेगा औरनगरकेचारोंओरतिगुणामै-
दानरक्खै क्योंकिग्रामवानगरमें वायुशुद्धरहेगा इससे रोगथोड़े
होंगे औरपशुओंकोसुखहोगा इसवास्तेअवश्यइतनामैदानरख-
नाचाहिए १२०॥ परमंयत्नमातिष्ठेत्स्तेनानांनिग्रहेनृपः। स्तेना-

नांनिग्रहादस्ययशोराष्ट्रं चवर्द्धते १२१॥ भ० चोरोंकेनिग्रहमेंराजा अत्यन्तयत्नकरै क्योंकिचोरोंऔरदुष्टोंके निग्रहसेराजाकीकीर्त्ति औरराज्यनित्यबढ़तेचलेजातेहैं अन्यथानहीं ॥ १२१ ॥ रक्षन्धर्मेणभूतानि राजावध्यांश्चघातयन् । यजतेऽहरहर्यज्ञैः सहस्रशतदक्षिणैः ॥ १२२ ॥ भ० जोराजाधर्मनामन्यायसेसबभूतोंकीरक्षाकरताहै औरदुष्टोंकोदण्डसेमारताहै वहराजासहस्रोंग्रासैकड़ोंदक्षिणायोंसे अर्थातलक्षऔरकोटिरुपैयोंसेजानों किनित्ययज्ञहीकरताहै क्योंकिराजाकामुख्यधर्मयहीहै श्रेष्ठोंकापालनऔरदुष्टोंकाताडुनकरना ॥ १२२ ॥ अरक्षितारंराजानं बलिंषड्भागहारिणम् । तमाहुःसर्वलोकस्यसमग्रमलहारकम् ॥ १२३ ॥ भ० जोराजाधर्मसेयथावत्प्रजाकापालननहींकरता औरप्रजासेधान्यमें षष्ठांशइत्यादिककरोंकोलेताहै वहराजाकरक्यालेताहैकिसबसंसारकेमलोंकोखाताहै औरसबकेजैसोविष्टादिकोंकोशुद्धिकरताहैचांडाल वैसाहीवहराजाहै ॥ १२३॥ निग्रहेणचपापानांसाधूनांसंग्रहेणच । द्विजातयइवेज्याभिःपूयन्तेसततंनृपाः ॥ १२४ ॥ भ० जोराजापापीपुरुषोंको अत्यन्तउग्रदण्डदेताहै औरश्रेष्ठोंकोरक्षा तथासन्मानकरताहैवहराजासदापवित्रहैऔरस्वर्गकाभागीहैजैसेकिद्विजातिलोगविद्या,तपऔरयज्ञोंसेपवित्ररहतेहैं ॥ १२४ ॥ यःक्षिप्तोमर्षयत्यार्त्तैस्तेनस्वर्गेमहीयते । यस्त्वैश्वर्यान्नक्षमतेनरकंतेनगच्छति ॥ १२५ ॥ भ० जोराजाआर्त्तनामदुःखीलोगगालीतकभीदें तोभीसहनकरताहै सोईराजास्वर्गमेंपूज्यहोताहै औरजोऐश्वर्यकेअभिमानसेकिसीकासहननहींकरता इसीसेवहराजा नरककोजाताहै क्योंकिजोसमर्थहैउसीकोसहनकरनाचाहिए औरजोनिर्बलहै सोतो अपनेहीसेसहनकरेगा ॥ १२५ ॥ राजभिर्धृतदण्डास्तुकृत्वापापानिमानवाः । निर्मलाःस्वर्गमायान्तिसन्तःसुकृतिनोयथा ॥ १२६ ॥ भ० जिनकेऊपरअपराधकरनेसेराजाओंकादण्डहोताहै फिरवेइसलोकमें आनन्दपातेहैं औरमरनेकेपीछे उत्तमस्वर्ग

कोप्राप्तहोतेहैं जैसेकिधर्मात्मासुकृतिलोग॥ १२६ ॥ येनयेनयथांगेनस्तेनोनृषुविचेष्टते । तत्तदेवहरेत्तस्य प्रत्यादेशायपार्थिवः ॥ १२७॥ भा० जिस२ अंगसेजैसा२ कर्ममनुष्योंकेबीचमेंकरैं चोरलोग उसअंगको अर्थातजिनसे चोरीकरनेकेवास्ते चेष्टाकरैं उसकानेत्र निकालदें जोजीभसेचोरीकाउपदेशकरैतोउसकोजीभकाटले पग औरहाथसे किसीकीवस्तुउठावै तोराजाउसकापग,हाथ काटले क्योंकिएककोदण्डदेनेसे सबलोगउसदुष्टकर्मको छोड़देतेहैं दण्ड जोहोताहै सोसबजगत्‌केमनुष्योंकेवास्ते उपदेशहै॥ १२७ ॥ अनेनविधिनाराजाकुर्वाणस्तेननिग्रहम् । यशोऽस्मिन्प्राप्नुयाल्लोकेप्रेत्यचानुत्तमंसुखम्॥ १२८॥ भा० इसविधिसेचोरोंकानिग्रहकरता है वहराजाइसलोकमेंअत्यन्तकीर्त्तिकोप्राप्तहोताहै औरमरकेअत्यन्तउत्तमस्वर्गकोप्राप्तहोताहै इससे चोरोंकानिग्रह अत्यन्तप्रयत्नसेराजाकरै॥ १२८ ॥ वाग्दुष्टात्तस्कराच्चैव दण्डेनैवचहिंसतः । साहसस्यनरःकर्त्ता विज्ञेयःपापकृत्तमः॥ १२९ ॥ भा० जोपुरुष दुष्टवचन कहना सिखलाता वा चोरीका उपदेश करताहै और किसीकोमरवाडालताहै छलकपटसेवहसाहसिक पुरुषकहाताहै जैसेकिगुंडेऔरवैराग्यादिकसंप्रदायवाले वेसबपापियोंमेंभी बड़ेपापीहैं क्योंकिपापीतो आपहीदुष्टहोताहै औरजितनेदुष्टउपदेश करनेवालेहैं वेसबजगत्‌कोदुष्टकरदेतेहैं इससे ॥ १२९॥ नमित्रकारणाद्राजा विपुलाद्वाधनागमात् । समुत्सृजेत्साहसिकान्सर्वभूतभयावहान्॥ १३०॥ भा० जितनेपुरुषसाहसिकनाम दुष्टकर्मकरने औरकरानेवालेहोंय अर्थातअधर्मकाउपदेश,चोरी,परस्त्री,वेश्यागमनऔरजूवाइनकोकरनेवालेसबसाहसिकगिनलेनाउनकोमित्रकारणसे औरउनसेबहुतधनलाभहोताहोय तोभीइनकोराजा नछोड़े क्योंकिसबभूतोंकोभय देनेवालेवेहीहैं ॥ १३० ॥ गुरुंवाबालवृद्धौवाब्राह्मणंवाबहुश्रुतम्। आततायिनमायान्तंहन्यादेवाविचारयन् ॥ १३१ ॥ गुरुवापुत्रअथवापिताबालकवावृद्धवाब्राह्म-

य जिसनेब्राह्मणोंको पढ़ाहुवा औरबहुश्रुतनाम सब शास्त्रकोसुनने
वाला वहजोआततायीनामधर्मकोछोड़के अधर्ममेंप्रवृत्तभयाहोय
तोइनपुरुषोंको मारहीडालनाउचितहै इसमेंकुछविचारनकर-
ना क्योंकिदण्डहीसे सबशिष्टहोजातेहैं बिनादण्डकोईनहीं इस्से
सबकेऊपरदण्डकाहोनाउचितहै किकोईअपराधीपुरुषदंडकेबि-
नारहनेनपावै ॥ १३१ ॥ परदाराभिमर्षेषु प्रवृत्तान्नृन्महीपतिः ।
उद्वेजनकरैर्दण्डैश्चिन्हयित्वाप्रवासयेत् ॥ १३२ ॥ म० जोपुरुषपर
स्त्रीगमनमेंप्रवृत्तहोवै वाअन्यपुरुषोंसेस्त्रीलोगगमनकरैं उनकेल-
लाटमेंचिन्हकरकेदेशबाहरनिकालदे जोपहिलेचोरीकरै उसके
ललाटमेंकुत्तेकेपंजाकीनांई लोहेकाचिन्ह अग्निमेंतपाकेलगादे
किमरणतकवहचिन्हनबिगड़े फिरजोदूसरीबार वहीपुरुषचोरी
करै तोहाथवापगउसकाराजाकाटडालै औरफिरभीचोरीकरैवा
करावै तोपहिलेदिननाककाटले दूसरेदिनकान तीसरेदिनजीभ
चौथेदिननखनिकालले पांचवेंदिनआंखछठवेंदिनशिरच्छेदनक-
रदे सबमनुष्योंकेसामनेजिस्से किफिरचोरीकीइच्छाभीकोइनक-
रै औरजोपरस्त्रीवावेश्याकेपासगमनकरैअथवापरपुरुषोंसेस्त्रीलोग
गमनकरैंउनकेललाटमेंपुरुषकेलिंगइन्द्रियकाचिन्हअग्निमेंतपाके
लगादे जिस्से कि मरणतक लज्जाऔरअप्रतिष्ठा उनकोहोवै उ-
नकोदेखकेऔरकोईइनकर्मोंमेंप्रवृत्तनहोयक्योंकि ॥ १३२ ॥ तत्स-
मुत्थोहिलोकस्यजायतेवर्णसंकरः। येनमूलहरोधर्मःसर्वनाशायक-
ल्पते ॥ १३३ ॥ म० इन्हीकर्मोंसेप्रजाके मनुष्यवर्णसंकर औरपापी
होजातेहैं जिस्से किमूलसहित धर्मनष्टहोजाताहै इस्से इनकेनि-
ग्रहमेंराजाअत्यन्तयत्नकरै ॥ १३३ ॥ भर्तारंलंघयेद्यातुस्त्रीज्ञातिगु-
णदर्पिता । तांश्वभिःखादयेद्राजासंस्थानेबहुसंस्थिते ॥ १३४ ॥ म०
जोस्त्रीजातिऔरगुणोंकेअभिमान अथवामूर्खतासे बिवाहितपुरुष
कोछोड़के अन्यपुरुषसेव्यभिचारकरतीहै उसकोनगरग्रामवादेश
कीस्त्रियोंऔरपुरुषोंकेसामनेकुत्तोंसेचिथवाडालै इसरीतिसेउस-

कामरणहोजाय जिस्से कि अन्यकोईस्त्रीऐसाकामकभीनकरे १३४॥ पुमांसंदाहयेत्पापं शयनेतप्तआयसे । अभ्यादध्युश्चकाष्ठानि तत्रद ह्येतपापकृत् ॥ १३५ ॥ भ० जोपुरुषपरस्त्रीसेगमनकरे उसकोलो-हेके पर्यंक अग्निसेतपा औरनीचेकाष्ठोंसे अग्निकरके व्यभिचार रूपपापकरनेवालेपुरुषकोसोलादे उसीकेऊपरउसकाशरीरदग्ध होजाय और मरजाय यह भी कर्म सबपुरुष और स्त्रियोंके सा-मनेही होना चाहिए जिस्से कि सबकोभय होजाय फिर ऐसा कामकोईपुरुषनकरे ॥ १३५ ॥ यस्यस्तेनःपुरेनास्तिनान्यस्त्रीगोनदु-ष्टवाक् । नसाहसिकदण्डघ्नौसराजाशक्रलोकभाक् ॥ १३६ ॥ भ० जिसराजाकेपुर वाराज्यमें चोर परस्त्रीगामी दुष्टवचनकाकहने-वाला साहसिकऔरदण्डघ्नअर्थातजोदण्डकोनमाने येसबनहीं हैं वहराजाशक्रलोकअर्थातस्वर्गकेराज्यकाभागीहोताहै अन्यथान-हीं ॥ १३६ ॥ एतेषांनिग्रहोराज्ञः पंचानांविषयेस्वके । साम्राज्य कृत्सजात्येषुलोकेचैवयशस्करः ॥ १३७ ॥ भ० जिसराजाकेराज्य में पूर्वोक्तपांचदुष्टपुरुषनहींहोते वहराजासबराजाओंके बीचमें संम्राट्चक्रवर्तीहोनेकेयोग्यहै औरलोगोंमेंबड़ीकीर्तिकाकरनेवा-लाहै ॥ १३७ ॥ दास्यंतुकारयन्लोभाद्ब्राह्मणःसंस्कृतान्द्विजान् । अनिच्छतःप्राभवत्याद्राज्ञादण्ड्यःशतानिषट् ॥ १३८ ॥ भ० जोब्रा-ह्मणभीद्विजलोगोंसेसेवाकरातेहैं उनकीइच्छाकेबिनाउनकोराजा छःसैमुद्रादण्डकरै क्योंकिसेवाकरनाबुद्धिमान् श्रेष्ठलोगोंकाधर्म नहीं वहव्यवहार शूद्रहीकाहै क्योंकिजोमूर्खपुरुषहै वहअन्यका कामबिनासेवाकेक्याकरेगा १३८॥ अहन्यहन्यवेक्षेतकर्मान्ता-न्वाहनानिच । आयव्ययौचनियतावाकरान्कोशमेवच ॥ १३९ ॥ भ० नित्य २ राजा सबराज कर्मोंमें अपने अधिकारी अमात्य चेष्टा वाकर्मवाहन, हस्ती,अश्व,रथ, औरनौकादिक आयनाम पदा-र्थोंकाआना व्ययनामपदार्थोंकाखर्च पदार्थोंकासमूहशस्त्रोंका समूहऔरधनकाकोष इनकोयथावत्देखतारहै किकोईपदार्थवा

कोईकर्मनष्टवाअन्यथानहोय ॥ १३९ ॥ एवंसर्वानिमान्राजाव्यवहारान्समापयन्। व्यपोह्यकिल्विषंसर्वंप्राप्नोतिपरमांगतिम् १४०॥ भ० इसप्रकारसेसबव्यवहारोंको न्यायपूर्वकजोराजाकरताहै वह सबपापोंसेछूटके परम गतिजोमोक्ष उसको प्राप्त होता है जिस व्यवहारको कियाचाहै उसकोसम्यक् विचारकेकरै जिस्से किवह कार्यपूर्णहोजाय अपूर्ण कभीनरहै ॥ १४० ॥ अनंशौक्लीवपतितौजात्यंधवधिरौतथा। उन्मत्तजड़मूकाश्च येचकेचिन्निरिन्द्रियाः॥ १४१ ॥ भ० क्लीवनामनपुंसकपतितनामपापीजन्मसेअंध तथावधिरउन्मत्तनामपागलजड़नाम मूर्ख,मूकऔरजोविद्याहीनवाअजितेन्द्रिय,काम,क्रोधादिकोंमेंये सबदायभागनपावैं क्योंकियेदायभागपावेंगे तोसबपदार्थोंकाव्यर्थनाशकरदेंगे इस्से राजाकोयह बातअवश्यकरनीचाहिए अपनेपुत्र वाप्रजाके सन्तानोंको जितने पदार्थराज्यऔरधनादिकउनमेंसेकुछनदिलावै औरजोकोईमूर्खतावामोहसेउनकोदायभागदेवै तोउसकोराजादण्डदे औरनपुंसकादिकोंसेदियेहुएपदार्थकोलेकेयथावत्रक्षाकरै क्योंकिमूर्खोंकेहाथपदार्थका अधिकारआवेगा तोशीघ्रसबकानाशकरके आप होदरिद्रबनजांयगे फिरराजाकेराज्यमें सबदरिद्रताछायजायगी फिरराजाकोभीकुछप्राप्तिप्रजासेनहोसकेगी इस्से राज्यऔरधनादिकजितनेप्रजाओंकेपदार्थहैं उनपदार्थोंकोराजाकभीनदे और नदिलावै जोसम्यक्विद्या,बुद्धिऔरविचारमें उनपदार्थोंकोरक्षामेंयोग्यहोय उसकोसम्यक्परीक्षाकरके उनपदार्थोंकास्वामीउसकोकरदेअन्यथानहीं ॥ १४१ ॥ सर्वेषामपितुन्याय्यंदातुंशक्त्यामनीषिणा। ग्रासाच्छादनमत्यन्तंपतितोह्यददद्भवेत् ॥ १४२ ॥ परन्तु उननपुंसकादिकोंकोअपनेसामर्थ्यकेयोग्य वहदायभागलेनेवाला भोजन,वस्त्रऔरउनकास्थानादिकसेयोगक्षेमयथावत्करै जोवह भोजनादिकभीउनकोनदेतोपतितहोजाय औरराजाउसकोदण्ड भीदे इस्से क्याआया किभोजनऔरवस्त्रादिकोंकेविनावेदुःखीनर-

हैं औरजोउनकापुत्रयोग्यहोय तोउसकेपिताकेदायभागकोराजा
दिलावै इसबातकोराजाप्रयत्नसेकरै अन्यथाराज्यवृद्धिनहींहोगी
राजाअपनीप्रजाकोरक्षा औरहितमें सदाप्रवृत्तरहै औरप्रजाभी
राजाकीरक्षातथाहितमेंप्रवृत्तरहै जोप्रजाकोआपत्कालआवै तो
राजासबप्रयत्नोंसेप्रजाकीरक्षाकरै अर्थातराजाकोआपत्कालकि-
सीप्रकारकाआवै तोप्रजास्थसबमनुष्यराजाकासबप्रकारसेसहाय
करैं क्योंकिप्रजाराजाकेपुत्रकीनाईंहोतीहै पिताकोअवश्यचाहि-
एकिअपनीप्रजाकीसदारक्षाकरै तथाप्रजापुत्रकीनाईंजैसेकिपिता
कोपुत्ररक्षाकरताहै वैसोराजाकी प्रजारक्षाकरै औरजिसबातसे
प्रजाकोपीड़ाहोय उसबातकोराजाकभीनकरै तथाराजाकोजिस
बातसे दुःखहोय उसबातको प्रजाकभीनकरै जैसेकिजिनपशुओं
वाजिसपदार्थोंसे सबप्रजाकाउपकारहोताहै उसकाराजाकभीवि-
नाशनकरै जैसेकिगाय,भैंस,छेरी,बैलऔरऊंटतथागधादिकइ-
नकोकभीनमारै औरनमरवावै क्योंकिदुग्ध,घृत,अन्नादिकऔर
सबव्यवहारइन्होंसे सब मनुष्योंकाचलताहै तथा राजाकाभी इ-
नका मारना दोनों को अनुचितही है राजा भृत्य तथा युद्ध से
निवृत्तकभीनहोवे क्योंकियुद्धसे निवृत्तहोगा तोउसीवक्तशत्रुलोग
सबपदार्थोंकोछीनलेंगे तथामारडालेंगेवाअत्यन्तदुःखदेंगे जब
युद्धकासमयआवै तबराजाजल,अन्न,मनुष्य,शस्त्र,यानसबपदार्थों
कोपूर्त्तिरक्खे जिससे कि किसीपदार्थकेबिना दुःखकिसोकोनहोवे
औरयुद्धमेंयुद्धकाआचारविचाररक्खे युद्धकरतेभीजांयऔरखाते
पीतेभीजांय कुछ शंका न रक्खे उस वक्त जूते, वस्त्र, शस्त्र, धा-
रणकियेरहैं युद्धऔरभोजनभीकरतेजांय ऐसानकरैंकिवस्त्र,जूतेश-
स्त्र इत्यादिक सबछोड़के हाथगोड़धोके भोजन करैं तबतक शत्रु
लोगमारडालैं देखनाचाहिएकियुधिष्ठिरजीकेराज्यसूय औरअ-
श्वमेधयज्ञमें सबसमुद्रपार टापूभूगोलकेसबराजाआयेथे वेसब
ब्राह्मण,क्षत्रियोंकेसाथ एकपंक्तिमें भोजनकरतेथे औरविवाहभी

उनकापरस्पर होताथा जैसे कि काबिलकन्धारकीकन्या गान्धारी, धृतराष्ट्रसे विवाही गई थी तथा माद्रीईरानदेशकीराजाकीकन्या पांडुसे विवाही गई थी अर्जुनके साथ नाग अर्थात् अमेरीकाके लोगोंकी कन्या विवाही गई थी इत्यादिक व्यवहार महाभारतमें लिखेहैं और शूद्र ही सब ब्राह्मण और क्षत्रियादिकोंके घरमें पाककरानेवाले थे जिनकानाम सूद ऐसा प्रसिद्ध था जो शूद्रपाककरनेवालाहोताहै उसकी सूद ऐसी संज्ञा होती थी क्योंकि ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य, वेतोविद्यापठन और पाठन तथा नाना प्रकार के पुरुषार्थ और शिल्प विद्यासे पदार्थों का रचन इन्हीमें सदा प्रवृत्त रहैं रसोई आदिकसेवा सबलोगोंकी शूद्रहीकरैं अर्थात ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्य इनको भोजन एकताही होनी चाहिए जिस्से कि परस्पर प्रीति होवै और भोजनके बड़े २ बखेड़े हैं वेसबनष्टहोजांय कोई परदेश को जाताहै तब पाचादिकोंका भार गधेकीनांई उठायाकरताहै तथा मांजना और चौका देना अन्न, काष्ठ, अग्न्यादिकको अपनेहाथसेले आना और बनाना गमनसे बड़े पीड़ितहोकेआये फिर भी समयके ऊपर भोजनकानहोना इस्से बड़े दुःखहोतेहैं इस्से ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्य इनके एकभोजन होनेसे किसीको किसी प्रकारकादुःखनहीं होगा क्योंकि शूद्र ही सबकरदेगा और खिलावैपिलावैगा परन्तु ब्राह्मणादिकोंहीके पदार्थ सब पाचादिक होवैं शूद्रके घरकेनहीं शुद्धहोकेबनावै और ब्राह्मणादिक विद्यादिकश्रेष्ठपदार्थों की उन्नति करैं जिस्से कि सब सुख होवैं इस्से इस बातको राजालोग अवश्यकरैं इसके बिना उनको उन्नति नहीं होनीहै देखना चाहिए भोजनके पाखण्डोंसे आर्यावर्त्त देशकानाश होगया ब्राह्मणादिक चौकादेनेलगे ऐसा चौकादिया कि राज्य, धन और स्वतन्त्रादिक सुखोंके ऊपर चौकाहीफेरदिया किसब आर्यावर्त्त देशको सफाचट करदिया इस्से राजालोगोंको चाहिए कि व्यर्थ पाखण्ड प्रजामें न होनेदेवैं विवाहकाजिसकालमें जैसा पूर्व नियम लिखाहै और परीक्षा उसी प्रकारसे

राजाकरवावै ब्रह्मचर्याश्रमकन्या वा पुरुषकाजनहो।जाय तथापिविवाहकोआज्ञाराजादे कियहीसब सुख औरधर्मका मूलहै अन्यनहीं सबदेशदेशान्तरस्थपुरुषोंसेभोजनविवाह औरपरस्परप्रीतिरक्खैं प्रजामें जितनेधर्मात्मा,बुद्धिमान्,पक्षपातरहितऔरसबविद्याओंमेंपूर्ण इनकोसम्मतिसेसबकामऔरसबनियमकियाकरैं कि जिसकेऊपर सबप्रजाप्रसन्नहोवैं वहीराजाहोय उसदेशकेसबप्रजा उसराजाको प्रसन्नरक्खैं ऐसेसबपरस्पर विद्या और सबगुणोंकीउन्नतिकरैं अर्थात्राजाऔरसभाकीसम्मतिकेबिना प्रजामें कुछकर्मनहोवै औरप्रजाकीसम्मतिकेविनासभाऔरराजाकुछकर्मनकरैं किन्तुदोनोंकीसम्मतिकेबिनाकुछराजकार्यनहोनेपावै क्योंकिइसकेहोनेसे उसदेशमेंकभीदुःखके दिननआवेंगे सदाआनन्दहोरहेगा ॥ १४२ ॥ चोरदोप्रकारकेहोतेहैं एकतोप्रसिद्धदूसराअप्रसिद्ध प्रसिद्धवेहोतेहैं किहाटघाटडांकू औरपाखण्डी जैसेकिवैराग्यादिक मन्दिररचके सबमनुष्योंसेफुसलाने वादुष्टउपदेशबुद्धिभ्रष्टकरके धनादिकपदार्थोंकोहरणकरलेतेहैं यहांतककिमनुष्योंकोमूड़केचेलाबनालेतेहैं इनकोराजादण्डसेनिष्टत्तकरदे। पूर्वपक्षइनकोदण्डनदेनाचाहिए क्योंकिवेतोप्रसन्नतासेधनदेतेऔर लेतेहैं औरप्रसन्नतासेउनकोदेतेहैं इनकेऊपरदण्डकाहोनाउचितनहीं। उत्तर—इनकोअवश्यदण्डदेनाचाहिए क्योंकिजैसेकोई पुरुषछोटेबालककोफुसलाके वाकुछपुष्पफलवाखानेकोचीजहाथमेंदेके वस्त्र,आभूषण,वाधनादिक पदार्थोंको प्रसन्नतासेलेलेता है औरबालकभीउसकोप्रसन्नतासेदेदेताहै फिरलेकेवहभागजाहै फिरउसकेऊपरराजादण्डकरताहीहै वैसेहीजितनेप्रजामेंविद्या, बुद्धि औरबिचारहीनपुरुषहैं वेबालककीनांईहैं उनसेभी प्रसादचरणोदक,कण्ठी,माला,छापाऔरतिलक एकादश्यादिक महात्मसुनाना तीर्थनामस्मरण औरस्तोत्र,पाठइत्यादिकोंकोसुनाना इत्यादिकछलधनादिसेकपदार्थोंकोलेतेहैं फिरउनकेऊप-

रदण्डक्योंनकरनाचाहिए किन्तुअवश्यहीकरनाचाहिए जोरा-
णादिनकोदण्डनदेगा तोउसकीप्रजाभीभ्रष्टहोजायगी औरराज्य
काभीनाशहोजायगा क्योंकिवेअधर्मकरतेहैंऔरकरातेहैं नामर-
खतेहैंधर्म और वेदका चलातेहैं पाखण्डको इस्से इसगालको
राजाअवश्यछेदनकरदे किकोईउसकेदेशमेंपाखण्डीनरहैऔरन
होनेपावै वेपाषाणादिकोंकोमूर्त्तियोंकोबनाऔरमन्दिरकोरचके
उनमेंउनमूर्त्तियोंकोवैठाके उनकानामशिवनारायणादिकरखते
हैं कलावत्तू झूठेवा सच्चे आभूषणोंकोपहिराके फिरघड़ी, घंटा,
नगारा, रणसिंघाऔरशंखइत्यादिकोंकोबजाके मूर्खोंकोमोहित
करके सबधनादिकपदार्थोंको हरणकरलेतेहैं जैसेकिडांकूलोग
नगारादिकबजाकेप्रसिद्धधनहरलेतेहैं इनठगोंकोदण्डकेविनाक-
भीनछोड़नाचाहिए क्योंकि ॥ अज्ञोभवतिवैबालः पिताभवतिम-
न्त्रदः । अज्ञंहिबालमित्याहुःपितेत्येवचमन्त्रदम् ॥ १४३ ॥ म०
इसमेंमनुभगवान्काप्रमाणहै किजोअज्ञानीहैसोईबालकहै और
ज्ञानीअर्थात्सत्यउपदेश औरविचारकाकरनेवालासोईपिताहो-
ताहै इस्से क्याआयाकिजोअज्ञानीहै उसकोबालककहनाचाहि-
ए ॥ १४३ ॥ जितनेदुकानदारप्रसिद्धचोरउनकेऊपरभीराजाअत्य-
न्तदृष्टिरक्खै किवेप्रसिद्धचोरीकभीनकरनेपावैं ॥ तुलामानंप्रती-
मानंसर्वंचस्यात्सुलक्षितम् । षट्सुषट्सु चमासेषुपुनरेवपरीक्षये-
त् ॥ १४४ ॥ म० तुलानामतराजूकोदण्डीऔरतराजूकोपरीक्षाक-
रै पक्ष२मास२छठे२मास क्योंकिदुकानदारलोगवीचकासूत.
औरदोनोंपल्ले डण्डीकेवीचमें छेदकरके पाराभरदेतेहैं उस्से लेते
हैं तबअधिकलेतेहैं औरदेतेहैं तबन्यूनदेतेहैं जबबुद्धिमान्आव
तबऔरभाव जबमूर्खआयतबऔरभावऐसाकरकेमूड़लेतेहैं प्रती-
मानअर्थातप्रतिमानाम छटांकआदिकउसकोघटावढ़ालेतेहैं उ-
स्से भीअधिकलेतेहैंऔरन्यून देतेहैं फिरमहाजनऔरसाहूकार
बनेरहतेहैं परन्तु वेबड़े ठगहैं जैसेकिव्याजअर्थात्एकादशीभाग·

वतादिकोंकीकथाकरनेवाले औरमन्दिरोंकेपूजारीऔरसम्प्रदाय वाले, वैरागी, शैव, वाममार्गी, आदिकपाखण्डतमहात्मा औरसिद्ध येतोऊपरसेबनेरहतेहैं परन्तुउनकोसबजगत्केठगनेवालेजानना वैश्यऔरयेसबप्रसिद्धचोरहैं इनकोदण्डसेराजाउपदेशकरदे ऐसा दण्डदे किकोईइसप्रकारकामनुष्य प्रजामेंनरहनेपावै तभीराजा औरप्रजाकीउन्नतिहोगी अन्यथानहीं पुराणशब्द विशेषणवाची शब्दहै जैसेकिपुरातनप्राचीनसनातनशब्दहैं इनकेविरोधीनवीन अद्यतनअर्वाचीनइदानीन्तनशब्दविशेषणवाचीहैं कियहचोजन- योहै अर्थात्पुरानीनहीं ऐसेपरस्परविशेषणविरोधसेनिवर्तकहो- तेहैं तथादेवालय, देवमन्दिर, देवागार, देवायतन इत्यादिकनाम यज्ञशालाकेहैं क्योंकिजिसस्थानमेंदेवोंकोपूजाहोय उसीकेएनाम हैं देवहैंवेदकेसबमन्त्र औरपरमेश्वर क्योंकिपरमेश्वरसबकाप्र- काशकहैऔरवेदकेमन्त्रभीसबपदार्थविद्याओंकेप्रकाशनेवालेहैंइ- स्सेइनकानामदेवहैसोईशास्त्रमेंलिखाहै ॥ यत्रदेवतोच्यतेतत्रतल्लि- ङ्गोमन्त्रः। यहनिरुक्तकावचनहै इसकायहअभिप्रायहैकिजहांर देवताशब्दआवैवहांरमन्त्रहीकोलेना परन्तु कर्मकांडमेंउपासना और ज्ञानकांडमें परमेश्वरहीदेवहै जैसेकिअग्निमीलेपुरोहित मित्यादिकऋग्वेदकेमन्त्रहैं तथाअग्निर्देवताइत्यादिकयजुर्वेदकेम- न्त्रहैं इसमेंअग्निदेवताहै इस्से अग्निशब्ददेवताविशेषणपूर्वकजिस मन्त्रमेंहोगा उस्से जो अग्निशब्दवालामन्त्रहोवै उसको लेलेना जैसाकि अग्निमीलेपुरोहितमित्यादिक यहोबातव्यासजीकेशिष्य जैमिनीने कर्मकांडके ऊपर पूर्वमीमांसा एकदर्शन शास्त्रबनाया है उसमेंविस्तारसेलिखीहैकिमन्त्रहीदेवहैं औरकोईनहीं उसमें इसप्रकारकेदोषलिखेहैं जैसे ॥ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिध- र्माणिप्रथमान्यासन्। इत्यादिकमन्त्रोंसेभिन्नजोब्रह्मादिकदेव उ- नकेभीपूजनकाअत्यन्तनिषेधकियाहै सोठीकहीकियाहै क्योंकिब्र- ह्मादिकदेवनित्यपञ्चमहायज्ञ औरअग्निष्टोमादिकयज्ञोंकोकरते

हैं तबवेयजमानहोतेहैं फिरउनसेअन्यदेवकौनहैं किब्रह्मादिकोंके
यज्ञमेंजिनकोपूजाकोभाग वाभागलेवैंउनकेसिवायअन्यकोईदेवदे
हधारीनहींहै औरकोईकहैकिउन्होंसेअन्यदेवहैं तोउनसेपूछाजा-
ताहै किजबयज्ञकरैंगेतबउनसेआगेभीतीसरेदेवमानेंजांयगेतो-
सरेजबयज्ञकरैंगेतबचौथेइनसेआगेदेवमानेंजांयगे ऐसेहीअनव-
स्थाउनकेमतमेंआवेगी इससेपरमेश्वरऔरमन्त्रोंहीकोदेवमानना
चाहिए औरअन्यकोनहीं जबब्रह्मादिकविद्या,सिद्धज्ञान,योगऔर
सत्यवचन,गुणवालोंकानिषेध जैमिनीजीनेकिया तोपाषाणादिक
मूर्त्तियोंकोपूजाकानिषेधअत्यन्तहोगया क्योंकिपाषाणादिकमूर्त्ति
योंमेंजोदेवभावकरनाहै सोतोअत्यन्तपामरपनाहै इसबातमेंकुछ
सन्देहनहीं औरजोकहैकिवेहैतोपाषाणादिक परन्तु मेरेभावसे
देवहोजातेहैंऔरफलभीदेतेहैं तोउनसेपूछनाचाहिए किआपका
भावसत्यहैवामिथ्याजोवेकहैं किसत्यहैतोदुःखकाभावऔरसुखका-
अभाव कोईनहींचाहता फिरउनकोदुःखकाभाव औरसुखकाअ-
भावक्योंहोताहै जोअन्यपदार्थमेंअन्यकाभावकरनाहै सोमिथ्याही
है जैसेकिअग्निमेंजलकाभावकरकेहाथडाले तोहाथजलहीजाय-
गा इससे ऐसाभावमिथ्याहीहै औरजोपाषाणादिकोंको पाषाणा-
दिकमानना औरदेवोंको देवमानना यहभावतोसत्यहै जैसाकि
अग्निकोअग्निमानना औरजलकोजल इससे क्याआयाकि जोजै-
सापदार्थहै उसकोवैसाहीमाननाअन्यथानहीं फिरउनसेपूछना
चाहिएकिआपलोगभावसे पाषाणादिकोंकोदेवबनालेतेहो और
उनसेअपनीइच्छाकेयोग्यफललेलेतेहो तोउसभावसेआपहीदेव
क्योंनहींबनजाते औरचक्रवर्त्यादिक राज्यरूपफलको क्यों नहीं
पातेतथासबदुःखोंकानाशरूपफलक्योंनहींहोता फिरवेऐसाकहैं
कि सुखवादुःखऔरचक्रवर्त्यादिक राज्योंकापाना कर्मोंका फल
है यहबाततोआपलोगोंकोसत्यहै किजैसाकर्मकरैवैसाहीफलहो-
ताहै फिरआपलोगोंनेकहाथाकि पाषाणादिकमूर्त्तियोंसेफलमि-

जाताहै यहबातआपलोगोंकीझूठीहोगई पूर्वपक्ष जबतकवेदमन्त्रों
सेप्राणप्रतिष्ठानहींकरते तबतकतोवेपाषाणादिकहीहैं औरप्राण
प्रतिष्ठाकेकरनेसे वेदेवहोजातेहैं उत्तर यहबातभी आपलोगोंकी
मिथ्याहै क्योंकिवेद वाऋषिमुनियोंकेकिये शास्त्रोंमें प्राणप्रतिष्ठा
कापाषाणादिक मूर्त्तियोंमें एकअक्षरभीनहीं तोमन्त्र कैसेहोंगे
जिन २ मन्त्रसेप्राणप्रतिष्ठाकर्तेकरातेहो उस२मन्त्रकाआपलोग
अर्थभीनहींजानते जैसाकि प्राणदा,अपानदा,उद्बुध्यस्वाग्ने,इस
लेकेओम् प्रतिष्ठयहांतकएकमन्त्रहै सहस्रशीर्षापुरुषः शन्नोदेवी-
रभिष्टय प्राणंददातीतिप्राणदःपरमेश्वरः। इत्यादिकअर्थ मन्त्रों
काहै इनपाषाणादिक मूर्त्तियोंमेंप्राण प्रतिष्ठाकरना इसकालेश
मात्रभीसम्बन्धनहीं औरप्राणाइहागच्छन्तुसुखंचिरंतिष्ठन्तु स्वा-
हा।यहतोमिथ्यासंस्कृतकिसीनेरचलियाहै औरवेदोंकेमन्त्रमेंभी
आपलोगोंकेकहनेकीरीतिसेदोषआतेहैं किवेदकेमन्त्रोंसेतोप्राण
प्रतिष्ठाकीजाय फिरप्राणोंका मूर्त्ति में लेशभी नहीं देखपड़ताहै
इसेयहबातभीनकरनीचाहिएक्योंकिजोप्राणमूर्त्तिमेंआतेतोमूर्ति
चेतनहोजाजातीसोतोजैसीपूर्वजड़थीवैसीहीजड़सदारहतीहैपा-
षाणादिकमूर्त्तियोंमेंप्राणकेजानेऔरआनेकाछिद्रभीनहींपरंतुमनु-
ष्यजोमरजाताहैउसकेशरीरमेंसबछिद्रमार्गप्राणकेजानेऔरआने
केयथावत्हैं उसमेंप्राणप्रतिष्ठाकरकेक्योंनहींजिलालेतेहैं किकोई
मनुष्यकभी मरनेहीनपावैऐसाकिसीकाभीसामर्थ्य नहीं इससे यह
बातअत्यन्तमिथ्याहै पूजानामसत्कारहै देवपूजाहोमहीसे होती
है अन्यप्रकारसेनहीं क्योंकिमनुआदिकऋषिलोगोंकेग्रन्थोंमेंऔर
वेदमेंयहीबातलिखीहै॥स्वाध्यायेनार्चयेतर्षीन्होमैर्देवान्यथाविधि
इसपूर्वोक्तश्लोकसेहोमहीसेदेवपूजायथावत्करनीचाहिएऐसासि-
द्धभयाकिहोमजोहैसोईदेवपूजाहै औरजिनस्थानोंमेंहोमहोवैउ-
न्हीकादेवालयादिकनामजानना॥ यद्वित्तंयज्ञशीलानांदेवस्वंत-
द्विदुर्बुधाः। अयज्वनान्तुयद्वित्तमासुरस्वंप्रचक्षते॥ म० जोयज्ञही

को नित्यकरता है उसका जो धन सो देवशब्दवाच्य है जो कोई यज्ञके वास्ते अन्यपुरुषोंसे धन लेके भोजनछादनादिक उस्से करै और यज्ञ को न करै उसका नाम देवल है ॥ कुत्सितो देवको देवलकः कुत्सित इत्यनेन कन्प्रत्ययः। जो यज्ञके धनकी चोरी करके भोजन,छादनादिक करै उस्से परस्त्रीगमन वा वेश्यागमन भी करै उसको देवलक कहते हैं यह देवलसे भी दुष्ट है इन दोनोंका श्रेष्ठकर्मों में देवपितृकर्मादिक यज्ञोंमें निषेध है कि इनको निमन्त्रण वा अधिकारक भी न देना ऐसे ही नाममन्त्रस्मरण छादशी इत्यादिककाल काश्यादिकदेश, इनका जो माहात्म्य जिसकिसीने लिखा है वह सब मिथ्या ही है क्योंकि वेदादिक सत्यशास्त्रोंमें इनका कुछभी लेख नहीं देखनेमें आता और युक्तिसेभी यह प्रतिमापूजनादिक मिथ्या ही है ऐसे व्यवहारोंमें राजा और प्रजा को अमम होसक्ता है इस निमित्त लिखा गया कि राजा और प्रजा इन भ्रमोंमें प्रवर्त न होवैं न किसीको होने दें जितनी युद्धकी विद्या उसको यथावत् जानै और प्रजाको जनावैं नानाप्रकारकी पदार्थविद्या तथा शिल्पविद्याका भी राजा और प्रजा सदा अत्यन्त प्रकाश करैं युद्धविद्या के दो भेद हैं एक शस्त्रविद्या,दूसरी अस्त्रविद्या शस्त्रविद्या यह कहाती है कि तलवार बंदूक तोप लकड़ी पाषाण और मल्लविद्या इन्होंका यथावत् जानना और चलाना दूसरे के शस्त्रोंका निवारण करना और अपनी रक्षा करनी तथा शत्रु को मारना और अस्त्रविद्या यह कहाती है कि जो पदार्थोंके परस्पर मेलन और गुणोंसे होती है जैसा कि आग्नेयास्त्र ऐसे पदार्थोंका रचन करैं कि वायुके स्पर्शसे उस्से अग्नि उत्पन्न होवै फिर उसको फेंकनेसे जो पदार्थ उसके समीप होय उसको वह भस्म ही कर देता है जैसे दीपसलाकाको घसनेसे अग्नि उत्पन्न होता है वैसे ही सब अस्त्रविद्या जाननी इस प्रकारको आर्यावर्तमें पूर्वकृत पदार्थरचनेकी उन्नति थी जैसे कि विशल्या एक औषधि राजा लोग रखते थे कैसा ही बाव शस्त्रसे होजाय परन्तु उसका घसके लगाया उसी वक्त वह घाव पूरजाय और उसमें पीड़ा भी कुछ नहीं होती थी

तथाविमानअर्थातआकाशयान बहुतप्रकारोंके औरजहाजसमुद्र
पारजानेकेनिमित्त तथाद्वीप,द्वीपान्तरमेंजातेऔरआतेथे यहम-
हाभारततथावाल्मीकीरामायणमेंलिखीहै आर्यावर्त्त केराजाओं
कीआज्ञा औरराज्यसबद्वीपद्वीपान्तरमेंथा क्योंकियुधिष्ठिरादिकों
केराजसूयतथाअश्वमेधमें सबद्वीपद्वीपान्तरकेराजाआयेथे यहस-
भाऔरआश्वमेधिकपर्वमेंमहाभारतमेंलिखीहै जैनऔरमुसल्मा-
नोंनेबहुतसे इतिहासनष्टकरदिए इस्सेबहुतबातयथावत् मिलती
भीनही बड़े बलवान्तथाविद्यावान् इसदेशमेंहोतेथे इसीदेशमें
भूगोलमेंविद्यावाआचारसबमनुष्यसीखतेथे सबस्त्रियांभीआर्याव-
र्त्त मेंविद्यावानहोतींथीं सोआजकालआर्यावर्त्तदेशवालोंकी जै-
सीमूर्खताऔरदशाहै ऐसीकोई देशकीनहोगी फिरभीवेदादिक
सत्यविद्याओंकोयथावत्पढ़ैं औरपढ़ावैं धर्माचरण औरश्रेष्ठआ-
चारराजाऔरप्रजाकोपरस्परप्रीति तथापरस्परगुणग्रहणकरैं त-
भीमनुष्योंकोआनन्दहोगाअन्यथानहीं ब्रह्मचर्याश्रम४८,४४,४०,
३६,३०,२५, वर्षतकहोगा सबविद्याओंकाग्रहणकरना वीर्यका
निग्रहजितेन्द्रियताऔरयथावत्न्यायकाकरना पक्षपातछोड़केय-
हीसबसुखोंकेमूलहैं मनुस्मृतिकेसप्तमअष्टमऔरनवम अध्यायोंमें
राजाऔरप्रजाकेधर्मविस्तारसेलिखाहैमहाभारतऔरवेदादिकों
मेंभीबहुतप्रकारसेलिखाहै राजाऔरप्रजाओंकाधर्मजोदेखाचाहै
सोदेखले इसमेंतोहमने संक्षेपसेलिखाहै इसकेआगेईश्वरऔर
वेदविषयमेंलिखाजायगा ॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते षष्टः समुल्लासः संपूर्णः ॥ ६ ॥

अथेश्वरवेदविषयंव्याख्यास्यामः ॥ हिरण्यगर्भःसमवर्त्तताग्रे भूतस्यजातःपतिरेकआसीत् सदाधारपृथिवींद्यामुतेमांकस्मैदेवायहविषाविधेम ॥ १ ॥ अग्रेनामजबकुछजगत् उत्पन्नहीनहीं भयाथा तबएकअद्वितीयसच्चिदानन्दस्वरूपनित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभाव हिरण्यगर्भ अर्थातपरमेश्वरहीथा सोसबभूतोंकाजनकऔरपति है दूसराकोईनहीं सोईपरमेश्वरपृथिवीसेलेकेस्वर्गपर्यन्त जगत् कोरचके धारणकरताभया तस्मैएकस्मैपरमेश्वरायदेवायहविनामप्राण चित्तमनादिकोंसेस्तुतिप्रार्थना औरउपासनाहमलोग नित्यकरैं ॥ १ ॥ पूर्वपक्षईश्वरकीसिद्धि किसीप्रकारसेनहींहोसक्ती औरईश्वरकेमाननेका प्रयोजनभीकुछनहीं क्योंकिहर्दीचूनाऔर जलकेमिलानेसेएकरोरीपदार्थहोजाताहै ऐसेहीपृथिव्यादिकस्थूलभूत तथाइनकेपरमाणुऔरजीवपरस्परमिलनेसेसबपदार्थोंकी उत्पत्तिहोतीहै जैसेकिमिट्टीजलचाकऔरदण्डादिकसामग्रीसे कुलालघटादिकपदार्थोंकोरचलेताहै इनसेभिन्नपदार्थकी अपेक्षा नहीं वैसेहीजीव औरपृथिव्यादिक भूतोंसेभिन्न कोईश्वर उसके माननेकाकुछ आवश्यकनहीं स्वभावहीसेसबजगत्होताहै और जगत्नित्यभीहै कभीइसकानाशनहींहोता फिरजगत्रूपकार्यको देखकेकारणजोईश्वरउसकाअनुमानकरतेहैं सोव्यर्थहोगया और प्रत्यक्षईश्वरकाकोईगुणनहींहै इससेप्रत्यक्षभीईश्वरकेविषयमेंनहींबनता जबईश्वरप्रत्यक्षनहीतोउपमानकैसेबनसकेगा किइसकेतुल्यईश्वरहै जबतीनप्रमाण नहींबनते तबशब्दप्रमाण कैसाबनेगा शब्दप्रमाणमनुष्यलोगऐसेही परंपरासेकहतेऔरसुनतेचलेआतेहैं किसीनेकिसीसेकहाकि मैनेंवन्ध्याकापुत्र सींगवालादेखा ऐसाअन्योंसेकहाअन्योंनेंअन्यपुरुषोंसेकहा ऐसेहीअन्धपरंपरावत्कहतेऔरसुनतेचलेआतेहैं इससे ईश्वरकीसिद्धिकिसीप्रकारसेनहींहोसक्ती उत्तरपक्ष ईश्वरकीसिद्धियथावत्होतीहै क्योंकि जोस्वभावसेजगत्कीउत्पत्तिमानेगा उसकेमतमें यहदोषआवेगा

जगत्में जितनेपदार्थहैं उनकेविलक्षण २ संयोगआकृति तथागुण औरस्वभावदेखपड़तेहैं जैसेकिमनुष्यऔरवानर आमकाऔरबबूरकावृक्ष इत्यादिकोंमेंविलक्षण२गुण औरआकृति देखपड़तीहै इननियमोंका कर्ताकोईनहोगा तोयेनियम कभीनबनेंगे क्योंकि जड़पदार्थोंमेंतोमिलनेत्रा जुदाहोनेकीयथावत्समर्थतानहीं किउनमेंज्ञानगुणहीनहीं जोज्ञानगुणवालाहोताहै वहीयथावत्नियमकरसक्ताहै अन्यनहीं जोजीवहैसोज्ञानवालातोहै परन्तुजीवकाउतनासामर्थ्य होनहींइसकोईपृथिव्यादिक भूतऔरजीवसेभिन्नपदार्थअवश्यहै जोसबजगत्काकरता औरनियमोंका नियन्ता ईश्वरअवश्यहो किन्तुस्वभावसेजगत्कीउत्पत्तिजोमानताहै उसकेमतमेंएदोषआवेंगे यहपृथिवीस्वभावसेजोहोतीतोइसकाकरता और नियन्तानहोता इसपृथिवीसे भिन्नदशवेंकोश अन्तरिक्ष में दूसरीआपसेआपपृथ्वीबनजाती सोआजतकनहींबनी इससे जाना जाताहै किजीवऔर सबभूतोंसे सर्वशक्तिमान् सबजगत् काकर्ता औरनियन्तापरमेश्वर उसीकोईश्वरकहतेहैं दूसरादोष किजितनेपरमाणुपृथिव्यादिकभूतोंकेहैं वेसबमिलगए अथवाइनसेबिनामिलेभीहैं जोकहैकिसबमिलगए तोहमरेएवादिकहमकोप्रत्यक्षदेखपड़तेहै इससे वहबातमिथ्याहोगई औरजोकहैकि कुछमिले कुछनहीमिलेभीहैं तोउनसेपूछनाचाहिए किसबक्योंनहींमिले अथवापृथक् २ क्यों न रहे तथाएकप्रकारके रूपवाले सबपदार्थ क्योंनहींहुए भिन्न २संयोग औररूपके होनेसे सबजगत् काकर्ता औरनियन्ताअवश्यसिद्धहोताहै तीसरादोषउसकेमतमेंयहहै कि कोईकर्मकर्ताकेबिनाहोताहै वानहीं जोवहकहैकि बनादिकोंमें घासादिकपदार्थ आपहीसेहोतेहैं उसकाकर्ता औरनिमित्तकोई नहींदेखपड़ता उससेपूछनाचाहिएकिपृथिव्यादिकसबभूतनिमित्त हैं औरसबबीजबिनाकर्ता औरनियन्ताकेकभी नहींबनसक्ते क्योंकिग्रामकेबीजमें जैसापरमाणुओंकामेलनकर्तानेकियाहै वैसेही

अङ्कुरपत्रपुष्पफलकाष्ठऔरस्वाददेखनेमेंआतेहैं इससेभिन्नजोकट-
लीउसकेअवयववाखाद आमसेकोईनहींमिलतेक्योंकिसबपदार्थों
मेंपरमाणुतोवेहीहैं फिररचनेवालेकेविनाभिन्न२पदार्थकैसेहोगें
इससे जानाजाताहैकि सबजगतकारचनेवालाकोईपदार्थहै जोचू-
ना,हर्दीऔरजलकेमिलानेसेरोरीहोतीहै उसकामेलनकरनेवा-
लाजबमिलाताहै तबवेमिलकेरोरीहोतीहै वेआपसेआपतोनही
मिलते इससे वहदृष्टान्त मिथ्याहोगया कुम्हारकाजोदृष्टान्त दि-
या सोकोंहारस्थानीआपनेजीवकोरक्खा क्योंकिईश्वरकोतोआप
मानतेहीनहीं सोजीवसर्वशक्तिमान्नहीं क्योंकिपरमाण्वादिकों
कासंयोग वावियोगजीव कभीनहींकरसक्ता जोजीवकरसक्ता तो
चाहतातोसूर्य,चन्द्रादिकलोकोंकोरचलेता सोरचसक्तानहीं इ-
ससे जाना जाताहैकि सबजगत्काकर्ता औरनियन्ता कोईअवश्य
है जबजगत्रचागयाहै तोनित्यकभीनहींहोसक्ता क्योंकिजबतक
नहींरचाथातबतकनहींथा औरजोरचनेसेभयाहै सोकभीमिट-
भीजायगा विनाकर्तावाकारके कर्मवाकार्यनहींहोता तोयहना-
नाप्रकारकीरचना औरइतनावड़ाकार्य जगत्कभीनहींहोसक्ता
इससे तीनप्रकारजोअनुमानहै सोईश्वरमेंयथावत्घटताहै किका-
रणकेविनाकार्य कभीनहींहोसक्ता कार्यसेकारणअवश्यजानाजा-
ताहै औरकर्ताकेविना कर्मनहींहोता इससे पूर्ववत् शेषवत् और
सामान्यतो दृष्टतीनप्रकारकाअनुमान ईश्वरकोयथावत्सिद्धकर-
ताहै ईश्वरकेसर्वशक्तिमत्वदयालुता औरन्यायकारित्वादिक गुण
जगत्मेंप्रत्यक्ष देखपड़तेहैं स्वाभाविकगुणऔरगुणीका नित्यसंबंध
होताहै जैसाकिरूपऔरअग्निका सोजैसेअग्निकारूपदेखपड़ता
है औरअग्निनेत्रसेनहींदेखपड़ता परन्तुहमलोग ज्ञानसेअग्नि
कोप्रत्यक्ष देखतेहैं क्योंकिअग्निकोबुद्धिसे प्रत्यक्षहमलोग नदेखते
तोअग्निकोलेआने औरअग्निसेजितनेव्यवहारहोतेहैं उनमेंप्रवृ-
त्तकभीनहोते इससे जैसा अग्नि हमकोप्रत्यक्षहै गुणऔर गुणीके

ज्ञानसे वैसेज्ञानसेपरमेश्वरभीप्रत्यक्षहै जोधर्मात्माऔरयोगीपुरुषहोतेहैं उनकोपरमाणु जीव औरपरमेश्वरभी यथावत्प्रत्यक्ष होतेहैं जोकोईइसमेंसंदेहकरैसोकरकेदेखले उपमानप्रमाणतो परमेश्वरमेंनहींहोसक्ता क्योंकिपरमेश्वरकेसदृशकोईपदार्थनही जिसकीउपमापरमेश्वरमेंहोसकैपरन्तुपरमेश्वरकी उपमापरमेश्वरहीमेंहोसक्तीहै ऐसाजगत्में व्यवहार देखनेमेंआताहै किआपकेतुल्यआपहीहोवै वैसेहमलोगभीकहसक्ते हैं किपरमेश्वरकेतुल्य परमेश्वरहीहै औरकोईनहीं जबतोनप्रमाणोंसेईश्वरकीसिद्धिहोगई तोशब्दप्रमाणभीअवश्यहोगा सोशब्दप्रमाणइसप्रकारकालेना ॥ दिव्योह्यमूर्त्तःपुरुषःसबाह्याभ्यन्तरोह्यजः । अप्रमाणोह्यमनाःशुभ्रोऽक्षरात्परतःपरः ॥ २ ॥ दिव्यनामसबजगत्काप्रकाशक अमूर्त्त निराकारऔरसदाअशरीर पुरुषनामसबजगत्में पूर्ण सोईबाहरऔरभीतरएकरस अजकभीजिसकाजन्मनहीहोता अप्रमाणनामकिसीप्रकारकीचेष्टावालीलानहींकरता अमननामरागद्वेषसंकल्पविकल्पादिकदोषरहित अक्षरजोजीवउससेपरेजोप्रकृति उससेभीपरमेश्वरश्रेष्ठऔरपरहै ॥ २ ॥ नतत्रसूर्योभातिनचन्द्रतारकंनेमाविद्युतोभान्तिकुतोऽयमग्निः तमेवभान्तमनुभातिसर्वंतस्यभासासर्वमिदंविभाति ॥ ३ ॥ मन्त्र० उसपरमेश्वरमेंसूर्य चन्द्र, तारे, बिजली, औरअग्निएकुछभीप्रकाशनहींकरसक्ते किन्तु सूर्यादिकोंकोपरमेश्वरहीप्रकाशतेहैं सबजितनाजगत्हैउसके प्रकाशसे प्रकाशितहोताहै परमेश्वरकाप्रकाशककोईनहीं ॥ ३ ॥ अपाणिपादोजवनोग्रहीता पश्यत्यचक्षुःसशृणोत्यकर्णः । सवेत्तिविश्वंनचतस्यास्तिवेत्तातमाहुरग्र्यंपुरुषंपुराणम् ॥ ४ ॥ मन्त्र० । परमेश्वरनिराकारहै परन्तु उसमें शक्तियांसबहैं हाथ परमेश्वरकोनहींहै परन्तु हाथकी शक्तिऐसीहै किसबचराचरकोपकड़केथांभरक्खाहै तथापादनहींहै परन्तु सबसेवेगवालाहै नेत्रनहीहै परन्तु चराचरकोयथावत्सबकालमेंदेखरहाहै काननहीहै पर-

म्तु चराचरकोजानसुनताहै मन,बुद्धि,चित्तऔरअहङ्कारतोनहीं
हैं परन्तुमननिश्चयऔरस्मरण अपनेस्वरूपकाआपहीजाननेवा-
लाहै औरवहसबकोजानताहै परन्तुउसकोकोई नहींजानसक्ता
किइतनावड़ावाइसप्रकारका वाइतनासामर्थ्यउसमेंहै ऐसाकोई
नहीजानसक्ताउसपरमेश्वरकोज्ञानीऔरशास्त्रसर्वोत्कृष्टपूर्णऔर
सनातनकहतेहैं ॥ ४ ॥ अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययंतथारसन्नित्य-
मगन्धवच्चयत् । अनाद्यनन्तंमहत:परंध्रुवंनिचाय्यतंमृत्युमुखात्प्र-
मुच्यते ॥ ५ ॥ मन्त्र० वहपरमेश्वरअशब्दअर्थातकहने औरसुनने
मात्रसेनहींजानाजाता बिनाउसके आज्ञापालन विज्ञान प्रीति
औरयोगाभ्यासकेस्पर्श रूपरसऔरगन्धपरमेश्वरमेंनही इस प-
रमेश्वरकाज्ञानसहस्रों पुरुषोंमेंकिसीकोहोताहै सबकोनहींवह
कैसाहै अनादिऔरअन्तजिसकाआदिकारण अथवाअन्तकोको
ईनहींदेखसक्ता क्योंकिउसकामरण वाअन्तनहींहैं तोकैसेकोई
देखसके परमेश्वरबुद्धिसेभीसूक्ष्मऔरपरेहै जोकोईपरमेश्वरको
जानताहै सोजन्ममरणादिक सबदु:खोंसेछूटके परमेश्वरकोप्राप्त
होताहै फिरकभीउसकोदु:खलेशमात्रभीनहीहोता ॥ ५ ॥ समा-
निर्धूतमलस्यचेतसोनिवेशितस्यात्मनियत्सुखंभवेत् । नशक्यतेव-
र्णयितुंगिरातदास्वयंतदन्त:करणेनगृह्यते ॥ ६ ॥ म० जिसपुरुष
काधर्माचरणविद्या औरसमाधियोगसेचित्तशुद्धहोजाताहै उस-
काचित्तपरमेश्वरकेज्ञानमें औरप्राप्तिकेयोग्यहोताहै जबसमाधि
योगमेंचित्त औरपरमेश्वरका योगहोताहै उसवक्तऐसा आनन्द
उसजीवकोहोताहै किकहनेमेंभीनहींआता क्योंकिवहजीवअपने
अन्त:करण अर्थातबुद्धिहीसेग्रहणकरताहै वहांतीसराकोईनहीं
है किजिससे कहैंकिफिरजाग्रतावस्थाकहनेसेभीनहींआता क्योंकि
वहपरमेश्वरउसकाआनन्द औरउसकोजाननेवालाजीवतीनोंअ-
द्भुतपदार्थहैं इससे वहसबआनन्दकहनेमेंनहींआता ॥ ६ ॥ आ-
श्चर्योऽस्यवक्ताकुशलोऽस्यलब्धा । आश्चर्योऽस्यज्ञाताकुशलानुशिष्ट:

॥ ७॥ मन्त्र० परमेश्वरकावक्ताऔरप्राप्तिहोनेवालादोनोंआश्चर्य
पुरुषहैं क्योंकिआश्चर्यजोपरमेश्वर उसकोजाननेवालाभीआश्चर्य
होहै।ताहै जिसकोब्रह्मवित्पुरुषोंकाउपदेशहुआहोय औरअपने
भीसबप्रकारसेविद्यावान्शुद्धऔरयोगीतबपरमेश्वरकोजानसक्ता
है सोभीआश्चर्यहैअन्यथानहीं ॥ ७॥ सर्वेवेदायत्पदमामनन्तित-
पांसिसर्वाणिचयद्वदन्ति यदिच्छन्तोब्रह्मचर्यंचरन्तितत्ते पदंसंग्रहे-
णब्रवीम्योमेतत् ॥ ८ ॥ जिसपदअर्थात्परमेश्वर सबवेदअभ्यास
पुन:पुन: उसीहीकाकथनकरतेहैं अर्थात्वेपरमेश्वरहीकोकहते
हैं औरउसकेवास्तेहोहै जिसकोप्राप्तिकीइच्छासेमनुष्यलोगब्रह्म-
चर्यसेयथावत्विद्यापढ़तेहैं किहमलोगपरमेश्वरकोजानैं उसकी
प्राप्तिकेबिना अनन्तसुखऔरसबदु:खकी निवृत्तिनहींहोती यही
बातयमराजनचकेतासेकहतेहैं किहेनचकेताजो ओङ्कारकाअर्थ
हैसोईपरब्रह्महै ॥ ८ ॥ एकोदेव:सर्वभूतेषुगूढ़:सर्वव्यापीसर्वभूता-
न्तरात्मा। सर्वाध्यक्ष:सर्वभूताधिवास:साक्षीचेताकेवलोनिर्गुण-
श्च ॥ ९ ॥ मन्त्र एकजोअद्वितीयपरमेश्वरब्रह्महै सोईसबभूतोंमेंगूढ़
है अर्थात्गुप्तकिसबजगत्‌मेंप्राप्तहै फिरमूढ़लोगउसको नहींजा-
नते सबभूतोंकाअन्तरात्मा किनिकटसेभीनिकटसबसंसारकावही
है अध्यक्षनामस्वामीऔरसबभूतोंकानिवासस्थानसबमेंश्रेष्ठ स-
बकेऊपरविराजमानसबकासाक्षी किकोईकर्मजीवकाउनसेबिना
जानानहींरहताकिन्तुसबजानतेहैं चेतनस्वरूपऔरकेवलअर्थात्
उसमेंकुछभीनहींमिलताहै एकरसचेतनस्वरूपहीहै जैसादूधमें
जलमिलारहताहै वैसानहीं जितनेअविद्या जन्म,मरण, हर्ष,
शोक,क्षुधा,तृषा, तमोरज: औरसत्त्वगुणादिकजगत्केहैं उनसे
सदाभिन्नहोनेसेपरमेश्वरनिर्गुणहै औरसच्चिदानन्दसर्वशक्तिम-
त्त्वदयान्यायकारित्व औरसर्वज्ञादिक गुणोंसेसदासगुणहै ९ ॥
नतस्यकार्यंकरणंचविद्यतेनतत्समश्चाभ्यधिकश्चादृश्यते। परास्यश-
क्तिर्विविधैवश्रूयतेस्वाभाविकीज्ञानबलक्रियाच १० ॥ मन्त्र परमेश्व-

रसदाकृतकृत्यहै उसकोकर्तव्यकुछनहीं किइसकोकरनेकेविनाइ-
सकोसुखनहोहोगा ऐसानहींकरनाजैसाकिचक्षुकेविनारूपनहीं
देखसक्ता ऐसाभीपरमेश्वरमेंनहीं किन्तुविविधशक्ति स्वाभाविक
अनन्तसामर्थ्यपरमेश्वरकासुनाजाताहै किअनन्तज्ञान,अनन्तब-
लऔरअनन्तक्रियापरमेश्वरमेंस्वाभाविकहोहै इसमेंकुछसन्देह
नहीं क्योंकिपरमेश्वरकेतुल्यवाअधिककोईनहीं ॥ १० ॥ एषसर्वे-
षुभूतेषुगूढात्मानप्रकाशते । दृश्यतेत्वग्र्ययाबुध्यासूक्ष्मयासूक्ष्मदर्शि-
भिः ॥ ११ ॥ मन्त्र यहजोपरमेश्वरसबभूतोंमेंसूक्ष्मव्यापकऔरगुप्त
है इससे मूढ़जोविज्ञानऔरयोगाभ्यासहो उनकोबुद्धिमेंनहींप्रका-
शितहै जितनेसूक्ष्मदर्शीयथावत् विद्यावान्उनकीशुद्धि औरसूक्ष्म
जोबुद्धि,विद्या,विज्ञान,योगाभ्यास सेहोताहै उससे परमेश्वरको
वेयथावत्जानतेहैं अन्यथानहीं ॥ ११ ॥ तदेजतितन्नैजतितद्दूरे-
तद्वन्तिके । तदन्तरस्यसर्वस्यतदुसर्वस्यास्यबाह्यतः ॥ १२ ॥ मन्त्र
सोईपरमेश्वर प्राणादिकोंको चेष्टाकरताहै औरआपअचलहोहै
वहअधर्मात्माऔरमूढ़ पुरुषोंसेअत्यन्तदूरहै औरधर्मात्माविज्ञान
वालेपुरुषोंसेअत्यन्तनिकट अर्थातउनकाअन्तर्यामीहीहै सोईब्रह्म
सबजगत्के बाहरभीतर औरमध्यमेंपूर्णहै ॥ १२ ॥ अनेजदेकम्म-
नसोजवीयोनैनदेवाआप्नुवन्पूर्वमर्षत् । तद्धावतोन्यानत्येतितिष्ठ-
त्तस्मिन्नपोमातरिश्वादधाति ॥१३॥ मन्त्र यहब्रह्मनिष्कंपनिश्चलहै
परन्तुमनसेभीवेगवालाहै इसब्रह्मकोदेव अर्थात् चक्षुरादिक इ-
न्द्रियांप्राप्तनहींहोती क्योंकिइन्द्रियऔर मनकाद्रष्टाआत्माहै सो
आत्माकावाह्यजोशरीर सोउसकोकभीनहींदेखसक्ता वहआत्मा
तोसबकोदेखसक्ताहीहै औरमनवेगसेजहां२जाताहै वहां२व्या-
पकहोनेसे परमेश्वरआगेदेखपड़ताहै सोपरमेश्वरजितनेवेगवा-
लेहैं उनकोउल्लङ्घनकरलेताहै अर्थात्परमेश्वरकेकोईगुणकेतुल्य
वाअधिककिसीकागुणसामर्थ्यनहीं सोपरमेश्वरस्थिरव्यापकऔर
चेतनउसके सत्तासे उसमेंठहराभया मातरिश्वा अर्थात्माताजो

आकाशउसमेंचलनेऔररहनेवाला जोप्रमाणसोचेष्टादिकसबक-
र्मोंकाकर्ताहैअन्यथानहीं १३ ॥ यस्मिन्सर्वाणिभूतान्यात्मैवाभूद्वि-
जानतः । तत्रकोमोहःकःशोकएकत्वमनुपश्यतः १४ ॥ मन्त्र जिसप-
रमेश्वरकेजाननेसेसबभूतप्राणिमात्रआत्माकेतुल्यहोजातेहैं किकि-
सीभूतसेनरागऔरनद्वेषउसकोकभीरागऔरनहींहोतेक्योंकिवह
एकजोअद्वितीयउसपरमेश्वरमेंस्थिरध्यानवालाजोपुरुषउनकोकि-
सीमेंमोहवाकिसीसेक्याशोकअर्थात्उसकोकभीमोहवाशोकहोता
हीनहीं १४ ॥ वेदाहमेतंपुरुषम्महान्तमादित्यवर्णन्तमसःपरस्ता-
त् । तमेवविदित्वातिमृत्युमेतिनान्यःपन्थाविद्यतेयनाय १५ ॥ मन्त्र
जोब्रह्मवित्पुरुषउसकायहअनुभवहै किपूर्णसबसेबड़ाप्रकाशस्व-
रूप औरसबकाप्रकाश जन्ममरणसुखदुःख औरअविद्या जोतम
उससेभिन्नउसपरमेश्वर कोजानताहूं सबदुःखसेछूटकेपरमानन्द
उसकोजाननेसे यथावत् प्राप्तभयाहूं उसीकोजानके अतिमृत्यु
जोपरमेश्वर किजिसमेंजन्ममरणादिकदुःखोंकालेशमात्रभीनहीं
अर्थात्मोक्षपदकोप्राप्तहोताहै औरकोईइससेभिन्नमोक्षकामार्ग
नहीं ॥ १५ ॥ सपर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरंशुद्धमपापवि-
द्धम् । कविर्मनीषीपरिभूःस्वयंभूर्यातथ्यतोर्थान् व्यदधाच्छाश्वती-
भ्यःसमाभ्यः ॥ १६ ॥ मन्त्र सोपरमेश्वरसबपदार्थोंमें एकरसअ-
द्वितीयपूर्णहै सबजगत्कर्तास्थूलसूक्ष्म औरअकायअर्थात् जागृत
और सुषुप्ति इनतीन शरीर रहित शुद्ध निर्मल सर्वदोष रहित
जिसकोपापकालेश मात्रभीसम्बन्धनहीं सर्वज्ञसर्वविद्वान् अनन्त
जिसकाविचारऔरध्यान सबकेऊपरविराजमान स्वयंभूनामजि-
सकीकभीउत्पत्तिनहोय आपसेआपहीसदासनातनहोवै जिन्नेवे-
दरूपसर्वज्ञ विद्याकाहिरण्यगर्भादिक शाश्वतनामनिरन्तरप्रजा
ओंकोअर्थोंकाअर्थात्वेदोंका यथावत्उपदेशकियाहै उसपरमे-
कोस्तुतिप्रार्थनाऔरउपासनाकरनीचाहिए इतनासंक्षेपसेसंहि-
ताऔरब्राह्मणोंकेमन्त्रोंसे शब्दप्रमाणलिखदियासोजानलेना पू-

र्वपक्ष परमेश्वररागीहैवाविरक्तवाउदासीनजोरागीहोगातोदुःखी वाअसमर्थहोगा यदाजोविरक्तहोगा तोकुछभीनकरेगा औरसं- सारकाधारणभीनहोगा औरजो उदासीनहोगातोअपनेस्वरूप- स्थ माक्षीवत्रहैगा अर्थात्बद्धजोईश्वरहोगा तोकभी रचसकेगा नहीं मुक्तहोगातोजगत्कोछोरचेगानहीं इससे ईश्वरकोसिद्धिन- होहोती उत्तर परमेश्वररागीनहीं क्योंकिअपनेसेउत्तमकोईप- दार्थनहीहै किजिसमेंरागकरै अपनेस्वरूपमेंअपनारागकभीनहीं बनता सर्वव्यापीकेहोनेसेअप्राप्तपदार्थईश्वरकोकोईनहीं तथास- र्वशक्तिमान् केहोनेसेभीरागईश्वरमेंनहींबनसक्ता विरक्तभीईश्वर नहीं क्योंकिपहिलेजोबद्धहोताहै सोईबन्धनकेछूटनेसेविरक्तकहा- ताहै सोईश्वरकोबन्धनतीनोंकालमेंभीनहींभया फिरउसकोविर- क्त कैसेकहसकैं उदासीनभीवहहोताहै किपहिले बन्धनमेंहोय पीछेज्ञानकेहोनेसेउदासीनहोजाय ऐसाईश्वरनहीं ईश्वरकोअ- चिन्त्यशक्तिहै किसबमेंरहै औरकिसीकाभी लेशमात्रसंगदोष न लगे इससे ऐसीशंकाजीवकेबीचमेंघटसक्तीहै ईश्वरमेंनहीं पूर्वपक्ष जितनेपदार्थहैं वेसबसन्देहयुक्तहोहैं निश्चययथावत्एककाभीनहीं होता उत्तर आपनेयह बातकही सोनिश्चितहै वानहीं जोकहो किनिश्चितहै तोसबपदार्थसन्देहयुक्तनहींभये आपकोबातनिश्चित होनेसे औरजोआपकहैं कियहमेरीबातभीनिश्चितनहीं तोआप कीबातका प्रमाणहीनहींहुआ क्योंकि लक्षणप्रमाणाभ्यांपदार्थ- सिद्धिः। लक्षणऔरप्रमाणोंकेबिना किसीपदार्थकीनिश्चितसिद्धि नहींहोती आपनेसबपदार्थोंमेंसन्देहसिद्धकहासोकिसप्रमाणसेउ- सकीसिद्धिहोतीहै किसीप्रमाणसेसन्देहकोआपसिद्धकियाचाहो- गे तोउसप्रमाणमेंभी आपकानिश्चय नहींहोगा क्योंकि आपसब पदार्थोंकोसन्देहयुक्तकहचुकेहैं इससेआपकासन्देहहीसन्देहनष्ट होगया फिरआपकिसीव्यवहारमेंप्रवृत्त नहोसकोगे जैसेकिगमन भोजन,छादन, देखनासुननाइत्यादिकभी सन्देहयुक्तहोनेसेप्रष्ट-

त्तिभीइनमेंनहोनीचाहिए प्रवृत्तितोआपकर्तेहीहैं इससे आपनेजो
कहाकि सबव्यवहारऔरसबपदार्थ सन्देहयुक्तहैं यहबातआप
कीमिथ्याहोगई इससेक्याआयाकिलक्षणऔरप्रमाणोंसेजोनिश्चित
पदार्थहोताहै उसकोनिश्चितहीमाननाचाहिए इसमेंसन्देहकर-
नाव्यर्थहीहै सोप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंसेईश्वरकीयथावत्सिद्धिहोती
हीहै उसकोमाननाहीचाहिए प्रश्न पृथिवी,जल,अग्नि,वायु, इन
चारोंकेमिलनेसे चेतनभीउसमेंहोताहै जबवेपृथक्२होजातेहैं
तबसबकलाबिगड़जातीहैं फिरउसमेंकुछनहींरहता इससे जगत्
कारचनेवालाकोईनहीं आपसेआपहीजगतऔरजीवहोताहै उ-
त्तर आपभीइनचारोंकोमिलाकेजीवऔरजीवकेजितनेगुणउनको
देखलादेवैं सोकभीनहींदेखपड़ेंगे क्योंकिपहिलेहीसे सबस्थूल
भूतोंमेंसबसूक्ष्मभूतमिलेरहतेहैं फिरउनमेंज्ञानादिकगुणक्योंनहीं
देखपड़ते इससे जीवपदार्थ इनभूतोंसेभिन्नहीहै जिसकेयेगुणहैं
इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यात्मनोलिङ्गम् । यहगौतममुनि
कासूत्रहै इसकायहअभिप्रायहै किइच्छाकिसीप्रकारकाचाहना
जिसकेगुणोंकोजानताहै उसकीप्राप्तिकीचाहनाकरताहै जिसमें
दोषोंकोजानताहै उसमें द्वेष अर्थात् चाहना नहींकरता प्रयत्न
नानाप्रकारकीशिल्पविद्यासे पदार्थोंकारचना शरीरतथाभार
काउठानाइसकानामप्रयत्नहै सुखनामअनुकूलकाचाहना और
जानना दुःखप्रतिकूलकाजानना औरछोड़नेकीइच्छाकरना ज्ञा-
नजैसाजोपदार्थहै उसकातत्त्वपर्यन्त यथावत्विवेककरना इसका
नामजीवहै येगुणपृथिव्यादिकजड़ोंकेनहीं किन्तुजीवहीकेहैं लिं-
गशरीरबुद्धि जिससेजीवनिश्चयकरताहै बुद्धिरुपलब्धिर्ज्ञानमित्यन-
र्थान्तरम् । यहगौतमजीकासूत्रहै बुद्धिउपलब्धिऔरज्ञानयेतीनों
नाम एकहीपदार्थ केहैं मनजिससे एकपदार्थकोविचारकेदूसरेका
विचारकरताहै ॥ युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसोलिंगम् । यहगौत०
जिससेएकपदार्थहीकोएककालमेंग्रहणकरताहै एककोग्रहणकरके

दूसरेकादूसरेकालमेंग्रहणकरताहै एककालमेंदोनोंकानहीं इ-
सकानाममनचित्त जिस्से किजीवपूर्वापरकास्मरणकरताहै जोकि
पहिलेदेखाऔरसुनाथा इसकानामचित्तहै अहङ्कारजिस्से अ-
भिमानजीवकरताहै येचारमिलकेअन्तःकरणकहाताहै इस्से जी-
वभीतरमनोराज्यकरताहै येचारोंएकहीहैं परन्तु व्यापारभेदसे
चारभिन्न२नाकहैं बाह्यकरणजिस्से कि बाहरजीवव्यापारकरता
श्रोत्रजिस्से शब्दसुनाताहै त्वचाजिस्से स्पर्शजानताहै नेत्रजिस्सेरूप
कोजानताहै जिह्वाजिस्से रसकोजानताहै नासिकाजिस्सेगन्धको
जानताहै येपांचज्ञानइन्द्रियांहैं इनसेजीवबाह्यपदार्थोंकोजान-
ताहै वाक्जिस्से शब्दबोलताहै पादजिस्से गमनकरताहै हस्तजि-
स्से ग्रहणकरताहै वायुजिस्से मलकात्यागकरताहै लिंगजिस्से मूत्र
औरविषयभोगकरताहै येपांचकर्मेन्द्रियहैं इनसेजीवबाह्यकर्मक-
रताहै प्राणजिस्से ऊर्द्ध्व चेष्टाकरताहै अपानजिस्से अधोचेष्टाकर-
ताहै व्यानजिस्से सबसन्धियोंमेंचेष्टाकरताहै उदानजिस्सेजलऔ-
रअन्नकोकण्ठसेभीतरआकर्षणकरलेताहै समानजिस्से नाभिद्वा-
रसबरसोंको सबशरीरमेंप्राप्तकरदेताहै येपांचमुख्यप्राणकहाते
हैं नागजिस्से डकारलेताहै कूर्मजिस्से नेत्रकोखोलताऔरमून्दता
है कृकलजिस्से छींकताहै देवदत्तजिस्से जम्भाईलेताहै धनञ्जय
जिस्से शरीरकोपुष्टिकरताहै औरमरेपीछे शरीरकोनहींछोड़ता
जोकिमुरदेकोफुलाताहै येपांचउपप्राणहैं येदशएकहीहैं परन्तु
क्रियाभेदसेदशनामभयेहैं ये२४तत्त्वमिलकेलिंगशरीरकहाताहै
कोईउपप्राणकोनहींमानता उसकेमतमें २८ होतेहैं औरकोई
पांचसूक्ष्मभूतजोकिपरमाणुरूपहैं औरपूर्वोक्तचारभेदअन्तःकर-
णकेइननवतत्त्वोंको लिंगशरीरकहाताहै इसलिंगशरीरमेंजोअ-
धिष्ठाताकर्त्ता औरभोक्ताउसकोजीवकहतेहैं जोकिएककालमेंसब
बुध्यादिकोंकेकियेकर्मोंकाअनुभवकरताहै चेतनस्वरूपहैउसका
नामजीवहै उसकोअधिकव्याख्यामुक्तिके प्रकर्णमेंकिईजायगी सो

जीवभिन्नपदार्थहीहै चारोंकेमिलानेसे जीवकेगुण औरजीवकभी नहींउत्पन्नहोता इस्से यहबातकहीथी किचारोंकेमिलनेसे जीव भीहोताहै यहबातखण्डितहोगई प्रश्न ईश्वर,सर्वज्ञऔरत्रिकाल दर्शीहै जैसाईश्वरनेअपनेज्ञानसेनिश्चितकियाहै वैसाहीजीवपाप वापुण्यकरेगा फिरजीवको दण्डक्योंहोताहै क्योंकिउस्से अन्यथा जीवकुछनहींकरसक्ता जोअन्यथाजीवकरेगातो ईश्वरकासर्वज्ञाननष्टहोजायगा इस्से जैसाईश्वरनेपहिलेहीनिश्चयकररक्खाहै वैसाजीवकरताहै ईश्वरजानताभीहै फिरआपसेउसकोनिवृत्तक्यों नहींकरदेता जोनिवृत्त नहींकरदेता तोदण्ड क्योंदेताहै उत्तर ईश्वरहै अत्यन्तदयालु जबजीवोंकोईश्वरनेरचा तबविचारकरके सबकोस्वतन्त्र और रखदिये क्योंकिपरतन्त्रकेरखनेसेकिसीकोकभीसुखनहींहोता जैसेकिकोईअपनीइच्छासे मरणतकएकस्थानमेंरहताहै तोभीइसमेंउसकोकुछदु: खनहींमालूमहोता उसको जो कोईएकघड़ीभरभीपराधीनबैठायरक्खै तोबड़ाउसकोदु:खहोता है इस्सेपरमेश्वरनेसबजीवस्वतन्त्ररक्खे हैंजोचाहतातोपरतन्त्रभी रखसक्ता परन्तुपरमेश्वरबड़ादयालु औरकृपासागरहै इस्से सब स्वतन्त्ररक्खे हैं परन्तुआज्ञा ईश्वरकीहै किजोजैसाकर्म करैगा वहवैसाफलभोगेगा सोआज्ञाउसकीसत्यहीहै इस्से क्याआयाकि कर्मोंकेकरने औरपुण्योंके फलभोगनेमेंजीवस्वतन्त्रहै औरपापों केफलभोगनेमेंपराधीनहैं जीवकर्मोंकेकरनेवालेऔरभोगनेवाले हैं जैसाजीवकर्मकरेगा वैसाहीईश्वरने ज्ञानसेनिश्चय पहिलेही कियाहै औरभोक्तावहीहै त्रिकालज्ञानमेंईश्वरस्वतन्त्रऔरअपने कर्मोंकेकरनेमेंतथाभोगनेमेंजीवस्वतन्त्रहैं प्रश्न जीवकानिजस्वरूपक्या॥ उत्तर विशिष्टस्य जीवत्वमन्वयव्यतिरेकाभ्याम् । यहकपिल मुनिजीकासूत्रहै इसकायहअभिप्रायहै किजैसाअयनामिट्टीसेबनताहै परन्तु शुद्धकेहोनेसे जोउसकेसाम्हनेपदार्थहोगा सोउसमें यथावत्देखपड़ेगा अथवालोहेकोअग्निमेंरखनेसेअग्निकेगुणवा-

लालहोताहै उनदोनोंमें प्रतिबिम्ब वा अग्निभिन्नहै क्योंकिउनसे पृथक् भीवे देख पड़ते हैं औरदो भी जातेहैं इससे दर्पण और लोहेसेव्यतिरिक्तहैंअर्थात्जुदेहैं औरजोकेवलजुदेहोते तोउनके गुणदर्पण औरलोहेमें नहोते इससे उनमें अन्वयभी उनकादेख पड़ताहै वैसेहीलिंगशरीरजोहै उसकाअधिष्ठाताहै सोईजीवहै दर्पणकेतुल्य अन्तःकरणशुद्धहै स्थूलदेहबाहरकाहै औरजिसमें गाढ़निद्राहोतीहैसत्व रजोऔरतमोगुणमिलकेप्रकृतिकहातीहै जिसकानामअव्यक्तपरमसूक्ष्मभूत औरप्रधानभीहै वहकारणशरीरकहलाताहै सोसबप्राणियोंकाव्यापकके होनेसेएकहीहैदोनों केबीचमेंमध्यस्थलिंगशरीरहै चेतनएकजीवऔरदूसरापरमेश्वर हीहै तीसराकोईनहींसोपरमेश्वरहै विभुव्यापकसर्वत्रएकरसजहां२लिंगशरीर विशिष्टजीव रहताहै वहां२परमेश्वरहीपूर्णहै सोलिंगशरीरमेंउसकासामान्यप्रकाशहैऔरविशेषप्रकाशचेतन हीकाजीवहैजैसेदर्पणमेसूर्यकाविशेषप्रकाशहोताहै सोपरमेश्वर कासदासंयोगरहताहै बियोगकभीनहीं इससेपरमेश्वरके अन्वय होनेसेवहचेतननहींहैवहजीवकहलाताहै औरलिंगदेहसेपरमेश्वरभिन्नकेहोनेसेपृथक्भीहै क्योंकिलिंगशरीरसेयुक्तजीवस्वर्गनर्कजन्मऔरमरणइत्यादिकोंमेंभ्रमणकरताहै परन्तुपरमेश्वरनिश्चलहै उसकेसाथभ्रमणनहींकरतेहैं औरउसकेगुणदोषोंकेभोग वासंगीकभीनहींहोतेहैंकारणशरीरकेज्ञानलोभ औरक्रोधादिकगुणजीवमेंआतेहैं औरस्थूलशरीरकेशीतोष्णक्षुधा तृषादिक गुणभीजीवमेंआतेहैं क्योंकिदोनोंशरीरकेमध्यस्थवर्तीजीवहै इससे दोनोंशरीरोंकेगुणकाभीसंगजीवकरताहै इसकास्पष्टअन्यव्याख्यानमुक्तिऔरबन्धकेविषयमेंकियाजायगा प्रश्न ईश्वरव्यापकनहींहोसक्ता क्योंकिजितने परमाण्वादिकपदार्थहैं वेजहांरहतेहैं उतने अवकाशको ग्रहणअवश्यकरतेहैं फिरउसीअवकाशमें दूसरेपरमाणुवाईश्वरकीस्थिति कभीनहींहोसक्ती औरउसकेबीचमेंअन्य

जोवभिन्नपदार्थहीहै चारोंकेमिलानेसे जीवकेगुण और जीवकभी
नहींउत्पन्नहोता इससे यहबातकहीथी किचारोंकेमिलनेसे जीव
भीहोताहै यहबातखण्डितहोगई प्रश्न ईश्वर,सर्वज्ञऔरत्रिकाल
दर्शीहै जैसाईश्वरनेअपनेज्ञानसेनिश्चितकियाहै वैसाहीजीवपाप
वापुण्यकरेगा फिरजीवको दण्डक्योंहोताहै क्योंकिउससे अन्यथा
जीवकुछनहींकरसक्ता जोअन्यथाजीवकरेगातो ईश्वरकासर्वज्ञा-
ननष्टहोजायगा इससे जैसाईश्वरनेपहिलेहीनिश्चयकररक्खाहै वै-
साजीवकरताहै ईश्वरजानताभीहै फिरआपसेउसकोनिवृत्तक्यों
नहींकरदेता जोनिवृत्त नहींकरदेता तोदण्ड क्योंदेताहै उत्तर
ईश्वरहै अत्यन्तदयालु जबजीवोंकोईश्वरनेरचा तबविचारकरके
सबकोस्वतन्त्र औरखदियक्योंकिपरतन्त्रकेरखनेसेकिसीकोकभीसु-
खनहींहोता जैसेकिकोईअपनीइच्छासे मरणतकएकस्थानमेंर-
हताहै तोभीइसमेंउसकोकुछदु: खनहींमालूमहोता उसकोजो
कोईएकघड़ीभरभीपराधीनबैठायरक्खे तोबड़ाउसकोदु:खहोता
है इससेपरमेश्वरनेसबजीवस्वतन्त्ररक्खे हैंजोचाहतातोपरतन्त्रभी
रखसक्ता परन्तुपरमेश्वरबड़ादयालु औरकृपासागरहै इससे सब
स्वतन्त्ररक्खे हैं परन्तुआज्ञा ईश्वरकीहै किजोजैसाकर्म करेगा
वहवैसाफलभोगेगा सोआज्ञाउसकीसत्यहीहै इससे क्याआयाकि
कर्मोंकेकरने औरपुण्योंके फलभोगनेमेंजीवस्वतन्त्रहै औरपापों
केफलभोगनेमेंपराधीनहै जीवकर्मोंकेकरनेवालेऔरभोगनेवाले
हैं जैसाजीवकर्मकरेगा वैसाहीईश्वरने ज्ञानसेनिश्चय पहिलेही
कियाहै औरभोक्तावहीहै त्रिकालज्ञानमेंईश्वरस्वतन्त्रऔरअपने
कर्मोंकेकरनेमेंतथाभोगनेमेंजीवस्वतन्त्रहैं प्रश्न जीवकानिजस्वरू-
पक्या॥ उत्तर विशिष्टस्य जीवत्वमन्वयव्यतिरेकाभ्याम् । यहकपिल
मुनिजीकासूत्रहै इसकायहअभिप्रायहै किजैसाअयनामिट्टीसेब-
नताहै परन्तु शुद्धकेहोनेसे जोउसकेसाम्हनेपदार्थहोगा सोउसमें
यथावत् देखपड़ेगा अथवालोहेकोअग्निमेंरखनेसेअग्निकेगुणवा-

लाहोताहै उनदोनोंमें प्रतिबिम्ब वा अग्निभिन्नहै क्योंकिउनसे पृथक् भीवे देख पड़ते हैं औरजुदा भी जाते हैं इससे दर्पण और लोहेसेव्यतिरिक्तहैं अर्थात् जुदेहैं औरजोकेवलजुदेहोते तोउनके गुणदर्पण औरलोहेमें नहोते इससे उनमें अन्वयभी उनकादेख पड़ताहै वैसेहीलिंगशरीरजोहै उसकाअधिष्ठाताहै सोईजीवहै दर्पणकेतुल्य अन्तःकरणशुद्धहै स्थूलदेहबाहरकाहै औरजिसमें गाढनिद्राहोतीहै सत्व रजोऔरतमोगुणमिलकेप्रकृतिकहातीहै जिसकानामअव्यक्तपरमसूक्ष्मभूत औरप्रधानभीहै वहकारणशरीरकहलाताहै सोसबप्राणियोंकाव्यापकके होनेसेएकहीहैदोनों केबीचमेंमध्यस्थलिंगशरीरहै चेतनएकजीवऔरदूसरापरमेश्वर हीहै तीसराकोईनहीसोपरमेश्वरहै विभुव्यापकसर्वत्रएकरसजहां२ लिंगशरीर विशिष्टजीव रहताहै वहां२परमेश्वरहीपूर्णहै सोलिंगशरीरमेंउसकासामान्यप्रकाशहै औरविशेषप्रकाशचेतन हीकाजीवहै जैसेदर्पणमेंसूर्यकाविशेषप्रकाशहोताहै सोपरमेश्वर कासदासंयोगरहताहै वियोगकभीनहीं इससेपरमेश्वरके अन्वय होनेसेवह चेतननहींहैवहजीवकहलाताहै औरलिंगदेहसेपरमेश्वरभिन्नकेहोनेसेपृथक्भीहै क्योंकिलिंगशरीरसेयुक्तजीवस्वर्गनर्कजन्मऔरमरणइत्यादिकोंमेंभ्रमणकरताहै परन्तुपरमेश्वरनिश्चलहै उसकेसाथभ्रमणनहींकरते हैं औरउसकेगुणदोषोंकेभोग वासंगीकभीनहीं होतेहैं कारणशरीरकेज्ञानलोभ औरक्रोधादिकगुणजीवमेंआतेहैं औरस्थूलशरीरकेशीतोष्णक्षुधा तृषादिक गुणभीजीवमेंआतेहैं क्योंकिदोनोंशरीरकेमध्यस्थवर्तीजीवहैं इससे दोनोंशरीरोंकेगुणकाभीसंगजीवकताहै इसकास्पष्टअन्वव्याख्यानमुक्तिऔरबन्धकेविषयमेंकियाजायगा प्रश्न ईश्वरव्यापकनहींहो सक्ता क्योंकिजितने परमाण्वादिकपदार्थहैं वेजहांरहतेहैं उतने अवकाशको ग्रहणअवश्यकरतेहैं फिरउसीअवकाशमें दूसरेपरमाणुवाईश्वरकोस्थिति कभीनहींहोसक्ती औरउसकेबीचमेंअल्प

पदार्थभीरहैं तोवहपरमाणुहीनहीं क्योंकिबहुतपदार्थोंकेसंयोग
सेबिनासंधिवापोलउसमेंनहींहोसक्ता सबवियोगकीअन्तावस्था
जोहै उसकोपरमाणुकहतेहैं किफिरजिसकाविभागहोसके उ-
त्तर ईश्वरव्यापकहैक्योंकिपरमाणुसेभीसूक्ष्महै जैसेत्रिसरेणुकेआ-
गेसंयोगवावियोग बुद्धिसेहमलोगजानतेऔरकरतेहैं वैसेहीपर-
माणुकावियोगभीबुद्धिसेकरसक्तेहैं औरईश्वरकीविभुताभीज्ञान
सेजानसक्तेहैं क्योंकिपरमेश्वरविभुनहोतेतोपरमाणुकारचनसं-
योगवियोग औरधारणभीनकरसक्ते फिरपरमाणुकाधारणभी
कैसेहोता जैसेपुष्पमेंगन्ध दूधमेंघृतघृतसेस्वाद औरगन्धऔरउन
सबपदार्थोंमें आकाशनाम पोलयेसबव्यापकहैं उन२पदार्थोंमें
वैसेपरमेश्वरभीपरमाणुऔरप्रकृत्यादिकतत्त्वोंमेंव्यापकहीहै प्रश्न
अच्छा ईश्वरसिद्ध औरव्यापकभीहै। परन्तुउसकी उपासनाप्रा-
र्थनाऔरस्तुतिकरनीआवश्यकनहीं क्योंकिकोईव्यवहारईश्वरके
सम्बन्धकाप्रत्यक्षनहींदेखपड़ता इससे ईश्वरअपनी ईश्वरतामेंरहै
औरहमजीवलोगअपनीजीवतामेंरहैं उत्तर ईश्वरकीउपासना
प्रार्थनाऔरस्तुति अवश्यसबजीवोंकोकरनीचाहिए जैसेकिकोई
किसीकाउपकारकरै उसकाप्रत्युपकार उसकोअवश्यकरनाचा-
हिए जोप्रत्युपकारनहींकरता सोअवश्यकृतघ्नहोताहै क्योंकिउ-
सनेउसकेसाथभलाईकिया औरउसनेउसकेसाथबुराईकी जैसा
उसनेसुखदियाथा फिरउसनेउसकोसुखकुछनहींदिया वाउसने
विरोधहीकरलिया इससे वहपुरुष कृतघ्नहोताहै जैसेमातापिता
औरकोईस्वामी जिसकापालनकरतेहैं वेकेवलअपने उपकारके
हेतुकरतेहैंकियहभीमेरापालनसमर्थहोकेकरैगा जबवहपुत्रवाभृत्य
यथावत्पालननहींकरता संसारमेंसज्जनलोगउसकोकृतघ्नकहते
हैं जोमाताऔरपिताअथवास्वामीउनकापालनकरतेहैं जिनप-
दार्थोंसेवेघृतजलपृथिवी औरअन्नादिकसबपरमेश्वरकेरचेहैं जो
जिसकोरचताहै वहीउसकामातापिता औरमुख्यस्वामीहोताहै

उनपदार्थों सेअपनावापुत्रादिकोंकापालनवेकरतेहैं जैसेकिसीने
अपनेभृत्यसेकहाकितू इसकोसेवाकरवामेरेइस पदार्थकोलेकेउस
कोदेआजबवहसेवा वापदार्थकोप्राप्तहोवै तबपदार्थदातास्वामीके
ऊपरवहप्रीतिकरैवाभृत्यकेकिन्तुपदार्थदातास्वामीहीसेप्रीतिकरे
गाभृत्यसेनहींकिन्तुजिसकापदार्थहै।वैउसीसेप्रीतिकरनाचाहिए
जैसेयुद्धमेंजयवापराजय राज्यकीप्राप्तिअथवाहानिराजाकोहोती
है भृत्योंकोनहीं वैसेहीपरमेश्वरकाजगत्है जगत्मेंजितनेपदार्थ
हैं उनकास्वामीपरमेश्वरहीहै इससे परमेश्वरकोअत्यन्त प्रीतिसे
स्तुतिप्रार्थनाऔरउपासना अवश्यकरनीहोचाहिएअन्यकिसीको
नहीं सेवातोमातापिताऔरविद्याकादेनेवाला श्रेष्ठऔरसुपात्र
कोभीकरनीचाहिए औरजोईश्वरकीउपासनानकरेगा वहकृतघ्न
होजायगा क्योंकिईश्वरनेहमलोगोंपरअनेकउपकारकिएहैं जि-
तनेजगत्मेंपदार्थरचेहैंवेसबजीवोंकेसुखकेहेतुरचेहैं औरजीवोंको
स्वतन्त्रकर्मकरनेमें रखदियेहैं इसमेंयहयजुर्वेदकाप्रमाणहै ॥ कु
र्वन्नेवेहकर्माणि जिजीविषेच्छतꣳसमाः। एवंत्वयिनान्यथेतोऽस्ति
नकर्मलिप्यतेनरे ॥ इसकायहअभिप्रायहै किजीवस्वतन्त्रआपही
आपकर्मकरताहै सोइससंसारमेंआपही आपकर्म कर्ताहुआ ॥
१०० सौवर्षतकजीनेकीइच्छाकरै परन्तु अधर्मकभीनकरै सदाध-
र्महीकरै जोजीवकहेगाकि मरनामुझकोअवश्यहै इससे पापको
नकरनाचाहिए ऐसेजोजीव विचारसेकर्मकरेगा सोपापोंमेंलिप्त
कभीनहोगा ॥ यन्मनसाध्यायतितद्वाचावदतियद्वाचावदतितत्क-
र्मणाकरोति। यत्कर्मणाकरोतितदभिसंपद्यते ॥ इसश्रुतिकाअर्थ
पहिलेकरदियाहै परन्तु इसका यहीअभिप्रायहै किजोजैसाकर्म
करै वहवैसाहीफलपावै ऐसीईश्वरकीआज्ञाहै ॥ यथर्तुलिङ्गा-
न्यृतवःस्वयमेवर्तुपर्यये। स्वामिस्वान्यभिपद्यन्ते तथाकर्माणिदे-
हिनः ॥ यहमनुकाश्लोकहै इसकायहअभिप्रायहै किजैसेवसन्ता-
दिकऋतुओंकेलिंगअर्थात्शीतोष्णादिकऋतुओंमेंप्राप्तहोतेहैं वैसे

सबजीवअपने२ कियेकर्मोंको प्राप्तहोतेहैं १॥ जोपुरुषईश्वरकी उपासनानकरेगा वहमहाकृतघ्नहोगा इसमेंकुछसन्देहनहीं प्र० जीवजब विद्यादिकशुद्धगुणऔरयोगाभ्याससे अणिमादिकसिद्धि-वालाहोताहै उसीकोईश्वर माननाचाहिए उससे भिन्नस्वतन्त्र ईश्वरमाननेकाकुछप्रयोजननहीं वहीसिद्धजगत्कोउत्पत्तिस्थिति धारणऔरप्रलयकरेगा इससे सनातनईश्वरकोईनहीं किन्तु साधनोंसे ईश्वरबहुत होजातेहैं उत्तर इनसेपूछनाचाहिए किजब जीवजीवकाशरीरइन्द्रियां औरपृथिव्यादिक तत्त्वोंकोकोईरचेगा तबतोविद्यादिकगुण औरयोगाभ्याससे कोईजीवसिद्धहोगा जोवे ऐसाकहैंकि जन्महीसेकोई सिद्धहोजायगा तोउनकेकहे साधनों सेसिद्धहोतीहै यहबातमिथ्याहोजायगी औरबिनासाधनोंकेसिद्ध होवै तोसबजीवसिद्धक्योंनहींहोते इससे यहबातउनकीमिथ्याहोगी सदासनातनसिद्धसबऐश्वर्यवाला साधनोंसेविनास्वतः प्रकाशस्वरूपईश्वरहै इसमेंकुछसन्देहनहीं प्रश्न जीवकर्मकरतेहैंऔर ईश्वरकराताहै क्योंकिईश्वरकीसत्ताकेविनाएकपत्ताभीनहींचल सक्ता इससे ईश्वरकेसहायसेजीवकर्मोंकोकरताहै आपसेआपकुछ करनेकोसमर्थनहीं उत्तर जीवआपहीआप स्वतन्त्रकर्मोंको करताहै ईश्वरकुछनहींकराता क्योंकिजोईश्वरकराते तोजीवकभी पापनहींकरता सोजीवपुण्य औरपापकरताहीहै इससे ईश्वर नहींकरता औरजोईश्वरकरता तोजीवसे ईश्वरको अधिकपाप होता जैसेएकमनुष्य चोरीकरताहै औरदूसराकराताहै इसमें करनेवालेसेकरानेवालेको पापअधिकहोताहै क्योंकियहप्रेरणा-उसकोनहींकरता तोवहचोरीकभीनकरता सोएकप्रेरणाकरने-वालाअनेकमनुष्योंकोचोरबनादेताहै इस्सेउसकोअधिकपापहोताहै इसवास्ते ईश्वर कभीनहींकरता औरजोईश्वर करातातो जीवकाठकोपुतलीकीनांईहोता जैसेउसकोनचावैवैसानाचे फिर भीवहीपरतन्त्रतामें जोदोषथाकासोईआजाता इस्से ईश्वरसबज-

गत्‌काकरनेवालाहोताहै परन्तु जीवोंकेकर्मोंकोकरनेवाकरानेवालानहीं प्रश्न जोईश्वरजीवोंको न रचतातोजीव क्योंपापकरते औरदुःखभीक्योंभोगते जैसेकिसीनेकूंआखोदा उसमेंकोईमनुष्य भी गिरपड़ताहै जोवह कूंआ नखोदता तोकोईन गिरता वैसे ईश्वरजीवोंकोनरचतातोजीवक्योंपापकरते उत्तर ऐसानकहना चाहिए क्योंकिजोकोईराजाभृत्योंकोरखताहै औरपुत्रोंकोमनुष्य उत्पादनकरताहै वागुरुशिष्योंकोशिक्षाकरताहै सोसबइसीवास्ते करतेहैं किसबधर्मकीरक्षाऔरधर्माचरणकरैं पापकरनेकाअभिप्रायइनकानहीं औरजैसेबालकवाभृत्यकेहाथमें लकड़ीशिक्षावा शस्त्रदेतेहै सोअपनेशरीरकोऔरस्वामीकोआज्ञा तथाधर्मकीरक्षाकेवास्ते देतेहैं ऐसाअभिप्राय उनकानहींहै किउनसेआपअपनेहीको मारकेमरजाय वैसेहीपरमेश्वरनेजीवरचेहैं सोकेवल धर्माचरणऔरमुक्त्यादिकसुखकेवास्ते रचेहैं औरजोजीवपाप करताहैसोअपनीमूर्खताहीसेकरताहैवैसाहीदुःखभोगताहै हस्तादिकजीवोंकेवास्ते इन्द्रियरचीहैं सोकेवलजीवोंकेव्यवहारसिद्धहोवैं औरउनसे सबसुखकार्योंकोकरैं इनमेंसेकोईअपनेहाथसे अपनीआंख निकाललेताहै वाअपनागलाकाटदेताहै सोकेवलअपनीमूढ़तासेकरताहै मातापितादिकोंकावैसाअभिप्रायनहीं इसेवहप्रश्नअच्छानहीं प्रश्न ईश्वरसर्वशक्तिमान्‌हैवानहीं उत्तर सर्वशक्तिमान्‌है प्रश्न जोसर्वशक्तिमान्‌होयतोअपनानाशभीईश्वरकरसक्ताहैवानहीं उत्तर ईश्वरअविनाशीपदार्थहै अत्यन्तसूक्ष्म जिसकाकिसीप्रकारवाशस्त्रसेंनाशनहींहोसक्ता क्योंकिजिसपदार्थका रूपऔरस्पर्शहोवै उसीकाअग्नि,जल,वायु, अथवाशस्त्रोंसे नाश होसक्ताहै अन्यथानहीं नाशशब्दकायहअर्थहै किअदर्शनअथवा कारणमेंमिलजाना सोपरमेश्वरकोईइन्द्रियसेदृश्यनहीं किफिर अदर्शनउसकोहोय औरइसकाकोईकारणभीनहीं जिसमेंईश्वर मिलजाय इससे ईश्वरकेनाशकीशंकाकरनीभीअनुचितहै औरई-

श्वरसर्वशक्तिमान्है परन्तु उसकीशक्तिन्याययुक्तहोहै अन्याययुक्त
नहीं इससे ईश्वरसदान्यायहीकरताहै कि अविनाशीपदार्थकोअ-
विनाशीजानताहै औरउसकेनाशको इच्छानहींकरता औरजो
विनाशवालापदार्थहै उसकानाशनहोवै ऐसेभीइच्छानहींकरता
क्योंकिईश्वरकाज्ञाननिर्भ्रमहै सोजैसापदार्थहैउसकोवैसाजान-
ता औरवैसाहीकरताहै प्रश्न जोईश्वरदयालुहै तोन्यायकारीन-
हीं औरजोन्यायकारीहै तोदयालुनहीं क्योंकिन्यायउसकानाम
हैकिधर्मकरना औरपक्षपात काछोड़ना इससे क्याआयाकिदण्ड
देनेकेयोग्य कोदण्डदेना औरअदण्डको कभीदण्डनदेना सोजो
दयालुहोगा सोतोकभी दण्डनदेसकेगा क्योंकिदयानामहै करु-
णाऔरकृपाकासो सदाअन्यकेसुखऔरउपकारमेंरहैगा इससे ई-
श्वरकोदयालुमानोंतोन्यायकारीमतमानों उत्तर न्यायकारीका
तोबहुतस्थानोंमेंअर्थकरदियाहै औरदयालुकाभी परन्तुन्यायऔ-
रदयालुइनदोनोंकाथोड़ासाभेदहै दण्डकाजोदेनाऔरजीवोंको
स्वतन्त्रताकारखना औरसबपदार्थबुद्ध्यादिकोंकादेना सर्वज्ञसर्व
पदार्थकोजिसमेंयथार्थपदार्थविद्याहैउसवेदशास्त्रकाप्रकाशकरना
यहवड़ीईश्वरकीदयाहै किजोजैसाकर्मकरै वहवैसाहीफलपावै
अर्थात्यथावत्जोदण्डकादेनाहै सोउसकेऔरउससे भिन्नसबजी-
वोंकेऊपरईश्वरदयाकरताहै किकोईनपापकरै औरनदुःखपावै
जैसेराजदण्डहै सोकेवलसब मनुष्योंकेऊपर दयाकाप्रकाशहीहै
क्योंकिराजाकायह अभिप्रायहोताहैकिकोईअनर्थमें प्रवृत्तनहोवै
जोइसदण्डनदेंगे तोसबमनुष्यअधर्ममेंप्रवृत्तहोजांयगे इससे अप-
राधीपुरुषकेऊपर अत्यन्तकठिनदण्डदेताहै किसबमनुष्यभयमा-
नहोनेसे अधर्ममें प्रवृत्तनहोवैं वैसाहीईश्वर कौसबजीवोंके ऊ-
परदयाहै किएककोदुःखीदेखकेअन्यपुरुषपापमेंप्रवृत्तनहोवै और
फिरजीवकोयहांतक अधिकारदियाहै किअणिमादिकसिद्धित्रि-
कालदर्शन औरआपजीवईश्वरसंयोगसे अनन्तसुखको पासक्ताहै

किकभीजिसकोफिरदुःखनहोवे इस्सेईश्वरन्यायकारीऔरदयालु है इसमेंकुछविरोधनहीं प्रश्न ईश्वरसर्वशक्तिमान्औरन्यायकारी किसप्रकारसेहै उत्तर देखनाचाहिएकिजितनेजीवहैं उनकोतुल्यपदार्थदियेहैं पक्षपातकिसीकाभीनहींकिया और जैसीव्यवस्था न्यायसे यथायोग्यकरनीचाहिए वैसीहीकियाहै इस्से ईश्वरन्याय कारीहै जगत्मेंसूर्य्य,चन्द्र,पृथिव्यादिकभूत,हत्यादिक,स्थावरऔर मनुष्यादिक चरइनकारचन हमलोगदेखके तथाधारणऔरप्रलयकोदेखकेआश्चर्यअनन्तईश्वरकीशक्तिकोनिश्चितजानतेहैं क्योंकि सर्वशक्तिमान् जोनहोता तोसब प्रकारका विचित्र जगत् न रचसक्ता इस्से हमलोग जानतेहैं किईश्वर सर्वशक्तिमान्है इस मेंकुछसन्देहनहीं प्रश्न ईश्वरविद्यावानहैवानहीं उत्तर ईश्वरमें अनन्तविद्याहै क्योंकिजोविद्यानहोतो तोयथायोग्यजगत्कीरचनाकोनजानता जगत्कोरचनायथायोग्यकरनेसे पूर्णविद्याईश्वर मेंहै प्रश्न ईश्वरकाजन्म होताहैवानहीं उत्तर उसकाजन्म कभी नहींहोता क्योंकि जन्मलेनेका प्रयोजन कुछनहीं जोसमर्थनहीं होता सोईदूसरेकासहायलेताहै जोसर्वशक्तिमान्है उसको किसीकेसहायसे कुछप्रयोजननहीं आपही सबकार्यको करसक्ताहै प्रश्न राम,कृष्णादिकअवतारईश्वरकेभएहैं यसूमसीहईश्वरकापुत्र औरमहम्मद आदिपुरुषोंको उपदेशकरनेकेवास्ते भेजा यहबात संसारमेंप्रसिद्धहै अपनेभक्तोंकेवास्ते शरीरधारणकरकेदर्शनदिया औरनानाविधिलीलाकिई किजिसकोगाकेभक्तलोगतरजाते हैं फिरआपकैसेकहतेहोकि जन्मईश्वरकानहींहोता उत्तर यह बातयुक्तिसेविरुद्धहै औरशास्त्रप्रमाणसेभी क्योंकिईश्वर अनन्तहै जिसकादेशकाल औरवस्तु मेंभेदनहींहै एकरसहै जिसकाखण्ड कभीनहींहोता औरआकाशादिकबड़े स्थूलपदार्थभी परमेश्वर केसामने एकपरमाणुकेयोग्यभीनहीं औरशरीरजोहोताहै सो शरीरसेस्थूलहोताहै जैसेघरमेंरहनेवालोंसे घरबड़ाहोताहै सो

ईश्वरकाशरीर किसपदार्थसे वनसक्ताहै किजिसमेंईश्वरनिवास
करै औरजोकिसीमें निवासकरेगा तोअनन्त नहींहोगा क्योंकि
शरीरसेशरीरछोटाहीहोताहै जवशरीरकेसहायसे रावणकंसादिकोंकोमारै तथाउपदेश भीकरै विनाशरीरसे नकरसकेतो
ईश्वरसर्व शक्तिमान्होनहीं औरजोरावणादिकोंको माराचाहै
और उपदेश कराचाहै तोसर्वव्यापी औरअन्तर्यामी होनेसेएक
क्षणमें सवजगत्कामारडालै औरउपदेशभीकरदेवै तथाअपने
भक्तोंको प्रसन्नभी करदेवै इससे ईश्वरकी ईश्वरतायहीहै किविना
सहायसेसवकुछकरसक्ताहै औरजोसहायकेविनानकरसकेतोउसकासर्वशक्तित्वही नष्टहोजाय इससे ईश्वरकाकभी जन्मऔर किसीकासहायलेताहै ऐसीशंकाकरनीव्यर्थहै प्रश्न जैसेसवजगत्की
उत्पत्तिहोतीहै ईश्वरसेवैसेईश्वरकोभीउत्पत्तिकिसीसेहोतीहोगी
उत्तर ईश्वरसेकौनवड़ापदार्थहै किजिससे ईश्वरउत्पन्नहोवै पहिलेहीप्रश्नकेउत्तरसेइसकाउत्तरहोगया औरजोउत्पन्नहोताहै उसकोईश्वरहमलोगनहींमानते किन्तु जिसकीउत्पत्तिकभीनहोवै
औरसवसंसारकी जिससे उत्पत्तिहोवै उसीकोवेदादिक सत्यशास्त्र
औरसज्जनलोगईश्वरमानतेहैं औरकोईनहीं जोकोईईश्वरकीभी
उत्पत्तिमानताहै उसकेमतमेंअनवस्थादोषआवैगा किजैसेउसने
ईश्वरकी उत्पत्तिमानी फिरईश्वरकेपिताकी भीउत्पत्ति मानना
चाहिए औरईश्वरकेपिताके पिताकीभीउत्पत्ति माननीचाहिए
ऐसेहीआगे२माननेसे अनवस्थाआजायगी अथवाजिसकीवहउत्पत्तिनमानेगा उसीकोहमलोगईश्वरकहतेहैं अन्यकोनहीं प्रश्न
ईश्वर साकारहै वानिराकार उत्तर ईश्वर निराकारहै क्योंकि
जोनिराकारनहोता तोसर्वशक्तिमान्सर्वव्यापकसवकाधारनेवालाऔरसर्वान्तर्यामी औरनित्यकभीनहोता इससे ईश्वरनिराकार
हीहै प्रश्न ईश्वरचेतनहैअथवाजड़उत्तर जोजड़होतातोसवजगत्
की रचना और ज्ञानादिक अनन्त गुण वाला कभी न होता

इस्से ईश्वरचेतनहीहै यहथोड़ासाईश्वरकेविषयमेंलिखदिया इस्के आगेवेदविषयमेंलिखाजायगा॥ उसीईश्वरने सर्वज्ञसर्वविद्यायुक्त औरसत्य२ विचारसहित कृपाकरकेवेदशास्त्रसबजीवोंके ज्ञानादिकउपकारके वास्ते रचाहै प्रश्न ईश्वर निराकारहै उसकोमुख नही फिरवेदकाउच्चारण औररचनाकैसेकिया उत्तर यहशंका असमर्थोंमें होतीहै किबिनामुख मुखकाकामनकरसकै ईश्वर बिनामुखसे मुखकाकाम करसक्ता है क्योंकिवह सर्वशक्तिमान्है औरजोऐसानमानेगा उसकेमतमेंयहदोषआवैगा किहाथ,पांव आंख,शरीर औरकान बिनाजगत्कैसेरचा जैसेबिनाहाथ आदिकके सबजगत् कोरचा तो वेदके रचनेमें कुछशंका नही प्रश्न ओष्ठादिकस्थानोंकाजिह्वासे वायुकोप्रेरणाहोनेसे अक्षरउच्चारणहोसक्तेहैं अन्यथानहीं उत्तर फिरभीवहीदोषआवेगा किईश्वरसर्वशक्तिमान नहोगा क्योंकि ओष्ठादिकके स्पर्श औरप्राणबिनाईश्वरउच्चारण नहीकरसक्ता तोईश्वर पराधीनहोगया और हाथादिकों केबिना ईश्वरनेजगत्भी नरचाहोगा जैसाकि ओष्ठादिकस्थान औरप्राणबिना उच्चारणनही करसक्ता ऐसीशंका जीवमेंघटसक्तीहै ईश्वरमेंनही प्रश्न लेखनीमसीइनसे ककारादिकअक्षरबनतेहैं बिनाइनकेनही फिरईश्वरनेकहांसेकागदलेखनीमसीछुरिकावाक्औरपटिया यहसामग्रीपाई जिस्से सबअक्षर रचे उत्तर यहबड़ीशंकाआपनेकिया किईश्वरकोअनीश्वरहीबना दिया अच्छामैंआपसेपूछताहूं किनासिका,आंख,ओष्ठ,कान,नख, लोम, नाड़ी, और उनका सन्धान तथा आकारबिना सामग्री और साधन शरीर तथा अक्षर भी रच लिए प्रश्न फिर यहलिखो लिखाईपुस्तक संसारमेंकैसेआई औरकिन्हमाया आकाशसेगिरीवापातालसेआगई उत्तर आपकाशरीर वृक्ष, पर्वत औरइतनीबड़ी पृथिवी अन्तरिक्षमें कैसेआगए जैसेयेआगए वैसे पुस्तकभीआगई इसमेंक्या आश्चर्य कुछभीनही अग्नि,वायु और

आदित्यसृष्टिकेआदिमेंभयेथे उन्होंनेवेदपाये उनसेब्रह्मानेपढ़ ब्रह्मा
सेविराटने विराटसेमनुने मनुसेऽथप्रजापतियोंनेपढ़े औरउनसे
प्रजामेंफैलगए प्रश्न अग्न्यादिकोंने ईश्वरसेवेदोंकोकैसेपढ़े उत्तर
इसमेंदोषनहैं ईश्वरनेउनको आकाशवाणीकीनांई सबशब्दसब
मन्त्र उनकेस्वरअर्थऔरसम्बन्धभीसुनादिए इससे वेदोंकानामश्रु-
तिरक्खाहै अथवाउनकेहृदयमेंईश्वरअन्तर्यामीहै उसनेउसीहृ-
दयमें वेदोंकाप्रकाशकरदिया फिरउनोंनेअन्योंसे परप्रकाशकर
दिए॥ योब्रह्माणंविदधातिपूर्वं योवैवेदांश्चप्रहिणोतितस्मै तंहदेव-
मात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वैशरणमहंप्रपद्ये यहवेदकाप्रमाणहै इस-
कायहअभिप्रायहै किजोईश्वरब्रह्मादिकदेव औरसबजगत्का र-
चनकर्ताभया इससेपहिलेही वेदोंकोरचके ब्रह्माकोअग्न्यादिदेव
नाम हिरण्यगर्भादिद्वाराजनादिये क्योंकिविद्याकेविना सबजीव
अन्धेहोतेहैं कुछनहीं जानसकें जैसेपशु इससे परमेश्वरने वेदका
प्रकाशकरदिया सबमनुष्योंकोसबपदार्थविद्याजाननेकेहेतु प्रश्न ई-
श्वरनेउनदेवअर्थातविद्वानोंकेहृदयमें प्रकाशवेदोंकाकिया सोलो-
गोंनेबातबनालियाहै किपरमेश्वरनेवेदबनाएहैं ऐसाहमलोगक-
हेंगे तोवेदोंमेंसबलोगश्रद्धाकरेंगे औरउनकाप्रमाणभीकरें-
गे परन्तुअनुमानसे यहनिश्चितजानाजाताहै किउनअग्न्यादिक
देव विद्वानोंनेहीं वेदबनालिएहैं उत्तर-परमेश्वरने आकाशसे
लेके तृण,घास,पर्यन्त जगत्कोरचकेप्रकाशकरदिया औरसर्वो-
त्कृष्टसबपदार्थोंका जिससे निश्चयहोताहै उसविद्याकोप्रकाशन
करै तो यह परमेश्वरमें दोषआताहै किपरमेश्वर दयालुनहीं
और छली भी है क्योंकि ऐसा अनुमान से जाना जायगा अप-
नीविद्याका प्रकाश इसवास्ते नहींकिया किसबजीव विद्यापढ़नें
सेज्ञानी औरसुखीहोजांयगे फिरमुझको जानकेअनन्त आनन्द
युक्तभी होजांयगे यहदोष परमेश्वरमेंआवेगा जैसेकोई आजी-
विका विद्यासेकरताहोय सोपण्डितनहीं वहऐसीइच्छाकरताहै

जोकोईपण्डितहोगातोमेरीप्रतिष्ठा औरआजीविकान्यूनहोजाय-
गी ऐसाक्षुद्रबुद्धिसेवहमनुष्यचाहताहै औरजोसज्जनलोगहैं वेतो
सदाविद्यादिकगुणोंकाप्रकाशकियाकरतेहैं सोपरमेश्वरअपनीअ-
नन्तविद्याका प्रकाशक्यानकरेगा किन्तुअवश्यहीकरेगा क्योंकि
एकओरसबजगत्औरएकओरविद्या इनदोनोंमेंसेभीविद्याअत्य-
न्तउत्तमहै सोईश्वरक्याआजीविकाधीन औरप्रतिष्ठाकेलोभसेवि-
द्याका प्रकाशनकरेगा किन्तुअवश्यहीकरेगा इसमें कुछसन्देह
नहीं औरजोकोईऐसाकहैकि पण्डितोंनेवेदविद्यारचलियाहै उ-
नसेपूछाजाताहै किवेबिनाशास्त्रके पढ़नेसे पण्डितकैसेभए और
जो वे कहैं कि अपनी बुद्धि और विचार से हो गये तो आज
कालभी बुद्धि और विचारसे होजांय सो विना विद्याके पढ़नेंसे
कोईपण्डितनहींहोता क्योंकिजबसृष्टिरचीगई उससमयकोईम-
नुष्यनहींथा बिनापरमेश्वरके फिरवह अनुमानसे जानाजाताहै
वहअनुमानभीयथार्थकभीनहोसकेगा आजतकबहुतबुद्धिमानप-
दार्थोंका विचारकर्तेहैं सोकिसीपदार्थमें गुणवादोषजानतेहैं प-
रन्तुइतनेइसमें गुणहैं वाइतनेहीदोषहैं ऐसानिश्चयउनकोनहो
होता जितनीअपनीबुद्धि उतनाहीजानतेहैं अधिकनहीं औरप-
रमेश्वरसबपदार्थोंको यथावत्जानताहै सोअपनाज्ञानऔरवि-
द्या क्यापरमेश्वर गुप्तरक्खैगा ऐसा ईर्ष्यावान परमेश्वर होग-
या किसबकुअपनी विद्याकाप्रकाशनकरै किन्तु दयालुके होनेसे
औरईर्ष्या,कपट,छलादिदोष रहितहोनेसे अवश्यविद्याकाप्रकाश
करैगा इसमेंकुछसन्देह हनहीं प्रश्न वेदकोआपपरमेश्वरसे उत्पत्ति
मानतेहो जैसेजगत्को सोजैसाजगत्अनित्यहै वैसावेदभीअनि-
त्यहोगा उत्तर वेदकेपुस्तक औरपठनपाठन जबतकजगत्रहैगा
तबतकवेदकीपुस्तक औरपठनपाठनभीरहैंगे जबजगत् नष्टहोगा
उसकेसाथयेतोनभीनष्टहोगें परन्तु वेदनष्टनहोंगे क्योंकिवहवि-
द्यापरमेश्वरकीहै जैसेपरमेश्वरनित्यहै वैसेविद्यादिकगुणभी पर-

मेश्वरकेनित्यहैं प्रश्न वेदकीरचनाकोईबुद्धिमान होसोरचसक्ता है
क्योंकि ॥ एतद्युक्तंसनातनंविज्ञानीहि एतस्यवाऽऽर्षाणां देवऋषी-
णामृषिसुनीनाम्मुनिः। ऐसेऔरबहुतशब्दकेरचनेसे वेदकोजैसो
संस्कृतवैसोमनुष्य पण्डितभीरचसक्ताहै जैसाकियहसंस्कृत ह-
मनेरचलियाहै फिरआपकैसे वेदकेरचनेका असम्भव मानतेहैं
किपरमेश्वरविनावेदकोकोईनहींरचसक्ता उत्तर हमलोगसंस्कृ-
तलाघसे वेदकानिश्चयनहींकर्ते किपरमेश्वरने रचाहै क्योंकिसं-
स्कृततोजैसोतैसो पण्डितरचसक्ताहै परन्तुपरमेश्वरकेगुणउनसं-
स्कृतमें नहीं देखपड़ते जोमनुष्यहोगा सोअवश्यपक्षपातकिसी
स्थानमेंकरैगा औरपरमेश्वरपक्षपात किसीप्रकारसे कभीनकरै-
गा क्योंकिपरमेश्वरपूर्णानन्दऔरपूर्णकामहै सोवेदमेंकिसीप्रका-
रसे एकअक्षरमें भीपक्षपातदेखनेमें नहींआता फिरदेहधारी
सबविद्याओंमेंयथावत्पूर्णकभीनहींहोता सोजबकोईपुस्तकरचे-
गा तबजिसविद्यामेंनिपुणहोगा उसविद्याकीबातअच्छीप्रकारसे
लिखेगा परन्तुजिसविद्याको नहींजानता उसकाविषय जबकुछ
आवेगा तबकुछन लिखसकेगा जोलिखेगातो अन्यथा लिखेगा
औरपरमेश्वर सबविद्याओंकेविषयोंको यथावत्लिखेगा सोवेदों
मेंसबविद्यायथावत्लिखीहैं मनुष्यजबग्रन्थरचेगाउसमेंकोईबुद्धि-
मानहोगा तोभीसूक्ष्मदोषआवैंगे किधर्मकाकिसीप्रकारसेखण्ड-
नऔरअधर्मकामण्डन थोड़ाभीअवश्यआजायगा परमेश्वरकेलि-
खनेमें धर्मकाखण्डन वाअधर्मकामण्डन किसीप्रकारसेलेशमा-
त्रभीनआवेगा सोवेदमें ऐसाहीहै मनुष्य शब्द अर्थ औरसम्बन्ध
इनकोजितनीबुद्धिउतनाहीजानेगा अधिकनहीं सोवैसेहीशब्दअ-
पनेग्रन्थमेंलिखेगा जिस्से एक,दो,तीन,चारवापांचप्रयोजन जैसे
तैसेनिकलसकैं औरपरमेश्वरसर्वज्ञकेहोनेसे शब्दअर्थऔरसम्ब-
न्धऐसेरक्खैगें किजिनसेअसंख्यातप्रयोजन औरसबविद्यायथाव-
त्आजांय सोपरमेश्वरकाऐसासामर्थ्यहै अन्यकानहीं सोवैसेवे-

दहोहैं कि जिनमें असंख्यात प्रयोजन और सबविद्या निकलती हैं क्योंकि परमेश्वर ने सबविद्यायुक्त वेदों को रचे हैं इससे सबकार्य वेदों से सिद्ध होते हैं और वेदों के नाम लिखके गोपालतापिनी, रामतापिनी, कृष्णतापिनी और अल्लोपनिषदादिक मनुष्यों ने बहुतग्रन्थ रच लिए हैं परन्तु विद्वान् यथावत् विचार करके देखै तो उन ग्रन्थों में जैसी मनुष्यों की क्षुद्रबुद्धि वैसी ही क्षुद्रता देख पड़ती है सो परमेश्वर और उनके वचनों में दिन और रात का जैसा भेद है वैसा भेद देख पड़ता है प्रश्न वेद पौरुषेय है अथवा अपौरुषेय अर्थात् ईश्वर का रचा है वा किसी देहधारी का उत्तर वेद देहधारी का रचा कभी नहीं है किन्तु परमेश्वर ही ने रचा है परन्तु वेद अपौरुषेय और पौरुषेय भी है क्योंकि पुरुष देहधारी जीव का नाम है और पूर्ण के होने से परमेश्वर का भी नाम है अपौरुषेय तो इससे है कि कोई देहधारी जीव का रचा नहीं और पौरुषेय इसवास्ते है कि पूर्णपुरुष जो परमेश्वर उसने रचा है इससे पौरुषेय भी है और परमेश्वर की विद्या सनातन है सोई वेद है इससे भी वेद अपौरुषेय है क्योंकि परमेश्वर की विद्या जो वेद उसकी उत्पत्ति वा नाश कभी नहीं होती परन्तु पुस्तक पठन और पाठन इन तीनों का जगत् के प्रलय में प्रलय हो जाता है वेद ईश्वर में नित्य रहते हैं इससे वेद का नाश कभी नहीं होता प्रश्न जैसे वेद ईश्वर से उत्पन्न होता है वैसा जगत् भी ईश्वर से उत्पन्न होता है जैसा जगत् विनश्वर है वैसा वेद भी विनश्वर है और जो वेद नित्य होगा तो जगत् भी नित्य होगा उत्तर जगत् जो है सो प्रकृति परमाणु और उनके परस्पर मिलाने से परमेश्वर से उत्पन्न भया है सो कभी कारण जो परमेश्वर उसमें कार्यरूप जगत् नष्ट हो जायगा परन्तु वेद जगत् जैसा कार्य है वैसा नहीं क्योंकि वेद तो परमेश्वर की विद्या है सो जो नाश हो जाय तो परमेश्वर विद्याहीन होने से अविद्वान् हो होजाय सो परमेश्वर अविद्वान् कभी नहीं होता सदा पूर्ण ज्ञान और पूर्ण विद्यावान रहता है सो जैसा क्रम परमेश्वर की विद्या में है वैसा ही क्रम शब्द अर्थ सम्बन्ध मन्त्र और संहिता अर्थात् पूर्वा-

परमन्त्रोंका सम्बन्धजोमन्त्र जिस्से पूर्वत्रापीछेलिखनाचाहिए सो सबपरमेश्वरहीनेरक्खे हैं इस्से कुछसन्देहनहीं जैसाजगत्कासंयोगवावियोगहोताहै वैसावेदविद्याकासंयोगवावियोगकभीनहीं होता क्योंकिपरमेश्वर औरपरमेश्वरके विद्यादिकसबगुणभीनित्यहैं इस्से वेदविद्यानित्यहीहै जोऐसानमानेगाउसकेमतमें अनवस्थादोषआवेगा किकोईविद्यापुस्तकस्वयंभू औरईश्वरकारचान मानेगा तोसबपुस्तकोंके सत्य वा असत्य का निश्चय कैसे करैगा क्योंकिएकपुस्तकस्वतःप्रमाणरहेगा औरउसकेप्रमाणसे वाअप्रमाणसेसत्यवामिथ्यापुस्तकोंकानिश्चयहोसक्ताहै औरजोकोईपुस्तकस्वतः प्रमाणहीनहोगा तोकोईपुस्तकका निश्चयनहींहोसकेगा क्योंकिएकमनुष्यनेअपनीबुद्धिकीकल्पनासे पुस्तकरचा दूसरेनेउसकाअपनीबुद्धिसे खण्डनकरदिया दूसरेकातीसरेने तीसरेका चौथेने ऐसेहीकिसीपुस्तकका प्रमाणनहोगा फिरअनवस्थाभ्रम केहोनेसेसदारहैगी इस्सेवेदपुस्तकस्वतः प्रमाणहोनेसे परमेश्वर हीकारचाहै अन्यथानहीं क्योंकिऐसीसुगमसंस्कृतललितपद सत्यार्थयुक्त अनेकप्रयोजनऔरअनेकविद्यासहित स्वल्पअक्षरसुगमवेदहीकीपुस्तकहै अन्यनहींऔरजगत्केकिसीपदार्थका कुछनिश्चयमनुष्यअपनीबुद्धिसेकरसक्ताहै परन्तुईश्वरस्वरूप औरउसके न्यायकारित्वादिक अनन्तगुणवेदपुस्तकमें जैसेलिखेहैं वैसालेख कोईसंस्कृतवाभाषापुस्तकमेंनहीहै क्योंकिकिसीकोवैसी बुद्धिनहीं होसक्ती किपरमेश्वरकास्वरूपऔरयथावत्गुणलिखसकै सोऐसा ही जानना चाहिए किहमलोगोंपर अत्यन्त कृपासे परमेश्वरने अपनास्वरूप औरअपनेसत्यगुणवेदपुस्तकमेंप्रकाशकरदिएहैं जिस्से किहमलोगभीपरमेश्वरकास्वरूप औरगुणवेदपुस्तकसेजानके अत्यन्तआनन्दयुक्तहोतेहैं सोपक्षपातकोछोड़के यथावत्विद्यायुक्त पुरुष अत्यन्तवेदार्थका विचारकरैगा सोईअनन्तसुखको पावेगा अन्यथानहीं प्रश्न ऐसेही सबमनुष्यएक २ पुस्तकको परमेश्वरकी

मानतेहैं जैसेकि बाबिल्,इञ्जील औरकुरान् वैसेआपलोगोंको
भीवेदमेंआग्रहहै जिस्सेकिअत्यन्त स्तुतिकरतेहैं जोवेदपरमेश्वरका
रचाहोगा तोवेपुस्तक परमेश्वरकेरचे क्योंनहीं इसमेंक्याप्रमाण
है किवेदही ईश्वरकारचाहै औरअन्यपुस्तकनहीं उत्तर सबम-
नुष्योंकाप्रमाणनहीहोसक्ता क्योंकिसबमनुष्यपूर्णविद्यावालेआप्त
औरपक्षपातरहितनहीहोते जिस्से किसबमनुष्योंके कहनेकाप्र-
माणहोजाय जोआप्त औरपक्षपात रहितहोवें उन्हीका प्रमाण
करनायोग्यहै अन्यकानहीं क्योंकिजोमूर्खोंकाहमलोग प्रमाण
करैं तोबड़ाभारीदोषआजायगा वेअन्यथाभाषणकरतेहैं औरअ-
न्यथाकर्मभीकरतेहैं इस्से आप्तलोगोंकाप्रमाणकरनाचाहिए और
वेद के सामने इञ्जील और कुरानादिकी कुछ गणनाही नहीं
होसक्ती किन्तुउनमेंविद्याकीबाततोकुछनहींहै। जैसोकिकहा-
मैं होयवैसेवेपुस्तकहैं प्रश्न आप्तकानिश्चयकैसेहोसक्ताहै वेदवाले
कहतेहैं किहमारीबातसत्यहै अन्यलोगकहतेहैं किहमलोगोंकी
बातसत्यहै इसमेंक्याप्रमाणहै कियहीबातसत्यहै अन्यनहीं उत्तर
इसकासमाधान तृतियसमुल्लासमेंकहदियाहै किऐसालक्षणवा-
लाआप्तहोताहै औरप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंसे सत्यवाअसत्यकायथा-
वत्निश्चयभीहोताहै उनसेनिश्चयकरकेसत्यकोमाननाचाहिए अ-
सत्यकोनहीं प्रश्न वेदकिसीदेशविशेषऔरभिन्नदेशमें रहनेवाले
मनुष्योंकेहेतुहैं वासबमनुष्योंकेहेतुहैं उत्तर वेदसबमनुष्योंकेवा-
स्तेहैं क्योंकिजोविद्या औरसत्यबातहोतीहै सोसबकेहेतु होतीहै
औरवेदमेंकहींनहींलिखा किइसदेशवाउनमनुष्योंकेहेतुवेदब-
नायागया औरअधिकारभीइनकाहै औरइनकानहीं जैसेकि बा-
बिल,मूसा औरइसराईल कुलादिकोंकेवास्तेपुस्तकआई औरमु-
हम्मदादिकोंकेहेतुकुरान् यहबातमनुष्योंकीहोतीहै अपनेदेशवा-
लेके ऊपरप्रीति औरअन्यकेऊपरनहीं जोईश्वरकावचन सोतो
सर्वज्ञऔरसबजगत्कास्वामीहै इस्से तुल्यकृपाऔरतुल्यदृष्टिहोर-

क्खैगा अन्यथा नहीं ऐसापुस्तक वेदही है अन्यनहीं क्योंकि अन्यपुस्तकोंमें ऐसीविद्यानहीं औरकहानीकीनांईउनमें कथाहै औरपक्षपात बहुतसेहैं इस्से वेदपुस्तकही ईश्वरकृतहै अन्यनहीं इसमेंकिसीकोजो सन्देहहोय तोपक्षपातकोछोड़के तीनोंपुस्तकों काविद्याप्रीति औरसज्जनतासे विचारकरैं तबयहीनिश्चयहोगा किवेदपुस्तकही ईश्वरकृतहै अन्यनहीं प्रश्न वेदोंकासबमनुष्योंको पढ़नेऔरपढ़ानेका अधिकारहैवानहीं उत्तर इसकाविचार तृतयसमुल्लासमें वर्णव्यवस्थाके कथनमें कियागयाहै वहांजानलेना इसप्रकारसेवहांलिखाहै किजोमूर्खहैवहशूद्रहै उसकापढ़ना वाउसको पढ़ाना व्यर्थहै क्योंकिउसको बुद्धि न होनेसे कुछ विद्यानआवेगी अन्यव्यवस्थाचतुर्थ समुल्लासमेंदेखलेना प्रश्न शूद्रादिकोंकोवेदसुन्नेकाअधिकारहैवानहीं उत्तर जिसकोकानइन्द्रियहै औरउसकेसमीपजोशब्दहोगा उसकोअवश्यसुनेगा सोवेदकाशब्दअथवाअन्यशब्दहोवैवहसबकोसुनेगापरन्तुशूद्रमूर्खहोनेसे सुनकेभीकुछनकरसकेगा इसहेतुजहांतहांनिषेधलिखाहै किशूद्रकोवेदनपढ़नाचाहिए किउसकोकुछआतानहीं। प्रश्न वेदव्यासजीनेवेदरचेहैं इस्से उनकानाम वेदव्यासपड़ाहै यहबातभागवतमें लिखीहै फिरआपकैसी बातकहतेहैं किवेदईश्वरनेरचेहैं उत्तर यहबातअत्यन्तमिथ्याहै क्योंकिव्यासजीनेंभी वेदपढ़ेथे औरअपने पुत्रशुकदेवादिकोंको पढ़ायेथे औरउनकापितापराशर उसका पितामहशक्ति और प्रपितामह वशिष्ठब्रह्मा औरबृहस्पत्यादिकोंनेभीपढ़ेथे जोव्यासकेबनाये वेदहोते तोवेकैसेपढ़ते क्योंकि व्यासजीतो बहुतपीछेभयेहैं औरजो उनकानाम वेदव्यास पड़ाहै सो दूसरा तिससेपड़ाहै कि । वेदेषुव्यासोविस्तारोनामविस्तृताबुद्धिर्यस्यासवेदव्यासः ॥ व्यासजीनेवेदोंकोपढ़के औरपढ़ायेहैं जिस्से सब जगत्में वेदकापठनऔरपाठनफैलगया औरउनकीबुद्धि वेदोंमें विशालथी कियथावतशब्दअर्थऔरसम्बन्धसे वेदोंकोजानतेथे इ-

से इनकानामवेदव्यासरक्खागया पहिलेइनकानामजन्मका कृष्णद्वैपायनथा वेदव्यासनाम विद्याकेगुणसेभया है इससे भागवतमें जोबातलिखीहै सोवेदोंकोनिन्दाकेहेतुलिखीहै उसकायह अभिप्रायथा वेदोंकीनिन्दामें किजिसनेवेदरचेहैं उसीनेभागवतभीरचाऔरवेदोंकेपढ़नेसे व्यासजीकोशान्तिभीनभई किन्तुभागवतकेरचनेसेउनकोशान्तिभई औरभागवत वेदोंकाफलहै अर्थातवेदोंसेभीउत्तमहै सोयहबातदुर्बुद्धिजीवोपदासउसकोकहीहै क्योंकि व्यासजीकेनामसे उसनेसब भागवतरचाहै इसहेतुकि व्यासजीकेनामलिखनेसे सबलोगप्रमाणकरैं औरवेदोंकोनिन्दासे मेरेग्रन्थको प्रवृत्तिकेहोनेसे सम्प्रदायकीवृद्धि औरधनका लाभहोय इससे सज्जनलोग इसबातकोमिथ्याहीमानैं। प्रश्न-वेदईश्वरनेसंस्कृतभाषामेंक्योंरचे क्याईश्वरकी भाषासंस्कृतहीहै जोदेशभाषामेंरचते तोसबमनुष्यपरिश्रमकेविना वेदोंकोसमझलेते औरसंस्कृतजाननेकेहेतु व्याकरणादिक सामग्रीपढ़नी चाहिए इसकेबिना वेदोंकाअर्थ कभीमालूमनहोगा। उत्तर-संस्कृतमें इसहेतुवेदरचे गयेहैं किछोटेपुस्तकमें सबविद्याआजांय औरजोभाषामेंरचते तोबड़े २ ग्रन्थहोजाते औरएकदेशहीका उपकारहोता सबदेशोंकानहीं औरजितनीदेशभाषाहैं उनमेंरचतेतबतोपुस्तकोंकापारावारहीनहींहोता इससे ईश्वरनेसर्वत्रभाषामेंवेदरचेहैं कि किसीदेशकी भाषानरहै औरसबभाषा जिससेनिकलैं क्योंकिसंस्कृत किसीदेशकीभाषानहीं जैसेईश्वरकिसीदेशकानहीं किन्तुसबदेशोंकास्वामीहै वैसेहीसंस्कृतभाषाहैकिकिसीएकदेशकीनहीं प्रश्न देवलोग औरआर्यावर्त्त देशको प्रथमभाषासंस्कृतथी इसीकोमुसल्मानलोग जिन्नभाषाकहतेहैं क्योंकिजैसीप्रवृत्ति संस्कृतकीपहिलेआर्यावर्त्त मेंथी वैसीकिसीदेशमेंनथी जिसदेशमें कुछप्रवृत्तिभईहोगी सोआर्यावर्त्तहीसे भईहोगी अबभीआर्यावर्त्तमें अन्यदेशोंसेसंस्कृतकीअधिकप्रवृत्तिहै इससे यहनिश्चयहोताहै किसंस्कृ

तभाषाआर्यावर्त्तकीमुख्यभाषाथी।उत्तर-यहदेवलोगकीभाषानहीं क्योंकि बृहस्पतिःप्रवक्ताइन्द्रआध्येता। यहमहाभाष्यकावचनहै इन्द्रनेबृहस्पतिसेंसंस्कृतपढ़ो औरबृहस्पतिने अङ्गिराप्रजापतिसे, उन्नेमनुसे, मनुनेविराट्से, विराट्नेब्रह्मासे ब्रह्मानेहिरण्यगर्भादिकदेवोंसे, उन्नेईश्वरसे, जोदेवलोगकीभाषाहोती तोवेक्योंपढ़तेऔरपढ़ाते क्योंकिदेशभाषातोव्यवहारसेपरस्परआजातीहै इससे देवलोगकीसंस्कृतभाषानहीं औरजबब्रह्मादिकोंकी भाषानहीं तोआर्य्यावर्त देशवालोंकी कैसे होगी कभीनहीं परन्तु ऐसा जानाजाताहै किआर्य्यावर्तदेशमेंपहिलेप्रवृत्तिअधिकथी सबऋषिमुनिऔरराजालोग आर्य्यावर्तदेशवासीलोगोंने परम्परासेसंस्कृतपढ़ा औरपढ़ायाहै इससेआर्यावर्त्त देशकीभी संस्कृतभाषानहीं औरजोमुसल्मानलोगइसकोजिन्नभाषाकहतेहैं सोतोकेवलईर्ष्यासेकहतेहैं जैसेकिआर्यावर्तदेशवासियोंकानामहिन्दूरखदिया सो यहसंस्कृतजिन्नभाषाभीनहीं क्योंकिजिन्नतोभूतप्रेत पिशाचोंही का नाम है भूतप्रेतऔरपिशाचहोतेहीनहीं औरजोहोतेहोंगे तोलोकलोकान्तरमें होतेहोंगे यहांनहीं फिरउनकीभाषा यहां कैसेआसकेगी इससे यहबातअत्यन्तमिथ्याहै क्योंकिउनकोऐसीपदार्थविद्या औरधर्माधर्मविवेककीबुद्धिहीनहीं फिरवेसंस्कृतविद्यासर्वोत्तमकोकैसेकहसक्ते वारचसक्ते हैं औररचतेहोतेतोअन्यदेशोंमेंभीरचलेते तथाकिसीपुरुषसेअबभीकहते इससे ऐसीबात सज्जनलोगोंको नमाननाचाहिए।प्रश्न-देशभाषाभिन्नर सबकैसें बनगई औरकिससे बनी।उत्तर-सबदेशभाषाओंका मूलसंस्कृतहै क्योंकिसंस्कृत जबबिगड़तीहै तबअपभ्रंशकहाताहै फिरअपभ्रंशसेदेशभाषासेहोतीहै जैसेकिघटशब्दसेघड़ा घृतशब्दसेघीदुग्धशब्दसेदूधतुरीतशब्दसेनैन अक्षिशब्दसेआंखकर्णशब्दसेकान नासिकाशब्दसेनाकजिह्वाशब्दसेजीभ मातरशब्दसेमादरयूयंशब्दसेयू वयंशब्दसेवीगुदशब्दकागोड इत्यादिकजानलेना औरएकपदार्थकेव-

कृतनामहैंजैसेकिगौ:ग्मा,ज्मा,क्ष्मा,क्षा,क्षमा,क्षोणी, क्षिति,अवनी,उर्वी,पृथ्वी,मही,रिप:,अदिति:,इडानिर्ऋति:,भू:, भूमि:,पूषा:,गातु:,गोत्रा,ए२१नामपृथिवीकेनामहैं सोभिन्न२देशोंमेंभिन्न२, २१नामोंमेंसेभिन्न२काअपभ्रंशहोनेसे भिन्न२भाषा बनजातीहै औरएकनामबहुतअर्थोंकाहोताहै जैसेकिसिंह,वानर,घोड़ा,सूर्य्य, मनुष्य,देव औरचोर इत्यादिकका नाम हरिहै इस्से भीभिन्न२देशमें भिन्न२भाषाहोतीहै क्योंकिकिसीदेशमेंसिंह नामसें उसपशुकाव्यवहारकिया किसीदेशमेंहरिशब्दसेवानरका ग्रहणकिया किसीदेशमेंहरिशब्दसेघोड़ेकोलिया किसीदेशमेंहरिशब्दसेसूर्य्य कोलिया किसीदेशमेंहरिशब्दसेचोरकोलिया इस हेतुदेशभाषाभिन्न२होगई औरमनुष्योंकाउच्चारण भेदसेभिन्न२ भाषाहोजातीहै जैसेकि ज्ञ यहदोनोंअकारमें मिलनेसे अक्षर यहज्ञहोताहै सोआजकालइसकालेखऐसाहोगयाहै ज्ञ इसएक अक्षरकेअन्यथाउच्चारणसे तीनभेदहोगयेहैं गुजरातीलोगगकार औरनकारकाउच्चारणकर्तेहैं महाराष्ट्रादिक दाक्षिणात्यलोग दऔरनकारकाउच्चारणकर्तेहैं औरअन्यलोगगकार औरयकार काउच्चारणकर्तेहैं तथातालव्यश मूर्द्धन्यष औरदन्त्यस इनतीनों केस्थानमें बंगालीलोगतालव्यशकारकाउच्चारणकर्तेहैं मध्यऔर पश्चिमदेशवालेतीनोंकेस्थानमें दन्त्यसकारकाउच्चारणकर्तेहैं तथाकिसीकोजोभकठिनहोतीहै वहप्राय:शब्दोंकोअन्यथाउच्चारण कर्ताहै औरजिसदेशमेंविद्याकालेशभीनहोय उसदेशमेंसङ्केतव्यवहारकरनेकेहेतु शब्दोंकाकरलेतेहैं किइसशब्दसेइसकोजानना औरइसशब्दसेइसकोजानना जैसेदाक्षिणात्यलोगोंने घीकानाम तूपइरखलिया औरउत्तरदेशपर्वतबासियोंने घीकानामचोखाररखलिया औरगुजरातियोंने चावलकानामचोखारखलिया इस्से भीदेशदेशान्तरकी भाषाभिन्न२होगईहै इसीप्रकारके अन्यकारणोंकोभीविचारलेना।प्रश्न-वेदमेंअश्वमेधादिक यज्ञोंकीक्रिया जो

लिखीहै सोजैसीबालकोंकीबातहोय कुछबुद्धिमानपनेकीनहीदीखती क्योंकिघोड़ेको सबजगह फिरातेहैं उसकोकोई जोबांधले उससे फिरयुद्धकरतेहैं सोव्यर्थयुद्धबनालेतेहैं मित्रसेभीऐसीबातसेवैर होजाताहै इत्यादिकऐसी२बुरीबात जिसमेंलिखीहैं वहवेदईश्वरकाबनायाकभी नहोगा उत्तर येसबबातमिथ्याहैं वेदमेंएकभीनहींलिखीहैं किन्तुलोगोंनेकहानी बनालियाहै प्रश्न ईश्वरनेऐसा क्योंनहीकिया किबिनापढ़ने औरसुननेसे सबमनुष्योंकोयथावत् आजाते तबतोईश्वरकीदयालुताजानपड़ती अन्यथाक्यादयालुता किबड़ेपरिश्रमसे वेदकेअर्थोंको मनुष्यलोगजानतेहैं उत्तर फिरभीस्वतन्त्रताहानि दोषआजाता क्योंकिपरमेश्वरकेप्रेरणासेवेदउनकोआजांय अपनेपरिश्रमऔरस्वतन्त्रतासेनहो औरजो परीश्रमबिनापदार्थमिलताहै उससेंप्रसन्नताभीनहींहोती बिना परीश्रमकुछभी कामनहींहोता जैसेकीखानापीना उठनाबैठना कहनासुननाआनाऔरजाना इत्यादिकपरीश्रमहीसेहोतेहैं अन्यथानहीं परीश्रमकेबिनाकुछनहीहोता औरइतनीबड़ीजोपदार्थविद्यासोकैसेहोगी जीवकोकानआदिकइन्द्रिय बुद्धिऔरग्रहणकरने औरसुननेकासामर्थ्य भीदियाहै औरविद्याकाप्रकाशभी कर दियाहै इससे ईश्वरदयारहितकभीनहीहोते औरजीवकोजोस्वतन्त्ररखदियाहै यहीबड़ीदयाईश्वरकीहै औरकोईभीनहीं शंका करैउसकासमाधान बुद्धिमान्लोगविचारकरकेदेवैं ईश्वरऔरवेदकेविषयमेंसंक्षेपसेकुछथोड़ासालिखदिया औरजोविस्तारसे देखाचाहै सोवेदादिकसत्यशास्त्रोंमेंदेखलेवै इसकेआगेजगत्कीउत्पत्तिस्थितिऔरप्रलयकेविषयमेंलिखाजायगा ॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते सप्तमः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ ७ ॥

अथ जगदुत्पत्ति प्रलयविषयान्व्याख्यास्यामः ब्रह्मविदाप्नोति परं तदेषाभ्युक्ता सत्यंज्ञानमनंतं ब्रह्मयोवेदनिहितंगुहायांपरमेव्योमन् प्रतिष्ठितासोऽश्नुतेसर्वान्कामान्ब्रह्मणासहविपश्चितेतितस्माद्वाएतस्मादात्मनआकाशःसंभूतःआकाशाद्वायुःवायोरग्निःअग्नेरापःअद्भ्यः पृथिवी पृथिव्याओषधयः ओषधिभ्योन्नंअन्नाद्रेतःरेतसःपुरुषः सवाएषपुरुषोन्नरसमयः ४ तैत्तिरीयशाखाकीश्रुतीहै सदेवसौम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयंतदैक्षत बहुःस्यांप्रजायेयेति यहछांदोग्यउपनिषदकीश्रुतीहै नासदासीन्नोसदासीत्तदानीन्नासीद्रजोनव्योमापरोयत् किमावरीवःकुहकस्यशर्मण्यम्भः किमासीद्गहनंगभीरं यह ऋग्वेद की श्रुति है आत्मावाइदमग्रआसीन्नान्यत् किंचन्मिषत् सईक्षतलोकान्नुसृजाइति यह ऐतरेयब्राह्मण कीश्रुतिहै इत्यादिक वेदादि कीश्रुतियों से यह निश्चित जानाजाताहै किएकअद्वितीय सच्चिदानन्दरूप परमेश्वरही सनातनथा औरजगत् लेशमात्रभी-नहीथा उसनेसबजगत्कोरचा सोइन मंत्रोंमेंजितनेनामहैं वेसब परमेश्वरकेहीहैं इनकाअर्थ प्रथम समुल्लास मेंकरदियाहै वहांदेखलेना उसपरब्रह्मकोजो मनुष्यजानताहै उसअनन्तपंडित परमेश्वरकेसाथ मिलके उसके सबकामपूर्णहोजातेहैं वह परमेश्वर एक अद्वितीयथा दूसराकोईनहीथाउन्ने जगदुत्पत्तिकीइच्छाकिईकिबहुतप्रकारकी प्रजाओंमेंउत्पन्नकरूं उसीक्षणमें नानाप्रकारकोप्रजाउत्पन्नहोगई सोइसक्रमसे पहले आकाशको उत्पन्नकिया कि जोसबजगतका निवासकरनेकास्थान सोआकाश अत्यन्तसूक्ष्म पदार्थहैजाकिअनुमानसेभीकठिनतासेसमझनेमेंआताहै उससे स्थूल द्विगुणवायुउत्पन्नभया उससे अग्नित्रिगुणभया त्रिगुणअग्निसे चतुर्गुणजलभया और जलसेपंचगुणभूमिभई भूमिसेओषधि ओषधियोंसेवीर्यवीर्यसेशरीर इसप्रकारआकाशसेलेकेतृणपर्यन्तपरमेश्वरनेसृष्टिरचलिई सोशब्दऔर संख्यादिकगुणवालाआकाशरचाफिर वायुआदिक चारोंके परमाणुरचे परमाणुसाठ मिलाकेएकअ

णुरचा दोअणुसे एकद्व्यणुक और तीनद्व्यणुकसे एक त्रसरेणु और अनेकत्रसरेणुकोमिलाके यहजोदेखपडताहै सबजगत इसकोरच दिया प्रश्न परमेश्वरको क्याप्रयोजनथा किजगत्कोरचा उत्तर इससे पूंछनाचाहिये कि प्रयोजनक्याकहाताहै यमर्थमधिकृत्यप्रवर्त्तते तत्प्रयोजनम् यह गोतममुनिजीकासूत्रहै इस्काायहअभिप्रायहै किजिसपदार्थको अधिकमानके जीवप्रवृत्तहोवै उसको कहनाप्रयोजन सो परमेश्वरपूर्णकामहै उसको कोईप्रयोजन अधिक नहीहै क्योंकि उस्से कोईपदार्थ उत्तम वाअप्राप्तनही फिर प्रयोजनका जोप्रश्नकरनासोअयुक्त है प्रश्नजगत्केरचनेकोइच्छाकिईसो बिनाप्रयोजनसे इच्छानहीहोसक्ती उत्तर इच्छाकेजगत्मेंतीन कारणदेखपडतेहैं पदार्थकीअप्राप्ति और वहउत्तमहोवै तथा अपनेसेभिन्नहोवै परमेश्वरमें तीनोंमेंसेएकभीनहीं क्योंकिसर्वशक्तिमान्केहोनेसे कोईपदार्थकी अप्राप्तिकभीनहीहोती तब परमेश्वरसे कोईपदार्थ उत्तमभीनही और सर्वव्यापकके होनेसे अत्यन्त भिन्न कोईपदार्थनही इस्सेइच्छाकीघटना ईश्वरमेंनहीहोसक्ती प्रश्न जगत्रचनेकी प्रवृत्तिबिनाप्रयोजन वाइच्छाके कभीनहीहोसक्ती उत्तर अच्छा इच्छा तोनहीबनसक्ती तथा प्रयोजन भीनहीबनसक्ता परन्तु इच्छा और प्रयोजन मानो तो जगत्काहोना वहीइच्छा और प्रयोजनमानलेओ इस्से भिन्नइच्छा वा प्रयोजन कोईनही क्योंकि जोऐसामानैंकि अपनेआनन्दकेवास्ते जगत्को रचा उस्से हमलोगपूछतेहैं किजबतक जगतनहीरचाथा तबपरमेश्वर क्यादुःखीथा जोकिआनन्दकेवास्ते जगतकोरचासो दुःखका परमेश्वरमें लेशमात्रभीसंबन्धनही जो आपऐसेपूछनेमेंआग्रहकरैं किजगतकेरचनेमें औरभीकुछप्रयोजनहोगा तोआपसेमैं पूछताहूं किजगतके नहीरचनेमें क्याप्रयोजनहै जोआपकहैंकिजगतकेरचनेमेंजगतकीलीलादेखनेसेआनन्दहोताहोगा और जगतकेजीवभक्तिकरैं तोजबतकजगतकी लीलानहीदेखीथी औरजग

त्कोजीवनहीं नहीकरतेऐ तबपरमेश्वरअवश्यदुःखीहोगा इससेऐ-
साप्रश्नव्यर्थहोताहैइसमेंआग्रहनहीकरनाचाहियेरचनासेईश्वरके
सामर्थ्यकासफलहोनाहीरचनाकाप्रयोजनहैप्रश्न ईश्वरनेजगतर
चासोजगतरचनेकी सामग्रीथीअथवाअपनेमेंसेहीजगतरचावाअ
पनेहीसबजगतरूपबनगया उत्तर इसकाबिचार अवश्यकरनाचा
हिये किबिनासामग्रीसेकोईपदार्थ नहीबनसक्ता क्योंकि कारणके
बिनाकिसीकार्यकी उत्पत्तिहमलोगनहीदेखते सोकारण तीनप्र
कारकाहोताहै एकउपादानदूसरानिमित्त औरतीसरासाधारण
सोउपादानयहकहाताहैकि किसीसेकुछलेकेकोईपदार्थबनानासो
कार्यऔरकारणका इसमेंकुछभेदनहीहोता दोनोएकहीरूपहोते
हैं जैसेमट्टीकोलेकेघडेकोबनालेतेहैं कपासकोलेकेवस्त्र सोनेकोले
केगहना लोहेकोलेकेशस्त्रऔर काष्ठकोलेकेकिवाडआदिक सोघ-
डादिकजितनेहैं वेमृत्तिकादिकोंसेभिन्नवस्तुनहींहैं किन्तुवहीवस्तु
है इसप्रकारकाउपादानकारणजानना दूसरा निमित्तकारण जो
किउनकुम्हारादिकशिल्पीलोग नानाप्रकारके पदार्थोंकोरचनेवा
लेनिमित्तकारणमेंजानना क्योंकिमृत्तिकादिकोंका ग्रहणकरकेअ
नेक पदार्थोंकोरचतेहैं किन्तु अपनेशरीरसेपदार्थलेकेनहीरचते इ
ससे ऐसानिमित्तकारणहोताहै किजोपदार्थबनावेउससे भिन्न सदा
रहै औरउसपदार्थकोरचले तीसरा साधारणकारणहोताहै जै-
साकिप्राण कालदेशचक्र औरसूत्रादिक क्योंकि येसब कर्त्ताकेआ
धीनऔरहेतुरहतेहैं इससे अवश्यबिचारकरनाचाहिये परमेश्वर
इसजगत्का तीनों कारणोंमेंसे कौनकारणहै अर्थात्तीनोंकारन
हैजोउपादानकारणहोवै तो क्षुधा तृषा शीतोष्ण भ्रम जन्मऔ
र मरणादिक दोष ईश्वरमें आजांयगे क्योंकि उपादानसे उपादे
य भिन्ननहीहोता अर्थात् ईश्वरसे जगत भिन्ननही होगा इससे
उक्तदोष अवश्यही आवेंगे इसमें जोकोई ऐसाकहै किजैसे स्वप्ना
वस्थामें मिथ्यापदार्थ अनेक देखपडतेहैं और रज्जुमेंसर्प बुद्धिहो

तीहै इत्यादिक सब कल्पित भ्रान्तपदार्थहैं उनसे वस्तु में कुछदोषनहीं आसक्ता स्वप्नसे जीवको कुछहानि नहीं होती और सर्पसे रज्जु को उनसे पूंछना चाहिये सर्प कीभ्रान्ति रज्जु में और स्वप्नमें हर्षशोकादिक दुःख किसकोभये जोवह कहैकि ब्रह्मकोहीभयेफिर वह ब्रह्म शुद्धनहीं रहा तथा ज्ञानस्वरूप नहीरहा क्योंकि भ्रम जो होताहै सो अज्ञानसेही होताहै बिना अज्ञानसेनही फिर वेदोंमें सर्वज्ञ सदाभ्रान्ति रहित ब्रह्मको लिखाहै उसको क्या गतिहोगी तथा बन्धमोक्षादिक दोषभी ब्रह्ममेंआजांयगे जोवहकहैकि भ्रमसेबन्ध और मोक्षहै वस्तु सेनही फिर भी नित्यशुद्ध बुद्ध मुक्तस्वभाव परमेश्वरको वेदमेंलिखाहैं सोबात झूठीहोजायगी यहबडा दोषहोगा और जो बद्धहोगा सो जगतको कैसेरचसकेगा और जोमुक्तहोगा सोजगतरचनेकीइच्छाहीनकरेगा फिरपरमेश्वरसे जगतकैसेबनेगा औरजोकोईकेवलनिमित्तकारणमानै तो जगतकासाक्षातकर्तानहींहोगा किन्तुशिल्पीवत्होगा अथवाउसको महाशिल्पीकहो और उसकेपास सामग्रीभी अवश्यमाननी चाहिये फिरजो सामग्री मानेंगे तोजगतभी नित्य होगा क्योंकि जिस्से जगतबनाहै वहसामग्रीईश्वरके पाससदारहतीहीहै फिर एक अद्वितीय जगतकी उत्पत्तिके पहिले परमेश्वर था जगतलेशमात्रभीनहीथा यहवेदादिक शास्त्रोंकाप्रमाणोंसे कहनावहव्यर्थ होगा इस्से उननिमित्त कारण माननेसेभीवह दोषआवेगा और जोसाधारणकारणमानैं तोभीजडपराश्रितरचनेमें असमर्थईश्वर होगा जैसेकुलालादिककेबिना घटादिकार्य्य पराधीनहोतेहैं क्योंकिजैसेचक्रादिककेबिना कुलालादिक घटादिकनहीरचसक्तेहैंफिरवहईश्वरपराधीनहोनेसे सर्वशक्तिमान नहीरहेगा क्योंकि कोई कासहायकिसीकाममेंनले औरअपनीशक्तिसे सबकुछकरै उसको कहतेहैंसर्वशक्तिमान् सोसाधारणकारणजबमानाजायगा तो सर्वशक्तिमान्ईश्वरकभीनरहेगा इस्से तीनोंप्रकारमें दोषआतेहैं।

इसवास्ते अत्यन्तविचारकरनाचाहिए जिसमेंकिकोईदोषनआवै इसमेंयह विचारहै किईश्वर सर्वशक्तिमान्है जो सर्वशक्तिमान् होताहै उसमेंअनन्तसामर्थ्य सामग्रीहोतीहै सोवहसामग्रीस्वाभाविकहै जैसाकिस्वाभाविकगुणगुणीकासम्बन्धहोताहै वहदूसरापदार्थनहींहै औरएकभीनहीं उससामग्रीसेसबजगत्कोपरमेश्वरनेबनाया प्रश्न जोगुणकीनांईस्वाभाविकसामग्रीहै सोगुणीसे भिन्नकभीनहोहोती क्योंकिस्वाभाविक जोगुणहै सोगुणीसे भिन्न कभीनहीहोता इससे क्याआयाकिसामग्रीसहितपरमेश्वर जगत् रूपबनगया उत्तर ऐसानकहनाचाहिए क्योंकिजोजिसकापदार्थहोताहै वहउसीकाकहाताहै सोपरमेश्वरका अनन्तसामर्थ्य स्वाभाविकहीहै अन्यसेनहींलिया वहसामर्थ्य अत्यन्तसूक्ष्महै औरस्वाभाविकहोनेसे परमेश्वरका विरोधभीनहीं किन्तुउसीमें वहसामर्थ्य रहताहै उससे सबजगत्कोईश्वरनेरचाहै इससेक्याआया किभिन्न पदार्थनलेके जगत् के रचनेसे उपादान कारणजगत् का परमेश्वरही हुआ क्योंकि अपने से भिन्न दूसरा कोई पदार्थ नही है कि जिसे लेके जगत् को रचे सो अपने स्वाभाविक सामर्थ्य गुणरूपसे जगत् कोरचा इससे सब जगत्का उपादानकारणपरमेश्वरहीहै परन्तुआप जगत्रूपनहीबना तथा अपनीशक्तिसे नानाप्रकारके जगत् रचनेसे दूसरके सहायबिना इससे जगत्कानिमित्त कारणईश्वरहीहै अन्यकोईनहीं तथासाधारणकारणभीजगत्काईश्वरहै क्योंकिकिसीअन्यपदार्थके सहायसेजगत्कोईश्वरनेनहीरचा किन्तुअपनीसामर्थ्य सेजगत्कोरचाहै इससे साधारण कारणभी जगत्काईश्वरहै अन्यकोई नहीं औरजोअन्यकोईहोता तोविरुद्धकार्यजगत्मेंदेखपड़ते विरुद्धकार्योंकोहमलोगजगत्मेनहीदेखतेहैं इससे जगत्केतीनों कारणपरमेश्वरहीहैं अन्यकोईनही प्रश्न परमेश्वरनिराकारऔरव्यापक है अथवानही उत्तर परमेश्वरनिराकारऔरव्यापकहीहै क्यों-

किनिराकारनहोता तोएकदेशमेंरहताऔरकहीं देखभीपड़ता सोएकदेशमेंनहीहै औरकहींदेखभीनहींपड़ता इस्से निराकार होईश्वरकोजाननाचाहिए औरजोनिराकारनहोतातोसर्वव्यापकनहोता तोसर्वात्मा औरसबजगत्का अन्तर्यामी नहोता सो सबजगत्का आत्मासर्वान्तर्यामीके होनेसेव्यापकहो ईश्वरहै अन्यथानहीं प्रश्न सबजगत्कारचनऔरधारणईश्वरकिसप्रकारसे करताहै उत्तर जैसाजगत्मेंहमलोगदेखतेहैं वैसाहीईश्वरनेजगत्रचाहै परन्तु इसमें यहप्रकारहै किआकाशतोपरमाणुसेभी सूक्ष्महै औरवायुकेपरमाणुकायहस्वभावदेखनेमेंआताहै किनीचेऊंचेऔरसमदेशमेंगमनकरनेवालेपरमाणुहैं क्योंकिजोत्वचा इन्द्रियसेप्रत्यक्षस्थूलवायुको हमलोगवैसाहीस्वभाववालादेखते हैं कभीऊर्द्धकभीनीचेऔरकभीतिरछाचलताहै इस्से हमलोगपरमाणुकाअनुमानकरतेहैं इसमेंअन्यभीबहुतकारणहैं क्योंकिवायुमें अनेकतत्वमिलेहैं परन्तु हमलोगमुख्यकोगणनासेइसबातकोलिखतेहैं तथाअग्निकाऊर्द्ध जलकेतथानीचे औरपृथिवीकासमताअनेकविधिगतिकोदेखकेपरमसूक्ष्मपरमाणुरूपजोतत्व उनकाभीअनुमानकरतेहैं किवेभीइसीप्रकारकेहैं सोपरमेश्वरनेपृथिवीमें अनेक तत्वोंकामेलनकियाहै क्योंकिजोमेलनहोता तोतत्वोंकेस्वाभाविकगुणपृथिवीमेंनदेखपड़ते जैसेकिवायु नहोतातोपृथिवीमेंस्पर्शभीनहोता तथाअग्नि,जल औरआकाशनहोते तोरूपरस और गंधभीनदेखपड़ते इस्से क्याजानाजाताहै किसबमें सबतत्वमिले हैं सोपृथिवीऔरजलकेपरमाणु अधोगामीस्वभावसेहैं अग्निऊर्द्ध गमनऔरवायुतिरछेगमनकरनेवालाहै उनसबकेपरमाणु भी थाअधिकन्यूनमिलनेसे स्थिरतावागमनपदार्थोंकेहोतेहैं जैसेकि पृथिवीऔरजलनीचेजातेहैं औरअग्नितथावायुऊपर औरअनेक विधिवर्णकरतेहैं फिरमिलाभयापदार्थकहीनहींजासका वाअधिकन्यूनतातत्वोंकेमिलानेसजितनीजिसकीगति परमेश्वरनेरचीहै

उतनोहीहै।तोहै अन्यथानहीं औरसबसे बलवान्वायुहै वायुके आधारसेसबलोगोंकोहमलोगदेखतेहैं जैसेकिइसपृथिवोकेचारो ओरवायुअधिकहैतथावायुमेंअन्यतत्वभीमिलेहुएदेखपड़तेहैंऔ-रवहवायु४९वा५०कोसतकअधिकहैउसकेऊपरथोड़ाहै सोज्यो-तिषविद्याकी गणनासेप्रत्यक्षहै उसवायुका आधारआकाशऔर आकाशादिकसबपदार्थोंका आधारपरमेश्वरहै सोजोसर्वव्याप-कनहोता तोआकाशादिकोंकासबजगत्मेंधारणकैसेकर्ता इसलेप-रमेश्वरव्यापकहै व्यापकके होनेसेसबकाधारणबनताहै अन्यथान-हीं औरजोसाकारएकदेशस्थपरमेश्वरकोमानेगा उसकेमतमेंधा-रण सबजगत्कानहोवैगा इत्यादिकबहुतदोषआवेंगे फिरदोप्र-कारकाव्यवहारहमलोगदेखतेहैं किएकतोलघुबेग औरगुरुत्वा-दिकगुणऔरआकर्षणभीपदार्थोंमेंहै क्योंकिजोहलकापदार्थ हो-ताहै सोऊपरहीचलताहै औरगुरुनीचेकोचलताहै जैसेकिजल केपात्रमें तेलकोधाराजबदेतेहैं सोलघुकेहोनेसे तैलजलके ऊपर होआजाताहै कभीनीचेनहीरहता इसकायहकारणहै किजिस-मेंछिद्रअधिकहोगा उसमेंपोलऔरवायुअधिकहोगा वहलघुहो-गाऔरजिसमेंपोलऔरवायुथोड़ाहोगा वहगुरुहोगा जोकिसमी-परअत्यन्तजुटजायगा वहीगुरुहोगा औरजोमिलेगापरन्तु उसके भीतरकुछअत्यन्तसूक्ष्मछिद्रहैंगे जैसेकिलोहाऔरकाठ दोनों काभारतोतुल्यहोताहै परन्तु जलमेंदोनोंकोडारनेसे काठतोऊ-पररहेगा औरलोहानीचेचलाजायगा तथावस्त्रभीगनेसेनीचेच-लाजाताहै उसकायहकारणहै किउसकेछिद्रोंमें जलऊपरचला जाताहै सोऊपरसेजलकाभार औरसूतकाअधिकबटना औरपृ-थिवोके आकर्षणसे नीचेचलाजाताहै तथाकोईकाष्ठभी अत्यन्त भीगने औरचसरेखादिकके अत्यन्तमिलनेसे वहनीचे चलाजा-ताहै औरवेगभीपदार्थोंमेंदेखपड़ताहै जैसेमनुष्य,घोड़ा,हरिण वायुअग्न्यादिकमेंहैं तथाअग्निऔरसूर्य्य,पदार्थोंके अवयवोंको

भिन्न२करदेतेहैंऔरजलतथापृथिवीयेपदार्थोंसे मिलनेऔरमि-
लानेवालेहैं सोजहांजिसका अधिकबलहोगा वहांउसकाकार्य्य
होगा जैसेकिवायुसूक्ष्मऔरलघुहोकेऊपरजाताहै तबचारोंओ-
रकोपृथिवीजल,त्रसरेणुयुक्त जिसस्थानसेवायुऊपरचढ़ा उसस्था-
नमेंचारोंओरसगुरुवायुगिरताहै वहीअधिकचलनेऔरआंधीका
कारणहै औरवहीवृष्टिकाजलकेऊपरआकर्षणकेहोनेसे कारणहै
क्योंकिसूर्य्यऔरअग्निसबरसोंकाभेदकर्त्ताहैं फिरएजलादिकरस
सबऊपरचढ़तेहैं परन्तुउनमेंअग्नि वायुऔरपृथिवीकेभीपरमाणु
मिलेहैं औरजलकेपरमाणुअधिकहैं फिरजबअधिकऊपरजला-
दिकोंकेपरमाणुचढ़तेहैं तबगुरुहोतेहैं अर्थातअधिकभारहोताहै
फिरवायुधारणउनकोनहींकरसक्ता वहांकावायुजलके संयोगसे
शीतलचलताहै उससे जलादिकोंकेपरमाणुमिलके बादलहोजाते
हैं जबवेवायुसेबीचमेंपरस्परचलतेहैं वायुमन्दहोनेसेउष्णताहोती
है फिरवेपरस्परभिड़तेहैं औरघिसतेहैं इससे गर्जन औरबीजली
उत्पन्नहोतीहै फिरउष्णता औरबिजली केहोनेसे जलपृथिवीके
ऊपरगिरताहै तथावायुकेवेग औरठोकरसे बिजलीनीचेगिरती
है औरअग्निकाऊपरवेग तथाजलकानीचेहोताहै सोजलकोपा-
त्रमेंरखके ऊपररखने औरअग्निकोनीचेरखनेसे जबउसजलमें
अग्निप्रविष्टहोताहै तबउसमेंवेग औरबलहोताहै यहीरेलआ-
दिकपदार्थोंकाकारणहै तथाबिजलीअङ्कविद्याऔरनानाप्रका-
रके यन्त्रोंसेतारविद्याभीहोतीहै ऐसेहीविद्यासे अनेकप्रकारकी
पदार्थविद्याबनसक्तीहै ग्रन्थअधिकहोजाय इसहेतुहमअधिकन-
हींलिखतेहैं क्योंकि शास्त्रोंमेंलिखाहै सोबुद्धिमान्लोग विचार
लेंगे जोथोड़ीर विद्यासेमनुष्यलोगअनेकप्रकारकेपदार्थरचलेते
हैं फिरसर्वशक्तिमानअनन्तविद्यावाला जोईश्वरअनेकप्रकारके
पदार्थोंकोरचेइसमेंक्याआश्चर्यहै इसप्रकारसेजगत्कोरचताहै
ईश्वरकीअपनीनित्यशक्ति औरगुणउनसेआकाशअव्यक्तअव्याकृ-

तप्रकृति औरप्रधानएसबएकहीकेनामहैं इनकोरचताहै आकाश सेवायुआदिकेपरमाणुबनाताहै उनसाठपरमाणुसे एकअणुबनताहै दोअणुसेएकद्व्यणुकबनताहै सोवायुद्व्यणुकहै इस्से प्रत्यक्षरूप नहींदेखपड़ता वायुसेत्रिगुणस्थूल अग्निरचाहै इस्से अग्निमें रूपदेखपड़ताहै उस्से चतुर्गुणजलऔर जलसेपंचगुणपृथिवीरची है तथाउसपरमाणुकेमेलनसेवृक्ष, घासऔरबनस्पत्यादिकोंकेबीजरचेहैं उनमेंपरमाणुकेसंयोग इसप्रकारकेरक्खे हैं किजिनसे विलक्षण२ स्वाद पुष्प, पंच, फल औरकाष्ठादिकहोतेहैं सोप्रसिद्ध जगत्केपदार्थोंकोदेखनसे हमलोगपरमेश्वरकीरचनाका अनुमानकरतेहैं औरसाधारणसबजगहमें व्यापकहोनेसे सबजगत्का धारणकरतेहैं तथाएककेआधारदूसराऔरपरस्पर आकर्षणसेभी जगत्काधारणहोताहै परन्तु सबआकर्षणोंकाआकर्षण औरधारणकरनेवालोंका धारणकरनेवाला परमेश्वरहीहै अन्यकोईनहीं प्रश्न इसीलोकमें इसप्रकारकीसृष्टिहै वासबलोकोंमेंऐसीसृष्टिहै उत्तर सबलोकोंमेंसृष्टिअनेकप्रकारकीहै जैसीकिइसलोकमें क्योंकिइसलोकमें हमलोग पृथिव्यादिकपदार्थप्रयोजनकेहेतु रचेहुएदेखतेहैं इनमेंएकपदार्थभीव्यर्थनहींदेखते इस्से हमलोगअनुमानकरतेहैं किकोईलोकपरमेश्वरनेव्यर्थनहींरचाहै किन्तु सबलोकोंमें अनेकविधिमनुष्यादिकसृष्टिरचीहै क्योंकिपरमेश्वर का व्यर्थकार्यकभीनहींहोता प्रश्न कितनेलोक परमेश्वरनेरचेहैं उत्तर सूर्य, चन्द्रऔरजितनेतारेंदेखपड़तेहैं तथाबहुतभीनही देखपड़ते एसबलोकहीहैंसोअसंख्यातहैं प्रश्न येसबलोकस्थिरहैं वाचलतेहैं उत्तर सबलोकअपनी२परिधि औरअपने२ वेगसे चलतेहैं सोअनेकविधिगतिहै स्थिरतोएकपरमेश्वरहीहै औरकोई नहीं प्रश्न जबपरमेश्वरनेपहिलेसृष्टिरची तबएक२दो२ मनुष्यादिकजातिमेंरचे अथवाअनेकरचेथे उत्तर एक२जातिमेंपरमेश्वरनेअनेक२रचेहैं एक२वादो२नहीं क्योंकिचिंउटीआदिकजा-

ति एक द्वीप में एक२ दो२ रचते तो द्वीपान्तरमें वे कैसे जासक्तीं इत्यादिक और भी विचार आपलोग करलेना प्रश्न परमेश्वरने सब पदार्थ शुद्ध२रचे हैं याकोई पदार्थ अशुद्धभी रचा है उत्तर परमेश्वर सब पदार्थ अपने२ स्थान में शुद्धही रचे हैं अशुद्ध कोई नहीं परन्तु विरुद्ध गुणवाले परस्पर मिलने वा मिलानेवाले अशुद्ध कहतेहैं अपने२प्रतिकूल के होनेसे जैसेकिदूधऔरनोंनजबमिलतेहैं तबवेदोनों नष्टगुणहोजातेहैं क्योंकिदोनोंका स्वादविगड़जाताहै परन्तु उनोंदोनोंको पदार्थविद्याकी युक्तिसे तृतीयपदार्थकोईरचले फिरभीवहउत्तमहोसक्ताहै जैसे सर्पमक्खीवेभी अपनेस्थानमेंशुद्धहैं क्योंकिवैद्यक शास्त्रकीयुक्तिसे इनकोभीबहुत औषधियांबनतीहैं अनुकूलपदार्थोंमें मिलानेसे परन्तुवेमनुष्यवाकिसीकोकाटैं अथवाभोजनमेंखालेनेसेदोषकरनेवालेहोजातेहैं ऐसेहीअन्यपदार्थोंकाविचारकरलेना प्रश्न जब इसजगत्का प्रलयहोताहै तोकिसप्रकारसे होताहै उत्तर जिस प्रकारसेसूक्ष्मपदार्थोंसे रचनास्थूलकीहोतीहै उसीप्रकारसेप्रलयभीजगत्काहोताहै जिस्से जोउत्पन्नहोताहै वहसूक्ष्महोकेअपनेकारणमेंमिलताहै जैसेकिपृथिवीकेपरमाणुऔरजलादिकोंके परमाणुसे यहस्थूलपृथिवीबनीहै इनपरमाणुकाजबवियोगहोता है तबस्थूलपृथिवीनष्टहोजातीहै वैसेहीसबपदार्थोंका प्रलयजानना आकाशसेपृथिवीपञ्चगुणीहै जबएकगुणीघटैगी तबजलरूपहोजायगी जलऔरपृथिवीजबएक२गुणघटैंगे तबअग्निरूपहोजांयगे जबवेतीनोंएक २ गुणघटैंगे तबवायुरूपहोजांयगे जबवे भिन्न२होजांयगे तबसबपरमाणुरूपहोजांयगे परमाणुकीजबसूक्ष्मअवस्थाहोगी तबसबआकाश रूपहोजांयगे औरजबआकाश कीभी सूक्ष्मअवस्थाहोगी तबप्रकृतिरूपहोजायगा जबप्रकृतिलय होतीहै तबएकपरमेश्वरऔरसबजगत्काकारण जोपरमेश्वरका सामर्थ्य औरगुणपरमेश्वरकेअनन्त सत्यसामर्थ्यवालाएकअद्वि-

तोयपरमेश्वरहीरहेगा औरकोईनहीं सोयहसब आकाशादिक जगत्परमेश्वरकेसामनेकैसाहै किजैसाआकाशकेसामनेएकअणु भीनहीं इस्से किसीप्रकारकादोष उत्पत्तिस्थितिऔरप्रलयसे परमेश्वरमेंनहींआता इस्से सबसज्जनलोगोंको ऐसाहीमानना उचितहै प्रश्न जन्मऔरमरणादिककिसप्रकारसेहोतेहैं उत्तर लिंगशरीरऔरस्थूलशरीरका संयोगसेप्रकटकाजोहोना उसकानामजन्महै औरलिंगशरीर तथास्थूलशरीरकेवियोगहोनेसे अप्रकटकाजोहोना उसकानाममरणहै सोइसप्रकारसे होताहै कि जीवअपनेकर्मोंके संस्कारोंसेघूमताहुआ जलवाकोईऔषधिमें अथवावायुमेंमिलताहै फिरजैसाजिसके कर्मोंकासंस्कार अर्थात्सुखवादु:ख जितनाजिसकोहोनाअवश्यहै परमेश्वरकी आज्ञा केअनुकूल वैसेस्थानऔरवैसेहीशरीरमें मिलकेगर्भमें प्रविष्टहोताहै फिरजिसमें वहमिला उसकेअवयवोंको आकर्षणसे शरीर बनताहै जैसीकोपरमेश्वरने युक्तिरचीहै जिसकेशरीरका वीर्य होगा उसवीर्य्य मेंउसकेसबअङ्गोंसेसूक्ष्मअवयवआतेहैं क्योंकिसबशरीरकेअवयवोंमें वीर्य्य कीउत्पत्तिहोतीहै फिरउसवीर्य्य केअवयवोंमेंउसशरीरके अवयवमिलतेजातेहैंउनसेशिर,नेत्र,नासिका,हस्त,पादादिक,अवयव बढ़तेचलेजातेहैं जबवहशरीर,नख औरसिखापर्यन्तपूर्णबनजाताहैं तबवहजीवशरीरमें सबअवयवों सेचेष्टाकरताभया शरीरसहितप्रकटहोताहै फिरभीअन्नपानादिक बाहर के पदार्थों के भोजन करने से शरीर के अवयवों कीवृद्धिहोतीहै सोछ:विकारवालाशरीरहै अस्तिनामशरीरहै १ जायतेनामजन्मकाहोना २ वर्द्धतेनामबढ़ना ३ विपरिणमतेनामस्थूलकाहोना ४ अपक्षीयतेनामक्षीणहोना ५ विनश्यतेनाम नष्टकाहोना नाममृत्युकाहोना ६ एछ:विकारशरीरकेहैं फिर जबमरणहोताहै तबस्थूलऔरलिंगशरीरकावियोगहोताहै सो स्थूलशरीरसेलिंगशरीरनिकलके बाहरकाजोवायुउसमें मिल-

ताहै फिरवायुकेसाथ जहांतहांघूमताहै कभीसूर्य्यकेकिरणोंके साथऊंचे औरचन्द्रकीकिरणोंकेसाथनीचेआजाताहै अथवावायु केसाथनीचेऊपर औरमध्यमेंरहताहै फिरउसप्रकारसे शरीर धारणकरलेताहै प्रश्न स्वर्गऔरनरकलोकहैंवानहीं उत्तर सब कुछहै क्योंकिपरमेश्वरकेरचेअसंख्यातलोकहैं उनमेंसेजिनलोकों मेंसुखअधिकहै औरदुःखथोड़ाउनकोस्वर्गकहतेहैं तथाजिनलोकोंमेंदुःखअधिकऔरसुखथोड़ाहै उनकोनरककहतेहैं औरजिन लोकोंमेंसुखऔरदुःखतुल्यहैं उनकोमर्त्यलोककहतेहैं इसप्रकार केस्वर्ग,मर्त्य औरनर्कलोक बहुतहैं उनमेंभीअनेकप्रकारके स्थानऔरपदार्थहैं किजिनमेंसुखवादुःखअधिकवान्यूनहै सोइसोहेतु परमेश्वरने सबप्रकारकेस्थानऔरपदार्थरचेहैं किपापीपुण्यात्मा औरमध्यस्थजीवोंकोयथावत्फलमिले अन्यथानहोय जैसेकिराजाकेउत्तममध्यमऔरनीचस्थानहोतेहैं जिनसेउत्तम मध्यमऔरनीचोंकोयथावत व्यवहारकीव्यवस्थाहोतीहै परमेश्वरकायथावत्अखण्डितसंपूर्णजगत्मेंराज्यहै औरयथावतन्यायसे जिसकी व्यवस्थाहै फिरपरमेश्वरके राज्यमेंस्वर्गनर्क औरमर्त्यलोकादिकोंकीव्यवस्थाकैसेनहोगी किन्तु अवश्यहीहोगी प्रश्न मरणसमय मेंयमराजकेदूतआतेहैं उसजीवकोजालमेंबांधलेतेहैं बांधकमारते२यमराजकेपासलेजातेहैं औरयमराजयथावत्न्यायसे दण्ड देतेहैं यहबातसत्यहै वामिथ्याहै उत्तर यहबातमिथ्याहै क्योंकि जीवअत्यन्तसूक्ष्महै जालसेबांधनेमें कभीनहींआता और गरुड़ पुराणादिकोंमेंलिखाहै किपिण्डदेनेसे जीवकाशरीरबनजाताहै औरवैतरणीनदीकेतरनेकेहेतु गोदानादिककरनाचाहिए और यमकेदूतोंकाकज्जलकेपर्वतकीनांई शरीरलिखाहै वेनगरकेमार्गऔरघरकेदरवाजेभीतर जीवकेपासकैसेआसकेंगे चिवँटीआदिकसूक्ष्मछिद्रमें एककालमें अनेकजीवमरतेहैं वहांकैसेजांयगे तथावनवानगरादिकोंमें अग्निकेलगनेऔरयुद्धसे एकपलमेंबहु-

तजीवोंकामरणहोताहै एक२जीवकोपकड़नेकेहेतु बहुतदूतजाते
हैं उतनेदूतकहांरहतेहैं तथाउनकाहोनाकैसेबनसकै सोयहबा-
तअत्यन्तमिथ्याहै औरजोवेदादिक सत्यशास्त्रोंमें यमराज,तथा
धर्मराज नामलिखेहैं वेपरमेश्वरकेहैं औरवायुतथासूर्य्यकेभीहैं
इसमें क्याआयाकि जैसीव्यवस्थाजीनेऔरमरनेमें परमेश्वरनेरची
है वैसीहीहोतीहै सोवायुऔरसूर्य्यकेआधारसे सबजीवोंकाजा-
नाऔरआनाहोताहै तथा यहीपरमेश्वरकीआज्ञाहै किजैसाजो
कर्मकरै वहवैसाफलपावै येजोबात लिखीहैं उनमेंये प्रमाण हैं
उत्पत्तिकेविषयमेंतो कुछश्रुतिलिखदियाहै परन्तुफिरभीलिख-
तेहैं। यतोवाइमानिभूतानिजायन्ते येनजातानिजीवन्तियत्प्रय-
न्त्यभिसंविशन्तीति तद्विजिज्ञासस्वतद्ब्रह्म ॥ १ ॥ यह यजुर्वेदकी
तैत्तिरीयशाखाकीश्रुतिहै। अथातोब्रह्मजिज्ञासा ॥ २ ॥ जन्मा-
द्यस्ययतः ॥ ३ ॥ एदोव्यासजीकेसूत्रहैं इनकायहअभिप्रायहै कि
जिसपरमेश्वरसेसबभूत अर्थातसबजगत्उत्पन्नहोताहै उत्पन्नहो-
केउस परमेश्वरके धारणऔरसत्तासेसबजगत्जीताहै औरप्रल-
यमेंउसीपरमेश्वरमेंलीनहोजाताहैवहीब्रह्महै उसब्रह्मकोजानने
कीइच्छाहै भृगोतूंकरयहीदोनोंसूत्रकाभीअर्थहै। सवितारंप्रथ-
मेहनि, इत्यादिकमन्त्रयजुर्वेदकी संहितामेंलिखेहैं इनकायहअ-
भिप्रायहै किजीवजब शरीरछोड़ताहै तबसूर्य्य वावायुमेंमिलता
है फिरजैसापूर्वलिखा वैसेहीजाताऔरआताहै सोसबबातवहां
लिखीहै देखाचाहै सोदेखले। अन्नेनसोम्यशुङ्गेनापोमूलमन्वि-
च्छअद्भिः सोम्यशुङ्गेनतेजोमूलमन्विच्छतेजसासोम्यशुङ्गेनसन्मूल-
मन्विच्छसन्मूलाःसोम्येमाःप्रजा। इत्यादिकसामवेदकीछान्दोग्य
कीश्रुतीहैं इनकायहअभिप्रायहै किजैसीआकाशादिक क्रमसेउ-
त्पत्तिजगतकीहोतीहै वैसेहीक्रमसेप्रलयभी होताहै शुङ्गनामका-
र्यकापृथिवीरूपजोकार्य उसकामूलजलहै सोजबपृथिवीका प्रलय
होताहै तबपृथिवीजलरूप कारणमें लयहोतीहै तथाजल,अग्नि

मेंअग्निवायुमें वायुआकाशमें औरआकाशपरमेश्वरमें सोजिस प्रकारसे प्रलयकोलिखा उसीप्रकारसे होताहै औरहिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रेइति यहमन्त्रपहिलेलिखाहै औरइसकाअर्थभीलिख दियाहै सोपरमेश्वरही सबजगत्काधारणकर्त्ताहै अन्यकोईनहीं इस्से ऐसासिद्धभयाउत्पत्तिधारण औरप्रलयपरमेश्वरहीकेआधी-नहैं यहसंक्षेपसे जगत्कीउत्पत्ति स्थिति औरप्रलयकेविषयमेंलि-खा औरजोविस्तारसे देखाचाहै सोवेदादिक सत्यशास्त्रोंमें देख लेवै इसकेआगे विद्या,अविद्याबन्ध औरमोक्षकेविषयमेंलिखा जायगा ॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते अष्टमः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ ८ ॥

अथविद्याऽविद्याबन्धमोक्षान्व्याख्यास्यामः । वेत्तिअनयाय-थार्थान्पदार्थान्साविद्या विद्याइसकानामहै किजोजैसापदार्थहै उसकोवैसाहीजानना नवेत्तिअनयायथार्थान्पदार्थान्साअविद्या जैसापदार्थहै उसको वैसा न जानना उसका नाम अविद्या है ज्ञानविवेकऔरविज्ञान इत्यादिक विद्याके नामहैं अज्ञान भ्रम और अविवेक इत्यादिक सब अविद्याकेनाम हैं । अनित्याशुचि-दुःखानात्मसुनित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या ॥ १ ॥ यहपतञ्ज-लिमुनिका योगशास्त्रमेंसूत्रहै इसकायहअभिप्रायहै किअनित्य अशुचिदुःख औरअनात्माजैसेहैं वैसेनजानना किन्तुइनमेंनि-त्यशुचिसुखऔरआत्माकोबुद्धिहोतीहै जैसेकि,अमरानिर्जरादेवा इत्यादिकवचनोंसे नित्यनिश्चयकाजोकरना किस्वर्गादिलोकऔर ब्रह्मादिकदेवनित्यहैं ऐसाअज्ञान बहुतमनुष्योंकोहै परन्तुववि-चारकरकेदेखें किजिनकीउत्पत्ति होतीहै वेनित्यकैसेहोंगे कभी

नहीं क्योंकिबहुतपदार्थों केसंयोगसेजोपदार्थहोताहै सोउनपदा-र्थों केवियोगसे वहजोसंयोगसे बनाथा सोअवश्यनष्ट होजायगा ब्रह्मादिकोंकेशरीरऔरस्वर्गादिक सबलोकसंयोगसेबनेहैं उनका वियोगसेअवश्यनाशहोताहीहै फिरजोइनअनित्यपदार्थों में नि-त्यनिश्चयहोना औरनित्यजोपरमेश्वर तथापरमेश्वरके नित्यगुण धर्मऔरविद्याउनकोनित्यनजानना कभीउनकेजाननेमें इच्छाभी नहोनी यहअविद्याकाप्रथमभागहै औरअनित्यपदार्थोंकोअनित्य जानना तथानित्यपदार्थों कोनित्यजानना यहविद्याकाप्रथमभा-गहै अशुचिअपवित्रनाम अशुद्धपदार्थों में शुद्धकानिश्चय होना औरशुचिजोपवित्रअर्थात्शुद्धपदार्थमें अशुद्धकानिश्चयहोना जै-सेकियहशरीरइसमें सबमार्गों से मलहीनिकलताहै कान,आंख, नाक,मुखतथानीचेकेछिद्र औरलोमोंकेछिद्रोंसेभीदुर्गन्धही नि-कलताहै परन्तु जिनकीबुद्धिविषयासक्तिहोतीहै वहशुद्धबुद्धिहीउ-समें करताहै तथास्त्रीभीपुरुषके शरीरमेंशुद्धबुद्धि करतीहै ऊपर केचामकोदेखकेमोहितहोजातेहैं फिरअपनाबल,बुद्धि,पराक्रम तेज,विद्या,औरधनउसकेहेतुनाशकरदेतेहैं जोउनकीउसमें प्रवृ-त्तबुद्धिनहोती तोऐसेकाममेंप्रवृत्तनहोतेसोबड़े २राजाऔरबड़े २ धनाढ्यऔरमहात्मालोगतथामिथ्याविरक्तलोगजोहैंवेइसकाममें नष्टहोजातेहैंकभीउनकेहृदयमेंइसबातकाविचारभीनहींहोताजैसे अग्निमेंपतङ्गगिरकेनष्टहोजातेहैं वैसेवेभीऐश्वर्यसहितनष्टहोजा-तेहैं औरपवित्रजोपरमेश्वरविद्या औरधर्मइनमें उनकीबुद्धिकभी नहींआती यहअविद्याकादूसराभागहै औरजोशुद्धकोशुद्धजानना औरअशुद्धकोयथावत्अशुद्धजानना यहविद्याकादूसराभागहै दुः-खमें सुखबुद्धिकाकरना औरसुखमें दुःखबुद्धिकाहोना जैसेकिका-म,क्रोध,लोभ,मोह, भय, शोक औरविषयोंकीसेवा इनमें जीव कोशान्तिकभीनहींआती जैसेकिअग्निमें घीडालनेसे अग्निबढ़-ताजाताहै वैसेउनकीभीतृष्णा बढ़तीजातीहै परन्तु उसदुःखमें

बहुतजीवोंको सुखबुद्धिदेखनेमेंआतीहै क्योंकिउनदुःखमें सुख बुद्धिनहोतो तोवेइसमें फसते नहीं यहअविद्याका तीसरा भाग है और जोपुरुषार्थ सत्यधर्मकाअनुष्ठानसत्यविद्याकाग्रहण जितेन्द्रियताकाकरना तथासत्संगसद्विद्या औरपरमेश्वरकीप्राप्तिकेउपायअर्थातमोक्षकाचाहना इनमेंइनकोबुद्धि लेशमात्रभीनहीं आती इनकेबिनाजीवकोकभीसुखनहींहोता परन्तु बिपरीतबुद्धिकेहोनेसेदुःखहीमेंफसेरहतेहैं सुखमेंकभीनहींआते यहअविद्याकातीसराभागहै औरसुखमें सुखबुद्धिकाहोना औरदुःखमें दुःखबुद्धिकाहोना सोविद्याकातीसराभागहै तथाअनात्मामेंआत्मबुद्धि औरआत्मामें अनात्मबुद्धिकाहोना जैसेकिशरीरादिक सब अनात्मपदार्थहैं इनमेंआत्माकीनांईबहुतमनुष्योंकीबुद्धिहै जबदेहादिकोंमें दुःखहोताहै तबइनकीबुद्धिमेंयहीहोताहै किमैंमरा औरमैंबड़ादुःखीहूं मैंदुबलाहोगया मैंपुष्टहूं मैंरूपवान्हूं मैंकुरूपहूं इत्यादिकनिश्चयलोकमेंदेखपड़ताहै औरजोआत्मा औरपरमात्मादिक जिनसेकिशरीरबनाहै औरपरमेश्वरइननित्यपदार्थोंमेंइनकोबुद्धिकभीनहीआती नित्यसुखजोमोक्ष इसको इच्छाभीकभीनहींहोती इससे जन्म, मरण, क्षुधा, तृषा, शीत, उष्ण हर्षऔरशोक, इसदुःखसागरसे कभीनहींनिकलते यहअविद्या का चौथाभागहै औरआत्माको आत्मा जानना अनात्मा को अनात्माजानना यहविद्याकाचौथाभागहै इसमें क्याआयाकि अनित्याशुचिदुःखानात्मखनित्याशुचिदुःखानात्मबुद्धिः तथानित्यशुचिसुखात्मसुनित्यशुचिसुखात्मबुद्धिर्विद्या। अथोन्यथाचाविद्येति विज्ञातव्याअन्यथा नाममिथ्या जोज्ञान किजैसेको तैसा नजानना इसकानाम अविद्याहै औरनिर्भ्रम यथार्थज्ञान काहोना सोविद्याकहातीहै (विद्या) अविद्याकीउत्पत्ति विषयासक्त्यादिदोषोंसेहोतीहै जबयहजीव विद्याहीनहोके बाहरकेपदार्थोंको सुखकेहेतु चाहताहै तबमनकोबाहरकीओरप्रेरताहै फिरवहमनइन्द्रियों

को बाहरकेपदार्थोंमें लगाकेप्रवृत्तकरदेताहै सोजैसेकोईपुरुष निशानेमेंतीरवागोलीलगायाचाहताहै तबवहभीतरसेबाहरकी ओरध्यानकरताहै सोनेत्रकोबन्दूककेमुखसेलगाकेनिशानेमेंलगादेताहै वैसेहीजो२ व्यवहारजीवकियाचाहताहै तबउसीप्रकारका व्यवहारजीवमेंभीहोताहै फिरबाहरऔरभीतरके पदार्थों को यथावत् न जाननेसे जीवभ्रमयुक्तहोके अन्यथा जानलेता है उससे फिरदृढ़संस्कारअन्यथाहोनेसे अविद्याकहाती है सोनअपने स्वरूपकाकभीध्यानकरताहै नपरमेश्वरका तथानविद्याका किन्तु जैसेवेमिथ्यासंस्कारउसकेहैं उसीमेंगिरारहताहै क्योंकिजैसाजिसकाअभ्यासकरेगा वैसाहीउसजीवकोभासतारहैगा फिर जबतकयह अविद्याजीवमेंरहैगी तबतकउसको विद्याकभीनहीं होती परन्तु जबकभीअच्छासंग औरसद्विद्याकाअभ्यास तथाविचारऔरधर्मकाअनुष्ठान तथाअधर्मका त्यागकभीनहीं वहजीव करसक्ता औरयथार्थतत्त्वज्ञानपदार्थोंका उसकोकभीनहींहोता जबतकयहअविद्याजीवकोरहतीहै तबतकविद्याकासाधनऔरविद्याप्राप्तनहींहोती क्योंकिजबजीव सुविचार करताहै तबउसको कुछ२ विवेकउत्पन्नहोताहै किसत्यकोसत्यऔरअसत्यकोअसत्यजानना फिरअविद्याकेगुणऔरउनकेकार्यउनमेंवैराग्यहोताहै अर्थात्उनकोछोड़ताहैऔरविद्यादिकजोसत्यार्थउनमेंप्रीतिकरताहै इनमेंयहकारणहै किजबतकपदार्थोंकादोषनहींजानता तबतक उनकेत्यागकरनेकोबुद्धिजीवकोकभीनहींहोती क्योंकित्यागकाहेतु दोषोंकायथावत्देखनाहीहै तथापदार्थोंकेगुणकाजोज्ञानहोना सोईप्रीतिकाहेतुहै फिरवहजीवधर्माधर्म कायथावत्निश्चयकरके अधर्मकात्यागऔरधर्मकाग्रहणकरेगा फिरउसकामनशान्तहोगा किविद्या,धर्म,सत्सङ्ग,सत्पुरुषोंकासंग,योगाभ्यास, जितेन्द्रियता,सत्पुरुषोंकाआचार,मोक्ष औरपरमेश्वरइन्हींमें मनप्रीतियुक्तहोकेस्थिरहोजायगा इनसेविरुद्धअविद्याअधर्मकुसंग किकप-

रुषोंकासंगविषयोंकाअत्यन्तअभ्यास अजितेन्द्रियता दुष्टपुरुषोंका आचार जिसमेंबन्धहोय औरपरमेश्वरकोछोड़के उपासनाप्रार्थनाऔरस्तुतिकाकरना इनसेउसकामनहटजायगा इसकानामशमहै फिरसबइन्द्रियांस्थिरहोजांयगी इसकानाम दमहै फिर अविद्यादिकजितनेदुष्टव्यवहार उनसेउनकानामपृथकहोजायगा अर्थातउनमें कभीन फसेगा उसकानाम उपरतिहै फिरशीत, उष्ण, सुख, दुःख, हर्ष, शोच, औरक्षुधा, तृषादिकइनकासहन अर्थात्इनमें हर्ष वाशोक नकरेगा इसकानाम तितिक्षाहै फिरविद्यादिकउत्तमगुणोंमें अत्यन्तश्रद्धाअर्थात् प्रीतिजीवकीहोतीहै अविद्यादिकदोषोंमेंसदाअप्रीतिइसकानामहै श्रद्धाफिरमनबुद्धिचित्त, अहङ्कार, इन्द्रियऔरप्राण एसबउसकेवशीभूतहोजांयगे उनकोजहांस्थिरकरेगा वहींसबस्थिररहैंगे औरअविद्यादिक अनर्थमेंकभीनजांयगे इसकानाम समाधानहै एछः गुणजीवमें उत्पन्नहोगें फिरजैसेक्षुधातुर पुरुषकोइच्छा अन्नहीमें रहतीहै वैसे उसकामनमुक्तिहीमेंरहेगा किमेरीमुक्तिकबहोगी इससे भिन्नव्यवहारोंमेंउसकामनलगेहीगानहीं इसकानाममुमुक्षुत्वहै येनव विवेकादिकगुणजबजीवमेंहोतेहैं तबवहब्रह्मविद्याका अधिकारी होताहै फिरवहसबसत्यशास्त्रोंका जोसत्य२पदार्थ विद्यारूप विषयउसकोयथावतजानेगा फिरशास्त्रजिनपदार्थोंकेप्रतिपादनकरतेहैं उनपदार्थोंकेसाथशास्त्रोंकाप्रतिपाद्य प्रतिपादकसम्बन्धको वहजीवयथावत्जानलेगा इसकानामसम्बन्धहै फिरवहयथावत् विद्याओंकाश्रवणकरेगा श्रवणकरकेज्ञाननेत्रसेउनकायथावत्विचारकरेगा इसकानाममननहै औरफिरउनपदार्थोंको यथावत् प्रत्यक्षज्ञाननेकेहेतु योगाभ्यास अर्थातपातञ्जलदर्शन की रीति से करेगा इसकानामनिदिध्यासनहै फिरपृथिवीसेलेकेपरमेश्वरपर्यन्त सबपदार्थोंकाज्ञाननेत्रसेप्रत्यक्षज्ञानकरेगा उसीसमयइसकाजोप्रयोजन किसबदुःखोंकोनिवृत्ति औरपरमानन्द परमेश्वर

कीजोप्राप्ति इसकानाम योजनहै सोजबयहविद्याहोगी तबअवि-
द्यादिकसबदोषनष्टहोजांयगे जैसेसूर्य्यकेप्रकाशसे अन्धकारनष्ट
होजाताहै विद्याऔरअविद्या यहदोनोंअन्धकारऔर प्रकाशकी
नांई परस्परबिरोधीपदार्थहैं इनकाफलितार्थयहहै किजोविद्या-
वान्होगा सोअधर्मादिक दोषोंको कभीनकरेगा औरजो अवि-
द्यावान्गा उसकीनिश्चितबुद्धि धर्मादिकके अनुष्ठानमें कभीनल-
गेगी प्रश्न विद्याकीपुस्तककोईसनातनहै वाबपीछेरचीगईहैं उ
त्तर चारबेदोंकोछोड़केरचीगईहैं प्रश्न जैसेअन्यसबशास्त्ररचेगए
हैं वैसेवेदभीरचागयाहोगा उत्तर ऐसामतकहोजोऐसाकहोगे
तोआपकेमतमेंयहअनवस्थादोषआजायगा क्योंकिकोईपुस्तक स-
नातननठहरनेसे किसीपदार्थ अथवापुस्तककासत्य वा असत्यनि-
श्चयकभीनहोसकेगा जोकोईपुस्तकरचेगा उसकाप्रमाणकैसेहोगा
क्योंकिजोसनातनपुस्तकहोती तोउसपुस्तकसेऔरोंका सत्यासत्य
जीवलोगजानसकें फिरउसकाखण्डनकरके दूसराकोईग्रन्थरच-
लेगा ऐसेदूसरेका करकेतीसरा ऐसेहोअनवस्थाआजायगी प्रश्न
जैसेअन्यपुस्तककाप्रमाणवेदसेहोताहै वैसे बेदकाप्रमाण किसपु-
स्तकसेहोगा उत्तर ऐसाकहनेसे भीअनवस्थादोषआजायगा क्यों-
किवेदकेप्रमाणकेहेतु कोइअन्यपुस्तकरक्खीजाय तोफिरउसपुस्त-
ककेप्रमाणकेहेतु कोईतीसरीभी मानीजायगी ऐसेहो२ आगे२
अनवस्थाआजायगी इससेअवश्यएकपुस्तकसनातनमाननाचाहि-
ए जिस्से किअन्यपुस्तकोंकोव्यवस्थासत्य२रहै सोवेदकेसनातनहो-
नेमेंपहिलेलिखदियाहै वहीबिचारलेना प्रश्न छःदर्शनोंमें बड़े२
बिरोधहैं किपूर्वमीमांसावाला धर्माधर्मीऔरकर्महीपदार्थहैं इ-
नसेजगत्कीउत्पत्तिमानताहै तथावैशेषिकदर्शनऔरन्यायदर्शन
में परमाणुसेजगत्कीउत्पत्तिमानीहै औरपातंजलदर्शनतथासां-
ख्यदर्शनमें प्रकृतिसेजगत्कीउत्पत्तिमानीहै औरवेदान्तदर्शनमें
परमेश्वरसे सबजगत्कीउत्पत्तिमानीहै यहबड़ापरस्परबिरोधहै

सबशास्त्रोंमें इसकाक्याउत्तरहै उत्तर वेदान्तमें प्रथमसृष्टिका व्याख्यानहै किउस्से पहिलेजगत्थाहोनहीं औरजबअत्यन्तसबका प्रलयहोगा तबपरमेश्वरहीमेंलयहोगा अन्यमेंनहीं सोयहआदिसृष्टिहै क्योंकिपहिलेनहींथी औरफिरउत्पन्नभई इस्से इससृष्टिकेआदिहोनेसे सादिकहातीहै औरमीमांसादिकशास्त्रोंमें अनादिसृष्टिकाव्याख्यानहै क्योंकिप्रकृतिपरमाणुऔरधर्मधर्मी इनकानाशप्रलयमेंभीनहींहोता इसकानाममहाप्रलयहै इसमें प्रकृतिपरमाण्वादिकोंकेमिलनेसे जितनास्थूलजगत्होताहै वह सबपरमाण्वादिकोंके वियोगसेसबनष्टहोजाताहै परन्तुप्रकृतिऔरपरमाण्वादिकबनेरहतेहैं फिरभीजबईश्वरउनकोमिलाकेजगत्कोरचताहै तबयहस्थूलसबहोजाताहै फिरउनमेंस्थूलजगत्उत्पन्नहोताहै फिरजबनष्टहोताहै तबप्रकृतिऔरपरमाणुरूपहोताहै फिरउनसेस्थूल जगत्उत्पन्नहोताहै ऐसेहीअनेकबारउत्पत्ति औरअनेकबार जगत्काप्रलयहोताहै परन्तुप्रकृतिऔरपरमाणु इसस्थूलकाजोकारणसोनष्टनहीं इस्से महाप्रलयमेंआदि इसजगत्की नहींदेखपड़ती क्योंकिइसकाकारण प्रकृतिऔरपरमाणुसदाबनेरहतेहैं इस्से जगत्अनादिकहाताहै कभीकारणरूप होजाताहै कभीकारणसे स्थूलजगत्उत्पन्नहोताहै ऐसेहीप्रवाहरूपउत्पत्ति औरप्रलयकेहोनेसे अनादिजगत्कहाताहै सोयहजगत्कबउत्पन्नभया ऐसाकोईनहींकहसक्ता इस्से यहआयाकिपांचशास्त्रोंमेंमहाप्रलयकेव्याख्याहै इसमेंभीअनेकभेदहैं किजबत्रसरेणुतकजबप्रलयहोताहै तबधर्मऔरधर्मी कुछ२प्रसिद्ध रहताहै इसप्रलयकीव्याख्यामीमांसामेंहै औरजबअणुपर्यन्तकानाशहोताहै तबपरमाणुमात्रजगत्रहताहै सोभीमहाप्रलयभेदहै यहव्याख्यावैशेषिकदर्शनऔरन्यायदर्शनमेंहै औरजबपरमाणुकोभीसूक्ष्मावस्थाहोतीहै तबअत्यन्तसूक्ष्मजोप्रकृतिसोरहजातीहै औरपरमाणुकाभीलयहोजाताहै क्योंकिशब्दादिकतन्मात्राओंकोभी सां-

ख्यशास्त्रमें उत्पत्तिलिखीहैं औरप्रकृतिकीनहीं इस्से यहअनुमान्
सेजानाजाताहै किप्रकृतिपरमाणुसेभीसूक्ष्महै सोयहव्याख्यानपा-
तंजलदर्शन औरसांख्यदर्शनमें कियाहै औरवेदान्तमें प्रकृत्यादि
कोंकोउत्पत्तिलिखीहैं औरप्रकृतिकालयभी परमेश्वरमें होताहै
इस्से उत्पत्तिकेविषयमें भिन्न२पदार्थोंकेव्याख्यानहोनेसे कुछवि-
रोधपरस्परइनमेंनहीहै प्रश्न पूर्वमीमांसा औरसांख्यमें ईश्वर
कोनहीमानाहै औरअन्यशास्त्रोंमें मानाहै इस्से विरोधआताहै
उत्तर इसमेंभीकुछविरोधनहीं क्योंकिमीमांसामें धर्म औरध-
र्मीदोपदार्थमानेहैं इस्से हीईश्वरधर्म्मी औरईश्वरके सर्वज्ञादिक
धर्म्मअवश्य मानलियाहै इसमें कुछ सन्देहनहीं औरवेदकोजै-
मिनीजीनित्यमानतेहैं सोवेदशब्दज्ञानरूपकेहोनेसेगुणहै सोगु-
णीकेविनागुणकिसमें रहेगा इस्से ईश्वरको उसनेअवश्यमानाहै
औरसांख्यमें ईश्वरासिद्धेः ॥ १ ॥ प्रमाणाभावन्नतत्सिद्धिः ॥ २ ॥
सम्बन्धाभावान्नानुमानम् ॥ ३ ॥ उभयथाप्यसत्करत्वम् ॥ ४ ॥
मुक्तात्मनःप्रशंसोपासासिद्धस्यवा ॥ ५ ॥ एपांचसांख्यशास्त्रमें क-
पिलजीकेकिएसूत्रहैं यहीअनीश्वरवादकाकारणहै इनकोयथाव-
त्नजानके चार्वाक औरबौद्धादिक बहुतअनीश्वरवादी होगएहैं
इनकेअभिप्रायनहीजाननेसे इनकायहअभिप्रायहै किईश्वर को
सिद्धिनहीहोती किन्तु एकपुरुष औरप्रकृतिदोनोंनित्यहैं अन्यन-
हीं ॥ १ ॥ क्योंकिप्रत्यक्षप्रमाणनहोनेसे ईश्वरसिद्धनहींहोता प्र-
त्यक्षप्रमाणसेजोसिद्धहोतातोईश्वरमानाजाता अन्यथानहीं २ ॥
लिंगऔरलिंगीअर्थातचिन्ह औरचिन्हवालेकानित्यसम्बन्ध होता
है सोलिंगकेदेखनेसेलिंगीकाअनुमानहोताहै फिरईश्वरकालिं-
गनामचिन्हकोईजगत्में देखनहीपड़ता इस्से ईश्वरमेंअनुमान
भीनहींबनता ३ ॥ ईश्वरजोमोहितहोगा तोअसमर्थकेहोनेसेज-
गत्कोकभीनहीरचसकेगा औरजोमुक्तहोगा तोउदासीनकेहोने
से जगत्केरचनेमें ईश्वरको इच्छाभी नहीहोगी इस्से ईश्वरमें

शब्दप्रमाणभीनहींबनता॥ ४॥ फिरवेदमें सईश्वर इत्यादिकश्रु-
तिईश्वरकेव्याख्यानमें लिखीहैं उनकीक्यागतिहोगी वेसबश्रुति
विद्याऔरयोगाभ्यासऔरधर्मसेसिद्धजोजीवहोताहै किअणिमा-
दिकऐश्वर्यवाला उसकीप्रशंसाऔरउपासनाकीवाचकहै इससे ई-
श्वरकीसिद्धि किसीप्रकारसेनहीहोती ऐसेअर्थकोविपरीतजानके
मनुष्योंकीबुद्धिभ्रमयुक्तहोगईहै परन्तुकपिलजीकायहअभिप्रायहै
किपुरुषहीईश्वरहै औरवहीचेतनहै सर्वज्ञादिकगुणभीपुरुषकेहैं
उसपुरुषचेतनसेभिन्नकोईईश्वरनहीहै पुरुषकानामही ईश्वरहै
इससेयहआयाकि पुरुषहीको ईश्वरमानना चाहिए दूसराकोई
नहीं इससे जोकोईकहताहैकिजैमिनीऔरकपिलजीनिरीश्वरवा-
दीथे यहउसकाकहना मिथ्याजानना वेदादिकजितने पुस्तकहैं
उनकापठनपाठनविद्याकासाधनहै औरविद्यातथाअविद्याकीप-
रीक्षा उनकेपढ़नेऔरपढ़ानेके बिनाकभीनहींहोती विद्यापढ़ने
वाले तथानहींपढ़नेवाले इनमेंसेपढ़ने वालोंकाजोभाषण और
ज्ञानादिकव्यवहारअच्छाहीदेखनेमें आता इससे ग्रन्थोंकाजोपढ़-
ना सोविद्याकोप्राप्ति करनेवालाहोताहै अन्यथानहीं परन्तुवि-
द्वानवहीहै जोकिसर्वथाअधर्मकात्यागकरै औरधर्मका ग्रहणक-
रै अन्यथापढ़नाऔरपढ़ानाव्यर्थहीहै। अन्धन्तमःप्रविशन्तियेवि-
द्यामुपासते ततोभूयइवतेतमोयउविद्यायारताः॥ १॥ विद्या-
ञ्चाविद्यांचयस्तद्वेदोभयंसह अविद्यया मृत्युंतीर्त्वाविद्यया ऽमृतम-
श्नुते॥ २॥ अन्यदेवाहुर्विद्ययाअन्यदाहुरविद्ययाः इतिशुश्रुम-
धीराणांयेनस्तद्विचचक्षिरे॥ ३॥ ययजुर्वेदकीसंहिताकेमन्त्रहैं इ-
नकायहअभिप्रायहै किजोपुरुषअविद्यामेंफसेहैं वेअत्यन्तअन्धका-
रअर्थातजन्म,मरण,हर्ष, औरशोकादिकदुःखसागरमें प्रविष्टर-
हतेहैं इससे पृथक नहींहोसके औरविद्याअर्थात् नानाप्रकारके
कर्मोंसे विषयभोगोंकोचाहनाकरना तथायोगाभ्यास,तप और
संयमसेअणिमादिकऋद्धियोंमेंफसकेप्रतिष्ठासंसारमें औरअभि-

मानादिकदोषोंसेयुक्तहोनाइसमेंजोरतरहतेहैंवेउनकर्म्मोंलोगों
सेभीअत्यन्तअन्धकारमेंफसजातेहैं फिरउनकानिकलनाउससेबहु-
तकठिनहोताहै ॥ १ ॥ परन्तु विद्याऔरअविद्याकोएकसाथगिन
लेना क्योंकिबन्धकोकरनेवालेदोनोंहैं इससे दोनोंकानाम अवि-
द्याहै जाकर्मधर्मयुक्तऔरयोगाभ्यासजोउपासना इनकेअनुष्ठान
सेमृत्यु जोमोह औरभ्रमादिकदोषउनसेपृथक्मन औरजीवहोके
शुद्धहोजातेहैंफिरयथार्थपदार्थोंकाज्ञानऔरपरमेश्वरकीजोप्रा-
प्ति इसविद्यासेअमृतजोमोक्षउसकोप्राप्तहोताहै फिरदुःखसागर
मेंकभीनहींगिरता॥२॥ इससेविद्याजोनिर्भ्रमज्ञानइसकाफलभि-
न्नहैअर्थातमोक्षहै औरजोपूर्वोक्तअविद्याजोकिभ्रमात्मकज्ञानउ-
सकाभीफलअन्यहै नामबन्धहै सोविद्याऔरअविद्याका फलभि-
न्न२ है एकनहीं ऐसाहमनेज्ञानियोंकेमुखसेसुनाहै जोकियथार्थ
वक्ता उननेहमारेसाम्हनेयथावतव्याख्याकरदीहै इससेहमको इ-
नमेंभ्रमनहीहै ॥ ३ ॥ सोसवमनुष्योंकोयहउचितहै किसबपुरुषा
र्थसेविद्याकीइच्छाकरैं औरअत्यन्तप्रयत्नसेअविद्याकोछोड़ैं क्यों-
किइससंसारमेंविद्याकेतुल्यकोईपदार्थनहीं तथाविद्याकेबिनाइस
लोकवापरलोकमें कुछसुखनहीहोता औरअनेकजन्मधारणकर्ता
है उनमेंअत्यन्तपीड़ाहोतीहै कभीपरमेश्वरकी प्राप्तिनहींहोती
इसकीप्रातिकेउपायब्रह्मचर्यादिकपूर्वसबलिखदियेहैं उनकीनाम
मात्रयहांगणनाथोड़ीसीकरतेहैं प्रथमसबउपायोंकामूल ब्रह्मचर्या-
श्रमजबतकपूर्णविद्यानहोय तबतकजितेन्द्रियहोके यथावत्विद्या
ग्रहणकरैं औरसबव्यवहारोंकोयथावत्जानैं फिरविवाहकरैं प-
रन्तुविद्याभ्यासकोनछोड़ैं औरनित्यगुणग्रहणकीइच्छारक्खैं अ-
त्यन्तपुरुषार्थ औरनम्रतापूर्वक सबसज्जनोंसेमिलैं मिलकेउनको
सेवापूर्वकगुणग्रहणकरैं आपभीजितनीबुद्धि उतनानित्य२विचार
करैं उसमेंपक्षपात रहितहोके सत्यकोग्रहणकरैं औरअसत्यको
छोड़ैं एकान्तसेवनसेअपनी इन्द्रियां,मनऔरशरीर सदाधर्मा-

नुष्ठानमेंनिश्चितरक्खें अधर्ममेंकभीनहीं। यथाखनन्खनित्रेण-नरोवार्यधिगच्छति तथागुरुगतांविद्यांशुश्रूषुरधिगच्छति॥ यह मनुकाश्लोकहै इसकायहअभिप्रायहै किजोपुरुष अभिमानादिक दोषरहित औरनम्रतादिकगुणयुक्तहोके सेवासेदूसरेकाचित्तप्रसन्नकरदेताहै सोईश्रेष्ठगुणोंकोप्राप्तहोताहै अन्यनहीं इसमेंयह दृष्टान्तहै किजैसेंभूमिकोखोदताश्कुदालीसेनीचेचलाजाय फिर वहजलकोप्राप्तहोताहै वैसेहीशुश्रूषुअर्थातकपटादिकदोषरहित औरदूसरेपुरुषकोपरिच्छाजानताहोय किइसमेंगुणहैं वा नहीं फिरयथावत्गुणोंकाबुद्धिसेनिश्चयकरले किइसमेंएसत्यगुणहैं पीछेजिसप्रकारसेवेगुणमिलें उनसेवादिकप्रकारोंसे गुणोंकोअवश्य ग्रहणकरें ग्रहणकरकेगुणोंकोप्रकाशकरदे औरजोकोईउनगुणों कोग्रहणकियाचाहै उसकोप्रीतिसेनिष्कपटहोके यथावत्गुणोंको देदे क्योंकिगुणोंकोगुप्तकरना कोईमनुष्यकोउचितनहीं औरजो गुणोंकोगुप्तरखताहै वहबड़ामूर्खपुरुषहै औरधर्मतथापरमेश्वर काअत्यन्तविरोधीहै वहकभीसुखनपावैगा इत्यादिकविद्याकीप्राप्तिकेहेतुहैं औरयहीअविद्या नाशकेहेतुहैं अन्यभीअनेक प्रकारके हेतुहैं उनकोविचारलेना औरइसकेआगेबन्ध औरमुक्तिकाव्याख्यानकियाजाताहै। पराञ्चिखानिव्यतृणत्स्वयंभूस्तस्मात्पराङ्पश्यतिनान्तरात्मन् कश्चिद्धीरःप्रत्यगात्मानमैक्षदावृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन्। यहकठवल्लीकीश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहै किपराञ्चिखानिअर्थातबहिर्मुख इन्द्रियजिसकीहोतीहैं वहजीवबाहरकेपदार्थोंहीकोदेखतारहताहै औरभीतरकेपदार्थोंकोवाअपने स्वरूपको कभीनहींबिचारता अथवापरमसूक्ष्मजोपरमेश्वर उसकेविचारमें कभीजीवकाचित्तनहीजाता इससे जीवकोपदार्थों कायथार्थज्ञानतोनहीहोता किन्तुअत्यन्तदृढ़ भ्रमहोताहै उससे आपसेआपहीबद्धहोताहै फिरऐसामोह उसकोहोताहै किजिसकाछूटनाबहुतकठिनहै उससे फिरमिथ्याज्ञानहोताहै किजोपुरु

धन, राज्यादिकोंहीमें सुखमानलेताहै फिरउनकेसुधरनेमेंअत्यन्तहर्षितहोताहै औरबिगड़नेसे शोकयुक्तहोताहै इसजालमेंगिरके अनेकजन्ममरणजीवकेहोतेहैं औरअत्यन्त दुःखपाताहै प्रश्न जन्मएक होताहै अथवाअनेक उत्तर अनेक जन्महोतेहैं प्रश्न जो अनेकजन्महोतेहैं तोपूर्वजन्मोंकाहमकोस्मरणक्योंनहीहोता उत्तर पूर्वजन्मोंकास्मरणनहीहोसक्ता क्योंकिपूर्वजन्मज्ञानकेजोनिमित्तहैं वेसबनष्टहोजातेहैं इससे पूर्वजन्मका स्मरणनही होसक्ता प्रश्न कौनवेनिमित्तहैं औरनिमित्तकिसकोकहतेहैं उत्तर निमित्तइसकानामहै किजोदूसरेकेसंयोगसे उत्पन्नहोताहै जैसेकिजल शीतलहै औरअग्निउष्णहै जबअग्निकासंयोगजलमेंहोताहै तब जलउष्णहोजाताहै परन्तुजबअग्निसे जलपृथककियाजाताहै तब फिरभीवहशीतल होजाताहै इसकानाम नैमित्तिकगुणहै जोकि जबतकउसकानिमित्तरहताहै तबतकवहरहताहै औरजबनिमित्तनहीरहता तबउसकानिमित्तसे उत्पन्नभयाजोकिगुणसोभीनष्ट होजाताहै जैसेसूर्य्य औरनेत्रसे रूपकाग्रहणहोताहै जबसूर्यऔर नेत्रनहीरहतेतबरूपकाभीग्रहणनहींहोता क्योंकिनिमित्तकेबिना नैमित्तिकगुणनहीहोताइससेक्याआयाकिपूर्वजन्मजिसदेशजिसकालमें औरजोशरीर तथाउसशरीरकेसम्बन्धीसबपदार्थनष्टअर्थात उनकावियोगहोनेसे वहांकाजोउनकोज्ञानथासोभीनष्टहोजाताहैऔरइसीजन्ममेंजो२बाल्यावस्थामें व्यवहारकियाथाउससे सुखवा दुःखपायाथा उसकाभीयथावतस्मरण वृद्धावस्थामेंनहींरहताऔर जिससमयकिसीसेकिसीकीबातहोतीहै तबउसबातमेंअनेकअक्षर, पद, वाक्य, सम्बन्धकहैंऔरसुनेजातेहैं परन्तु उसके उत्तर कालमें स्मरणकहनाबासुनना यथावत्नहींबनता औरकोईबात कण्ठस्थ करलेताहै फिरकालान्तरमें उसकोभीभूलजाताहै एकबातमेंजब जीवकाचित्तहोता तबदूसरेमेंनहींजाता दूसरेमेंजबजाताहै तब पहिलेकोभूलजाताहै जबऐसीबातहैतोजन्मान्तरकेस्मरणमेंशंका

जोकतेहैंउनकोशंकाव्यर्थहोहै प्रश्न जीवऔरबुद्धिआदिकपदार्थतो वेहीहैं फिरपूर्वजन्मकाज्ञानक्योंनहीहोता क्योंकिजोकुछदेखता वासुनताहै सोबुद्धिहीसे ग्रहणकरताहै फिरउनकाज्ञान अवश्य होनाचाहिएसोनहीहोता इस्से पूर्वजन्मनहीहैं उत्तर इसकाउत्तरतोपूर्वप्रश्नकेउत्तरहीसेहोगया क्योंकिइसबाल्यावस्थासेलेकेवृद्धावस्थातक वहीजीवऔरबुद्ध्यादिकहैं फिरकहैवासुने व्यवहारोंमें अक्षर,पद,औरउनकेअर्थादिकोंका यथावत्स्मरणक्योंनहीहोता इसव्यवहारकोहमलोगप्रत्यक्षदेखतेहैं किजबहमलोगपरस्पर बातकहते औरसुनतेहैं तबकुछकालकेपीछेबहुतर बातोंके सुनने वाकहनेमेंआनुपूर्वीसेयथावतस्मरणनहीरहता फिरजन्मान्तरके स्मरणमेंशंकाकरनीव्यर्थहीहै औरदेखनाचाहिए कि जागृतावस्था मेंवेहीजीवऔरबुद्ध्यादिकव्यवहारकरतेहैं यहमेराघर,द्वार,पिता,पुत्र,स्त्री,बन्धु,शत्रु,औरमित्रादिकहैं ऐसाउसजीवको यथावत स्मरणहै औरफिरजबस्वप्नावस्थाहोतीहै तबइनकाउसीसमयविस्मरणहोजाताहैफिरजबसुषुप्तिहोतीहैतबदोनोंकाव्यवहारविस्मृतहोजाताहै वेहीजीव और बुद्ध्यादिकहैं परन्तु किञ्चित २ देश औरकालकेभेदहोनेसे पूर्वकाव्यवहारविस्मृतहोजाताहै फिरपूर्वजन्मदेशकाल और शरीरादिकपदार्थ सबछूट जातेहैं फिरउनके स्मरणकोशंकाजोकरतेहैं सोबिचारवाननहीहैं प्रश्न यहजन्मजोहोताहैसोएकबारहीहोताहै दूसरीबारनहींक्योंकियहदूसराजीवहै सोनयार उत्पन्नहोजाताहैऔरशरीरधारणकरताहैजोकिपहिले शरीरधारणकियाथा सोजीवफिरनहींआता उत्तर यहबातमिथ्याहै क्योंकिजोदूसराजीवहोता तोउसकोपूर्वके संस्कारनहीदेखपड़ते जैसेकिजिसपदार्थकासाक्षात अनुभवबुद्धिमें अवश्यआता है फिरसंस्कारसेस्मृतिउत्पन्नहोतीहै औरस्मृतिसेप्रवृत्तिवानिवृत्तिहोतीहै जैसेकिकोईसंस्कृतकोपढे औरकोईअंगरेजीकोजोजिसकोपढ़ताहै उसकोउसकाअक्षरादिक्रमसेबुद्धिमेंसबसंस्कारहो-

तेहैं साक्षातदेखने औरसुननेसे अन्यकानहीं फिरकालान्तरमें कोईव्यवहारअथवापुस्तककोदेखताहै सोपूर्वदृष्टवाश्रुतकेसंस्कारसेस्मृतिहोतीहै है कियहप्रकार वायकारहै औरइसका यहअर्थ है क्योंकिमैनेंपूर्वइसकाअर्थ ऐसापढ़ावासुनाथा बिनासंस्कारके स्मृतिकभीनहींहोती औरबिनास्मृतिसेयहऐसाहीहै वानहीं ऐसोप्रवृत्तिवानिवृत्ति कभीनहींहोती सोएकहीजन्महोता तोजन्मसमयसेलेके बालकोंकेअनेकप्रकारकेव्यवहारदेखनेमेंआतेहैं जैसे क्षुधाकाज्ञानऔरदुग्धादिकोंसेक्षुधाकीनिवृत्तिकेहेतु इच्छाफिर दुग्धपीनेकीयुक्ति औरतृप्तिहोनेसेदूधपीनेकीनिवृत्तितथामलमूत्रादिकोंकेत्यागकीयुक्ति औरकोईउसकोकुछमारै अथवाडरावै फिरउससे रोदनादिककीप्रवृत्तिऔरप्रीतिवाला उनसेहासऔरप्रसन्नताकीप्रवृत्तिइत्यादिकप्रवृत्तिऔरनिवृत्ति रूपव्यवहारबिनापूर्वजन्मकेसंस्कारसेकभीनहीहै।सक्ताइससे पूर्वजन्मअवश्यमाननाचाहिए प्रश्न एसबव्यवहारस्वभावसेहोतेहैं जैसेकिअग्निऊपरचलता है औरजलनीचेकोवैसेहीवेसबजीवकोज्ञानस्वरूपकेहोनेसे होतेहैं उत्तर जोस्वभावसे मानोंगेतोपूर्वकहे अनुभव संस्कारऔर स्मृतितथाप्रवृत्तिवानिवृत्तिइनकोछोड़देओ औरजोछोड़ोगेतोकोईव्यवहारआपलोगोंकासिद्धनहोगा फिरपढ़नापढ़ानाबुरीवातोंकेछोड़नेकाउपदेश तथाअच्छीबातोंकाउपदेशक्योंकरते औरकरातेहोऔरजोस्वभावसेमानोगेतोउसकीनिवृत्तिकभींनहीहोगी जैसेकिअग्निऔरजलकेस्वभावकीनिवृत्तिनहींहोती वैसेप्रवृत्तिकोस्वभावसेमानोगेतो निवृत्तिकभीनहीहोगी जोनिवृत्तिकोस्वभावसेमानोगेतोप्रवृत्ति कभींनहीहोगी औरजोदोनोंको मानोगेतो क्षणभंगऔरअनवस्थाहोगी फिरआपलोगोंमें उन्मत्तादोष आजायगा क्योंकिअग्निकीनीचे चलनेमेंप्रवृत्तिकभीनहीहोती तथा जलकीस्थूलकेहोनेसेऊपरकोप्रवृत्तिकभीनहीहै।तो वैसेहीस्वभावसबजानों प्रश्न ईश्वरनेजैसाजिसकास्वभावरचाहै वैसाहीहोता

है उत्तर यहबातभीठीकनहीं जोईश्वरकारणहोताहै इनव्यवहारोंमेंतोईश्वरकेदयालुहोनेसे सबओषधियोंकाज्ञानऔरपरमेश्वरपर्यन्तपदार्थोंकाबोध तथाधर्ममेंप्रवृत्तिऔरअधर्मसेनिवृत्ति ईश्वरनेसबजीवोंमेंस्वभावसेक्योंनहींरक्खी औरईश्वरअन्यायकारी भीहोजायगा क्योंकिकिसीकोराजाऔरधनाढ्यकेघरमें जन्मऔर किसीकोअसमर्थ औरदरिद्रके घरमें जन्म तथाएककोबुद्धि बहुत अच्छीऔरदूसरेकोजड़बुद्धिदेताहै तथाएकरूपवान्औरएककुरूप तथाएकबलवान् औरदूसरानिर्बलएकपण्डितऔरदूसरामूर्खहोताहै सोबिनाअच्छेकर्मोंसेउत्तमपदार्थोंकादेना औरबिनाअपराधसेभ्रष्टपदार्थोंकादेना इससे ईश्वरमेंपक्षपातआवेगा पक्षपात केआनेसेईश्वरअन्यायकारी होजायगाऔर कृतहानिरकृताभ्यागमश्च । एदोदोष आजांयगे क्योंकि अबजो कुछ किया जाता है उसकी हानि होजायगी फिर जन्मके नहो होने से जो शरीर, इन्द्रियां, प्राण, और मन के नही होने से पाप पुण्यों का फल कभींनहीभोगसक्ता औरजोपूर्वजन्मनमानेंगेतो बिनाकिए सुख औरदुःखकोप्राप्तिकैसेहोगी वैषम्यऔरनैर्घृण्य,एदोदोषईश्वरमें आजांयगे किबिनाकारणसे किसीकोसुखदेदे औरकिसीकोदुःख यहविषमता ईश्वरमेंआवेगी औरजीवोंकोदुःखीदेखकेजिसकोघृणानामदयानहींआतोइससेईश्वरकादयाजोगुणसोनष्टहोजायगा औरजोपूर्वतथा उत्तर जन्महोगातोईश्वरमेंकोईदोषनहीआवेगा क्योंकिजैसाजिसकापुण्यवापापवैसाउसकोसुखवादुःखहोगा इससे ईश्वरन्यायकारीऔरदयालुभीयथावत्रहेगाइसपूर्वऔरपरजन्म अवश्यमाननाचाहिए सोपूर्वजन्मोंकी संख्यानहींहैं क्योंकिजबसे सृष्टिउत्पन्नभईहै तबसेअनेकजन्मधारणकरते२चलेंआतेहैं और जबतकमुक्तिनहोंहोगी तबतकस्थूलशरीरअवश्यधारणकरेंगे प्रश्न सुखवादुःखराजाऔरदरिद्रकोतुल्यहीदेखपड़ताहै क्योंकिजोराजाको सुखवादुःखहैं वेदरिद्रोंकोभीहैं विचारकरकेदेखैं तोसुख

वादुःखसबको तुल्य होदेखपड़ताहै उत्तर ऐसाकहना योग्यनहीं क्योंकिइच्छाकेअनुकूल पदार्थोंकोप्राप्तिकाहोना सुखकहाताहै औरइच्छाकेप्रतिकूलपदार्थोंकी प्राप्तिकाहोनादुःखकहाताहै सो हर्षऔरप्रसन्नतासुखकेपर्यायहैं औरशोकतथाअप्रसन्नतादुःखके पर्यायहैं जबराजादिकधनाढ्योंकेगर्भवासमें जीवआताहै उसीदिनसेअनुकूलपदार्थोंकासेवनहोताहै फिरजन्मजबहोताहै तबअनेकओषधादिकव्यवहारोंकी प्राप्तिहोतीहै औरबिनाइच्छाकेभी अनेकपदार्थ अनुकूल प्राप्तहोतेहैं वहजब दूधपीनेकी इच्छाकरताहै तबबिनाइच्छासेभी मिश्री औरसुगन्धादिकसेयुक्त दूधयथेष्ट मिलताहै औरजबवहकुछअप्रसन्नवारोनेलगताहै तबअनेक सेवकपरिचारकलोग मधुरवचन औरखिलौनेसे शीघ्रहोप्रसन्नकर देतेहैं औरफिरजबवहबड़ाहोताहै तबजिसकेऊपर दृष्टिकरताहै वहहाथजोड़केअनुकूलवचन तथाअनुकूलव्यवहारकरताहै सदा प्रसन्नउसको सबलोगरखतेहैं औरवहरहताहै फिरजबकभीदुःखीभीहोताहै तबअनुकूलवचन औरओषधादिकोंसे उसकोप्रसन्नकरदेतेहैं औरजोबिद्यावानोंकेगर्भवासमेंआताहै उसकोभीअधिकसुखहोताहै परन्तु कोईकर्मउनमेंसेनष्टबुद्धिकेहोनेमेदुःखी होजाताहै सोपूर्वजन्मकेपापोंसे औरइसजन्मके दुष्टव्यवहारों से पीड़ितहोताहै औरजोमूर्ख वा दरिद्रके गर्भवासमें जीवआताहै उसीसमयसेउसकोदुःखहोनेलगतेहैं जबवहस्त्रीघासवालकड़ीको काटनेलगतीहै तबगर्भमेंप्रहारकेहोनेसेजीवपीड़ितहोताहै और कभीक्षुधातुररहतीहै कभीबहुतकुत्सित अन्नकोखालेतीहै उससे भीउसजीवको अत्यन्तपीड़ाहोतीहै फिरजबजन्महोताहै तबकोई प्रकारकाओषधवासुनियम तथाकोईपरिचारक उससमय नहीं रहता किन्तुमार्गवनवाखेतमें प्रायःपाषाणकीनांई गर्भसेबालक गिरपड़ताहै फिरवह स्त्रीउसकोपोंछपांछके वस्त्रमें बांधके पीठमें बांधलेतीहै फिरकभी उसस्त्रीको घासवालकड़ीबेचनेको शीघ्रता

होतीहै सउससमयबालक दूधपीनेकेहेतुरोताहै सोदूधतो उसको नहींमिलता परन्तु वहस्त्रीउसबालककोथपेड़ामारतीहै फिरअधिक२ जबरोताहै तबअधिक२मारतीहै फिररोतारहताहै परन्तु दूधनहींपिलाती फिरवह जबकुछबड़ाहोताहै तबउसकोयथावत्खानेकोभी समयकेऊपर नहींरहता फिरवहमंजूरीकरताहै तोभीउसकोयथावत्इच्छाकेअनुकूलनहींमिलता औरसदाउसकोसुखकीतथाउत्तमपदार्थोंकेप्राप्तिकीइच्छाहोतीहै परन्तु प्राप्तिकनहींहोनेसेसदादुःखीरहताहै जोऐसाकहताहैकिसुखवादुःखसबकोतुल्यहैसोपुरुषविचारवान्नहींहै क्योंकिसुखवादुःखप्रत्यक्षहीअधिकवान्यूनदेखपड़तेहैं प्रश्न जबपहिले२हीसृष्टिभईथी तब उसमें पूर्वजन्मतोकिसीकानहींथा फिरसउसमय अधिक वा न्यून राजा अथवादरिद्रादिकक्योंभएथे इससे जानाजाताहै किजसपहिलेजन्ममेंभयथे इससे आजकालपहिलाहीजन्महै सोअधिकन्यूनबनजाओ परन्तु एक२जन्मकाविचारमेंआताहै बहुतजन्मनहीं उत्तर आदिसृष्टिमेंसबमनुष्यउत्पन्नभएथे नकोईराजानकोईप्रजा नमूर्खनपण्डितइत्यादिकभेदनहींथे इससे आदिसृष्टिमें दोषनहीं आया प्रश्न जैसेआदिसृष्टिमेंदुग्धपानादिकव्यवहार सुखऔरदुःखआदिक प्रवृत्तिवानिवृत्तिभईथी वैसेआजकालभीहोतीहै फिर वहजोआपनेकहाकि अनुभवादिकोंसेविनाप्रवृत्तिवानिवृत्ति नहीं होती सोबात विरुद्धहोगई उत्तर विरुद्धनहींहोती क्योंकिआदिसृष्टिमेंगर्भवाससेउत्पत्तिनहींभईथी औरकिसीकोबाल्यावस्थाभी नथी किन्तु सबस्त्रीऔरपुरुषोंकीयुवावस्थाहोईश्वरनेरचीथी फिर वेउससमयअच्छा वा बुराकुछनहींजानतेथे जहांजिसकानेत्रथा अथवाबुद्ध्यादिक जिसबाह्यपदार्थमेंयुक्तभए उसकोटक२ देखतेथे परन्तु यहअच्छीवाबुरी ऐसानहीं जानतेथे परन्तु प्राण,शरीरअथवा इन्द्रियइनमें चेष्टागुणथा ऐसानहींजानतेथेकि ऐसीचेष्टा करनीवानकरनी फिरचेष्टाहोनेलगी बाह्यपदार्थों केसाथ सु-

शादिकव्यवहारहोनेलगे उनमेंसेकिसीनेकुछपत्तावाफलवाघास
स्पर्शकिया वाजीभकेऊपररक्खा तथादांतोंसे चबानेलगे उसमें
सेकुछभीतरचलागया कुछबाहरगिरपड़ा उसकोदेखकेदूसराभी
ऐसाकरनेलगा फिरकर्ते२व्यवहारबढ़ताचला तथासंस्कारभीहो
तेचले होते२मैथुनादिकव्यवहारभीहोनेलगे सोपांचवर्षतकउस
समयकिसीकोपापवापुण्यनहींलगताथा वैसेहीआजकालभी पांच
वर्षतकबालकोंकोपापपुण्यनहींलगता फिरव्यवहारकर्ते२अच्छा
बुराभीकुछ२जाननेलगे फिरपरस्परउपदेशभीकरनेलगे कियह
अच्छाहैयहबुराहै औरपरमेश्वरनेभीउक्तपुरुषोंकेद्वारावेदविद्या
काप्रकाशकिया वेदद्वारामनुष्योंको उपदेशभीकरनेलगे उनके
उपदेशको किसीनेसुना औरकिसीनेनसुना सुनकेभीकिसीनेवि-
चारा औरकिसीनेनविचारा परन्तु बहुतमनुष्य कुछ२अच्छाबुरा
जाननेलगे फिरआगे२मैथुनिसृष्टिहोनेलगी फिरउनबालकोंको
भीउपदेशऔरसंस्कारहोनेलगे सोआजतकअनेकप्रकारकेपापपु-
ण्योंसेव्यवहारभिन्न२होतेआएहैं सोहमलोगप्रत्यक्षदेखतेहैं इ-
ससे आगेकेसंस्कारोंकाअनुमानकरलेतेहैं औरपीछेजोसंस्कारों
सेव्यवहारहोंगे उनकाभी अनुमान हमलोगकरतेहैं इसमध्यस्थ
व्यवहारकोप्रत्यक्षदेखनेसे प्रश्न परमेश्वरमें विषमतादोषतोआता
है क्योंकिआदिसृष्टिमें बहुतजीवोंकोमनुष्यशरीरदिए बहुतोंको
पश्वादिककेशरीरदिए सोमनुष्योंकाशरीरतोउत्तमहै औरपश्वा-
दिकोंकानीच औरआदिसृष्टिमें मनुष्योंनेएककर्म क्योंनहींकिया
भिन्न२कर्मकरनेसेभी यहजानाजाताहै किजैसेप्रथम शरीरोंकेदे-
ने औरकर्मोंकेकरनेमें विषमताभईथी वैसेआजकालभीहोतीहैं
इससे ईश्वरपक्षपातोनहींहोता औरईश्वरकेऊपरकोईनहींहै इ-
ससे जैसीउसकोइच्छावैसाकरताहै औरजोवहकरताहै सोअच्छा
होकरताहै परन्तु हमारीबुद्धिछोटीहै इससे समझनेमेंनहींआता
उत्तर अपने२स्थानमें सबशरीरअच्छेहैं कोईपदार्थपरमेश्वरनेबु-

रानहींरचा परन्तुउनकेपरस्परमिलनेसेकहींगुणहोजाताहै क-
हींदोषहोताहै सोजिससमयआदिसृष्टिभईथो उससमयमनुष्यों
औरपश्वादिकोंमें कुछविशेष नहीथा विशेषतो पोछेसेभयाहै सो
जितनेशरोररचेहैं वेसबजीवोंकेकर्म भोगकरनेकेहेतुरचेहैं सोई-
श्वरनरचतातो वेशरीर कैसेहोते इससे प्रथमहो ईश्वरने सबव्य-
वस्थाकररक्खीहै किजैसाजोकर्मकरै सोवैसाहीजन्मसुखव दुःख
कोप्राप्तहो।वैसेऔरएक२बारबिनासंस्कारोंसेभीमनुष्यकाशरीरमि-
लेगाक्योंकिसबशरीरोंसेमनुष्यकाशरीरउत्तमहैऔरमनुष्यहीके
शरीरमेंपापऔरपुण्यलगताहै अन्यशरीरमेंनहीं औरजोयहम-
नुष्यकाशरीरहैसबजीवोंकेलिएहै क्योंकिसबकोप्राप्तहोताहैवैसेही
सबकीटपतंगादिकोंकेशरीरभीहैंजबमनुष्यशरीरमेंजीवअधिकपा-
पकरताहै औरपुण्यथोड़ातबनरकादिकलोकऔरपश्वादिकोंकेश-
रीरोंकोप्राप्तहोताहै जबउसकापापऔरपुण्यतुल्यहोतेहैं तबमनु-
ष्यका शरीरप्राप्तहोताहै औरजबपुण्य अधिककरताहै औरपाप
थोड़ा तबदेवलोकऔरदेवादिकोंकाशरीर उसजीवकोमिलताहै
उसमेंजितनाअधिकपुण्यउसकाफलजोसुख उसकोभोगकेजबपाप
पुण्यतुल्यरहजातेहैं तबफिरमनुष्यका शरीरधारणकरताहै इन
कर्मोंमेंतोनभेदहैं एकमनसे दूसरावाणीसे औरतीसराशरीर
सेकर्मकरताहै इनतीनोंमेंसेएक२केतीनभेदहैं सत्वरजऔरतमो-
गुणकेभेदसे सोजबमनसेसत्त्वगुणकिशान्त्यादिकगुणोंसेयुक्तहोके
उत्तमकर्मकरताहै तबदेवमनुष्यऔरपश्वादिकोंमेंबहुजीवरहता
है परन्तु मनमेंप्रसन्नताहोउसकोरहतीहै औररजोगुणसेयुक्तहो
केमनसेजबपुण्यवापापकरताहै तबदेवमनुष्यपश्वादिकोंमेंमध्यम-
होवहहोताहै उत्तमनहीं किन्तुउत्तमतो सत्वगुणवालाहोताहै
क्योंकिरजोगुणकेकार्यलोभद्वेषादिकहोतेहैं तमोगुणप्रधानजिस
पुरुषकोहोताहै उसकोमोह,आलस्य,प्रमाद,क्रोधऔरविषादा-
दिकदोषहोतेहैं बहुप्रायःपापवापुण्यअधमहीकरेगा इससे देवम-

नुष्यश्रौरपश्वादिकोंमें नीचशरीरमेंप्राप्तहोगा श्रौरजोवचनसेपापकरेगा तामृगादिकयोनिकोप्राप्तहोजायगा फिरसदावहशब्दोंकेचार्मितहोरहेगा क्योंकिजोजिस्से पापकरताहै वहउसीसेभोग करताहै जबशरीरसेजीवपापकरतेहैं वेवृक्षादिकस्थावरशरीरको प्राप्तहोतेहैं इसमेंमनुभगवानके श्लोक लिखतेहैं सोजाननेना॥ मानसंमनसैवायमुपभुंक्ते शुभाशुभम्। वाचावाचाकृतंकर्म कायेनैवचकायिकम्॥१॥ म॰ यहजीवमनवाणीश्रौरशरीरसेशुभनाम पुण्यऋशुभनामपापकरताहै सोजिस्से करताहै उसीसेभोगभी करताहै॥१॥ शरीरजैःकर्मदोषैर्याति स्थावरतान्नरः। वाचिकैःपक्षिमृगतांमानसैरन्त्यजातिताम्॥२॥ म॰ जबशरीरसेपापकरताहै तबवृक्षादिकस्थावरशरीरकोप्राप्तहोताहै वचनसेकिए पापोंसेपक्षिश्रौरमृगादिक योनिकोप्राप्तहोताहै श्रौरमनसेकिए पापोंसेनीचचाण्डालादिकयोनिकोप्राप्तहोताहै॥२॥ योयदैषां गुणोदेहे साकल्येनातिरिच्यते। सतदातद्गुणप्रायं तंकरोतिशरीरिणम॥३॥ म॰ जोगुणजिसकेशरीरमेंप्रधानहोताहै उस्से युक्तहोकेजीवउसगुणकेयोग्यकर्मकोकरताहै श्रौरगुणभीउसकोकराताहै॥३॥ सत्त्वंज्ञानंतमोज्ञानं रागद्वेषौरजःस्मृतम्। एतद्व्याप्तिमदेतेषां सर्वभूताश्रितंवपुः॥४॥ म॰ सत्वगुण का कार्य ज्ञानहै तमोगुणका कार्यश्रज्ञान श्रौररजोगुणकाकार्य रागश्रौर द्वेषहै एतीनगुणश्रौरइनकेतीनकार्यसबभूतोंमेंव्याप्तहैं क्योंकिइसीकानाम प्रकृतिश्रौरकारण शरीरहै॥४॥ तत्रयत्प्रीतिसंयुक्तं किंचिदात्मनिलक्षयेत्। प्रशान्तमिवशुद्धाभं सत्त्वंतदुपधारयेत्॥५॥ म॰ जिसपुरुषकाचित्तजबप्रसन्नतायुक्तरहै तथाप्रशान्तकीनांईश्रौरशुद्धकीनांई तबउसकोसत्वगुण श्रौरसत्वप्रधानपुरुषकोजानना॥५॥ यत्तुदुःखसमायुक्तम प्रीतिकरमात्मनः। तद्रजोप्रतिपंविद्यात्सततंहारिदेहिनाम्॥६॥ म॰ जिसका चित्तदुःख युक्तरहै हृदयमेंप्रसन्नताभीनहोवैसदाचित्तचंचलहोय विषयोंकेश्रोर

दौड़नेलगे और वशीभूत न होवे वह रजोगुणप्रधान पुरुष होता है ६ ॥ यत्तुस्यान्मोहसंयुक्त मव्यक्तं विषयात्मकम्। अप्रतर्क्य मविज्ञेयं तमस्तदुपधारयेत् ॥ ७ ॥ भ० जो चित्त मोह संयुक्त रहै हृदय में कुछ विचार भी सत्यासत्य का न होय विषय की सेवा में फसा रहै ऊहापोह जिसमें न होय और जैसा अन्धकार में पदार्थ वैसा कुछ जानने में भी न आवै उस जीव को तमोगुण प्रधान और तमोगुण जानना ॥ ७ ॥ त्रयाणामपि चैतेषां गुणानां यः फलोदयः। अग्र्यो मध्यो जघन्यश्च तं प्रवक्ष्याम्यशेषतः ॥ ८ ॥ भ० इन तीन गुणों का उत्तम मध्यम और नीच जो फलोदय उस के आगे कहते हैं यथावत् ॥ ८ ॥ वेदाभ्यासस्तपोज्ञानं शौचमिन्द्रियनिग्रहः धर्मक्रियात्मचिन्ता च सात्विकं गुणलक्षणम् ॥ ९ ॥ भ० वेदाभ्यास, तप नाम योगाभ्यास, ज्ञान, सत्यासत्य विचार, जितेन्द्रियता, धर्म का अनुष्ठान, आत्मा का विचार तथा परमेश्वर का भी जिसमें गुण होवैं उत्तम सात्विक पुरुष और सत्व गुण का लक्षण है ॥ ९ ॥ आरम्भरुचिताधैर्य्य मसत्कार्य्यपरिग्रहः। विषयोपसेवा चाजस्रं राजसं गुणलक्षणम् ॥ १० ॥ भ० कार्यों के आरम्भ में अत्यन्त रुचि अधैर्य असत्कार्यों का स्वीकार और निरन्तर विषय सेवा में फसा रहै यह रजोगुण अधिक पुरुष वाले का लक्षण है १० ॥ लोभः स्वप्नोऽधृतिः क्रौर्य्यन्नास्तिक्यं भिन्नवृत्तिता। याचिष्णुता प्रमादश्च तामसं गुणलक्षणम् ॥ ११ ॥ भ० अत्यन्त लोभ अत्यन्त निद्रा धैर्य का लेश नहीं क्रूरता नाम दयारहित नास्तिक्य नाम विद्या धर्म और ईश्वर को नहीं मानना भिन्नवृत्तिता नाम छिन्न भिन्न जिसकी बुद्धि नित्य दान दक्षिणा और भिक्षाग्रहण में प्रीति और प्रमाद नाम नाना प्रकार का उपद्रव करना यह तमोगुण और तमोगुण पुरुष वाले का लक्षण है और संक्षेप से आगे तीनों गुणों के लक्षण कहे जाते हैं ॥ ११ ॥ यत्कर्म कृत्वा कुर्वंश्च करिष्यंश्चैव लज्जति। तज्ज्ञेयं विदुषा सर्वं तामसं गुणलक्षणम् ॥ १२ ॥ भ० जिस कर्म को करके करता भया और करने की इच्छा में लज्जा और भय होता है वह पुरुष और कर्म तमोगु-

गोहैं क्योंकिपापहीमेंरहेगा ॥ १२ ॥ येनास्मिन्कर्मणालोके ख्या-
तिमिच्छसिपुष्कलाम् । नचशोचत्यसंपत्तौ तद्विज्ञेयन्तुराजसम् ॥
१३ ॥ म० लोकमेंकीर्तिकेहेतुइच्छासेभाटआदिकपुरुषोंकोपदार्थ
देना औरऐसाकाममैंकरूंजिससे किमेरेइसलोकमेंप्रशंसाहोय
सोमिथ्याप्रशंसाकाचाहना अन्यायसेऔरउससेधनतथापदार्थके
नाशहोनेमेंकुछसोचविचारनकरनायहरजोगुणीपुरुषहै यहघोर
दुःखमेंसदापड़ारहताहै॥१३॥ यत्सर्वेणेच्छतिज्ञातुं यन्नलज्जति-
चाचरन् । येनतुष्यतिचात्मास्य तत्सत्वगुणलक्षणम् ॥१४॥ म० जो
पुरुषसबप्रकारोंसेऔरउत्तमपुरुषोंसेजाननेकोचाहताहै तथाधर्म
केआचरणमेंकोईहानिवानिन्दाहोय तोभीजिसकोंलज्जावाभयन
होय औरजिसकर्ममेंअपनाआत्माप्रसन्नहोय अर्थातधर्माचरणसे
उसकोकभीनछोड़ै यहसात्विकपुरुषकालक्षणहै ॥ १४ ॥ तमसो-
लक्षणंकामो रजसस्त्वर्थउच्यते । सत्त्वस्यलक्षणंधर्मः श्रैष्ठ्यमेषां-
यथोत्तरम्॥१५॥ म० जोकाममेंफसारहताहै वहतमोगुणीपुरु-
षहै तथाधनादिकअर्थहीकोपरमपदार्थमानताहै वहरजोगुणीहै
औरजोधार्मिकअर्थात्धर्महीमें जिसकोनिष्ठाहै वहसत्वगुणीपु-
रुषहै तमोगुणीसेरजोगुणीरजोगुणीसेसत्वगुणवालापुरुषश्रेष्ठहै॥
१५ ॥ इनमेंसेसत्वगुणवालाधार्मिकहोकेपुण्यहीकरेगा रजोगुण-
वालापापपुण्यदोनोंकरेगा तथातमोगुणवाला पापहीकरेगा इ-
नको जैसे२ जन्म और सुख वा दुःख होते हैं सो लिखा जाता
है ॥ देवत्वंसात्विकायान्ति मनुष्यत्वंचराजसाः । तिर्यक्त्वंताम-
सानित्य मित्येषात्रिविधागतिः ॥ १६ ॥ म० जोसात्विकपुरुषहो-
तेहैं वेदेवभावकोप्राप्तहोतेहैं अर्थातविद्वानधार्मिकऔरबुद्धिमा-
नहोतेहैं तथाउत्तमपदार्थ और उत्तम लोकोंकोभीप्राप्तहोतेहैं
तथाजोरजोगुणीहोतेहैं वेमध्यमलोकमनुष्य व तथाबुद्ध्यादिकप-
दार्थोंको प्राप्तहोकेमध्यमरहतेहैं उत्तमनहीं औरजोतमोगुणी
होतेहैं वेनीचतापश्वादिकशरीर तथाबुद्ध्यादिकमेंभीनीचभाव र-

हता है इन तीनों के तीन गुणों से उत्तम मध्यम और नीचता से एक २ गुण के तीन २ भेद होते हैं और वैसे ही उनको फल मिलते हैं सो आगे २ लिखा जाता है ॥ १६ ॥ स्थावराः कृमिकीटाश्च मत्स्याः सर्पाश्च कच्छपाः । पशवश्च मृगाश्चैव जघन्या तामसी गतिः ॥१७॥ भ० स्थावर, वृक्षादिक, कृमि, कीट, मत्स्य, तथा कच्छपादिक, जलजन्तु, गाय आदिक पशु तथा मृगादिक वन के पशु जिसको अत्यन्त तमोगुण होता है वह ऐसे शरीरों को प्राप्त होता है ॥ १७ ॥ हस्तिनश्च तुरंगाश्च शूद्राम्लेच्छाश्च गर्हिताः । सिंहा व्याघ्रा वराहाश्च मध्यमा तामसी गतिः ॥ १८ ॥ भ० हाथी घोड़े शूद्र जो मूर्ख म्लेच्छ नाम कसाई आदिक गर्हित नाम जो निन्दित कर्म करनेवाले सिंह उनसे कुछ जो नीच होते हैं व्याघ्र वराह नाम सूवर जो पुरुष मध्य तमोगुणवाला होता है वह ऐसे जन्मों को पाता है ॥ १८ ॥ चारणाश्च सुपर्णाश्च पुरुषाश्चैव दांभिकाः । रक्षांसि च पिशाचाश्च तामसीषूत्तमा गतिः ॥ १९ ॥ भ० चारण नाम दूत दूतो और गानेवाले जो कि वेश्याओं के पास गण रहते हैं सुपर्ण जो हंसादिक अच्छे उत्तम पक्षी दांभिक पुरुष अर्थात् सम्प्रदायवाले मिथ्या उपदेश करनेवाले तथा अहंकार अभिमानादिक गुणयुक्त राक्षस नाम छल, कपट करनेवाले पिशाच नाम सदा मलिन रहैं ऐसे जन्मों को प्राप्त होते हैं जिन में कि थोड़ा तमोगुण रहता है ॥ १९ ॥ झल्ला मल्ला नटाश्चैव पुरुषाः शस्त्रवृत्तयः । द्यूतपानप्रसक्ताश्च जघन्या राजसी गतिः ॥ २० ॥ भ० झल्ला नाम तड़ाग कूप आदिक खोदनेवाले मल्ला नाम मल्लाह और कुश्ती करनेवाले शस्त्रवृत्ति पुरुष जो कि शस्त्रों को बनाने और सुधारने वाले जुआरी लोग और भांग, गांजा, अफीम तथा मद्य पीने में जो फसे रहते हैं जिनको अत्यन्त रजोगुण है वे इस प्रकार के होते हैं ॥ २० ॥ राजानः क्षत्रियाश्चैव राज्ञां चैव पुरोहिताः । वादयुद्धप्रधानाश्च मध्यमा राजसी गतिः ॥ २१ ॥ भ० जिन पुरुषों में मध्य रजोगुण होता है वे राजा होते हैं तथा क्षत्रिय होते हैं अर्थात् शूर वीरादिक गुणवाले होते हैं राजाओं के पु-

रोहितवादमें प्रधानजोकिनानाप्रकारवादविवादकरतेहैं वकील
आदिकयुद्धमेंप्रधानजोकिसिपाहीहोतेहैंयहरजोगुणियोंकीमध्य-
मगतिहै २१। गन्धर्वागुह्यकायक्षाविबुधानुचराश्चये।तथैवाप्सरसः-
सर्वाराजसीषूत्तमागतिः। २२॥म०गन्धर्वजोकिगानविद्यामेंकुशल
गुह्यकजोकिसिल्प औरवादित्रोंकोबजानेमेंचतुर यक्षनामबड़े ध-
नाढ्यतथाविबुधनामउक्तदेवोंकेगण अर्थातसेवकऔर अप्सराअ-
र्थात्रूपादिकगुण औरचतुरस्त्रीजिनमेंबहुतथोड़ा रजोगुणहोता
है उनकोऐसेजन्ममिलतेहैं ॥ २२ ॥ तापसायतयोविप्रा येचवै-
मानिकागणाः । नक्षत्राणिचदैत्याश्च प्रथमासात्विकीगतिः २३॥
म० तापसनामकपटछलादिकदोषोंकेबिना कृच्छ्चांद्रायणादिक
ब्रतऔरयोगाभ्यासकरनेवाले यतिनाम यत्नऔरविचारकरनेमें
प्रवीण विप्रनामवेदकापाठअर्थऔरतदुक्तकर्मोंकेजानने औरक-
रनेवाले वैमानिकगणजोकिआकाशमेंयानोंकोचलानेवालेऔर
रचनेवाले नक्षत्रजोकि गणितबिद्या जाननेवाले औरनक्षत्रलो-
कतथानक्षत्रलोकमेंरहनेवाले औरदैत्यजोकिविद्याशान्ति और
शूरबीरादिकगुणयुक्तजोथोड़े सात्विकगुणयुक्तहोवें उनमेंऐसेगुण
होतेहैं ॥२३॥ यज्वानऋषयोदेवा वेदाज्योतींषिवित्सराः। पितर-
श्चैवसाध्याश्च द्वितीयासात्विकीगतिः ॥ २४ म० यज्ञकरनेमेंजि-
नकोअत्यन्तप्रीति ऋषिनाम यथार्थमन्त्रोंके अभिप्रायजाननेवाले
देवनाममहादेव औरइन्द्रादिकदिव्यगुणवाले चारोंबेदज्योतिष
शास्त्रऔरचन्द्रादिकज्योति लोकवत्सरकालऔरसूर्य्य लोक पितर
जोपिताकीनांई सबमनुष्योंकेहितकरनेवाले औरपितृलोकमेंर-
हनेवाले साध्यजोअभिमानहठादिकदोषरहितहोके धर्मऔरवि-
द्यादिकगुणोंकोसिद्धकरनेवाले तथानारायणऔरबिष्णु आदिक
देवजोवैकुण्ठादिकमेंरहतेथे जोमध्य सत्वगुणसे ऐसे कर्मकरतेहैं
उनकोऐसोगतिहोतीहै ॥ २४ ॥ ब्रह्माविश्वसृजोधर्मो महानव्य-
क्तमेवच । उत्तमांसात्विकीमेतां गतिमाहुर्मनिषिणः ॥ २५ ॥

भ० ब्रह्माब्रह्मज्ञानपर्यन्तविद्याकाजाननेवाला अथवाब्रह्मलोकका
अधिष्ठाताऔरउसलोककोप्राप्तहोनेवाले प्रजापतिऔरविश्वसृज
जोकिधर्मऔरविद्यासबकेपालनकरनेवाले वासिद्धजोकिपरमा-
णुकेसंयोगवावियोगकरनेवाले औरउसविद्यावाले अथवाप्रजाप-
तिलोकके अधिष्ठाता वाउनकोप्राप्तहोनेवाले धर्ममहान्बुद्धि अ-
व्यक्तनामप्रकृति यहसत्वगुणकोउत्तमगति है यहांसेआगेकर्मऔ-
रउपासनाकाकोईफलभोगनहीहै सिवायपरमेश्वरके॥२५॥इन्द्रि-
याणांप्रसंगेन धर्मस्यासेवनेनच । पापान्संयान्तिसंसारानविद्वांसो
नराधमाः॥२६॥भ०इन्द्रियोंकाप्रसंगअर्थातअत्यन्तविषयसेवामेंफ-
सनेऔरधर्मकेत्यागसे जोजीवअधमऔरविद्याहीनहैंअत्यन्तदुःखों
कोपातेहैं दुष्टशरीरोंकोप्राप्तहोतेभये इनप्रकारोंसेदुष्टवाश्रेष्ठ
कर्मोंकेकरनेमेंसुखवादुःखजीवोंकोहोतेहैं यहीईश्वरकीआज्ञाहै
किजोजैसाकर्मकरैवहवैसाभोगैइससे ईश्वरमें कुछपक्षपातदोषन-
हींआताक्योंकिजैसाजोकर्मकरताहैउसकोवैसाहीफलमिलताहै
औरईश्वरन्यायकारीहैसोसदान्यायहीकरताहै अन्यायकभीनहीं
इससे जैसाचाहै ऐसाकरनानहींआता ईश्वरमें क्योंकिवहसत्यसं
कल्पहै औरनिर्भ्रमउसकाज्ञानहै इससे जैसीव्यवस्थान्यायसेकरनी
उचितथी वैसेहीकियाहै अन्यथानहीं एदोषसबजीवोंमेंहैं कि
हिलेकुछऔरव्यवस्थाकरैं पीछेऔरक्योंकिजीवोंमेंभ्रमादिकदो
षहोतेहैं औरकोईव्यवहारमें निर्भ्रमभीहोतेहैं सर्वत्रनहीं औ
सर्वत्रनिर्भ्रमतबजीवहोताहै किजबपरब्रह्मकासाक्षातविज्ञानहो
ताहै औरउसीका:निश्चयोग अन्यथानहीं सर्वत्रनिर्भ्रमतोसना
तनएकईश्वरहीहै इससे क्याआयाकि एकजीव अनेकजन्म धार
करताहै यहसिद्धभया प्रश्न ईश्वरएकजीवकोअनेकजन्मकीव्यव
क्योंकरताहै क्योंकिईश्वर सर्वशक्तिमान्है नित्यनए२ जीवो
उत्पन्नक्यानहीकरसक्ता उत्तर ईश्वरअवश्यसर्वशक्तिमान्है प
अन्यायकभी नहींकरता जोजीवदूसराशरीर धारणनहीक

तोएकजन्ममेंकिएपापवापुण्यइनकाभोगनहींहोसकेगाफिरउस-
कान्यायभीनहींहोगा किपापकरनेवालेकोदुःखऔरपुण्यकरनेवा-
लेकोसुखहोनाचाहिए सोबिनाशरीरसेभोगहीनहींहोसक्ता इससे
अनेकजन्मअवश्यमाननाचाहिएप्रश्नपापवापुण्यकाभोगबिनाशरी-
रसेभीहोसक्ताहैपश्चात्तापकरनेसेसो जोजोमनसेजितनेपापकिएहोंगे
उनकाभोगमनसेशोककरकेभोगकरलेगा उत्तर ऐसानकहनाचा-
हिएक्योंकिपश्चात्तापजोहोताहै सोभविष्यत्याओंकानिवर्तकहोता
हैकिएभएपापोंकानहीं जैसेकोईपुरुष नित्यकूपकोदौड़२के डांक
जाय फिरकभीकूपकेपारकेकिनारेपरनहींपहुंचे किन्तुकूपमेंगिर
जायउसमेंउसकाहाथवागोडटूटजाय फिरउसकोकोईबाहरनि-
काललेफिरवहबहुतशोचकरै किमैंऐसाकामनकरतातोमेरीयह
बुरीदशाक्योंहोती सोमैंबड़ामूर्खहूं इससे क्याआताहैकिआगेको
वहऐसाकर्मनकरेगा परन्तुजोकरचुकाउसकीनिवृत्ति कभीनहीं
होगी सोपश्चात्तापजोहोताहै सोकृतपापका निवर्त्तकनहींहोता
औरजैसेकोईमनुष्य आंखसेअन्धाऔरकानसेबहिराहोय उसके
पाससर्पवाव्याघ्रआजाय अथवाकोईगालीदे वाउसकीनिन्दाकरै
तोभीउसकोकुछदुःखनहींहोता ऐसेहीबिनाशरीरधारणसेजीव
सुखवादुःखनहींभोगसक्ता क्योंकिजबमूर्त्तमानपदार्थहोताहै तब
वहशीतउष्णादिक व्यवहारोंकोभोगकरसक्ताहै अन्यथानहीं इ-
ससेक्याआयाकिपश्चात्तापसे कृतपापोंकीनिवृत्तिनहींहोसक्ती प्रश्न
जीवजिनकर्मोंसेसुखहोवै वैसाकर्मक्योंनहींकरता उत्तर बिना-
विद्यादिकगुणोंसेकुछनहींयथावत्ज्ञानसक्ता विद्यादिकगुणबिना
परीश्रमसेनहींहोते एकव्यवहारऐसाहै किजिसमेंप्रथमसुखहो-
य औरपीछेदुःखसोविषयोंमेंफसकेजीवदुःखितहोताहैक्योंकिअ-
त्यन्तविषयसेवासेबलबुद्धि औरधनादिकनष्टहोतेहैं औरज्वरादि-
कअनेकरोगोंसेयुक्तहोकेफिरदुःखहीपाताहै दूसराऐसाव्यवहार
है किप्रथमतोदुःखहोय औरपीछेसुखसोव्यवहारयहहै किजिते-

न्द्रियता, ब्रह्मचर्याश्रम, विद्याकीप्राप्ति, सत्पुरुषोंकासंग, औरधर्म
काअनुष्ठान, इत्यादिकजानलेना इनकीप्राप्तिकेसाधनोंमें प्रथम
दुःखहोताहैऔरजबप्राप्तहोजातेहैं तबअत्यन्तउसकोसुखहोता
है तीसराव्यवहार ऐसाहोताहै किजिसमें सदादुःखहीरहै सो
मोहहै जोधन पुत्रऔरस्त्रीआदिकअनित्यपदार्थोंमेंफसके विद्या-
दिकश्रेष्ठगुणोंका त्यागकरताहै वहसदादुःखी रहताहै चौथायह
व्यवहारहै किजिसमेंसदासुखहीरहताहै दुःखकभीनहीं सोमुक्ति
है विद्यादिकगुणोंकेनहोहोनेसे सुखकेकर्मोंको जानताहीनहीं
फिरकैसे करसकेगा कभीनकरसकेगा औरईश्वरका करनासब
अच्छाहीहै क्योंकिईश्वरन्यायकारीत्वादिगुणयुक्तरहताहै यहह-
मकोदृढनिश्चयहै किईश्वरअन्यायकभीनहीकरता इतनाहमलो-
गबुद्धिसेयथावत्जानतेहैं ईश्वरजैसाचाहै वैसानहींकरता जोक-
रताहैसोन्याययुक्तहीकरताहै अन्यथानहीं सोइससे यहसिद्धभया
किअनेकजन्महोतेहैं सोजीवअविद्यादिकदोषोंसे युक्तहोकेविषयमें
फसारहताहै इससे जीवको विवेकादिकगुणनहीहोनेसे बन्धनभी
इसकानष्टनहीहोता जबयथावत्परमेश्वरपर्यन्त पदार्थविद्याहो-
तीहै तबयहसबदुःखोंसेछूटकेमुक्तिकोप्राप्तहोताहै प्रश्न प्रथमआप
कहचुकेहैं किविनाशरीरसेसुखवादुःखभोगनहीहोसक्ता सोमुक्ति
मेंभीजीवकाशरीररहताहोगा औरजोकहेंकिनहीरहतातोमुक्ति
काभोगकैसेकरसकेगा औरजोकरसक्ताहै तोहमनेकहाथाकिमन
में पश्चात्तापसेपापकाफलभोगलेताहै यहबातमेरी सत्यहोयगी
उत्तर जीवहीमुक्तिमेंरहताहै औरशरीरनहीं क्योंकि हिलेनो
लिंगशरीरकहाथा वहीजीवकेसाथ रहताहै सोअत्यन्त सूक्ष्महै
औरसबपदार्थोंमेंउत्तमऔरनिर्मलहै जैसेअग्निसेलोहातप्तहो-
ताहै उसमेंअग्निसेभीअधिकदाहहोताहै वैसेहीएकअद्वितीय चे-
तनपरमेश्वरसर्वव्यापकहै उसकीसत्तासेयुक्तजीवचेतनसदारह-
ताहै क्योंकिव्यापकसेव्याप्यकावियोगकभीनहींहोता जैसेआकाश

में सबस्थूलपदार्थोंकावियोगकभीनहीं मनुष्यऔरवायुआदिक जहां२चलतेफिरतेहैं वहां२आकाशकासंयोगपूर्णहीहै वैसेआकाशादिकपदार्थभी परमेश्वरमेंव्याप्यहैं औरपरमेश्वरसबमेंव्यापकहै परमाणुऔरप्रकृति जोकिसूक्ष्मपदार्थोंकीअवधिहै इनसे सूक्ष्मआगेसंसारकेपदार्थकोईनहींहैं परन्तुपरमेश्वरउनसेभीअत्यन्तसूक्ष्म औरअनन्तहै जैसेआकाशकिसीपदार्थके साथचलता फिरता नहीं वैसे परमेश्वरभी पूर्णकेहोनेसेजीवोंकेसाथचलता फिरतानहीं किन्तुजीवसबअपने२कर्मानुसारचलतेफिरतेहैं परमेश्वरकीसत्तासेधारितचेतनहैं ॥ दुःखजन्मप्रवृत्तिदोषमिथ्याज्ञानानामुत्तरोत्तरापायेतदनन्तरापायादपवर्गः । यहगौतममुनिकासूत्रहै मिथ्याज्ञानजोकिमोहसे अनेकप्रकारकाहोताहै यथावत्विद्याकेहोनेसेजबनष्टहोजाताहै तब । अविद्यास्मितारागद्वेषाभिनिवेशाःपञ्चक्लेशाः ॥ यहपतञ्जलिमुनिकासूत्रहै इसका यहअभिप्रायहै किअविद्यातोपहिलेप्रतिपादनकरदियाहै सोई सबदोषोंकामूलहै द्रष्टाजोजीवदर्शनजोबुद्धिइनदोनोंकोएकस्वरूपताहोनीकिमैंबुद्धिहूं ऐसाअभिमानकाहोना सोअस्मितादोष कहाताहै । सुखानुशयीरागः ॥ ३ ॥ प० जिससुखकापहिलेअनुभवसाक्षात्कियाहोय उसमेंअत्यन्ततृष्णानामलोभ कियहमुझकोअवश्यमिलनाचाहिए यहदूसरादोषहै क्योंकिअनित्यपदार्थोंमेंअत्यन्तप्रीतिकेहोनेसे नित्यपदार्थमेंजीवकीइच्छाकभीनहीं होती दुःखानुशयीद्वेषः ॥ ४ ॥ प० जिसदुःखकापहिलेअनुभव कियाहोय उसकीस्मृतिकेहोनेसे उसकेहननकीइच्छा औरउससे जोक्रोधवहद्वेषकहाताहै यहतीसरादोषहै । स्वरसवाहीविदुषोपितथारूढोऽभिनिवेशः ॥ ५ ॥ प० सबप्राणियोंकोयहआशानित्य बनीरहतीहै किमैंसदारहूं औरमेरेयेपदार्थसदाबनेरहैं नाश कभीनहोवै सोकृमिसेलेकेसबप्राणियोंको औरविद्वानोंकोभी यह आशानित्यबनीरहतीहै यहचौथाअभिनिवेशदोषकहताहै और

अविद्यातोप्रथमदोषहै एपांचदोषऔरइनसेउत्पन्नभए असंख्यात
दोष जीवोंमेंरहतेहैं इससेजीवोंकोमुक्तिभीनहीहोसक्ती परन्तु बि-
वेकादिगुणोंसेजबमिथ्याज्ञाननष्टहोजाताहै तबअविद्यादिकदोष
भीनष्टहोजातेहैं। प्रवृत्तिर्वाग्बुद्धिशरीरारम्भइति ॥ ६ ॥ गोत्तम० व-
चनबुद्धिऔरशरीरइन्होंसेजोवआरम्भकरताहैसोप्रवृत्तिकहातीहै
परन्तु जिसकेअविद्यादिकदोषनष्टहोजातेहैं वहउनमेंप्रवृत्तनहीं
होता किन्तुविद्यादिकगुणोंमेंप्रवृत्तहोताहै इससेउसकोमिथ्याप्र-
वृत्तिकिपरमेश्वरसेभिन्नपदार्थकीजोइच्छासोनष्टहोजातीहै फिर
वहयोगाभ्यासविचार औरपुरुषार्थसेयुक्तअत्यन्तहोताहै उससे अ
नेकपरमाणुपर्यन्तसूक्ष्मपदार्थोंकाज्ञानयथावत्साक्षात्का-
रहोताहै फिरअत्यन्तजबविचारऔरयोगाभ्यासकरताहै तबपर-
मानन्दसर्वव्यापकसर्वाधार जोपरमेश्वरउसकोअपनेहोमें व्याप्त
देखताहै फिरउसकोस्थूलशरीर धारणकरनेका आवश्यकनहीं
किन्तुएकपरमाणुकोभी शरीरबनाकेरहसक्ताहै तबइसका जन्म
मरणादिककारण जोअविद्यादिकदोषउनसेकिएगएथ जोकर्मके
भोगसबनष्टहोजातेहैं औरआगजोकर्मकिएजातेहैं एसबज्ञानहो
केवास्ते करता है सोअधर्म कभीनहीं करता किन्तुधर्महीकर-
ताहै उससे ज्ञानफलहोरहचाहताहै अन्यनहीं फिरउनके जन्म
मरणकाजोमूल अविद्यासोज्ञान सेनष्टहोजातीहै फिरवह जन्म
धारणनहींकरता औरउसकोबुद्धि, मन, चित्त, अहङ्कार, प्राण,
औरइन्द्रियएसबदिव्यशुद्धपदार्थजीवकसामर्थ्यरूपरहजातेहैं औ-
रदिव्यज्ञानादिकगुण नित्यउसमेंरहतेहैं औरआपदिव्यशुद्धनि-
र्विकाररहजाताहै। बाधनालक्षणंदुःखम् ॥ ७ ॥ गोत्तम० जि-
तनीबाधना अर्थातइच्छाभिघात वहसबदुःख कहाताहै ॥ ७ ॥
तदत्यन्तविमोक्षापवर्गः ॥ ८ ॥ गोत्तम० दुःखोंकीअत्यन्तजो नि-
वृत्तिउसकोमोक्षकहतेहैं किसबदुःखोंसछूटजाना औरसदाआन-
न्दपरमेश्वरको प्राप्तहोकेरहना फिरलेशमात्रभी दुःखकासम्बन्ध

कभीनहींहोता सोकेवलएकपरमेश्वरकेआधारमें वहजीवरहता है औरकिसीकासम्बन्धउसकोनहीं सोपरमेश्वरकेयोगसेउसजीव मेंसर्वज्ञत्रिकालज्ञान सबपदार्थोंकागुण औरदोषइनका सत्य २ बोधभीसदारहताहै इससेजिसदुःखसागरसंसारसे बड़े भाग्यसेछूटकेपरमानन्दपरमेश्वरकोप्राप्तभयाहै सोयथावतजानताहै किपरमेश्वरकेयोगसेअन्यत्रदुःखहीहै सुखकभीनहीं फिरवहइसदुःख मेंकभीनहींगिरता जैसेचिंवटी अत्यन्तचञ्चल होतीहै फिरवह नानाप्रकारकेकणोंकोलेले२के अपनेबिलमें संचयकरती जाती है उसकोस्थिरतावासन्तोषकभीनहींहोता वहकभीभाग्य औरपुरुषार्थसेमिश्रीके ढेलेकोप्राप्तहोय उसकास्वादलेके आनन्दितहोजातीहै फिरवहअपने घरऔरसंचयकोछोड़के उसीमेंनिवासकरतीहै उसकोखींचनेकासामर्थ्य नहीं सदाउसकोछोड़भीनहींसक्ती उत्तमपदार्थकेहोनेसेवैसेजीवभी परमेश्वरसेभिन्न पदार्थोंमें सदाभ्रमणकरताहै तृष्णाकेवसहोके परन्तु जबपरमेश्वरका उसकोयोगहोताहै तबसबतृष्णादिक दोषउसके नष्टहोजातेहैंफिरपूर्णकामऔरस्थिरहोकेपरमेश्वरहीमेंरहताहै सोमुक्तिमेंपरमेश्वरकाआधारउसकोहोनेसे सदापरमानन्दमुक्तिके सुखकोभोगताहै औरनिराधारसेविषयसुखवादुःखऔरमुक्तिकाआनन्दभो नहींभोगसक्ता इससे क्याआयाकिबिनास्थूलशरीरधारणसे पापवा पुण्यसंसारमें फलकभीनहींभोगसक्ताऔरपरमेश्वरकेआधारके बिनामुक्तिसुखभीनहींभोगसक्ता सोजोकहताहै किमनहीसेपाप वापुण्यभोगताहै वाएकहीजन्महोताहै यहबातउसकीमिथ्याजाननी प्रश्न वहमुक्तिप्राप्तजीवसदाबनारहताहै वाकभीवहभीनष्टहो जाताहै उत्तर इसकायहविचारहै किपरमेश्वरनेजबसृष्टिरचीहै किजबसंसारकाअत्यन्तप्रलयनहोगा तबभीवेमुक्तजीवआनन्दमेंरहेंगे औरजबअत्यन्त प्रलयहोगा [illegible]बकोई नरहेगा ब्रह्मका सामर्थ्य रूपऔरएकपरमेश्वरकेबिना सोअत्यन्तप्रलयतबहोगा किजब

सबजीवमुक्तहोजांयगे बीचमेंनहीं सोअत्यन्तप्रलयबहुतदूरहै संभवमात्रहोताहै किअत्यन्तप्रलयभीहोगा बीचमेंअनेकबार महाप्रलयहोगा औरउत्पत्तिभीहोगी इससे सबसज्जनोंकोअत्यन्तमुक्तिकोइच्छाकरनीचाहिए क्योंकिअन्यथाकुछसुखनहोहोगा जबतकमुक्तिजीवकोनहींहोती तबतकजन्ममरणादिकदुःखसागरमेंडूबाहीरहैगा औरजोजल्दीमुक्तिकरलेगा सोअतुलआनन्दकोपावेगा प्रश्न मुक्तिएक जन्ममेंहोतीहै वाअनेकजन्ममें उत्तर इसकानियमनहीं क्योंकिजबमुक्तहोनेकाकर्मकरताहै तभीउसकीमुक्तिहोतीहै अन्यथानहीं प्रथमसृष्टिमेंभीकोईजीव पहिलेहोजन्ममेंमुक्तहोगयाहोय इसमेंकुछआश्चर्यनहीं उसकेपीछे जोकोईमुक्तभयाहोगा वाहोताहै औरहोवैगा सोबहुत जन्महीमेंहोगा मुक्तमोक्षअत्यन्त पुरुषार्थमेंहोताहै अन्यथानहीं। भिद्यतेहृदयग्रन्थिश्छिद्यन्तेसर्वसंशयाः। क्षीयन्तेचास्यकर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे॥ यहमुण्डककीश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहैकिहृदयग्रन्थिनामअविद्यादिकदोषजबजिसजीवकेनष्टहोजातेहैं तबविज्ञानकेहोनेसेसबसंशयनष्टहोजातेहैंऔरजबसंशयनष्टहोजातेहैंतबकर्मभीजीवकेनष्टहोजातेहैं किजीवकोफिरकर्तव्य कुछनहींरहता मुक्तिहोनेकेपीछेसोकर्मतीनप्रकारकाहोताहै एकक्रियमाणजोकिनित्यकियाजाताहै दूसरासञ्चितजोकिबुद्धिमें संस्काररूपसूक्ष्मरहताहै तीसराप्रारब्धजोनित्यभोगकियाजाताहै इनकेतीनभेदहैं। सतिमूलेतद्विपाकोजात्यायुर्भोगाः॥ ८॥ पा॰ इसकायहअभिप्रायहै किकर्मोंकेफलतीनहोतेहैं जन्मआयु औरभोग परन्तु जबतक कर्मोंकामूलअविद्यादिकरहतेहैं तबतककर्मफल भोगभी रहताहै सोभीजैसाकर्म वैसाजन्मआयु औरभोगउसके अनुसारहोतेहैं जबजीवपुरुषार्थसे विद्या,धर्मऔरपातञ्जलशास्त्रकोरीतिसे योगाभ्यासकरताहै तबउसकोयथोक्तविज्ञानहोताहै तबमूलसहितकर्मछूटजाताहै क्योंकिउसनेमुक्तिकेवास्ते सबकर्मकिएथे जबमुक्तिहोतीहै

तबउसकोफिरकर्तव्यकुछनहींरहता प्रश्न मुक्तिसमयमेंजीवपरमेश्वरमेंमिलजाताहै जैसेजलमेंजलवानहीं उत्तर जोजीवमिलजातातोउसकोमुक्तिकासुखकुछनहींहोता औरमुक्तिकेवास्तेजितनेसाधन किएजातेहैं वेसबनिष्फलहोजांयगे औरमुक्ति क्याभई किन्तुउसकानाशहोगया इससे यहबात मिथ्याहै किजीवब्रह्ममें मिलजाताहै वहब्रह्मअर्थात्सबसेजोपरेहै औरजोकिअपनेस्वरूपमें व्याप्तहै जितनाउसकोयथावत्साक्षात्जाननेसे सबदुःखोंसेछूटजाताहै जोभाग्यप्रारब्धऔरदैवकेभरोसेरहताहै औरआलस्यसे कुछकर्मअच्छानहींकरता वहीजीवनष्टहै औरजोअत्यन्तपुरुषार्थकेऊपरनिश्चयकरकेउद्यमकरताहै सोईजीवभाग्यशालीहै क्योंकि पुरुषार्थहीसे मुक्तिहोतीहै औरयथावत विवेककेहोनेसे हानिवालाभमेंशोकवाहर्षरहितहोताहै वहपुरुषार्थी सर्वत्रसुखीरहता है क्योंकिवहविद्यासेसबपदार्थोंकोयथावत्जानताहै सोसबसज्जनोंकोयहीउचितहै किसदा पुरुषार्थहीकरना आलस्यकभीनहीं पुरुषार्थइसकानामहै किजितेन्द्रियता,धर्मयुक्त व्यवहार,विद्या, औरमुक्तिजिससे होय औरअन्यपुरुषार्थनहीं क्योंकिपुरुषकेअर्थजो करताहै सोईपुरुषार्थकहाताहै औरजोअन्याययुक्त व्यवहारकर्तेहैं उसकानामपुरुषार्थनहीं औरपरमेश्वरअत्यन्तदयालुहै जोजीवउसकोप्राप्तिकेहेतु तन,मनऔरधनसे श्रद्धापूर्वकपुरुषार्थ करता है उसकोशीघ्रहीप्राप्तहोताहै कृपासेविद्यादिकपदार्थोंका उसकेपुरुषार्थकेअनुसारप्रकाशहोताहै फिरसदाआनन्दितमुक्तिमेंरहतेहैं सोसबपुरुषार्थोंकाफलमुक्तिहै इससे मुक्तिकोचाहना उक्तप्रकार से अवश्य सब कों करनी चाहिए यह विद्या अविद्याबन्ध और मुक्ति के विषय में संक्षेप से लिखा और जो विस्तारसे देखा चाहै सो वेदादिक सत्य शास्त्रों में देख लेवैं इसके आगे आचार अनाचार भक्ष्य और अभक्ष्य के विषय में लिखा जायगा ॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते नवमः समुल्लासः सम्पूर्णः॥ ९ ॥

अथआचारानाचारभक्ष्याभक्ष्यविषयंव्याख्यास्यामः॥ श्रुतिस्मृत्युदितंसम्यक् निवद्धंस्वेषुकर्मसु। धर्ममूलंनिषेवेत सदाचारमतन्द्रितः॥१॥ म॰ श्रुतिजोवेदस्मृतिजोकुःशास्त्रादिक सत्यशास्त्र औरमनुस्मृति उनमेंजोसदाचारउसकोसदासेवनकरैं औरजितनाअपनाआचारसोसवयुक्तिपूर्वककरै सत्पुरुषोंकेआचरणसेविरुद्धनहीं सोसत्यभाषणादिकआचारधर्मकामूलहै इसकोसदाचारप्रमाणोंसेनिश्चयकरकेसदासेवनकरै सबपदार्थशुद्धरक्खैं अशुद्धएकभीनरक्खैं जितनेश्रेष्ठगुणउनकेग्रहणकासदाआचाररक्खें सत्पुरुषोंकेसंगमेंसदाप्रीति उनसेविनयादिक व्यवहारोंकोग्रहण करै जितेन्द्रियता सदारक्खैं इनसेविपरीतजोअनाचार उसको छोड़दे जिस्से ज्ञानवाधर्म तथाविद्याप्राप्तहोय उसकोसदामानैं उक्तप्रकारसेउसकोप्रसन्नरक्खैं औरअधर्मीपाखण्डी उनकोकभी नमानैं औरजितनोसत्क्रिया उनकायथावत्करैं सबप्रयत्नोंसेब्रह्मचर्याश्रमसे विद्याग्रहणकरैं बाल्यावस्थामें विवाहकभीनकरैऔर नानाप्रकारकेग्रन्थऔरपदार्थगुणोंसेरसायन विद्याद्वीपद्वीपान्तरमेंभ्रमण उनमनुष्योंकेअच्छेबुरेआचरणोंकीपरीक्षा औरअच्छे आचरणोंकाग्रहणकरैं औरबुरेकानहीं प्रश्न आर्यावर्तवासीलोग दूसरेदेशकोछोड़के अन्यदेशमेंजानेसेपापगिनतेहैं औरकहतेहैंकि पतितहोजातेहैंउत्तर यहबातमिथ्याहैक्योंकिमनुस्मृतिमेंजहां जिसकेऊपर राजाकाकरलिखाहै सोजोसमुद्रपार द्वीपद्वीपान्तर मेंनजातेहोतेतोक्योंलिखते। समुद्रे नास्तिलक्षणम्। इत्यादिकवचनमनुस्मृतिमेंलिखेहैं सोमहासमुद्रमें जबजहाजजाय तबकुछ

करकानियमनहीं किन्तुद्वीपद्वीपान्तरमेंजाकेव्यापारकरकेपदार्थोंकोबेचकेऔरवहांसेपदार्थोंकोलेके इसदेशमेंआकेबेचे फिर उनकोजितनालाभहोवे उसमेंसेपू॰वांहिस्साराजाले औरराजा भीतीनप्रकारकेमार्गकोशुद्धिकरै एक,स्थल,जल,औरवनउसमेंजल केमार्गकेव्याख्यानमें जहाजोंकेऊपरचढ़के द्वीपद्वीपान्तरमेंजावें औरसमुद्रहीमेंजहाजोंपरबैठके युद्धकरैं यहक्योंलिखा औरमहाभारतमेंलिखीहै किश्रीकृष्णऔरअर्जुन जहाजमेंबैठके समुद्रमें चलेगए वहांउद्दालकऋषिमिलेऋषिकोयज्ञमेंलेआए औरराजसूय तथाअश्वमेधमेंसबद्वीपद्वीपान्तरके राजाओंकोयज्ञमेंलेआएथे सो बिनाजहाजसेद्वीपद्वीपान्तरमेंकैसेजासके औरसगरराजासबठिकानेभ्रमणकरताथा बिनाजहाजोंसे समुद्रपारकैसेजासका तथाअर्जुन,भीम,नकुल,सहदेव,औरकर्ण सबद्वीपद्वीपान्तरमेंभ्रमणकरतेथे बिनाजहाजोंसेकैसेकरसके तथाइक्ष्वाकुसेलेकेदशरथपर्यन्तद्वीपद्वीपान्तरमें भ्रमण करतेथे सोजहाजोंहीमेंकरतेथे औररामभीसमुद्रकेपारलंकामेंगएथेसोभीतोएकद्वीपहै इत्यादिकमनुस्मृतिऔर महाभारतादिक इतिहासोंमेंलिखाहै औरयुक्तिसेविचारकरके देखैंतोयहीआताहै किदेशदेशान्तर औरद्वीपद्वीपान्तरमें जाना अच्छाहै क्योंकिअनेकप्रकारकेपदार्थप्राप्तहोंगे अनेकप्रकारकेमनुष्योंसेसमागमहोगा उनकाव्यवहार भाषागुणऔरदोष विदित होतेहैं औरउत्तम२पदार्थोंकोउसदेशमेंलेजानेऔरलेआनेसेबहुतलाभहोताहैतथानिर्भयऔरशूर,वीरपुरुषहोनेलगतेहैं यहतो बड़ाएकअच्छा आचारहै औरजोअपनेहीदेशमेंरहतेहैं औरदेश मेंजानेसे उनकास्पर्शकरनेमें छूतमानतेहैं वेविचाररहितपुरुषहैं देखनाचाहिएकि मुसल्मानवाअंगरेजसे छूनेमेंदोषमानतेहैं और मुसल्मानोंवाअंगरेजकेदेशकोद्वेषसेसंगकरतेहैं औरअपनेपासघरमेंरखलेतेहैं उससे कुछभेदनहींरहता यहबड़े अन्धकारकीबात है किमुसल्मानऔरअंगरेज जोभलेआदमी उनसेतोछूतगिनना

औरवेश्यादिकोंमें नीचकृतमानना यहकेवलयुक्तिशून्यबातहैऔर
जोउनसेकृतहोमानतेहैं किइनसेशरीरनलगे नवस्पर्शहोय इ-
सीबातसेतोआर्याबर्त्तदेशकानाशभयाहै क्योंकिएतोआर्यावर्तवा-
सी उनकेकृतकेडरसे दूर२भागतेरहतेहैं औरवेसुखसे राज्यसब
लेलेतेहैं औरहृदयसेसदाद्वेषहोनेसे अन्यथाबुद्धिरखतेहैं इससेपर-
स्परसबदुःखपातेहैं यहसबअनाचारहै आचारइसकानामहै कि
राग,द्वेषादिकदोषोंकोहृदयसेछोड़देना औरसज्जनताप्रीत्यादि-
कोंकोधारणकरलेना यहीआचारपहिलेमनुष्योंकाथा किआम-
रिकाकीकन्याअर्जुनसेविवाहीगईथी जोकिनागकन्याकरकेलिखी
है फिरऐसीबातजोकहतेहैं किद्वीपद्वीपान्तरमेंजानेसे जातिपतित
औरनष्टधर्महोजाय यहबातमिथ्याहै क्योंकिकृतऔरदेशदेशान्त-
रमेंनजाना यहबातआर्यावर्तमें जैनोंकेराज्यमेंचलीहै पहिलेन-
थी क्योंकिजैनबड़ेभीरूहोतेहैं औरछोटे२जीवोंकेऊपर दयारख-
तेहैं इसीमें मुखकेऊपर कपड़ाबांधलेतेहैं सोचलने फिरनेमें भी
दोषगिनतेहैं फिरजहाजोंमेंबैठकेद्वीपद्वीपान्तरमेंजानाइसमेंहिं-
साक्योंनहीगिनेंगेऔरब्राह्मणतथासम्प्रदायीलोगइन्होंनेअपनेमत
लबकेहेतुसबजालफैलारक्खेहैंक्योंकिअपनाचेलावायजमानद्वीप
द्वीपान्तरमेंजायगा तोजीविकाकीहानि होजायगी देशदेशान्तर
औरद्वीपद्वीपान्तरमेंजानेसेकोईबुद्धिमानकाअवश्यसमागमहोगा
उससे सत्यअसत्यकाउसकोबोधभीहोगा फिरउसकेसामनेहमारा
जालनहींचलेगा औरनित्यशनैश्चरादिग्रहकेनामसे तथाभूतप्रे-
तादिकनामसे तथामन्दिरादिकोंमेंआनेजानेसे शिवनारायणदु-
र्गादिकेनामसुनानेसे उनकोडराकेलाखहांरूपएछल,कपटसेनि-
त्यलियाकरतेहैं सोवहद्वीपद्वीपान्तरमेंचलाजायगा बहुतकालमें
आनाहोगा तबतकउनकी आजीविकाबन्दहोजातीहै क्योंकिवह
उनकेसामनेहीनहीरहेगाफिरउससेकोईक्यालेगाफिरभीएकप्रा-
यश्चितकाडरलगादियाहैजोकोईजाकेआवैउसकेऊपरबड़े बखेड़े

लगादेतेहैं क्योंकिउसकोदुर्दशादेखके कोईजानेकोइच्छा करता होय वहभोडरकेनजाय इसहेतुकिहमारीआजीविकामदावनीरहै यहकेवलउनकीमूर्खताहै क्योंकिवहधनाढ्यवाराजाहो दरिद्र बनजायगा ऐसेथोरे २ सबदरिद्र औरमूर्खबनजांयगे फिरउनसे आजीविकाभीकिसीकीनहोगीपरन्तुवेऐसाविचारनहीकरतेक्योंकिअपनेमतलबमेंफसेहैं औरविद्याभीनहीं इस्से कुछनहीं जानमक्ते परन्तु सज्जनलोग इसबातको मिथ्याहीजानैं औरकभी देश देशान्तरवाद्वीपद्वीपान्तरकेजानेमेंभ्रमनकरैंक्योंकिजबमनुष्यमिथ्याभाषणादिकअनाचारकरेगा तबसर्वत्रअनाचारीहोगा और जोसत्यभाषणादिकआचारकरेगा वहकभीकिसीदेशमेंअनाचारी नहीहोताऔरजोऐसाजानतेहैं किबहुतनहानाऔरहाथोंकोमलना आचारजानतेहैं यहभीबातअयुक्तहै क्योंकिउतनाही शौच करनाउचितहै किजितनेसेहस्त,पाद,शरीरऔरवस्त्रदुर्गन्धयुक्तन रहै इस्से अधिककरनासीअनाचारहै किन्तुजिस्से सबपदार्थगृह पात्रऔरअन्नादिकशुद्धरहैं उतनाशौचकरना सबकोउचितहै अधिकनहीं अधिकआचारसद्गुणग्रहणमेंसदारक्खैं औरविद्याकेप्रचारकाआचारसदारक्खैं इसकानामआचारहै सोईमनुस्मृत्यादिकोंमेंलिखाहै औरभक्ष्याभक्ष्य दोप्रकारकेहोतेहैं एकतोवैद्यक शास्त्रकीरीतिसे औरदूसराधर्मशास्त्रकीरीतिसे सोवैद्यक शास्त्रकी रीतिसे देश,काल,वस्तु औरअपनेशरीरकीप्रकृति उनसेअनुकूल विचारकरके भक्षणकरनाचाहिए अन्यथानहीं जिस्से बल,बुद्धि, पराक्रमऔरशरीरमेंनैरोग्यबढ़ैवैसापदार्थभक्ष्यहै सोई उक्तवैद्यकसुश्रुत शास्त्रमेंलिखाहै । औरअभक्ष्योग्राम्यशूकरोऽभक्ष्योग्राम्यकुक्कुटः । इत्यादिकधर्मशास्त्रसे अभक्ष्यका निर्णयकरना क्योंकि सूअरगांवकाऔरमुर्गाप्रायः मलहीखाताहै उसीकापरिणाममांसहोगा उसकेखानेसेदुर्गन्धशरीरमेंहोगा उस्से रोगोत्पत्तिकासंभवहै औरचित्तभी अप्रसन्नहोजायगा वैसाहीधर्मशास्त्रकी रीति

सेमद्यअभक्ष्य तथाजितनेमनुष्योंकेउपकारक पशुउनकामांसअ-भक्ष्यतथा।बिनाहोमसे अन्नऔरमांसभीअभक्ष्यहै प्रश्न एकजीवको मारके अग्निमेंजलाना औरफिरखाना यहकुछअच्छीबातनहीं औरजीवकोपीडादेना किसीकोअच्छानहीं उत्तर इसमेंक्या।कुछ पापहोत.है प्रश्न पापहीहोताहै क्योंकिजीवोंकोपीड़ादेके अपना पेटभरना यहधर्मात्माओंकीरीतिनहीं उत्तर अच्छाएकजीवको मारनेमेंपोड़ाहोतीहै तोसबव्यवहारोंकोछोड़देनाचाहिए क्यों किनचकीचेष्टासेभी सूक्ष्मदेहवाले जीवोंकोपोड़ा अवश्य होतीहै औरतुम्हारेघरमेंकोईमनुष्यचोरीकरै तोतुमलोगभीअवश्यउस-कोपीड़ादे ओगेऔरमक्खीआदिक भोजनकेऊपरसे उड़ातेहो इसमेंभीउसकोपीड़ाहोतीहै औरजोकुछतुमखातेपीतेचलतेफि-रतेऔरबैठतेहो इसव्यवहारसेभीबहुतजीवोंकोपीड़ाहोतीहै इ-ससे तुम्हाराकहना।व्यर्थहै किकिसीजीवकोपीड़ानदेना प्रश्न जिसमें प्रत्यक्ष पीड़ाहोतीहै हमलोगउसमेंपापगिनतेहैं अप्रत्यक्षमेंकभी नहीं क्योंकिअप्रत्यक्षमेंपापगिनैं तोहमाराव्यवहारनबनैं उत्तर ऐसेहीआपलोगजानैं कि जहांअपनामतलबहोय वहांतोपापन-हीगिनतेहो यहबातयुक्तिसेविरुद्धहै औरकोईभीमांसनखाय तो जानवर,पक्षी,मत्स्यऔरजलजन्तुइतनेहैं उनसेशतसहस्रगुनेहो जांय फिरमनुष्योंकोमारनेलगें औरखेतोंमें धान्यहीनहोनेपावै फिरसबमनुष्योंको आजीविकानष्टहोनेसे सबमनुष्य नष्टहोजांय औरव्याघ्रादिकमांसाहारीजीवभी उनमृगादिकोंकाभक्षणकरतेहैं औरगायआदिकोंकोभीपरन्तु मनुष्यलोगोंकोयहचाहिए किगाय बैल,भैंसी,छेड़ी,भेंड़ औरऊंटआदिकपशुओंकोकभीनमारैं क्यों-किइन्होंसे सबमनुष्योंकी आजीविका चलतीहै जितनेदुग्धादिक पदार्थहोतेहैं वेसबउत्तमहोहोतेहैं औरएकपशुसेबहुतआजीवि-कामनुष्योंकीहोतीहै मारनेसेजहांसौमनुष्यटप्तिहोतेहैं उसगाय आदिकपशुओंकेबोचमेंसेएकगायकीरक्षासेदसहजारमनुष्योंकी

रक्षा होसक्ती है इस्से इनपशुओंको कभी न मारना चाहिए प्रश्न इन पशुओंके नहीं मारनेसे इनके बहुत होनेसे सब पृथिवी भर जायगी फिर भी तो मनुष्योंको हानि होने लगैगी उत्तर ऐसा न कहना चाहिए क्योंकि व्याघ्रादिक जीव उनको मारैंगे और कितने रोगोंसे भी मरेंगे इस्से अत्यन्त नहीं होने पावेंगे और मनुष्योंके मारनेसे घृतादिक पदार्थ और पशुओंकी उत्पत्ति भी नष्ट होजाती है इस्से जहां २ गोमेधादिक लिखे हैं वहां २ पशुओंमें नरोंका मारना लिखा है इस्से इस अभिप्रायसे नरमेध लिखा है मनुष्य नरको मारना कहीं नहीं क्योंकि जैसी पुष्टि बैलादिक नरोंमें है वैसी स्त्रियोंमें नहीं है और एक बैलसे हजारहां गैया गर्भवती होती हैं इस्से हानि भी नहीं होती सोई लिखा है ॥ गौरनुबन्ध्योऽग्नीषोमीयः । यह ब्राह्मणकी श्रुति है इसमें पुल्लिङ्ग निर्देशसे यह जाना जाता है कि बैल आदिक को मारना गैया को नहीं सो भी गोमेधादिक यज्ञों में अन्यत्र नहीं क्योंकि बैल आदिसे भी मनुष्योंका बहुत उपकार होता है इस्से इनकी भी रक्षा करनी चाहिए और जो बन्ध्या गाय होती हैं उसका भी गोमेधमें मारना लिखा है ॥ स्थूलपृषतीमाग्नेवारुणीमनड्वाहीमालभेत् । यह ब्राह्मणकी श्रुति है इसमें स्त्रीलिंग और स्थूलपृषती विशेषणसे बन्ध्या गाय ली जाती है क्योंकि बन्ध्यासे दुग्ध और बछड़ादिकोंकी उत्पत्ति होती नहीं और जो मांस न खाय सो घृत दुग्धादिकोंसे निर्वाह करे क्योंकि घृत दुग्धादिकोंसे भी बहुत पुष्टि होती है सो जो मांस खाय अथवा घृतादिकोंसे निर्वाह करे वे भी मन्त्र अग्निमें होम करके बिना न खांय क्योंकि जीवका मारनेके समय पीड़ा होती है उससे कुछ पाप भी होता है फिर जब अग्निमें वे होम करेंगे तब परमाणु से उसी प्रकार सब जीवोंको सुख पहुंचेगा एक जीवको पीड़ासे पाप भया था सो भी थोड़ा सा गिना जायगा अन्यथा नहीं प्रश्न सखरी निखरी अर्थात कच्चा पक्का अन्न और इसके हाथ का भोजन करना इसके हाथ का खाना और इसके हाथ का न खाना यह बात कै-

भीहै उत्तर इसका यह विचार है भ्रष्टाचार से बनावै अन्नादिओंका यथावत् संस्कारनजानै तथाविधिनजाने उसका भक्षण नकरनाचाहिए क्योंकि-इसे रोगहोतेहैं औरबुद्धिभी मलिनहो जातीहै सखराऔरनिखरायहमनुष्योंकामिथ्याकल्पनाहै क्योंकि जोअग्निसेपकायाजाताहै वहसबपक्काहोगिनाजाताहै औरशूद्र-हीपाककरनेवालाहोनाचाहिए परन्तु वहशूद्रअपने जिसद्विजके घरमेंरहै उसीकेघरकेअन्न औरउसीकेघरकेपात्रोंसे पवित्रहोके बनावे उसके हाथसे बनेंहुएको सबखांय तोभीकुछ दोषनहीं ॥ नित्यंशुद्धःकारुहस्तःसपेवार्थमुत्पन्नः। एतेषामेववर्णानां शुश्रूषामनसूयया इत्यादिकमनुस्मृतिमेंलिखाहै सेवामेंबड़ीसेवारसोईकाबनानाहै क्योंकिरसोईके बनानेमेंबड़ा परीश्रमहोताहै और कालभीबहुतजाताहै इससे रसोईआदिकसेवाका शूद्रहीकोअधिकारहै जोब्राह्मण,क्षत्रियऔरवैश्यहैं वेतोविद्यादिकप्रचार प्रजाकाधर्मसेरक्षणव्यापार औरनानाप्रकारकेशिल्प इनकीउन्नतिहीमेंपुरुषार्थकरैं क्योंकिजोबुद्धि औरविद्यायुक्तहैं उनकोसेवाकरना उचितनहीं रसोईआदिक जोसेवासो मूर्खपुरुष जोशूद्र उसीका अधिकारहै क्योंकिअग्निकेसामनबैठना लेपनामांजनाअन्नकोशुद्धिकरना नानाप्रकारकेपदार्थबनाना इसमेंबड़ापरिश्रमऔरकालजाताहै इसकामकेकरनेमविद्वानकीविद्यानष्टहोजाय इससे यह कामशूद्रहीकाहै सोमहाभारतमेंलिखाहै किजबराजसूयऔरअश्वमेध युधिष्ठिरादिकराजालोगोंकेयज्ञभएथे उनमेंसबद्वीपद्वीपान्तरऔरदेशदेशान्तरोंके ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तथाशूद्रराजाऔरप्रजाआएथेउनकोएकहीपंक्तिहोतीथी औरशूद्रनामशूद्रहीपाक करनेवाले औरपरोसनेवालेथे एकपंक्तिमेंसबकेसाथ सबभोजन कर्तेथे तथाकुरुक्षेत्रकेयुद्धमें जूते,वस्त्र,शस्त्र, औररथकेऊपर बैठे भएभोजनकर्तेथे औरयुद्धभीकर्तेजातेथे कुछशंकाउनकोनथी तभी उनकाविजयहोताथा औरआनन्दसेराज्यकर्तेथे औरजोभोजन

मेंबड़े बखेड़े करतेहैं वेभूखकेमारेमरजांयगे युद्धक्याकरसकेंगे अब
भोजअपुरादिकोंकेक्षत्रियलोग नापितादिकोंकेहाथकाभोजनक-
रतेहैं सोबातसनातनहै औरबहुतअच्छीहै तथासारस्वत और
खत्रीलोगोंकाएकहीभोजनहै सोअच्छीबातहै औरगौड़तथाअग-
रवालेबनियोंकाभीएकभोजनप्रायःहै सोभीअच्छीबातहै औरगु-
जराती,महाराष्ट्र,तैलंग,द्राविड़तथाकरनाटक इनमेंभोजनकेब-
ड़े बखेड़ेहैं इनपांचोंमेंसेगुजरातीलोगोंकेभोजनका बड़ापाखण्ड
है क्योंकिमहाराष्ट्रादिकचारोंद्रविड़ोंकातोएकभोजनहै औरगुज-
रातीलोगोंकाआपसमें बड़ाभेदहै सबसेभोजनमें पाखण्डकान्यू
कुछकाअधिकहै क्योंकिवेजलभीपीतेहैं तोजूतेउतारकेहाथ,पैर
धोकेपीतेहैं तबचौकादेकेचनाचबातेहैं सोबड़ेदुःखपातेहैं और
चौकाबरतनहीहाथमेंरहगए औरकुछनहीं औरसर्जूपारोमेंभी
बहुतभोजनमेंपाखण्डहैं यहकेवलमिथ्यापाखण्डबाहरसेरचलाते
हैं औरसबमेंपाखण्डभोजन चक्रांकितादिकबैरागिओंकाअत्यन्त
है ऐसाकोईकानहीं क्योंकिजबजगन्नाथकेदर्शनकोजातेहैं तबचा-
ण्डालादिकोंकाजूठखालेतेहैंफिरअपनीपंक्तिमेंमिलजातेहैं उनका
मिथ्यापाखण्डभीनहीरहा औरहलवाईकेदुकानकादूधदहीऔर
मिष्टान्नादिकखातेहैं वहसबकाउच्छिष्टजानोंऔरमलिनक्रियामे
भीहोतेहैं तथाघोसीलोग मुसल्मान और अभीरादिकहोतेहैं वे
अपनेघड़ेकाजूठा जलमिलातेहैं फिरउसके सा खातेपीतेहैं और
जानतेभीहैं सोसत्यबातहीकानिर्बाहहोताहै झूंठकाकभीनहींरा-
जादिकधनाढ्य वेश्यादिकोंकोघरमेंरखलेतेहैं उनमेंकुछभेदनहीं
रहता उनकोकोईनहींकहता क्योंकिकहैंतबजबकिवेनिर्दोषहोय
सोपरस्परदोषोंको छिपातेजातेहैं औरगुणोंकोछोड़तेजातेहैं यह
सबअनाचारहै औरसत्यभाषणादिकोंका आचरणकरना उसी
कानामआचार युधिष्ठिरकेसाथ बहुतऋषि,मुनि,ब्राह्मण लोगथे
वेतबसूदनाम शूद्रपाककर्तेथे और द्रौपद्यादिक परोसतेथे वेसब

खातेथे सोखानेपीनेसे किसीकाधर्मभ्रष्टनहींहोताहै औरनकोई पतितहोताहै क्योंकिखानापीना औरधर्मकाकुछसम्बन्धनहीं धर्म जोअहिंसादिकलक्षणसोवुद्धिस्थहै खानापीनाव्यवहारसबबाह्यहै परन्तु शुद्धपदार्थकाखाना पीनाचाहिए किजिस्से शरीरमेंरोगादिकनहोंय औरजगतकाअनुपकार भीनहोय मद्य,भांग,गांजा, अफोम,औरजितनेनसेहैं वेसबअभक्ष्यहैं क्योंकिजितनेनशेहैं वेसबबुद्ध्यादिकोंकेनाशकरनेवालेहैं इस्सेइनकाग्रहणकभीनकरनाचाहिए क्योंकिजितनेनशेहैं तेहैं वेबिनागरमीसे नहीहोते फिरगर्मीसेसबधातुऔरप्राणतप्तहोजातेहैं औरविषमउनकेसंगसे बुद्धि तप्तऔरविषमहोजातीहै इस्से नशाकाकरनासबकोवर्जितहै परन्तुऔषधकेहेतु किरोगनिवृत्तिहोताहोय तोचौगुणाजल औरएक गुणमद्यग्रहणलिखाहै सुश्रुतादिकवैद्यकशास्त्रमें क्योंकिरोगनिवृत्तिकेहेतुअभक्ष्यभीभक्ष्यहोजाताहै औरजिनपशुओंके बछड़े को दूधनहींदेते औरसबअपनेहीदुहलेतेहैं यहभीअनाचारहै क्योंकि पशुपुष्ट कभीनहींहोते फिरपुष्टिकेबिना दुग्धादिकथोड़े होतेहैं औरपशुभीबलहीनहोतेहैं सोएकमासभर जिननाबछपीए उतना देनाचाहिए फिरएकस्तनकादूधदुहले औरसबबछड़ापीए फिर दोमासकेपीछे जबबहबछिया घास,पात,खानेलगे तबआधादूध सबदिनछोड़दे औरआधादुहले तोपशुभीपुष्टहोवैं औरदुग्धादिकभीबहुतहोवैं फिरउनदुग्धादिकोंसे मनुष्यादिकोंकोपुष्टिभीहुआकरै इस्से खानेऔरपीनेमें धर्ममानतेहैं वाधर्मकानाशवेबुद्धिहीनमनुष्यहैं ऐसातोहैकिसत्यधर्म व्यवहारसेपदार्थोंकोप्राप्तहोय उनसेखानापीनाकरैतोपुण्यहै औरचोरीतथाछल,कपट,व्यवहारसेखानापीनाकरै तोअवश्यपापहोताहै सोखानेपीनेमें जितने भेदहैं वेविरोधदुःखऔरमूर्खताकेकारणहैं इनबखेड़ोंसेआर्यावर्त्तमेंपुरुषऔरस्त्रीलोग विद्या,बल,बुद्धि,पराक्रम,हीनहोगएहैं प्रथम देशदेशान्तरोंमेंसबवर्णोंमें विवाहशादीहोतीथीपूर्वोक्तमर्यादाक-

नसेफिरभोजनमें कैसेभेदहोगा यहभेदथोड़े दिनसेचलाहै कि
जबसेनानाप्रकारकेमतमतान्तरचले और मनुष्यकीबुद्धिमेंपरस्पर
बिरोधहोनेसे प्रीतिनष्टहोगई वैरहोगया इससे कोईकिसीके उप
कारमें चितनहींदेता औरअपने देशकेमनुष्योंके उपकारकेहेतु
कोईप्रवृत्तनहींहोताकिन्तुअपने२ मतलबमेंरहतेहैं सोसबकानाश
होताजाताहै यहबड़ाअनाचारहै औरतथाबिचारसेशुद्धपदार्थके
खानेसे किसीकापरलोक वाधर्मबिगड़तानहीं परन्तु विद्याऔर
बिचारकेनहोहोनेसे इनबखेड़े मेंमनुष्यलोगपड़केसदादुःखीरह-
तेहैं औरजोपरस्परगुणग्रहणकरैंतोसुखीहोजांय औरदेखनाचा-
हिए किसमयकेऊपरभोजननहीं प्राप्तहोताहै भोजनकेपात्रोंको
उठाकेलादेफिरतेहैं बैलोंकोनाईदरिद्रलोग औरधनाढ्यलोगब-
ड़तरसोंईदार आदिकसाथमेंरहतेहैं उसमें मिथ्याधन बड़तखर्च
होजाताहै इत्यादिकसबव्यवहार बुद्धिमानलोगबिचारलें युक्त२
व्यवहारकरैं अयुक्तकभीनहीं एदशसमुल्लासशिक्षाके विषयमेंलि-
खे इसकेआगेआर्यावर्तवासीमनुष्य जैनमुसल्मान औरअंगरेजों
केआचारअनाचार सत्यासत्यमतमतान्तरकेखण्डन औरमण्डन
केविषयमें लिखेंगे इनमेंसेप्रथमसमुल्लासमें आर्यावर्तवासी मनु-
ष्योंकेमतमतान्तरके खण्डनऔरमण्डनकेविषयमेंलिखाजायगा
दूसरेसमुल्लासमेंजैनमतके खण्डनऔरमण्डनकेविषयमें लिखा
जायगा तीसरेमें मुसल्मानोंकेमतकेविषयमें खण्डनऔरमण्डन
लिखेंगें औरचौथेमेंअंगरेजोंकेमतमें खण्डनऔरमण्डनकेविषय
मेंलिखाजायगा सोजोदेखाचाहै खण्डनऔरमण्डनकोयुक्तिउन
चारोंसमुल्लासोंमें देखले दससमुल्लासतकखण्डन वामण्डननहीं
लिखा क्योंकिजबतकबुद्धिमनुष्योंकी सत्यासत्यबिबेकयुक्तनहींहै।-
तो तबतकसत्यके ग्रहण औरअसत्यके त्याग करनेमेंसमर्थ नहीं
होते इसहेतुग्रन्थकेपूर्वभागमेंसत्य२ मनुष्योंकेहितकेहेतुशिक्षा लि-
खी औरइसग्रन्थकेउत्तरभागमें सत्यमतकामण्डनऔरअसत्यम-

नकाखण्डनलिखेंगे संस्कृतमें रचनाकरतेतो सबमनुष्योंकेसम-
झमेंनहींआता इसहेतुभाषामें कियागया इसग्रन्थको दुराग्रह
हठऔरईर्ष्याकोछोड़के यथावत्विचारेंगा उसकोसत्य२पदार्थों
केप्रकाशसेअत्यन्तआनन्दहोगा औरअन्यथाइसग्रन्थका अभिप्राय
भीमालूमनहींहोगा इसहेतुसज्जनलोगोंकोयहउचितहै किइस-
कायथावतअभिप्रायविचारकेभूषणवादूषणकरें अन्यथानहींऔर
मूर्खतथादुराग्रहीपुरुषके कहेदूषणमाननेकेयोग्यनहीं ॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते दशमः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ १० ॥

सत्यार्थ प्रकाशस्य प्रथमभागः समाप्तः ॥

———ooo———

अथार्य्यावर्त्तवासिमतखण्डनमण्डनेविधास्यामः ॥ सरस्वतीदृ-
षद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम् । तंदेवनिर्मितंदेश मार्य्यावर्त्तं प्रचक्षते ॥
१ ॥ म० सरस्वतीजोकिगुजरातऔरपंजाबके पश्चिमभागमेंनदी
है उससेलेकेनेपालके पूर्वभागकोनदीसेलेके समुद्रतकइनदोनोंके
बीचमेंजोदेशहै सोआर्य्यावर्त्तदेशहै औरवेदेवनदी कहातीहैं अ-
र्थातदिव्यदेशके प्रांतभागमेंहोनेसेदे वनदीइनका नामहैं सोदेश
देवनिर्मितहै अर्थातदिव्यगुणोंसेरचितहै क्योंकिभूगोलके बीचमें
ऐसाश्रेष्ठदेशकोईनहींहै जिसदेशमेंसबश्रेष्ठपदार्थहोतेहैं और
छःऋतुयथावत् वर्त्तमानहोतेहैं औरकेवलसुवर्णरत्नपैदाहोतेहैं
इसदेशमें जिसकाराज्यहोताहै वहदरिद्रहोयतोभीधनसंपूर्णहो
जाताहै इसीहेतुइसकानामआर्य्यावर्त्त है आर्य्य नामश्रेष्ठमनुष्य
औरश्रेष्ठपदार्थइनसेयुक्त अर्थातआवर्त्तहै इसहेतुइसदेशकानाम

आर्यावर्त्त कहते हैं ॥ १ ॥ एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः । स्वं
स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥ २ ॥ म० इस देशमें अ-
ग्रजन्मा नाम सब श्रेष्ठ गुणोंसे सम्पन्न जो पुरुष उत्पन्न होवै उस्से सब
भूगोलकी पृथिवीके मनुष्य शिक्षा अर्थात विद्या तथा संसारके सब व्य-
वहारोंका यथावत विज्ञान करैं इस्से क्या जाना जाता है कि प्रथम इस
में मनुष्योंको सृष्टि भई थी पीछे सब द्वीप द्वीपान्तरमें सब मनुष्य फैल गए
क्योंकि पृथिवीमें जितने मनुष्य हैं वे इस देशवालोंसे विद्यादिक शिक्षा
ग्रहण करैं और सब देशभाषाओंका मूल जो संस्कृत सो आर्यावर्त्त ही
में सदासे चला आता है आजकाल भी कुछ २ देखनेमें आता है परन्तु
फिर भी सब देशोंसे संस्कृतका प्रचार अधिक है जर्मनी और विलायत
आदिक देशोंमें संस्कृतके पुस्तक इतने नहीं मिलते जितने कि आर्यावर्त्त
देशमें मिलते हैं और जो किसी देशमें संस्कृतके पुस्तक होंगे
सो आर्यावर्त्त ही से लिए होंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं सो इस देशसे
मिश्रदेशवालोंने पहिले विद्याग्रहण की थीं उस्से यूनानदेश, उस्से
रूम फिर रूमसे फिरंगस्थान आदिमें विद्या फैली है परन्तु संस्कृत
के बिगड़नेसे गिरीश लाटीन अंगरेज और अरबदेशवालोंकी भाषा
बन गई हैं सो इनमें अधिक लिखना कुछ आवश्यक नहीं क्योंकि इति-
हासोंके पढ़नेवाले सब जानते हैं और पता भी ऐसाही मिलता है एक
गोलड्सटकर साहेबने पहिले ऐसाही निश्चय किया है कि जितनी वि-
द्या वा मत फैले हैं भूगोलमें वे सब आर्यावर्त्त ही से लिए हैं और का-
शीमें बालेंटैन साहेबने यही निश्चय किया है कि संस्कृत सब भाषाओं
की माता है तथा दाराशिकोह बादशाहने भी यह निश्चय किया है कि
जो विद्या है सो संस्कृत ही है क्योंकि मैंने सब देशोंकी भाषाओंकी पु-
स्तक देखा तो भी मुझको बहुत सन्देह रह गए परन्तु जब मैंने संस्कृत
देखा तब मेरे सब सन्देह निवृत्त होगए और अत्यन्त प्रसन्नता मुझको
भई और काशीमें मानमन्दिर जो रचा है उसमें महाराज सवाई मा-
नसिंहजीने खगोलके कला और यन्त्र ऐसे रचे थे कि जिसमें खगोल

काशबहालदेखपड़ताथा परन्तु आजकालउसकी मरम्मतनहोनेसे बहुतकलायन्त्रबिगड़गएहैं तोभीकुछ२देखपड़ताहै फिरआजकालमहाराज सवाईरामसिंहजीने कुछमरम्मतस्थानकीकराईहै जोउसयन्त्रकीभीकरावेंगेतोकुछरोजबनारहेगा अन्यथानहीं जबसे महाभारतयुद्धभयाउसदिनसेआर्यावर्त्तकोबुरीदशाआईहै सोनित्य२बुरीहीदशाहोतीजातीहै क्योंकिउसयुद्धमेंअच्छे२विद्वान राजाऔरब्राह्मणलोगप्रायःमारेगए फिरकोईराजापूर्णविद्यावाला इसदेशमें नहींभया जबराजाविद्वान औरधर्मात्मानहींभया तबविद्याकाप्रचारभीनष्टहोताचला फिरकुछदिनकेपीछेआपसमें लड़नेलगे क्योंकिजबविद्यानहींहोती तबऐसेहीबहुतप्रमादहोते हैं जोकोईप्रबलभया उसनेनिर्बलकाराजछीनकेउसकोमारा फिर प्रजामेंभीगदरहोनेलगा किजहांजिससे जितनापाया उसकावह राजावाजमीदारबनबैठा फिरब्राह्मणलोगोंनेभी विद्याकापरिश्रमछोड़दिया पढ़नापढ़ानाभीनष्टहोताचला जबब्राह्मणलोगविद्याहीनहोतेचले तबक्षत्रिय,वैश्य,शूद्रभीविद्याहीनहोतेचले केवल दम्भ,कपटऔरछलहीसेव्यवहारकरनेलगे फिरजितनेअच्छे कामहोतेथेवेसबबन्धहोतेचले वेदादिकविद्याकाप्रचारभीबहुतथोड़ाहोताचला फिरब्राह्मणलोगोंनेबिचारकिया किआजीविकाकी रीतिनिकालनीचाहिए सोसम्मतिकरकेयहीविचारकिया किब्राह्मणवर्णमें जोउत्पन्नहोताहै सोईदेवहै सबकापूज्यहै क्योंकिपूर्ण विद्यासे ब्राह्मणवर्णहोताहै यहवर्णाश्रमकीसनातनरीतिहै सोई ऋषिमुनियोंकेपुस्तकोंमेंभीलिखीहै सोविद्यादिकगुणोंसेतोवर्णव्यवस्थानहींरक्खीकिन्तुकुलमेंजन्महोनेसेवर्णव्यवस्थाप्रसिद्धकरदिया है फिरजन्महीसेब्राह्मणादिकवर्णोंकाअभिमानकरनेलगे फिरबिद्यादिकगुणोंमेंपुरुषार्थसबकाछूटाउसकेछूटनेसेप्रायःराजाऔरप्रजामेंमूर्खताअधिक२होनेलगी फिरउन्हसेब्राह्मणलोगअपने चरणऔरशरीरकीपूजाकरानेलगेजबपूजाहोनेलगीतबअत्यन्तअभि-

मानने में होने लगा जब विद्याहीन राजाओं को और प्रजास्थ पुरु-
षों को वशीभूत ब्राह्मणों ने कर लिए यहां तक कि सोना, उठना और
कोस दो कोस तक जाना वह भी ब्राह्मणों की आज्ञा के बिना नहीं करना
और जो कोई करेगा सो पापी हो जायगा फिर अनेक ग्रहादिक ग्रह औ-
र नाना प्रकार के भूत प्रेतादिकों का जाल उनके ऊपर फैलाने लगे
और वे मूर्खता के होने से मानने भी लगे फिर राजा लोगों को ऐसा
निश्चय सब लोगों ने मिल के कराया कि ब्राह्मण लोग कुछ भी करैं परन्तु
इनको दण्ड न देना चाहिए जब दण्ड नहीं होने लगा तब ब्राह्मण लोग
अत्यन्त प्रमाद करने लगे और व्यभिचारादिक भी। फिर बड़े २ ऋषि मु-
नि और ब्रह्मादिक के नामों से श्लोक और ग्रन्थ रचने लगे उनमें प्रायः
यही बात लिखी कि ब्राह्मण सब का पूज्य और सदा अदण्ड्य है फिर अ-
त्यन्त प्रमाद और विषयासक्ति से विद्या, बल, बुद्धि, पराक्रम और शूर
वीरता नष्ट हो गई और परस्पर ईर्ष्या अत्यन्त हो गई किसी को कोई
देख न सके और कोई २ के सहायकारी नहीं है परस्पर लड़ने लगें यह
बात चीन आदिक देशों में रहने वाले जैनों ने सुनी और व्यापारादि-
क करने के हेतु इस देश में आते थे सो प्रत्यक्ष भी देखी फिर जैनों ने
विचार किया कि इस समय आर्यावर्त्त देश में राज्य सुगमता से हो स-
क्ता है फिर वे आए और राज्य भी आर्यावर्त्त में करने लगे फिर धी-
रे २ बौधगया में राज्य जमा के और देशदेशान्तर में फैलाने लगे सो
वेदादिक संस्कृत पुस्तकों की निन्दा करने लगे और अपने पुस्तकों के
पठन पाठन का प्रचार तथा अपने मत का उपदेश भी करने लगे सो इ-
स देश में विद्या के नहीं होने से बहुत मनुष्यों ने उनके मत का स्वीकार
कर लिया परन्तु कनौज काशी पर्वत दक्षिण और पश्चिम देश के पुरुषों
ने स्वीकार नहीं किया था परन्तु वे बहुत थोड़े थे वे ही वेदादिक पु-
स्तकों का पठन और पाठन करते और कराते थे फिर इन्होंने वर्णाश्रम
व्यवस्था और वेदोक्त कर्मों को मिथ्या २ दोष लगा के अश्रद्धा और अ-
प्रवृत्ति बहुत करा दिया फिर यज्ञोपवीतादिक कर्म भी प्रायः नष्ट होग-

या और जो २ वेदादिकोंकी पुस्तक पाया और पूर्वके इतिहासोंका उनका प्रायः नाश करदिया जिस्से कि इनको पूर्व अवस्थाका स्मरणभी न रहै फिर जैनोंका राज्य इस देशमें अत्यन्त जमगया तब जैनभी बड़े अभिमानमें होगए और कुकर्म, अन्यायभी करनेलगे क्योंकि सब राजा और प्रजा उनके मतमें हीं होगए फिर उनको डर बाधं-क किसीको न रहो अपने मतवालोंको अच्छे २ अधिकार और प्रति-ष्ठा करनेलगे और वेदादिकोंको पढ़ैं तथा उनमें कहे कर्मों को करैं उनको अप्रतिष्ठा करनेलगे अन्यायसेभी उनके ऊपर शासन करनेलगे अपने मतके पण्डित वा साधु उनको बड़ो प्रतिष्ठा करनेलगे सो आजतक भी ऐसाही करते हैं और बहुतस्थान २ में बड़े २ मन्दिर रचलिए और उनमें अपने आचार्यों की मूर्त्ति स्थापन करदिया तथा उनको पूजाभी अत्यन्त करनेलगे सो जैनोंके राज्यहीसे मूर्त्ति पूजन चलो इसके आगे न थो क्योंकि जितने ऋषिमुनियोंके किए प्राचीनग्रन्थ हैं महाभारतयुद्धके पहिले जो कि रचेगए हैं उनमें मूर्त्तिपूजनका लेशमात्रभी कथन नहीं है इस्से दृढ़ निश्चयसे जानाजाता है कि इस आर्यावर्त्त देशमें मूर्त्ति पूजन नहीं थो किन्तु जैनोंके राज्यहीसे चला है एक द्रविड़ देशके ब्राह्मणका शरीर आके एक गौड़पाद पण्डित थे उनके पास व्याकरणपूर्वक वेदपर्यन्त विद्या पढ़ीथी जिसका नाम शङ्कराचार्यथा वे बड़े पण्डित भए थे उसने विचार किया कि यह बड़ा अनर्थ भया नास्तिकोंका मत आर्यावर्त्त देशमें फैलगया है और वेदादिक संस्कृत विद्याका प्रायः नाशही होगया है सो नास्तिक मतका खण्डन और वेदादिक सत्य संस्कृत विद्याका विचार वे अपने मनमें ऐसा विचार करके सुधन्वा नाम राजा था उसके पास चलेगए क्योंकि बिना राजाओंके सहायसे यह बात नहीं होसकेगी सो सुधन्वा राजाभी संस्कृतमें पण्डित था और जैनोंकेभी संस्कृत सब ग्रन्थ पढ़ाथा सुधन्वा जैनके मतमें था परन्तु बुद्धि और विद्याके होनेसे अत्यन्त विश्वास नहीं था क्योंकि वह संस्कृतभी पढ़ाथा और उसके पास जैनमतके पण्डित

भीबहुतथे फिरशंकराचार्यने राजासे कहाकि आप सभाकरावें औरउनसेमेराशास्त्रार्थहोय औरआपसुनैं फिरजोसत्यहोय उसकोमाननाचाहिए उसनेस्वीकारकिया औरसभाभीकराई उसमेंअपनेपासजैनमतकेपण्डितथे औरभीदूर२सेपण्डितजैनमतकेबोलाए फिरसभाभई उसमेंयहप्रतिज्ञाहोगई किहमवेद और वेदमतकास्थापनकरेंगे औरआपकेमतकाखण्डनतथाउनपण्डितोंनेऐसेभीप्रतिज्ञाकिया किवेदऔरवेदमतका हमखण्डनकरेंगे औरअपनेमतकामण्डन सोउनकापरस्परशास्त्रार्थहोनेलगा उस शास्त्रार्थमेंशङ्कराचार्यकाविजयभया औरजैनमतवालेपण्डितोंका पराजयहोगया फिरकोईयुक्तिजैनोंकीनहींचली किन्तुशङ्कराचार्यकीबात प्रमाणोंसेसिद्धभई उसीसमयसुधन्वाराजा बुद्धिमानथा उसकीजैनमतमेंअश्रद्धाहोगई औरवेदमतमेंश्रद्धाहोगई फिरसभाउठगई राजाऔरशङ्कराचार्य जीकाएकान्तमेंबिचारभया कि आर्यावर्त्त मेंबड़ाअनर्थहोगयाहै इससे वेदादिकोंकाप्रचारऔरइन कर्मोंकाप्रचारहोनाचाहिए तथाजैनोंकाखण्डन सोशङ्कराचार्यनेकहाकिजैनोंका आजकालबड़ाबलहै औरवेदमतकाबलनहींहै इससे शास्त्रार्थतोहमकरनेकोतैयारहैं परन्तु कोईउपाधिकरै अथवाशास्त्रार्थहोनकरैं तोहमाराकुछबलनहीं इसमेंआपलोग प्रवृत्तहोंय किकोईअन्यायकरै उसकोआपलोग शिक्षाकरैं सोराजानेउसबातकास्वीकारकिया किवहहमकरेंगे परन्तु हमारेछःराजासम्बन्धीहैं उनकेपासहमचिट्ठीलिखतेहैं औरआपकोभीभेजेंगे शास्त्रार्थकरनेकेहेतु फिरवेभीजो मिलजांय तोबहुतअच्छीबातहै फिरशंकराचार्य उनराजाओंकेपासगए औरसभाभई फिरजैन मतकेपण्डितोंकापराजयहोगया फिरवेछःभीसुधन्वासेमिलेऔर सबकीसम्मतिसेसंस्कारभीभया तथावेदोक्तकर्मभीकरनेलगेतबतो आर्यावर्त्त मेंसर्वत्रयहबातप्रसिद्धहोगई किएकशङ्कराचार्य नामक सन्यासीवेदादिकशास्त्रोंकेपढ़नेवालेबड़े पण्डितहैं जिस्से बहुतजैन

लोगोंकेपण्डितपरास्तहोगए फिरउनसातराजाओंनेशङ्कराचार्यकी रक्षाकेहेतुबहुतभृत्य तथासेवकऔरसवारीभीरखदिया औरसबनेकहाकिआपसर्वत्रआर्यावर्त्तमेंभ्रमणकरैंऔरजैनोंकाखण्डनकरैं इसमेंकोईजबर्दस्तीकरेगा अन्यायसेउसकोहमलोगसमझालेंगे फिरशंकराचार्यजीने जहां२ जैनोंकेपण्डितऔरअत्यन्तप्रचारथा वहां२भ्रमणकिया औरउनसेसर्वत्रशास्त्रार्थकिया परन्तु जैनलोगोंकासर्वत्रपराजयहीहोतागया क्योंकिदोतीनदोषउनकेबड़ेभारीथे एकतोईश्वरकोनहींमानना दूसराबेदादिकसत्यशास्त्रोंकाखण्डनकरना औरतीसराजगत्स्वभावहीसेहोताहै इसकारचनेवालाकोईनहीं इत्यादिकअन्यभीबहुतदोषहैं बजैनमतकेखण्डनमण्डनमेंबिस्तारसेलिखेंगे फिरजितनीजैनोंकेमन्दिरमेंमूर्त्तिथीं उनकोसुधन्वादिकराजाओंनेतोड़वाडाली औरकूवांवापृथिवीमेंगाड़दिया औरकोईमूर्त्तिजैनोंनेबिनाटूटीभीभयसेजमीनमेंगाड़दिया सोआजतकबेटूटोऔरबिनाटूटीमूर्त्ति जैनोंकीपृथिवीखोदनेसे निकलतींहैं परन्तु मन्दिरनहींतोड़ेगए क्योंकिशंकराचार्य औरराजालोगोंने बिचारकिया मन्दिरोंकोतोड़नाउचितनहीं इनमेंबेदादिकशास्त्रोंकेपढ़नेकेहेतु पाठशालाकरेंगे क्योंकिलाखहांकरोड़हांरुपैएकोइमारतहै इसकोतोड़नाउचितनहीं औरकुछ२गुप्तजैनलोग जहांतहांरहगएथे सोआजतकदेखनेमेंआर्यावर्त्तदेशमेंआतेंहैं इसकेपीछेसर्वत्र बेदादिकोंकेपढ़नेऔरपढ़ानेकोइच्छा बहुतमनुष्योंकोभई शंकराचार्यऔरसुधन्वादिकराजा तथाऔरआर्यावर्त्तवासीश्रेष्ठलोगोंने बिचारकियाकिविद्याकाप्रचार अवश्यकरनाचाहिए वेबिचारहीकरतेरहे इतनेमें ३२,वा,३३,बरसकीउमरमें शंकराचार्यकाशरीरछूटगया उनकेमरनेसेसबलोगकाउत्साहभङ्गहोगया यहभीआर्यावर्तदेशवालोंकेबड़ेअभाग्यकिशंकराचार्यदशवाबारहबरसभीजोतेतोविद्याकाप्रचार यथावत्होजाता फिरआर्यावर्त्तकोऐसोदुर्दशा कभीनहो

होती क्योंकिजैनोंकाखण्डनतोहोगयापरन्तु विद्याप्रचारयथावत् नहोभया इस्से मनुष्योंकोयथावत्कर्तव्य औरअकर्तव्यका निश्चय नहोहोनेसे मनमें सन्देहहोरहा कुछतोजैनोंके मतका संस्कार हृदयमें रहा औरकुछ वेदादिक शास्त्रोंकाभोयहबात एकईसवा बाईसवें बरसकीहै इसकेपीछे २००वा३००बरसतक साधारणपढ़ना औरपढ़ानारहा फिरउज्जयनमेंबिक्रमादित्य राजाकुछअच्छाभया उसनेराजधर्मकुछ२प्रकाशकियाऔरबहुतकार्यन्यायसे होनेलगेथे उसकेराज्यमेंप्रजाको सुखभोभयाथा क्योंकिबिक्रमादित्यतेजस्वी बुद्धिमानऔरशूरवीर तथाधर्मात्मा इस्से कोई और अन्यायनहींकरनेपाताथा परन्तु वेदादिकबिद्याकाप्रचार उसके राज्यमें भोयथावत्नहींभयाथा उसकेपीछे ऐसाराजानहींभया किन्तु साधारणहोतेंगए फिरबिक्रमादित्यसे५००बर्षकेपीछेराजा भोजभएउसनेसंस्कृतकाप्रचारकियासोनवीनग्रन्थोंकारचनाऔर प्रचारकियाथा वेदादिकोंकानहीं परन्तु कुछ२ संस्कृतकाप्रचार भोजराजानेऐसाकरायाकिचाण्डलऔरहलजोतनेवालेभोकुछ२ लिखनापढ़ना औरसंस्कृतबोलतेभोथेदेखनाचाहिएकि कालिदासगड़रियाथा परन्तु श्लोकादिकरचलेतायाऔरराजाभोजभो नए२श्लोकरचनेमेंकुशलथा कोईएकश्लोकभोरचकेलेजाताथा उनकेपासउसकाप्रसन्नतासेसत्कारकर्तेथे औरजोकोई ग्रन्थबनाताथा तोउसकाबड़ाभारी सत्कारकर्तेथे फिरलोभसे बहुतसंसारमें मनुष्यलोग नएग्रन्थरचनेलगे उस्से वेदादिक सनातनपुस्तकोंको अप्रवृत्ति प्राय:होगई औरसंजीवनीनाम राजाभोजने इतिहास ग्रन्थबनायाहै उसमेंबहुतपण्डितोंकोसम्मतिहै औरयहबातउसमेंलिखीहै कितीनब्राह्मणोंने ब्रह्मवैवर्त्तादिकतीन पुराणपण्डितों मेरचेथे उनसेराजाभोजनेकहाकि औरकेनामसेतुमकोग्रन्थरचनाउचितनहींथा औरमहाभारत कोबातलिखीहै किकितनेहजारश्लोक२०बरसकेबोचमें व्यासजीकानामकरकेलोगोंने मिला

दिए हैं ऐसेहीपुस्तकबढ़ेगा तोएकऊंटकाभार होजायगा औरऐ-से हीलोगदूसरेकेनामसेग्रन्थरचेंगे तोबहुतभ्रमलोगोंकोहोजा-यगा सोउससंजीवनीग्रन्थमें राजाभोजनेअनेकप्रकारकीबातें पु-स्तकोंकेविषय औरदेशके वर्त्तमानकेविषयमें इतिहासलिखेहैं सोवहसंजीवनीग्रंथ बटेश्वरकेपास होलीपुराएकगांवहै उसमें चौबेलोगरहतेहैं वेजानतेहैंजिसकेपासवहग्रंथहैपरन्तु लिखनेवा देखनेकोवहपण्डितकिसीकोनहींदेता क्योंकिउसमें सत्य२बात लिखीहै उसकेप्रसिद्धहोनेसेपण्डितोंकोआजीविकानष्टहोजातीहै इसभयसेवहउसग्रंथकोप्रसिद्धनहींकरता ऐसेहीआर्यावर्त्तवासी मनुष्योंकोबुद्धिक्षुद्रहोगईहै किअच्छापुस्तकवाकोईइतिहास उस-कोछिपातेचलेजातेहैं यहइनकी बड़ीमूर्खताहै क्योंकिअच्छीबात जोलोगोंके उपकारकी उसकोकभीनछिपानाचाहिए फिरराजा भोजकेपीछेकोईअच्छाराजानहींभयाउससमयमें जैनलोगोंनेज-हांतहांमूर्तिमन्दिरोंमेंप्रसिद्धकियाऔरवेकुछ२प्रसिद्धभीहोनेलगें तबब्राह्मणोंनेबिचारकिया किइनकेमन्दिरोंमें नहींजानाचाहिए किन्तुऐसीयुक्तिरचें किहमलोगोंकोआजीविकाजिससे होयफिरउ-नने ऐसाप्रपञ्चरचाकि हमकोस्वप्नआयाहै उसमेंमहादेव,ना-रायण,पार्वती,लक्ष्मी,गणेश,हनुमान्,राम,कृष्ण,नृसिंह,इनोंने स्वप्नमेंकहाहै किहमारीमूर्त्ति स्थापनकरके पूजाकरें तोपुत्र,धन नैरोग्यादिकपदार्थोंकोप्राप्तिहोगी जिस२पदार्थकीइच्छाकरेगा उस२पदार्थकीप्राप्ति उसकोहोगी फिरबहुतमूर्खोंने मानलिया औरमूर्त्ति स्थापनकरनेकोई२लगा फिरपूजाऔरआजीविका भी उनकोहोनेलगी एककोआजीविकादेखकेदूसराभीऐसाकरनेलगा औरकोईमहाधूर्त्त नेऐसाकियाकिमूर्त्तिकोजमीनमें गाड़केप्रातः कालउठके कहामुझको स्वप्नभयाहै फिरउनसे बहुतलोग पूछने लगे किकैसास्वप्नभयाहै तबउनसे उसनेकहाकि देवकहताहै मैं जमीनमें गड़ाहूं औरदुःखपाताहूं मुझकोनिकालकेमन्दिरमें

स्थापनकरै औरतूंहीपुजारीमेराहो तोमैंसबकाम सबमनुष्यों कासिद्धकरूंगा फिरवेविद्याहीनमनुष्य उस्से पूछतेभए किवहमूर्त्ति कहांहै जोतुम्हारासत्यस्वप्नहोगा तोतुमदिखलाओ तबजहां उसनेमूर्त्तिगाड़ीथी वहांसबकोलेजाकेखोदकेउसकोनिकाली सब देखकेबड़ाआश्चर्यकिया औरसबनेउस्से कहाकि तूंबड़ाभाग्यवान् है औरतेरेपरदेवताकी बड़ीकृपाहै सोहमलोग धनदेतेहैं इस्से मन्दिरबनाओ इसमूर्त्तिकाउसमें स्थापनकरो तुमइसके पुजारी बनो औरहमलोगनित्यदर्शनकरेंगे तबतोवहप्रसन्नहोकेवैसाही किया औरउसकीआजीविकाभीअत्यन्तहोनेलगी उसकीआजीविकाकोदेखके अन्यपुरुषभी ऐसीधूर्त्तताकरनेलगे औरविद्याहीन पुरुषउसकीमाननताकरनेलगे फिरप्राय:मूर्त्ति पूजन आर्य्यावर्तमें फैला एकमहम्मूदगजनवीइसदेशमेंआया और बहुतसीमूर्त्तियां सोनेऔरचांदियोंकीलूटलिया बहुतपुजारीऔरपण्डितोंको पकड़लिए औररातको पिसानपिसावै औरदिनमें गाजरूरआदि कोसफाकरावै औरजहांकोई पुस्तकपाया उसकोनष्टभ्रष्टकरदिया ऐसेवहआर्य्यावर्त्त में बारहदफेआया औरबहुतलूटमारअत्यन्तअन्यायउसनेकिया इसदेशकोबड़ी दुर्दशाउसनेकिया यहांतक किशिरच्छेदनबहुतोंकाकरदिया बिनाअपराधोंसेस्त्री,कन्याऔर बालककोभीपकड़केदु:खदिया औरबहुतोंकोमारडाला ऐसाउन्ने बड़ाअन्यायकियासोजिसदेशमें ईश्वरकीउपासनाकोछोड़केकाष्ठ पाषाण वृक्ष,घास,कुत्ते,गधे,औरमिट्टीआदिको पूजासे ऐसाहो फलहोगा उत्तमकहांसे होगा फिरचार ब्राह्मणोंने एकलोहेकी पोलीमूर्त्ति रचवाई औरउसकोगुप्त कहींरखदिया फिरचारोंने कहा हमकोमहादेवने स्वप्नदियाहै किहमारा आपलोगमन्दिर रचैं तोकैलाशकोछोड़के आर्य्यावर्त्त देशमेंमैंवासकरूं औरसब कोदर्शनदेऊं ऐसासबदेशोंमेंप्रसिद्धकरदिया फिरमन्दिरसबलोगोंनेमिलकेरचवाया उसमेंनीचेऊपरऔरचारोंओर भींतमेंचं-

बकपत्थररक्खे जबमन्दिरपूराभया तबसबदेशोंमेंप्रसिद्धकरदिया किउसदिनमध्यरात्रिमेंकैलाशसेमहादेवमन्दिरमेंआवेंगे जोदर्शनकरेगा उसकाबड़ाभाग्यऔरमरनेकेपीछेकैलाशकोवहचलाजायगा फिरउससमयमें राजा,बाबू,स्त्री,पुरुष औरलड़केबाले उसस्थानमेंजुटेफिरउनचारोंधूर्त्तोंनेमूर्त्ति मन्दिरमेंकहींगुप्तरखदिईथी औरमेलामेंऐसाप्रसिद्धकरदिया किमहादेव देवहै सोभूमिको पगसेस्पर्शनकरेंगें किन्तुआकाशहीमेंखड़े रहेंगे ऐसाहमको स्वप्नमेंकहाहै सोजबउसदिनपहररात्रिगई तबसबकोमन्दिरकेबाहरनिकालदिएऔरकिवाड़बन्दकरकेवेचारोंभीतररहे फिरउस मूर्त्तिकोउठाकेमन्दिरमेंलेगए औरबीचमेंचुम्बकपाषाणकेआकर्षणोंसेअधरआकाशमेंवहमूर्त्तिखड़ीरहीऔरउन्होनेखूबमन्दिरमेंदीपजोड़दिए फिरघण्टा,झल्लरी,शंख,रणसिंघाऔरनगारा बजाए तबतोबड़ामेलामेंउत्साहभयाऔरउननेदरवाजेखोलदिए फिरमनुष्योंकेऊपरमनुष्यगिरे औरमूर्त्तिकोआकाशमेंअधरखड़ीदेखके बड़े आश्चर्ययुक्तभए औरलाखहांरुपैयोंकीपूजाचढ़ी अनेकपदार्थपूजामेंआए फिरवेचारोंधूर्त्तब्राह्मणबड़मस्तहोगएऔरमहन्तहोगए फिरनित्यमेलाहोनेलगा करोड़हांरुपैयोंकामाल होगया सोवहमन्दिरद्वारकाकेपास प्रभासक्षेत्रस्थानमेंथा औरउस मूर्त्तिकानाम सोमनाथरक्खाथा फिरमहमूदगजनवीने सुनाकि उसमन्दिरमेंबड़ामालहैऐसासुनकेअपनेदेशसेसेनालेकेचढ़ा सो जबपंजाबमेंआया तबहल्ला होगया और सोमनाथ कीओरचला तबलोगोंनेजाना किसोमनाथके मन्दिरकोतोड़ेगा औरलूटेगा ऐसासुनकेबहुतराजापण्डितऔरपुजारी सेनाले२केसोमनाथकी रक्षाकेहेतुइकट्ठेभए सोमनाथकेपास जबवहडेढ़सै दोसैकोस दूर रहा तबपण्डितोंसेराजाओंने पूछाकिमुहूर्त्त देखनाचाहिए हम लोगआगेजाकेउनसेलड़ें फिरपण्डितलोगइकट्ठे होके मुहूर्त्त देखा परन्तु मुहूर्त्त बनानहीं फिरनित्यमुहूर्त्त होदेखतेरहे परन्तु

कोईदिनचन्द्रकोईदिन औरग्रहनहोवने कोईदिनदिकशूलसन्मु-
खआया कोईदिनयोगिनी औरकोईदिनकालनहींबना सोपण्डि-
तोंकीवुद्धिको कालादिकोंकेभ्रमोंनेखालिया औरराजालोगबिना
पण्डितोंकीआज्ञासे कुछकर्तेनहींथे सोप्राय:पण्डित औरराजा
लोगमूर्खहोथे जोमूर्खनहोतेतोपाषाणादिकमूर्त्ति क्योंपूजते औ-
रमुहूर्त्तादिकोंकेभ्रमोंमेंनष्टक्योंहोते ऐसेवविचारकर्तेहोरहे उस-
कोसेनादूसरोमंजलपरपहुंचो तवराजालोगोंने पण्डितोंसेकहा
किअवतोजल्दोमुहूर्त्त देखो तवपण्डितोंनेकहाकिआजमुहूर्त्त अ-
च्छानहींहै जोयाचाकरोगे तोतुमारापराजयही होजायगा तव
वेब्राह्मणोंसेडरकेबैठेरहे तवमहमूदगाजनवीधोरे२पांचछ:कोश
केऊपरआकेठहरा औरदूतोंसे खवरमंगवाई किवेक्याकर्तेहैं
दूतोंनेकहाकिआपसमेंमुहूर्त्तविचाराकर्तेहैं महमूदगजनवीकेपा-
स३०हजारसेनाथो अधिकनहीं औरउनके पास दो,तीन लाख
फौजथी फिरउसकेदूसरेदिनप्रात:काल राजापण्डितपुजारीमि-
लकेमुहूर्त्त विचारनेलगे सोसवपण्डितों नेकहाकि आजचन्द्रमा
अच्छानहो औरभीग्रहकूरहैं पुजारीलोग औरपण्डित मूर्त्ति के
आगेजाकेगिरपड़े औरअत्यन्तरोदनकिया हेमहाराज इसदुष्ट
कोखालेओ औरअपनेसेवकोंकासहायकरो परन्तु वहलोहाक्या
करसक्ताहै औरसवसेकहनेलगेकि आपलोगकुछचिन्तामतकरो
महादेवउसदुष्टकोऐसेहोमारडालेंगे वावहमहादेवकेभयसे व-
हांहोसेभागजायगा उसकाक्यासामर्थ्य है किसाक्षात् महादेवके
पासआरुके औरसन्मुख दृष्टिकरसके ऐसेसव परस्पर वकरहेथे
फिरकुछलड़ाईभई औरमुसल्मानभोडरे किविजयहोगावापरा-
जय उससमयमेंऔरपुस्तकफैला२के वहुतसेमन्त्रोंकाजपऔरपा-
ठकर्तेथे औरकहतेथे किअवदेवताऔरमन्त्रहमारापाठ सिद्धहो-
ताहै सोवहवहांहीं अन्धाहोजायगा सोवड़ीमण्डलीको मण्डली
जप,पाठऔरपूजाकररहोथो औरमूर्त्तिकेसाम्नेऔंधेगिरकेपुकार

तेथे एकसभालगरहीथी राजाऔरपण्डितबिचारतेथे मुहूर्त्त को उससमयमें उसके निकटएकपर्वतथाऔरमहमूदगजनवीनेएकतो पलगाई औरसभाकेबीचमें गोलामाराउससमयकोईदांतधावन करताथा कोईसोताथाऔरकोईस्नानकरताथाइत्यादिकव्यवहारोंसेगाफिलथे सोउसगोलेसे सबपण्डितलोग पोथीपत्राछोड़के भागे औरराजालोगभीभागउठे तथासेनाभीअपने२स्थानोंसेभागउठी औरवहमहमूदगजनवी सेनासहितधावाकरके उसस्थान पर झटपहुंचा उसकोदेखके सबभागउठे भागेभएपण्डितपुजारी सिपाही तथाराजाओंको उननेपकड़लिया औरबांधलिया और बहुतसीमारपड़ीउनकेऊपर तथामारभीडालाकिसीको औरबहुतभागगए क्योंकिउनपण्डितोंकेउपदेशसे सोलापहिर कवैठथे औरकथासुनीथीकिमुसल्मानोंकास्पर्शनहोकरनाऔरउनकेदर्शनसेधर्मजाताहै ऐसीमिथ्यावातसुनकेभागउठे फिरमन्दिरकेचारोंओर महमूदगजनवीकीसेनाहोगई औरआपमन्दिरकेपास पहुंचा तबमन्दिरकेमहंत औरपुजारीहाथजोड़केखड़े भए उनमे पुजारियोंने कहाकिआपजितनाचाहैं उतनाधनलेलिजिए परन्तु मन्दिरऔरमूर्त्ति कोनतोंड़िए क्योंकिइससे हमलोगोंकी बड़ीआजीविकाहै ऐसासुनके महमूदगजनवीबोलाकि हमबुतबेचनेवाले नहीं किन्तु उनको तोड़नेवालेहैं तबतोवेडरे औरकहाकि एक करोड़रुपैया आपलेलिजिए परन्तु इसको मततोड़िए ऐसेकहते सुनतेतीनकरोड़तककहापरन्तुमहमूदगजनवीनेनहींमाना और उनकोमुसकचढ़ालिया फिरउनकोलेकेमन्दिरमेंगयाऔरउनसे पूछाकि खजानाकहांहैसोकुछतोउसनेवतलादियाफिरभीउसको लोभआयाकि औरभीकुछहोगा फिरउनकोमारापीटा तबउननेसबखजानाबतलादिया फिरमन्दिरमेंआकेसबलीलादेखी फिर महन्तऔरपुजारियोंसेकहाकि तुमनेदुनियाकोऐसो धूर्त्तताकरकेठगलिया क्योंकिलोहेकीतोमूर्त्ति बनाईहै इसकेचारोंओरचुम्ब-

कपाषाणरखनेसे आकाशमें अधरखड़ीहै इसकानामरखदियाहै महादेव यहतुमनेबड़ीधूर्त्तताकियाहै फिरउसमन्दिरकाशिखर उननेतोड़वादिया जबवहचुम्बक पाषाणअलगहोगया तबमूर्त्ति जमीनमें चुम्बकपाषाणमेंलगगई फिरसबभीतें तोड़वाडाली सब चुम्बकके निकलनेसे मूर्त्ति जमीनमेंगिरपड़ी फिरउसमूर्त्तिकोमहमूदगजनवीने अपनेहाथसेलोहेकेघनको पकड़केमूर्त्तिकेपेटमें मारा उससे मूर्त्ति फटगई उसमें बहुतजवाहिरातनिकला क्योंकि हीराआदिकअच्छे२रत्नवेपातेथे तबमूर्त्तिहीमेंरखदेतेथें फिर उनमहंतऔरपुजारियोंकोखूबतंगकिया औरफुसलायाभी फिर उननेभयसेसबबतलादिया. उनसेकहाकिजोतुम सबसच्च२बतलादेओगे तोतुमकोहमछोड़देंगे तबउननेसोना, चांदीके पात्रोंको भीबतलादिए जोकुछथा औरउसने सबलेलिया सोअठारह करोड़कामालउसमन्दिरसेउसनेपाया फिरबहुतसीगाड़ीऊंटऔरमजूरउसकेपासथें औरभीवहांसेपकड़लिए उनकेऊपरसबमालकोलादकेअपनेदेशकीओरचला सोथोड़ेसेथोड़े पण्डितमहंत औरपुजारीतथाक्षत्रिय, वैश्य, ब्राह्मण औरशूद्रतथास्त्रीबालकदशहजारतकपकड़केसंगलेलिएथेंउनकायज्ञोपवीततोड़डालामुखमें थूकदिया औरथोड़े२सूखेचनेनित्यखानेकोदेताथा औरजाजरूर सफाकरवावै. पिसवावै घासछिलवावै औरघोड़ोंकीलीदउठवावै औरमुसल्मानोंकेजूठेबरतनमजवावै औरसबप्रकारकीनीचसेवा उनसेलऐसेकराता२जबमक्काकेपासपहुंचा तबअन्यमुसल्मानोंने कहाकिइनकाफरोंकायहांरखनाउचितनहीं फिरउनकोबुरीदशासेमारडाला क्योंकिउनकेकुरानमें लिखाहै किकाफरोंकोलूटले उनकोखोछीनले. झूठफरेबसेउनकासबमालले२ औरउनको मारडाले तोभीकुछदोषनहीं किन्तु उसमुसल्मानको बिहिस्तअर्थात उसकोस्वर्गवासमिलताहै वहखुदाकेघरमेंबड़ामान्यहोताहै फिरकाफरवहकहाताहै जोकिमुहम्मदके कलमाकोनपढ़ै और

कुरानकेऊपरविश्वासनलेआवै उसकोविगाड़नेऔरमारनेमेंकु-
छदोषनहीं ऐसामुसल्मानोंकेमतमेंलिखाहै इस्से उनको अन्याय
करनेमेंकुछभयनहीहोता औरजोकुछपापहोताहै सोतोबाशब्दसे
छूटजाताहै इस्से वेपापकरनेमेंभयक्योंकरेंगे ऐसेहोबारहदफेवह
आयाहै औरदोतीनबारमथुराकीभीदुर्दशाऐसीकिईथी औरजहां
२वहगयाथा वहां२ऐसोही उसदेशकीदुर्दशाकिईथी औरडांकू
कीनांईवहआताथा मारकेजोकुछपाताथा सोअपनेदेशमेंलेजाता
था उसदिनसेमुसल्मान्लोगदरिद्रसेधनाढ्यहोगएहैं सोआर्यावर्त
प्रतापसेआजतकभीधनचलाआताहै औरआर्यावर्त्त देशअपनेहीं
दोषोंसेनष्टहोताजाताहै सोहमकोबड़ाअपशोचहैकिऐसाजोदेश
औरइसप्रकारकाधनजिसदेशमेंहै सोदेशबाल्यावस्थामेंविवाहवि-
द्याकात्याग मूर्त्तिपूजनादिक पाखण्डोंकोप्रवृत्ति नानाप्रकार के
मिथ्यामजहबोंकाप्रचार विषयासक्तिऔरवेदविद्याकालोपजबतक
एदोषरहेंगे तबतकआर्यावर्त्त देशवालोंकी अधिक२दुर्दशाहीहो-
गी औरजोसत्यविद्याभ्यास तथासुनियम,धर्मऔरएकपरमेश्वर
कीउपासना इत्यादिकगुणोंकोग्रहणकरैं तोसबदुःखनष्ट होजांय
औरअत्यन्तआनन्दमेंरहैं फिरचारब्राह्मणोंनेविचारकियाकिकोई
क्षत्रियराजाइसदेशमें अच्छानहींहै इसकाकुछउपायकरनाचा-
हिए वेब्राह्मणचारोंअच्छे थे क्योंकिसबमनुष्योंकेऊपरकृपाकरके
अच्छीबातविचारी यहअच्छे पुरुषोंकाकामहै नीचकानहीं फिर
उननेक्षत्रियोंकेबालकोंमेंसे चारअच्छे बालकछांटलिए औरउन
क्षत्रियोंसेकहाकि तुमलोग खानेपोनेकाप्रबन्ध बालकोंकारखना
उननेस्वीकारकिया औरसेवकभीसाथरखदिए वेसबआबूराजप-
र्वतकेऊपरजाकेरहेऔरउनबालकोंकोअक्षराभ्यासऔरसुव्य-
वहारोंकीशिक्षाकरनेलगे फिरउनकायथाविधि संस्कारभीउनने
किया सन्ध्योपासन औरअग्निहोत्रादिक वेदोक्तकर्मोंकी शिक्षा
उननेकिया फिरव्याकरणछःदर्शनकाव्यालङ्कारसूत्रऔरसनातन

कोश यथावत्पदार्थविद्याउनकोपढ़ाई फिरवैद्यकशास्त्रतथा गान विद्या,शिल्पविद्या, औरधनुर्विद्या अर्थात्युद्धविद्या भीउनकोअच्छीप्रकारसेपढ़ाई फिरराजधर्मजैसाकिप्रजासेवर्तमानकरनाऔरन्यायकरना दुष्टोंकोदण्डदेना श्रेष्ठोंकापालनकरना यहभीसब पढ़ाया ऐसेपसीचवा २६ बरसकी उमरउनकीभई और उनपण्डितोंकेस्त्रियोंनेऐसेहीचारकन्या रूपगुणसम्पन्नउनकोअपनेपास रखकेव्याकरण,धर्मशास्त्र,वैद्यक,गानविद्या,तथा नानाप्रकारके शिल्पकर्मउनकोपढ़ाए औरव्यवहारकी शिक्षाभीकिया तथायुद्ध विद्याकीशिक्षा गर्भमेंबालकोंकापालन औरपतिसेवा काउपदेश भीयथावत्किया फिरउनपुरुषोंकोपरस्परचारोंकायुद्धकरना औरकरानेकायथावत्अभ्यासकराया ऐसेचालीस२वर्षके वेपुरुषभए बीस२वर्षकीवेकन्याभईं तबउनकीप्रसन्नता औरगुणपरीक्षा।सेएकसेएककाविवाहकराया जबतकविवाहनहींभयाथा तबतकउनपुरुषोंकीऔरकन्याओंकी यथावत्रक्षाकिईगईथी इस्सेउनकोविद्या बल,बुद्धि, तथापराक्रमादिकगुणभी उनकेशरीरमेंयथावत्भएथे फिरउनसेब्राह्मणोंनेकहाकि तुमलोगहमारीआज्ञाकरो तबउन सबोंनेकहाकि जोआपकीआज्ञाहोगी सोईहमकरेंगे तबउनने उनसेकहाकि हमनेतुम्हारेऊपरपरीश्रमकियाहै सोकेवलजगत् केउपकारकेहेतुकियाहै सोआपलोगदेखोकि आर्यावर्त्तमेंगदर मचरहाहै सोमुसल्मान्लोग इसदेशमेंआकेबड़ीदुर्दशा करतेहैं औरधनादिकलूटकेलेजातेहैं सोइसदेशकीनित्यदुर्दशाहोतीजातीहै सोआपलोगयथावत्राजधर्मसेपालनकरो औरदुष्टोंको यथावत्दण्डदेओ परन्तु एकउपदेशसदाहृदयमें रखना किजबतक वीर्यकीरक्षा औरजितेन्द्रिय रहोगे तबतकतुमारा सबकार्यसिद्ध होताजायगा औरहमनेंतुम्हाराविवाहअबजोकरायाहै सोकेवल परस्पररक्षाकेहेतुकियाहै कितुमऔरतुमारीस्त्रियां संग२रहोगे तोबिगड़ोगेनहीं औरकेवलसन्तानोत्पत्तिमात्रविवाहकाप्रयोजन

जानना औरमनसेभीपरपुरुष वापरस्त्रीकाचिन्तनभीनहींकरना
औरविद्यातथापरमेश्वरकीउपासना औरसत्यधर्ममें सदास्थित
रहना जबतकतुमाराराज्यनजमैं तबतकस्त्रीपुरुषदोनोंब्रह्मचर्या-
श्रममेंरहो क्योंकिजोक्रीड़ासक्तहोगे तोबलादिकतुम्हारेशरीरसे
न्यून होजांयगे तोयुद्धादिकोंमेंउत्साहभीन्यून होजायगा औरहम
भीएक२केसाथएक२रहेंगे सोहमऔरआपलोगचलैं औरचलके
यथावत्राज्यकाप्रबन्धकरैं फिरवेवहांसेचले वेचारइननामोंसे
प्रख्यातथे चौहानपवांरसोलंकीइत्यादिकउनने दिल्लीआदिकमें
राज्यकियाथाकुछ२प्रबन्धभीभयाथाजबराज्यकरनेलगे कुछकाल
केपीछेसहाबुद्दीन गोरीएकमुसल्मानथा सोभीउसीप्रकारइसदेश
मेंआयाथा कनोजआदिकमें उससमयकनोजका बड़ाभारीराज
था सोइसकेभयकेमारे अपनेहींजाके उनकोमिला औरयुद्धकुछ
भीनहींकिया फिरअन्यत्रवहयुद्ध जहांतहांकिया सोउसकाविजय
भया औरआर्यावर्तवालोंका पराजयभया फिरदिल्लीवालोंसेकोई
वक्तउसकायुद्धभया उसयुद्धमें पृथिराजमारागया औरउसनेंअप-
नासेनाध्यक्षदिल्लीमेंरखाकेहेतुरखदिया उसकानामकुतुबुद्दीनथा
वहजबवहांरहा तबकुछदिनकेपीछेउनराजाओंको निकालके आ-
पराजाभयाउसदिनसे मुसल्मानलोग यहांराज्यकरनेलगे और
सबनेकुछ२जुलुमकिया परन्तु उनकेबीचमेंसे अकबरबादशाहअ-
च्छाभया औरन्यायभी संसारमें होनेलगा सोअपनीबहादुरीसे
औरबुद्धिसेसबगदरमिटादिया उससमयराजाऔरप्रजा सबसुखी
थेपरन्तुआर्यावर्त्तकेराजा औरधनाढ्यलोगविक्रमादित्यकेपीछेस-
बविषयसुखमें फसरहेथें उससे उनकेशरीरमें बल,बुद्धि,पराक्रम
औरशूरवीरताप्राय:नष्टहोगईथीं क्योंकिसदास्त्रियोंकासंग गाना
बजाना,नृत्यदेखना,सोना अच्छे कपड़े औरआभूषण कोधारण
करना नानाप्रकारकेअतरऔरअञ्जननेत्रमें लगाना इससे उनके
शरीरबड़े कोमलहोगएथे किथोड़े सेताप वा शीत अथवावायुका

सहननहीहोसक्ताथा फिरवेयुद्धक्याकरसकेंगे क्योंकिजोनित्यस्त्रि-
योंकसंगकरेंगे औरविषयभोगउनकाभोशरीरप्रायःस्त्रियोंकीनां-
ईहोजाताहै वेकभीयुद्धनहींकरसक्ते क्योंकिजिनकेशरीरदृढ़रोग
रहित बल,बुद्धिऔरपराक्रम तथावीर्यकीरक्षा औरविषयभोगमें
नहींफसना नानाप्रकारकीविद्याकापढ़ना इत्यादिककेहोनेसेसब
कार्यसिद्धहोसक्तेहैं अन्यथानहीं फिरदिल्लीमें औरंगजेबएकबा-
दशाहभयाथा उननेमथुरा,काशी,अयोध्याऔरअन्यस्थानमेंभो
जा२के मन्दिरऔरमूर्त्तियोंको तोड़डाला औरजहां२बड़े२म-
न्दिरथे उस२स्थानपरअपनी मसजिदबनादिया जबवहकाशीमें
मन्दिरतोड़नेकोआया तबविश्वनाथकुएमेंगिरपडे औरमाधव
एकब्राह्मणकेघरमेंभागगए ऐसाबहुतमनुष्यकहतेहैं परन्तुहम-
कोयहबातझूठमालूमपड़तीहै क्योंकिवहपाषाणवाधातुजड़पदार्थ
केसेभागसक्ताहै कभीनहीं सोऐसाभयाकि जबऔरंगजेबआया
तबपुजारियोंनेभयसेमूर्त्ति उठाकेऔरकूएमेंडालदिया औरमा-
धवकीमूर्त्ति उठाकेदूसरेकेघरमेंछिपादिया किवहनतोड़सके सो
आजतकउसकूंएकाबड़ादुर्गन्धजलउसकोपोतेहैं औरउसोब्राह्म-
णकेघरमे माधवकीमूर्त्ति कोआजतकपूजाकरतेहैं देखनाचाहिए
किपहिलेतोसोना,चांदीकीमूर्त्तियांबनातेथें तथाहीराऔरमा-
णिक को आंख बनाते थे सो मुसल्मानों के भय से और दरिद्र-
तासे पाषाण,मिट्टी,पीतल,लोहा, और काष्ठादिकोंकी मूर्त्ति-
यांबनातेहैं सोअबतकभीइनसत्यानाशकरनेवाले कर्मकोनहींछो-
ड़देते क्योंकिछोड़ेंतो तबजोइनकीअच्छीदशाआवै इनकीतोइन
कर्मोंसेदुर्दशाहीहोनेवालीहै जबतककोइनकोनहींछोड़ते और
महाभारतयुद्धकेपहिलेआर्यावर्त्त देशमेंअच्छे२राजाहोतेथें उ-
नकीविद्या,बुद्धि,बल,पराक्रम तथाधर्मनिष्ठा औरशूरवीरादिक
गुणअच्छे२थ इससेउनकाराज्य यथावत्होताथा सोइक्ष्वाकु,सग-
र,रघु,दिलीपआदिकचक्रवर्त्तीहुएथे औरकिसीप्रकारकापाखण्ड

उनमेंनहींथा सदाविद्याकीउन्नति औरअच्छे२कर्मआपकरतेथे तथाप्रजासेकरातेथे औरकभीउनका पराजयनहींहोताथा तथा अधर्मसेकभीनहींयुद्धकर्तेथेऔरयुद्धमेंनिवृत्तनहीहोतेथे उससमयमेंलेकेजैनराज्यकेपहिलेतकइसोदेशके राजाहोतेथे अन्यदेशकेनहीं सोजैनोंने औरमुसल्मानोंने इसदेशको बहुत बिगाड़ाहै सो आजतकबिगड़ताहीजाताहै सोआजकालअंगरेजकेराज्यहोनेसे उनराजाओंकेराज्यसेसुखभयाहैक्योंकिअंगरेजलोगमतमतान्तरकीबातमें हाथनहींडालते औरजोपुस्तक अच्छापातेहैं उसको अच्छी प्रकाररचाकर्तेहैं औरजिसपुस्तकके सौरुपैएलगतेथे उस पुस्तकका छापाहोनेसेपांचरुपैयोंपरमिलताहै परन्तु अङ्गरेजोंमें भीएककामअच्छानहींहुआ जोकिचित्रकूटपरवतमहाराजअमृतरायजीका पुस्तकालयकोजलादियाउसमें करोड़हांरुपैएके लाखहांअच्छे२पुस्तकनष्टकरदिए जोआर्यावर्त्तवासीलोग इससमय सुधरजांयतोसुधरसक्ते हैं औरजोपाखण्डहीमेंरहेंगे तोअधिक२ होनाशहोगा इनकाइसमेंकुछसन्देहनहीं क्योंकिबड़े२आर्यावर्त देशकेराजाऔरधनाढ्यलोगब्रह्मचर्याश्रमविद्याक प्रचारधर्मसेसब व्यवहारोंकाकरना औरवेश्यातथापरस्त्रीगमनादिकोंकात्यागकरैं तोदेशकेसुखकीउन्नतिहोसक्तीहै परन्तुजबतकपाषाणादिकमूर्त्तिपूजन बैरागी,पुरोहित,भट्टाचार्यऔरकथाकहनेवालोंकेजालोंसेछूटें तबउनका अच्छा होसक्ताहै अन्यथानहीं प्रश्न मूर्त्ति पूजनादिक सनातनसेचलेआएहैं उनकाखण्डनक्योंकर्तेहो उत्तर यह मूर्त्ति पूजनसनातनसेनहीं किन्तु जैनोंकेराज्यहोनेसेआर्यावर्त्त में चलाहै जैनोंनेपरशनाथ,महावीर,जैनेन्द्र,ऋषभदेव,गोतम०कपिलआदिकमूर्त्तियोंकेनामरक्खेथें उनकेबहुत२चेलेभयेथें औरउनमें उनकीअत्यन्तप्रीतिभीथी इस्से उनचेलोंनेअपनेगुरूओंकी मूर्त्ति बनाकेपूजनेलगे मन्दिरबनाके फिरजबउनको शंकराचार्यनेपराजयकरदिया इसकेपीछेउक्तप्रकारसेब्राह्मणोंनेमूर्त्तियांरची

औरउनकानाम महादेवआदिकरखदिए उनमूर्त्तियोंसेकुछवि-
लक्षणबनानेलगे औरपुजारीलोगजैन तथामुसल्मानोंकेमन्दिरों
कोनिन्दाकरनेलगे । नवदेद्यावनींभाषांप्राणैःकण्ठगतैरपि । ह-
स्तिनाताड्यमानोपि नगच्छेज्जैनमन्दिरम् ॥१॥ इत्यादिकश्लोक
बनाएहैं किमुसल्मानोंकीभाषाबोलनीऔरसुननीभीनहीचाहिए
औरमत्तहस्ती अर्थात्पागलपीछेमारनेकोदौड़े सोजैनकेमन्दिर
मेंजानेसेबचसक्ताभीहोय तोभीजैनकेमन्दिरमेंनजाय किन्तु हाथी
केसन्मुखमरजाना उस्से अच्छाहै औ२ निन्दाकेश्लोकबनाएहैं सो
पुजारीपण्डितऔरसम्प्रदायीलोगोंनेचाहाकि इनकेखण्डनकेवि-
ना हमारीआजीविकानबनेगी यहकेवलउनकामिथ्याचारहै कि
मुसल्मानकीभाषापढ़नेमें अथवाकोईदेशकीभाषापढ़नेमें कुछदो-
षनहीहोता किन्तु कुछगुणहीहोताहै । अपशब्दज्ञानपूर्वकेशब्द-
ज्ञानेधर्मः । यहव्याकरण महाभाष्यकावचनहै इसकायहअभि-
प्रायहै किअपशब्दज्ञानअवश्यकरनाचाहिए अर्थात्सबदेशदेशा-
न्तरकीभाषाकोपढ़नाचाहिए क्योंकिउनकेपढ़नेसेबहुतव्यवहारों
काउपकारहोताहै औरसंस्कृतशब्दकेज्ञानकाभीउनकोयथावत्
बोधहोताहै जितनोदेशोंकीभाषाजानैं उतनाहीपुरुषकोअधिक
ज्ञानहोताहै क्योंकिसंस्कृतकेशब्द बिगड़केदेशभाषा सबहोतीहै
इस्सेइन केज्ञानोंसे परस्परसंस्कृतऔरभाषाकेज्ञानमें उपकारही
होताहै इसोहेतुमहाभाष्यमेंलिखाकिअपशब्दज्ञानपूर्वकशब्दज्ञा-
नमें धर्महोताहै अन्यथानहीं क्योंकिजिसपदार्थका संस्कृतशब्द
जानेगा औरउसके भाषा शब्दकोनजानेगा तोउसके यथावत्प-
दार्थकाबोध औरव्यवहारभी नहींचलसकेगा तथामहाभारतमें
लिखाहै कियुधिष्ठिरऔरबिदुरादिकअरबीआदिक देशभाषाको
जानतेथे सोईजबयुधिष्ठिरादिकलाक्षागृहकीओरचले तबबिदुर
जीनेयुधिष्ठिरजीकोअरवीभाषामेंसमझायाऔरयुधिष्ठिरजीने अ-
बीभाषासेप्रत्युत्तरदिया यथावत्उसकोसमझलिया तथाराजसू-

य और अश्वमेधयज्ञमें देशदेशान्तर तथाद्वीप द्वीपान्तरके राजा औरप्रजाआयाएथें उनकापरस्पर देशभाषाओंमें व्यवहारहोता था तथाद्वीपद्वीपान्तरमेंयहांके लोगजातेथे औरबेदूसदेशमें आतेथे फिरजोदेशदेशान्तर कीभाषा नजानते तोउनका व्यवहार सिद्धकैसेहोता इसमें क्याआयाकि देशदेशान्तरको भाषाकेपढ़नें औरजाननेमें कुछदोषनहीं किन्तु बड़ाउपकारहीहोताहै और जितनेपाषाणमूर्त्ति के मन्दिरहैंवेसबजैनोंहीकेहैं सोकिसीमन्दिर मेंकिसीकोजानाउचितनहीं क्योंकिसबमेंएकहीलीलाहै जैसीजैन मन्दिरोंमें पाषाणादिकमूर्त्तियांहै वैसीआर्यावर्त्त वासिओंकेम न्दिरोंमें भी जड़मूर्त्तियां हैं कुछनाम विलक्षण२ इन लोगों ने रखलिएहैं औरकुछ विशेषनहीं केवल पक्षपातहीसे ऐसाकहते हैं किजैनमन्दिरोंमें नजाना औरअपनें मन्दिरोंमेंजाना यहसब लोगोंने अपना२मतलब सिधबनालियाहै आजीविकाकेहेतु प्रश्न वेदशास्त्रमेंमूर्त्ति पूजनलिखाहै. औरवेदमन्त्रोंसे प्राणप्रतिष्ठाहोतीहै, उसमेंदेवकोशक्तिभीआजातीहै फिरआपखण्डन क्योंकरतेहैं उत्तर वेदशास्त्रमेंमूर्त्ति पूजनकहींनहीलिखा औरनप्राणप्रतिष्ठा औरनकुछ उसमेंशक्तिआतीहै प्रश्न सहस्रशीर्षापुरुषःउद्बुध्यस्वाग्ने प्राणदाअपानदा ॥ इत्यादिकमन्त्रोंसे षोड़शोपचारपूजाऔर प्राणप्रतिष्ठाभीहोतीहै तथाप्रतिष्ठा मयूखग्रन्थऔर तंत्रग्रन्थोंमें आत्मे हागच्छतुसुखंचिरन्तिष्ठतुस्वाहा, ॥ प्राणाइहागच्छन्तु सुखंचिरन्तिष्ठन्तुस्वाहा ॥ इन्द्रियाणिइहागच्छन्तु सुखंचिरन्तिष्ठन्तुस्वाहा ॥अन्तःकरणमिहागच्छतुसुखंचिरन्तिष्ठन्तुस्वाहा॥ इत्यादिकलिखेहैं फिरकैसे खण्डनहोसक्ताहै उत्तर इनमन्त्रोंकेअर्थनहीजाननेसआपलोगोंकोभ्रमहोताहै क्योंकिपुरुषनामपूर्णईश्वरकाहै सहस्रशीर्षाइत्यादिक पुरुषके विशेषणहैं सोपुरुषकेनिराकारहोनेसे शिरादिकअवयव कभीनहींहोसक्ते औरजो साकार बनता तोव्यापकनहीबनसक्ता। तथाहिपूर्णत्वात्पुरुषः। इत्यादि-

कनिरुक्तमेंअर्थकियाहै सोउसकासहस्रशीर्षा इत्यादिकविशेषणहैं उसकाअर्थइसप्रकारकाहोताहै।सहस्राणिशिरांसिसहस्राण्यक्षीणितथा सहस्राणिपादा:असंख्याता:यस्मिन्पूर्णेपुरुषेस: सहस्रशीर्षासहस्राक्ष: सहस्रपात्पुरुष: ॥ जितनेशिर,जितनीआंख, और जितनेपग, असंख्यात वेसबपूर्णजो परमेश्वरउसीमें बासकरते हैं क्योंकिसबजगत् काअधिकरण परमेश्वरहीहै और बहुव्रीहि समासहो अन्यपदार्थकेहोनेसेहोताहै तथासहस्रपात्शब्दकेहोने से बहुव्रीहिनिश्चितहोताहै व्याकरणकीरीतिसे सोईअर्थ मन्त्रके उत्तरार्द्ध मेंस्पष्टहै । सभूमिꣳसर्वत:स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् । पुरुषएवेदꣳसर्वं वेदाहमेतम्पुरुषम् ॥ इत्यादिकउत्तरमन्त्रोंसेयहीअर्थनिश्चितहोताहै औरसबजगतकीउत्पत्तिभीपुरुषसेलिखीहै बिनापरमेश्वरके किसीमेंनहोघटसक्ती इस्से जोकोईकहैकिइनमन्त्रोंसे षोड़शोपचारपूजाहोतीहै उसकीबातमिथ्याजाननी और प्राणप्रतिष्ठा शब्दकायहअर्थहै किप्राणकीस्थिति औरस्थापन का होना जोमूर्त्तिमें प्राणआते तोमूर्त्ति चेतनहीहोजाती सोजैसी पहिलेजड़थी वैसीहीसदारहतीहै क्योंकिचलना,फिरना,खाना, पीना,बैठना,देखनाऔरसुनना इत्यादिकव्यवहारवहमूर्त्ति नही करती इस्से जोकोईकहैकिप्राणप्रतिष्ठाहोतीहै यहबातउसकीमिथ्याजाननी औरमूर्त्ति ठसहोतीहै उसमेंप्राणके जानेआनेकाछिद्रअवकाशहीनहीं फिरप्राणउसमेंकैसेघुससकेगा औरजोकहेंकि हमप्राणप्रतिष्ठाकर्तेहैं उनसेकहनाचाहिए किआपलोगमुर्दे के शरीरमेंक्योंनहीप्राणप्रतिष्ठाकर्तेहैं किसोराजा,बाबू औरसबजगत्के मनुष्योंकोमुरदेमें प्राणप्रतिष्ठाकरके जिलादियाकरो तो तुमलोगोंकोबहुतधनमिलेगा औरबड़ीप्रतिष्ठाहोगी फिरक्योंनहीं ऐसीबातकर्तेहो जोवेकहेंकिजैसापरमेश्वरनेनियमकरदियाहै वैसाहीमरनेजीनेकाहोताहै उसकोमरेपीछे कोईनहींजिलासक्ता तोउनसे हमलोगपूछतेहैं किजिनपदार्थोंको परमेश्वरने

प्राणऔरचेतनतारहितजड़बनाएहैं उनकोंतुमचेतन औरप्राण सहितकैसेबनासकोगे कभीनहीं औरजोकहैंकिदेवऔरसिद्धपुरुषम्तकको जिलादेतेहैं उनसेपूछाजाताहै किवेदेवऔरसिद्ध क्यों मरजातेहैं इससे प्राणप्रतिष्ठाकोसबबातझूठीहै प्राणदाअपानदा इनकाअर्थपूर्वार्द्धमेंकरदियाहै वहींदेखलेना औरउद्बुध्यस्वाग्ने। इसकाभीअभिप्रायवहींदेखलेना। आत्मेहागच्छतुचिरंसुखंतिष्ठतुस्वाहा। इत्यादिसंस्कृतमिथ्याही लोगोंनेरचलिया कोई सत्य शास्त्रमें नहींहैं देखनाचाहिए कि। शन्नोदेवीरभिष्टयआपोभवन्तुपीतए शंयोरभिस्रवन्तुनः १॥ अग्निर्मूर्द्धा० उद्बुध्यस्वाग्ने० इत्यादिकमन्त्रोंमेंकहींशनैश्चर,मङ्गल औरबुधादिकग्रहोंकानाम भीनहींहै परन्तुविद्याहीनहोनेसे आजीविकाकेलोभसे ब्राह्मणों नेजालरचरक्खाहैकिएग्रहकोकांडीहैं सोकिसीनेऐसाविचाराकि ग्रहोंकामन्त्रपृथक्निकालनाचाहिए सोमन्त्रोंकाअर्थतोनहींजानता किन्तुअटकलसेउसनेयुक्तिरची किशनैश्चरशब्दके आदिमें तालव्य शकार है। और शन्नोदेवो इस मन्त्र के आदि में भी तालव्यशकार है इससे यहीशनैश्चरकामन्त्रहै तथापृथिव्याअयम्। इससे परमेश्वरकाग्रहणहोताहै इसशब्दसेमङ्गलकोलिया औरउद्बुध्यस्वक्रियासेबुधकोलिया देखनाचाहिए किशंहै सुखकानाम उद्बुध्यस्वबुधअवगमनेधातुकीक्रियाहै इससे बुधकोलियाइत्यादिक भ्रमसेग्रहोंकोग्रहणकियाहै सोयहकथा केवललालबुझक्कड़कीनाई है जैसेकिकिसीगांवमें एकमूर्ख पुरुषरहताथा उसकानामलाल बुझक्कड़था कभीकिसीराजाकाहाथी उसगांवकेपास सेचलागया था औरकिसीनेदेखानहींथा फिरजबप्रातःकाल लोगउठके बाहरचले तबखेतऔरमार्गमें हाथीकेपगकेचिन्हदेखके बड़े आश्चर्यभए औरलालबुझक्कड़को बुलाकेपूछा किएहक्याहै तबवहबड़ा रोनेलगाफिररोकेहसा तबसबनेउससे पूंछाकितुमरोकेक्योंहसेतब उसनेउनसेकहा किजबमैंमरजाऊंगा तबऐसीरबातोंकाउत्तर

कौनदेगा इसहेतुमैंरोया औरहसाइसहेतु किइसकाउत्तरबड़ा सुगमहै तोभीतुमनेनहींजाना इसहेतुमैंहसा तबउन्होंने पूछा कि इसकातोउत्तरदे तबवहबोलाकि लालबुझक्कड़बुझिया औरनबूझाकोइ। पगमेंचक्कीबांधके हिरणाकूदाहोइ॥ हिरनाअपनेपगमें चक्कीकेपाट बांधके कूदता२ चलागयाहै उसकेपगके एचिन्ह हैं तबतोवेसुनके बड़ेप्रसन्नभए औरसबने कहाकि लालबुझक्कड़ बड़े पण्डितऔरबुद्धिमान्हैं वैसेहीपाषाणमूर्त्तिकेपूजनअर्थ औरवेदमन्त्रोंकेविषयमें इनपण्डितलोगोंने मिथ्याकोलाहल कररक्खाहै इससे वेदकोनिन्दा औरअप्रतिष्ठाकररक्खीहै वेदोंमेंऐसोर झूठबातहोती तोवेदहीसच्चनहोसक्ते इससे यहीनिश्चयकरना किअपने२मतलबकेहेतु मिथ्या२कल्पना लोगोंनेकरदियाहै और वेदमेंसच्चबातहीहै इनबातोंका लेशभीनहींहै प्रश्न वेदअनन्तहैं क्योंकि यजुर्वेदकीशाखा १०१ सामवेदकी १००० ऋग्वेदकी २१ औरअथर्ववेदकी ९ शाखाहैं सोबहुतशाखा गुप्तहोगईहैं उनमें पाषाणपूजनादिकलिखाहोगा तुमक्याजानतेहो। अनन्तावैवेदाः यहब्राह्मणकीश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहै किवेदअनन्तहैं अर्थात्अनन्तशाखाहैं उत्तर शाखाजोहोतीहै सोस्वजातीयहोतीहैं क्योंकिजिसवृक्षकीशाखाहोतीहै उसवृक्षकेतुल्यपत्र,पुष्प,फल,मूलऔरस्वाद तथारूपऐसोही जोर२शाखाप्रसिद्धहैं उन२शाखाओंकीलुप्तशाखाभीअवश्यहोगीं किजैसाइनमेंसत्य२अर्थप्रतिपादितहैं वैसाउनमें भीहोगा इससे जाना जाताहै किइनप्रसिद्धशाखाओंमें मूर्त्तिपूजनकालेशनहींहै तोलुप्तशाखाओंमेंभीनहीं होगा ऐसाजोकोईकहै किआपनेक्या वेशाखादेखीहैं फिरआप लोगक्योंकहतेहो किउनलुप्तसाखाओंमें लिखाहोगा औरआप लोगअनुमानभीनहींकरसक्ते क्योंकिइनशाखाओंमेंथोड़ासाभी प्रतिपादनहोता तोउनशाखाओंमेंभी अनुमानहोसक्ता अन्यथा नहीं औरजोहठसेमिथ्याकल्पनाकरतेहो तोहमभीकरसक्ते हैं कि

उनशाखाओंमेंचोरी, मिथ्याभाषण, विश्वासघातकी, कन्या, माता, भगिनी, इनसेसमागमकरना वेश्यागमनपरस्त्रीगमनकरना और वर्णाश्रमव्यवस्थानहोगीइत्यादिकअनुमानमिथ्याकरसक्ते हैं और फिरतुमनेभी वेशाखादेखीनहीं वाकोईनहींदेखसक्ता फिरकैसे निश्चयहोगा कभीनहोगा क्योंकिकभीभ्रमकी निवृत्तिनहोगी न जानेउनशाखाओंमेंब्राह्मणकानामचांडालहोय औरचाण्डालका नामब्राह्मणहोय इस्सेऐसाआपलोग मिथ्याअनुमाननकरैं और इनशाखानोंकामूलभीतोकोईहोगाऔरजोमूलनहोगा तोशाखा कैसी इस्से जानेट पुस्तकहैं वेईसब शाखाओंकेमूलहैं औरशाखा व्याख्यानोंकीनांई ब्रह्मादिकऋषिमुनिकेकिए हैं । जैसे, मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य: । ऐसापाठशुक्ल यजुर्वेदमें है और तैत्तिरीय शाखामें । मनोज्योतिर्जुषतामाज्यस्य । ऐसापाठहै । जूतिजोमनकाविशेषणथासोज्योति: । शब्दसेस्पष्टार्थहोगया सोसर्वत्रविशेषणकायथायोग्यभेदहै जोविशेष्यका भेदहोगा तोपरस्परविरोध केहोनेसे मिथ्यात्वआजायगा इस्से विशेष्यकाभेद कभीनहींहोता विशेष्यभेदसे पूर्वापरविरोधहोजायगा फिरकिसकोसत्यमानैं किसकोमिथ्या इस्से वेदोंमें ऐसादोषकहींनहीं इस्से ऐसाभ्रमकभी नहीकरनाचाहिए औरजोवेदअनन्तहोंगे तोकोईपुरुषसबकोपढ़ना वादेखभीनसकैगा औरपूर्णविद्वानभीकोईनहोसकैगा फिर भीभ्रमहीरहेगा भ्रमकेरहनेसे किसीपदार्थका दृढ़निश्चयनहोगा औरउत्साह भङ्गभीहोजायगा किवेदकाअन्ततोनहींहै हमलोग कैसेपढ़सकेंगे इस्से सबलोगोंको भ्रमहोबनारहेगा इस्से वेदशब्द कायहअर्थहै जिस्सेजानाजायपदार्थ उसकानामवेदहै और वेत्तिसोयवेद: । जोजाननेवालाहै उसकानामभीवेदहै सोअनन्तनाम असंख्यातजीवहैं वेहीजाननेवालेंकेहोनेसे उनकानामवेदहै और विदन्तिपैस्ते वेदा: । जिनसेपदार्थजानाजाय उनकानामवेदहै । सोसर्वशक्तिमत्वऔरसबजगत्का रचनादिकपरमेश्वरके अनन्त

गुणहैं वेपरमेश्वरके जनानेवालेहैं इस्से उनका नामवेदहै इस्से अनन्तावैवेदाः। ऐसाब्राह्मणग्रन्थ, तिमेंअभिप्रायज्ञापनकियाहै प्रश्न पाषाणादिक मूर्त्तिपूजन वेदादिकोंमेंनहीं हैं फिरकैसेयहपरंपरा चलीआई औरइतनी बडीप्रवृत्तिभई आजतक किसीने नही खण्डनकिया जैसेकिआपखण्डनकर्तेहैं उत्तर आपलोगसर्वज्ञनहींहै वाचिकालदर्शीजोकि परम्पराकाठीक२निश्चयकरें देखना चाहिए किसत्यनारायण,शीघ्रबोध,कौमुद्यादिकनए२ग्रन्थ नवीन२तीर्थ तथामन्दिरआदिकहोतेहोजातेहैं औरइनकोपरंपरा मानलेतेहैं औरवेअबकेबनेहैं सबऔरअपनापिता जैसाकर्मकरताहै वैसाहीउसकापुत्र परंपरामानलेताहै फिरकोईचौर्यादिक अन्यायमेंप्रवृत्तहोजाताहै औरकोईकुछअन्यायमेंडरताभीहैसोलोककीपरंपराआपलोगमानेंगे तोबहुतदोषआजायगे औरकभीन होसकेगी क्योंकिकिसीकापितादरिद्रहोवे औरउसकेकुलमेंपुत्रादिकधनाढ्यहोतेहैं फिरपरंपरासेजोदरिद्रता उसकोक्योंछोड़ते हैं किसीकापिताअन्धाहोय उसकापुत्रआंखको क्योंनहीनिकाल डालताहै औरजिसकापितामूर्खहोताहै वापण्डितउसकापुत्रमूर्खवापण्डितनियमसेक्योंनहीहोता किसीकापिताचोरीकर्ताहोय औरजहल्खानेंकोजाय उसकापुत्रचोरीवाजहल्खानेको क्योंनहींजाय जिसदिनउसकापितामरे उसीदिनअपनेभीक्योंनहीमर जाय प्रथमअंगरेजीइसदेशमें पढ़ाईनहींजातीथी अबक्यों पढ़ी जातीहै रेलपरपहिलेचढ़नानहीहोताथा औरतारपर खबरनहीआतीजातीथी फिररेलपरचढ़ते औरतारपरखबर भेजतभेजातेक्योंहैं इत्यादिकबहुतदोषआतेहैं ऐसामाननेमें औरपरंपराकानिश्चयतो प्रत्यक्षादिकप्रमाण औरवेदसत्यशास्त्रोंहीसे होताहै अन्यथाकभीनहीं यहपाषाणादिकपूजनकी मिथ्याप्रवृत्तिबडीभई है सोकेवलविद्या,धर्म,बिचार,ब्रह्मचर्याश्रम,सत्सङ्ग औरश्रेष्ठराजाओंकेनहींहोनेसेभईहै क्योंकिसत्यविद्या जबमनुष्योंमेंनहीहो-

ती तबअनेकभ्रमोंमेंबुद्धिनष्टहोतीहै तबबहुतमूर्ख, अधर्मी,पाख-
ण्डी तथामतवालोंके उपदेशलोकमाननेलगतेहैं फिर बड़े भ्रम
जालमेंपड़के वेधूर्त्त जैसाउपदेशकरतेहैं वैसाहीमानलेतेहैं और
लोगोंकोबुद्धि बिपरीतहोजातीहै फिरबड़ाअन्धकारहोजाताहै।
उनकोबुद्धिसेकुछनहीसूझता गतानुगतिकालोका नलोकाःपार-
मार्थिकाः। बालुकापिण्डदानेन गतंमेताम्रभाजनम्॥ इसमेंयह
दृष्टान्तहैकिएककोईपण्डितताम्बेकाअर्घालेकेतर्पणऔरस्नानके
हेतुगया उसघाटमें अन्यपुरुषभीबहुतजातेऔरआतेथे उसपण्डि-
तकोशौचकीइच्छाभई तबतांबेकाअर्घाबालूमेंगाड़दिया औरउ-
सकेऊपरगीलीबालूकापिण्डधरके निशानकेहेतुशौचकोफिरच-
लागया अन्यस्नान करनेवालोंने यहचरित्रदेखा देखकेपण्डित
सेतोकिसीनेनहींपूछा किन्तुजैसापण्डितने पिण्डबनाकेरक्खाथा
वैसापिण्डसैकड़ों आदमीनेबनाके रखदिया उसकेपास२ उनके
हृदयमें ऐसाबिचारआयाकि पण्डितनेजोयहकामकियाहै सोपु-
ण्यकेवास्तेहीकियाहोगाइसहेतुहमभीऐसाहीकरैं तबतकपण्डि-
तभी शौचहोकेआया औरउननेदेखाकि बहुतपिण्ड वैसेधरेहैं
औरबहुतमनुष्यपिण्डबना२केरखतेभीजातेथे सोपण्डितनेउनसे
पूछाकि आपयहकामक्योंकरतेहैं तबउननेपण्डितसेकहा किआप
कादेखकेहमलोगभीकरतेहैं तबपण्डितनेपूछाकिइसकेकरनेकाक्या
प्रयोजनहै तबउननेकहाकि जोआपकाप्रयोजनहोगा सोहमारा
भीहै पण्डितनेबिचाराकिमेरातोपात्रहीनष्टहोगया तबपण्डितने
कहाकिअपना२पिण्डसबबिगारडारो नहीतोतुमकोबड़ापापहो-
गा तबउननेपण्डितसेकहा किआपकोभीपिण्ड बनानेसेपापभया
होगा तबपण्डितनेकहाकि तुमअपना२पिण्ड बिगाड़डारो तबमैं
भीअपनाबिगाड़डालूंगा तबतोसबअपने२ पिण्डतोड़डाले तबप-
ण्डितकापिण्डरहगया पण्डितनेजाकेपिण्डतोड़ा औरनीचेसेअ-
र्घानिकाललिया औरउनसेकहा किमैंनेइसहेतु निशानधराथा

तुमनेपूछाभीनहीं औरपिण्डधरनेलगगए तबउननेकहाकि आपकाकामदेखके हमभीकरनेलगे वैसेहीपाषाणादिक मूर्त्ति पूजन एककादेखकेदूसरेभीकरनेलगें ऐसेभेड़ोंकेप्रवाहकीनांई लोगगतानुगतिकहोतेहैं जैसेएकभेड़आगेंचले उसकेपीछे सबभेंड़चलने लगतीहैं औरजैसेएकसियार वाएककुत्ताबोलनवाभूकनेलगें उसकाशब्दसुनकेअन्यसियार वाकुत्ते बहुतबोलने वाभूकनेलगतेहैं वैसीहीविद्याहीन मनुष्योंकीअन्धपरम्पराचलतीहै उसमेंबड़े२ आग्रहकरकेनष्टहोतेचलेजातेहैं औरपरमार्थविचारसत्य२कोई नहीकर्ता इस्से हमलोगभी मिथ्याव्यवहारकाखण्डनकर्तेहैं पक्षपातछोड़के क्योंकिप्रत्यक्षादिप्रमाणोंमे औरवेदादिक सत्यशास्त्रोंसेदृढ़निश्चयकरकेजानागयाहै किमुक्तिकेहेतु वाव्यवहारसुखके हेतुपरमेश्वरहीकीदृढ़उपासनाकरनीयोग्यहै पाषाणादिकजड़मूर्त्तियोंकीकभीनहीं प्रश्न आजतकबहुतपण्डितपहिलेंभए औरबहुतपण्डितभीहैं फिरखण्डननहींकोईकरता औरमूर्त्तियोंकापूजननहींकर्तेहैं सोआपएकबड़े पण्डितआए जोखण्डनकर्तेहैं सो आपकाकहनाकौनमानताहै उत्तर प्रथममैं आपसेपूछताहूं कि पण्डितकौनहोताहैजोआपकहैं किपञ्चाङ्ग,शीघ्रबोध,मुहूर्त्त चिन्तामणि, आदिक सारस्वतचन्द्रिका, कौमुद्यादिक, तर्कसंग्रह, मुक्तावल्यादिक,भागवतादिक,पुराणमन्त्र,महिम्नाद्यादिक,तंत्रग्रंथ औरतुलसीकृत रामायणादिक भाषापढ़नेसे क्यापण्डितहोताहै किन्तु अविवेकीहोवनजाताहै क्योंकि सदसद्विवेककर्त्रीबुद्धिःपण्डा पण्डासंजाताऽस्येतिसपण्डितः ॥ जोबुद्धिसदसद्विवेककरनेवालीहोय उसकानामपण्डाहै औरवहीपण्डानामविवेकयुक्त बुद्धिजिसकोहोय वहीपण्डितहोताहै सोआपलोगविचारकेदेखैं कियथावत्धर्मऔरअधर्म तथासत्यऔरअसत्यकाविवेकहू नपण्डितकौ हैवानहीं जिनकोआपपण्डितकहतेहो औरजोमूर्खहैं वेतोआजकालकोई२अधर्मसेडरतेभीहैं किन्तु पण्डितलोगप्रायःनहींडरते

किन्तु कोई पण्डित सैकड़ों में एक अच्छा भी है परन्तु उस एक की वे धूर्त्त लोग बात हो चलने नहीं देते और वह कुछ जानता भी है तो मन ही में सत्य बात रखता है क्योंकि वह सत्य कहै तो सब मिलके उसकी दुर्दशा कर देते हैं इस भय का मारा वह भी मौन कर लेता है परन्तु उन सत्य पण्डितों को मौन वा भय करना उचित नहीं क्योंकि मौन और भय के करने से देश का अकल्याण धर्म का नाश और अधर्म की वृद्धि, और इन धूर्त्तों की बन पड़ेगी इससे कभी मौन वा भय सत्य करने वा कहने में नहीं करना चाहिए क्योंकि जो अच्छे पण्डित और बुद्धिमान् भय वा मौन करेंगे तो उस देश का नाश ही हो जायगा और वेद विद्यादिक न ही पढ़ने से बहुतों को सत्य २ निश्चय भी नहीं है इससे वे खण्डन नहीं करते हैं लोक के भय के मारे कि हमारी आजीविका नष्ट हो जायगी जो हम खण्डन करेंगे तो हमारी निन्दा होगी और आजीविका भी नष्ट हो जायगी इससे ऐसा कहना वा करना न चाहिए जिस्से कि संसार में विरोध हो जाय परन्तु मैं कहता हूं कि भय तो श्रेष्ठ पुरुषों को एक परमेश्वर और अधर्म के आचरण हो सकरना चाहिए और जो मैं खण्डन कर्ता हूं सो प्रत्यक्षादिक प्रमाण और वेदादिक सत्य शास्त्रों से कर्ता हूं को आज तक किसी ने वेदोक्त प्रमाण वा ठीक २ युक्ति नहीं दिया क्योंकि प्रमाण और युक्ति तो सत्य बात में हो सक्ती है असत्य में कभी नहीं और इस में प्रमाण वा युक्ति कोई दे भी नहीं सकेगा इसमें कुछ सन्देह नहीं प्रश्न अनेक संन्यासी, उदासी वैरागी और गोसांई आदिक खण्डन नहीं कर्ते हैं और पूजा कर्ते हैं उत्तर वे भी वैसे ही संसार की निन्दा और आजीविका से डरते हैं इस्से वे खण्डन नहीं कर्तें वा पूजा नहीं छोड़ते । प्रश्न उनको क्या आजीविका का भय है और संसार का जिस्से कि वे डरते हैं क्योंकि उनको विवाह मरने में द्वादशाह करना हो नहीं फिर उनमें धन को चाहना हो और माता, पिता, स्त्री, पुत्रादिक, कुटुम्ब, और घर को छोड़ के स्वतन्त्र हैं इस्से उनको भय नहीं है परन्तु वे भी खण्डन नहीं करते और पूजा कर्ते हैं फिर आप ही बड़े विरक्त आगए

किइनबातोंका खण्डनकरतेहैं । उत्तर यहबाततोसत्यहै किउनको सत्यभाषणादिककाछोड़ना औरपाषाणादिकमूर्त्तिकापूजनकरना उचितनहीं परन्तुवेभोसैकड़ोंमें कोईएकधर्मात्माऔरपण्डित है अन्यजैसेगृहाश्रममेंथें वैसेहोबनेरहतेहैं औरकितनेकगृहस्थों सेभोनीचकर्मकरतेहैं क्योंकिउननेकेवलखानेपोने औरविषयभोग केहेतुविरक्तका वेषधारणकरलियाहै परन्तु विरक्तता उनमेंकुछ नहीमालूमपड़ती क्योंकिधर्मकोरक्षाऔरमुक्तिकरनेकेहेतु विरक्त नहोहोनेहैं किन्तु अपनेशरीर औरइन्द्रियभोगकेहेतु विरक्तोंकी नांईबनगएहैं कोईधर्मात्माराजाहोय औरइनकोयथावत्परीक्षा करै तोहजारोंमेंएकबिरक्तताकेयोग्यनिकलेगा बहुतमजूरीऔर हलग्रहणकरनेकेयोग्यनिकलेंगे क्योंकिजबपूर्णविद्या,जितेन्द्रियता,छल,कपटादिकदोषरहितहैं वें सत्य२उपदेश तथासबकेऊपर कृपाकरके वैराग्य,ज्ञान,और परमेश्वरकाध्यानकरैं तथाकाम, क्रोध,लोभ,मोहादिकदोषोंकोछोड़ैं औरसत्यधर्म,सत्यविद्या,सत्यउपदेशकोसदानिष्ठाहोनेसे विरक्तहोताहै अन्यथानहीं देखना चाहिए किगोकुलस्थगोसांईआदिकजैसेधूर्त्ततासे धनहरणकरके धनाढ्यबनगएहैं बहुतसेचेलें औरचेलियांबनालेतेहैं उनसेसमर्पणकरालेतेहैं कितननामशरीर,धनऔरमनगोसांईजीकेअर्पण करो सोबड़े२मन्दिरउनोनेबनाएहैंऔरनानाप्रकारकीमूर्त्तियां रखलियाहै औरनानाप्रकारके कलावत्तू,सच्चे झूठेआभूषणोंसे ऐसाजालरचाहै किदेखतेहीमोहितहोके उसमेंफसजातेहैं प्रायःस्त्रीलोगउसमन्दिरमें बहुतजातीहैं जितनी व्यभिचारिणी स्त्री औरव्यभिचारीपुरुष बहुधामन्दिरोंमेंजातेहैं क्योंकिवहांपरस्पर स्त्रीपुरुषोंकादर्शनहोताहै औरजिस्से जोचाहै उस्से समागमबिना परीश्रमसेकरले उसमेंशयनआती औरमङ्गलातीबहुधाव्यभिचारकेमूलहैं क्योंकिउससमयप्रायःरात्रीहोरहतीहै इस्से आनन्दपूर्वकनिर्भयहोकेक्रीडाकरतेहैं परस्परमिलकेऔरउसमें पापभोन-

होंगिनते क्योंकिएकश्लोकबनारक्खाहै॥ अहंकृष्णास्त्वंराधाह्या-वयोरस्तु संगमः॥ परस्त्रीऔरपरपुरुषजबपरस्परगमनकराचाहैं तोइसकोपढ़ले तोकुछपरस्त्रीगमन वा परपुरुषगमनमें कुछपाप नहीहै।ताहै जबवेपरस्परसम्बन्धहोवें तबपुरुषकहैकिमैंकृष्णहूं तूंराधाहै तबस्त्रीबोलीकिमैंराधाहूं आपकृष्णहैं ऐसाकहकेकु-कर्मकरनेकोलगजातेहैं उनकेदोमन्त्रहैं श्रीकृष्णःशरणंमम। यह उनोनेमिथ्यासंस्कृतबनालियाहैइसकायहअभिप्रायहै किजोकृष्ण सोईमेराशरणअर्थात्इष्टहैफिरभागवतकीकथामेंराशमण्डलकी लीलासुनके ऐसानिश्चयकतेंहैं किहमलोगोंकेइष्टने जैसी लीला कियाहै वैसीहमभीकरैं कुछदोषनहीं औरइसकाऐसाभीअर्थबन सक्ताहै किजोश्रीकृष्णहैसोमेरीशरणकोप्राप्तहै। अर्थात्मेरासेवक श्रीकृष्णबनजाय ऐसाअनर्थभीभ्रष्टसंस्कृतसेहोसक्ताहै सोयहम-न्त्रगोसांईलोगदरिद्र,कङ्गाल औरसाधारणपुरुषोंकोदेतेहैं और जोबडाआदमीहै उसकेहेतु दूसरामन्त्र बनायाहै वहीसमर्पणका मन्त्रहै॥ क्लीं कृष्णायगोपीजनवल्लभायस्वाहा॥ इसमन्त्रकोउस-कोदेतेहैं किजोशरीर.मन,औरधनगोसांईजीकेअर्पणकरदे और गोसांईलोगअपनेकोकृष्णमानतेहैं औरअपनीचेलियां वा जगत् कीसबस्त्रियांराधाहै सोजिसस्त्रीसेचाहै उसस्त्रीसेसमागमकरलें उ-नकोपापनहीं लगता औरउनकेसमर्पणीजोचेलेहोतेहैं वेअपनी प्रसन्नतासे गोसांईजीकोप्रसादीकरालेतेहैं अर्थात्स्त्रीवापुत्रकोस्त्री तथाकन्याउनकोगोसांईजीको खासमेवामें एकान्तमेंभेजतेहैं जब गोसांईजी एकबारअपनीसेवामें प्रथमरखलेतेहैं तबवहस्त्रीपवित्र होजातीहै औरवहस्त्रीअपनेकोधन्यमानतीहैं तथाउनकेसेवकभी अपनेकोधन्यमानतेहैं जिनकागुरुइसप्रकारका व्यभिचारीहोगा उनकाशिष्यबर्ग व्यभिचारीक्योंनहीहोगा सोबडे२ अनर्थहोतेहैं अबकेसम्प्रदायमेंसोकहनेयोग्यनहीं वेपानवीड़ाखाके पात्रमेंपीक डालदेतेहैं सोउसकोउनकेचेलेबड़ीप्रसन्नतासेखालेतेहैं औरअ-

पनेकोबड़ाधन्यमानलेतेहैं किहमकोगोसांईजीमहाराज कीप्रसा-
दीमिलगई जबकोईधनाढ्यउनकोअपनेघरमेंलेजाताहैउसकाना-
म पधरावनीकहतेहैं जबवेवहांजातेहैं तबबड़ा एकपात्रताम्बेवा
लोहेकारखलेतेहैं उसकेबीचमेंस्नानकेहेतुएकचौकीरखदेतेहैं फि
रगोसांईजी एकधोतीसहित उसपात्रकेबीचमें चौकीपैंबैठजातेहैं
फिरअनेकसुगन्धकेसरादिकपदार्थोंमे उनकेशरीरकोस्त्रीऔरपु-
रुषमलतेहैं फिरअच्छे२ग्र ष्ठ२जलसेउनकोस्नानकरातेहैं फिर
जबस्नानहोजाताहै तबसूखापीताम्बरको धारलेतेहैं औरगीली
धोतीउसकड़ाहीकेजलमेंछोड़देतेहैं फिरगोसांईजो निकलआते
हैं तबउनकेसेवकलोगउसजलकोपीतेहैं औरअपनेकोधन्यमानते
हैं फिरगोसांईजी,बहूजी,बेटीजी,लालजी,ठाकुरजी, पुजारी,ग-
वैयाजी, इनसातजालोंसेउसगृहकाबहुतधनहरलेतेहैं इससेउनके
पासखूबधनहोगयाहै उससे रातदिनविषयसेवाऔरप्रमादमेंरह-
तेहैं उनकेचेलेजानतेहैंकिहममुक्तिकोप्राप्तहोंगे परन्तुइनकर्मों
से मुक्तितोनहींहोनी किन्तु नरकहीहोना क्योंकि इनप्रमादोंमें
जिनकाधनजाताहैउनकाभलाकभीनहोगाऔरउनगुरूओंकाभी
औरउनने एककथारचरक्खीहै किलक्ष्मणभट्टएकब्राह्मणतैलंगथा
उसनेकाशीमेंआके संन्यासलेनेचाहा तबउससेपूछाकिआपकेमा-
तापिता वाबिवाहितस्त्रीतोघरमेंनहींहै तबउननेकहामिथ्या कि
मेरेघरमेंकोईनहींहै मुझकोसंन्यासदेदीजिए फिरउननेसंन्यास
देदिया कुछदिनकेपीछेउनकोस्त्री काशीमेंखोजतीर आई औरवह
कहींमार्गमेंमिला सोउसकेपीछे२ चलीगई वहअपने गुरूकेपास
जाकेबैठे स्त्रीभीवैठी औरउसकेगुरूसेस्त्रीनेकहा किमहाराजमुझ-
कोभीआपसंन्यासदेदीजिए क्योंकिमेरेपतिकोतो आपनेसंन्यासदे
दिया अबमैंक्याकरूंगी तबतोउससंन्यासीने बहुतक्रोधकरकेउ-
सकादण्डऔरकाषायवस्त्रलेलिए औरउससे कहाकितूं झूठक्योंबो-
ला तैनेबड़ाअनर्थकिया अबतुमयज्ञोपवीतपहरलेओ औरअपनी

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक .. 505
[illegible]